बुन्देली दरसन

2019

नगर पालिका परिषद हटा,
जिला-दमोह

अंक - 12

बुन्देली दरसन

2019

नगर पालिका परिषद हटा,
जिला-दमोह

सम्पादक

डॉ. एम.एम. पाण्डे

मुद्रक

स्टेण्डर्ड प्रिन्टिंग प्रेस

2108, राईट टाउन, जबलपुर

प्रकाशक

नगर पालिका परिषद्

हटा, जिला-दमोह (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

संपादकीय......

आजकल पत्रिका को निकारबो सांसत को काम होत जा रओ। थोरी-सी हम अपनी बातें आप सें करौ चाउत हैं। हमाये पास रचनायें खूब आउतीं हैं - पे सब घिसी-पिटीं सी रहतीं है- हमैं नबेरनें आउती हैं। फिर लिखबेवारे चाई-जैसी लिखावट में लिखकें भेज देत- लगत है के वे ई बात खों गंभीरता सें नईं लेत। उनको धियान एई बात पे रात के नाम छपो चइयो। सो भैया इतनो करो के तनक रुचि सें लिखो तो हमाओ और टाईप करबे बारन को संकट मिटे।

हमाई कोशिश रात है कि बुंदेली में नये-नये प्रयोग होवें। अब उकी रचनात्मकता ऊँची सिढ़ियन पे चढ़े। सो लेखक जनों खों अब खूबई सोच-विचार ई पे करने है के बुन्देली की रचनात्मकता कहूँ ऊनी नें रहे। ई के लाने ऐसे कार्यक्रम बनाये जाएें जिनमें नये लेखकों को भागीदारी दी जाये- और कछू पुराने अनुभवी लेखकों से कहो जाये के वे नये लेखकों को लिखबे के 'गुर' सिखाबें। बड़ो काम नईयाँ जो अपने-अपने गावों-सहरों में छोटी छोटी बैठकें करकें करो जा सकत है।

'बुन्देली दरसन' को जो ग्यारवों पुष्प आपके हाथों में है। हमने भरसक प्रयास करौ है के अपनी बुन्देली बानी के साथ बुंदेली संस्कृति, स्वभाव और बुंदेली धजा को, जा पत्रिका आप तक ले जाये।

ई पत्रिका के प्रकाशन में हजारी भैया - सिरी पुष्पेन्द्र सिंह जू को विशेष सहजोग रहो है, उनकी रुचि के अनुसार ही जा पत्रिका इस बने ठने रुप में आपके सामूं है।

धरम भूम हटा नगर की नगरपालिका परिषद् की अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष तथा उनके सभी पार्षदगण, मुख्य नगरपालिका अधिकारी को सहयोग सराहवे लायक रओ है।

हटा नगर के गौरव, हिन्दी भाषा के चमकते नछत्र डॉ. श्याम सुंदर दुबे की बहुमूल्य, सलाहों ने 'बुन्देली दरसन' के दरसन में निखार ला दओ है।

'बुन्देली दरसन' की छपाई में सिरी रुपकिशोर राय (बल्लू), सिरी धर्मेन्द्र साहू कम्प्यूटर आपरेटर ने खूब संजोग करो है- उनै भी सराह रये हैं, 'बुन्देली दरसन' पत्रिका के प्रकाशन के तुरतई पाछूँ लेखकीय प्रति आदर के साथ रचनाकारों को भेज दई जात है - यदि न मिले तो सिरि रणप्रताप राजपूत से खबर भेज कें दूसरी प्रति प्राप्त करन को कष्ट करें- उनको मोबाईल नं. 9179875956 है।

डॉ. मनमोहन पाण्डे
चण्डी जी वार्ड, हटा, जिला दमोह
मों. 9893976936
पिन- 470775
E-Mail : cmohatta@gmail.com

बुन्देली मेला

कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी

मेला संयोजक - बुन्देली मेला, हटा

सार

घर के साथ जुड़े ऊ हिस्से खों सार इ कई जात है- जी में ढोर-बछेरू, गैंया-भैंसिया बंदती है। ई सार में कंडा-लकड़ियाँ सोई रखी जाती हैं। सार घर को हिस्सा होत भये भी घर सें कछू अलग सो होत है। अबकी बेरें सार में हम दे रये हैं- किसम-किसम के लेख। इन लेखों में इतिहास, बोली-बानी, रहन-सहन के गाय-गौरू बंधे है। बड़ो पुरानो शब्द है- गोष्ठी एई शब्द बाद में गौटन भी बन गओ। अब भले सार गोष्ठी के ऊ रूप में न हो पे ई में ओई अरथ लई जाये।

बुंदेली भाषा और उसकी प्राचीनता

– पद्मश्री डॉ. कैलाश मड़वैया

'अरे ओ चन्देलों के देश
तुम्हारी नदियाँ मृग नयनी,
तुम्हारे पर्वत सूर्यमुखी
तुम्हारी वाणी बुंदेली' .... 'सुकवि'

चन्देलों या बुंदेलों के देश की वाणी अर्थात् बुन्देली भाषा की प्राचीनता पर विचार करने के लिये इसकी भौगोलिक प्राचीनता की जानकारी करना आवश्यक प्रतीत होता है। आजादी के पूर्व कुण्डेश्वर में महाराजा ओरछा कलकत्ता से, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी को साहित्यिक अनुष्ठान के लिये बुंदेलखण्ड ले आये थे। उन्होंने 'मधुकर' नामक पत्रिका प्रकाशित कराई थी जिसके जून 1943 के अंक में श्री श्यामाचरण राय का एक लेख छपा था उसके अनुसार- भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार केम्ब्रियन काल जो 40-45 करोड़ वर्ष पहले का माना जाता है में, समुद्र के अन्दर 'विंध्या/बुन्देली नींस' नामक चट्टानें पाई गई जिनसे विंध्याचल और बेतवा निकलीं, बाकी पर्वत और नदियाँ बाद की हैं अत: बुन्देली संस्कृति भी, हिमालय और गंगा आदि के भी पहले की हैं तदनुसार अन्य संस्कृतियाँ और उसके अनुसार अन्य लोक भाषायें भी विंध्येली के बाद की हैं। जिससे यह प्रमाणित हुआ कि विंध्येली/बुन्देली भाषा अन्य लोक भाषाओं से प्राचीन है-- केम्ब्रियन युग की है।

■ आदि कवि वाल्मीकि और महर्षि वेद व्यास का जन्म भी बुंदेलखण्ड का माना जाता है -बावना/उरई या तमसा टोंस नदी के किनारे। *-पुस्तक-बुंदेल वैभव - लेखक गौरीशंकर द्विवेदी*

■ वेद व्यास का जन्म कालपी मे हुआ था। ऐसा वीर मित्रोदय में कहा गया है। *-वीर मित्रोदय- लेखक मित्र मिश्रा*

■ दतिया जिले के गुजर्रा ग्राम में सम्राट अशोक का एक शिला लेख विद्यमान है जिससे प्रमाणित होता है कि ईसा पूर्व 3-4 थी सदी में बुंदेलखण्ड मौर्यवंश के अधीन रहा। - पुस्तक बुंदेलखण्ड की संस्कृति-'मानव' पृष्ठ 16

■ संवत् 1011 का खजुराहो का शिलालेख जिसमें बुंदेलखण्ड की सीमायें प्राचीन नाम जुझौति के संदर्भ में वर्णित हैं। *- पुस्तक बंदेलखण्ड की प्राचीनता- लेखक बागीष शास्त्री बनारस।*

■ बुंदेलखण्ड के क्षेत्रफल के बारे में हालैण्ड में डॉ. महेश जायसवाल की रिसर्च के अनुसार बुंदेलखण्ड का क्षेत्रफल यूरोप के स्विटजर लेंण्ड और बेल्जियम से भी बड़ा है। लगभग 1 लाख 84 हजार वर्ग कि.मी.।

-शिलालेख-

■ बानपुर के क्षेत्रपाल में 18 फुट उत्तुँग तीर्थकर शाँतिनाथ की सिद्ध प्रतिमा के चरण पाद पर एक शिलालेख ई. 943-44 या कहें वि.सं. 1001 का उत्कीर्ण है जिसमें केवल 1001 सं. पठनीय है बाकी तत्कालीन बुंदेली /या अपभ्रंश/ में है जो पढ़ने में साफ नहीं है पर उक्त का संदर्भ अहार तीर्थ के शिलालेख से मिल गया है जो बुंदेली में है। *-पुस्तक 'बुंदेलखण्ड का विस्मृत वैभव' लेखक कैलाश मड़वैया*

■ देवगढ़ कलात्मक जैन तीर्थ पर अनेक महत्वपूर्ण शिलालेख विद्यमान हैं जिनमें कुछ बुंदेली में भी है यह 9 वीं शताब्दी के पढ़े गये हैं। - *संकलक/लेखक - क्लाउज ब्रून जर्मनी*

■ सन् 1182 में लिखा महाकवि जगनिक का आल्ह खण्ड साहित्य का सर्व प्रथम महाकाव्य माना जाता है जो बुंदेली भाषा बनाफरी में रचित है। यह वाचिक परम्परा का सबसे पुराना काव्य है जो आज भी देश और विशेष तौर से बुंदेलखण्ड में हर जुबान पर छाया रहता है।

■ कोई महकाव्य किसी भी भाषा में एकदम नहीं लिखा जा सकता उसके पूर्व से उस भाषा में सृजन होता रहता है। इस हिसाब से 1182 यानी 12 वीं सदी में आल्हखण्ड लिखा गया तो कम से कम 300 साल पहले से बुंदेली में लोक गीत आदि का सृजन माना जाता है तो भी 9 वीं सदी में चन्देलों के बाद से बुंदेली का अस्तित्व पुष्ट होता है।

■ 1425 ई में डूँगरेन्द्र सिंह तोमर के राज कवि विष्णुदास ने बुन्देली में महाभारत कथा लिखी थी जो लिखित साहित्य की सर्वाधिक प्राचीन प्रथम कृति मानी जाती है। कुछ उदाहरण देखें-

'...अछरि कौतिकु करहि बिवाना, कौरौं वीर सवै

बिलखाना।''....

दरअसल प्राचीन काल में इस भाषा का नाम बुंदेली नहीं था। विंध्येली रहा होगा। इस का प्रमाण भविष्य पुराण के विक्रमाख्यकाल खण्ड में मिलता है जिसके अनुसार-

''चित्रकूट गिरे रम्ये, विंध्य वाणी विषारदः।
तत्रावसन्सु महाप्राज्ञः पतंजलि उपाध्यायः।''

अर्थात् चित्रकूट के पहाड़ के आस पास विंध्याचल की वाणी के बहुत पंडित पंतजलि पाण्डे रहते थे। इससे पुष्ट होता है कि विंध्याचल के चारों ओर विंध्य वाणी, ज्ञान एवं गुणों की भरमार थी इससे इस भाखा का नाम विंध्येली से मिलता जुलता रहा होगा। कालपी के पास कलापी बियाकण्य के सूत्र मिले थे और उते चटसार माने विश्वविद्यालय के प्रमाण मिलते हैं।

बाल्मीकि के काल में उस क्षेत्र का नाम पुलिन्द और ब्यास माने महाभारत काल में दसारण्य अर्थात दशार्ण नाम हुआ। कहीं जेजाक भुक्ति भी बाद में मिलता है।

■ केशव दास ने अपनी बुंदेली को भाषा/ भाखा कहा है। यही हिन्दी के प्रथम आचार्य कवि माने जाते हैं-

'भाखा बोल न जानहिं जिनके कुल के दास,
भाखा कवि भौ मन्द मति तिहि कुल केशवदास''

■ महाकवि तुलसी दास की रामचरित मानस में एक सर्वे के अनुसार 53 प्रतिशत बुंदेली शब्द है क्योंकि राजापुर बुंदेलखण्ड में जन्मा कवि जब चित्रकूट/ बुंदेलखण्ड में काव्य लिखेगा तो अपनी मातृ भाषा बुंदेली से विमुख हो ही नहीं सकता। अनेक उदाहरण बुंदेली शब्दों के हैं। कविताबली तो बुंदेली में ही है।

■ सन् 1793 में विलियम कैरे ने भारतीय भाषाओं का सर्वे किया था और बुंदेली भाषा को मध्य क्षेत्र की प्रमुख भाषा माना था।

■ 1823 में रैबर्ट लीच ने अपने सर्वे से 33 खास भारतीय भाषाओं की सूची ज़ारी की थी जिसमें बुंदेली को शामिल किया था।

■ मध्यकाल में महान लोक कवि ईसुरी के साथ बुंदेली कवित्रयी बहुख्यात है जिनमें ईसुरी के साथ ख्यालीराम और गंगाधर ब्यास ने फड़ साहित्य और अपनी फागों से देश भर में बुंदेली को प्रसिद्धि प्रदान की। ईसुरी की फागों का मौलिक प्रकाशन ओरछेश ने 1953 में कराया था। बाद में तो अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुये हैं।

■ सन् 1649 से 1731 में छत्रसाल हुये जिनकी राज भाषा बुंदेली रही। छत्रसाल पत्रावली ग्रंथ डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रकाशित की यह सारे पत्र बुंदेली में हैं।

■ 1857-58 में लक्ष्मीबाई और मर्दनसिंह के पत्र बुंदेली में हैं। मराठा शासकों बाजीराव तक ने बुंदेली में पत्रचार किया। *पुस्तक- बानपुर, लेखक कैलाश मड़बैया*

■ भाषा विदों के अनुसार- वैदिक संस्कृत प्राचीन काल से प्रचलित थी। फिर लौकिक संस्कृति का चलन हुआ। पाणिनि ने लौकिक संस्कृति को बाँधने के प्रयास किये और अष्टाध्यायी ब्याकरण ग्रंथ की रचना की। लेकिन भाषा तो बहता नीर है और अनुशासन तोड़ फिर प्राकृत का उद्भव हुआ जिसका काल ईसा पूर्व 2000-500 वर्ष माना जाता है। प्रकृत में ही महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध के प्रवचन मिलते है। लेकिन प्राकृत को बाँधने की कोशिश हुई तो-

अपभ्रंश का जन्म हुआ जिसे मार्कण्डेय ने ब्याकरण बद्ध किया। तब फिर विखरी और आर्य भाषाओं का जन्म हुआ जिसमें 7 भाषायें चलीं-

1. शोरसेनी, 2. पैशाची, 3. खस, 4. ब्राचड़, 5. मगधी, 6. अर्धमागधी, 7. महाराष्ट्री।

पश्चिमी सौरसैनी से निकली - 1. पश्चिमी हिन्दी, 2. राजस्थानी, 3. गुजराती।

पश्चिमी हिन्दी से जन्मी - 1. खड़ी बोली, 2. बॉगरु, 3. बुंदेली, 4. बृज, 5. कनौजी

इस तरह खड़ी बोली से निकली आज की हिन्दी बुंदेली? की सहोदरा हुई।

■ हर काल में बुंदेली ने राजनैतिक आक्रमण झेले। मध्यकाल के बाद बुंदेली पर रियासती प्रभाव पड़ा और जो बुंदेली लोक गीतों में एक भाषा के रुप में सदियों राज भाषा रही वह बोलियों में बट गई। यथा पंवारों के कारण छतरपुर तरफ पँवारी, बाँदा तरफ बनाफरों के कारण बनाफरी, भिण्ड तरफ भदौरियो के कारण भदावरी, पन्ना तरफ वनों के कारण डंगयाउ और हमीरपुर तरफ लोधियों के कारण लुंधातीं और कही खटोला आदि नाम से बोलयाँ चल पड़ी जिनका मानकीकरण होना आवश्यक है। काम चल पड़ा है।

बुंदेलखण्ड की उदासीनता और ओरों के अतिक्रमण की स्थिति यक एक यहाँ तक हुई कि बुंदेलखण्ड में जन्मे और चित्रकूट में लिखी गई रामचरित मानस को अवधी का पूर्ण तरह बता दिया गया जब कि एक सर्वे के अनुसार 53 प्रतिशत

बुंदेली के शब्द हैं। उदाहरण देखे-

'चले समीर वेग हय हाँके। लाँघत सरित सैल वन बाँके।'

अब इसमें हाँके, समीर, हय, हाँके और लाँघत आदि शब्द बुंदेली के है।

■ जैन साहित्य का पद्म पुराण शौरसेनी में है जिससे बुंदेली निकली है।

■ पद्य में तो बुंदेली सर्वाधिक प्राचीन है ही पर गद्य का अभाव था। 1663 में संत प्राणनाथ के प्रवचन एवं 17 वीं सदी में रचित अक्षर अनन्य का अष्टांग योग बुंदेली गद्य का उदाहरण है। सनदें आदि तो मिलती हैं। पर पाये गये अभाव की संतुलित पूर्ति अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद/अध्यक्ष कैलाश मड़बैया/ ने विगत 60 सालों में कर दी है। अब बुंदेली में हर विधा में पुस्तकें हैं। बुंदेली को भाषायी शिल्प देने में बुंदेलखण्ड के अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद/अध्यक्ष श्री कैलाश मड़बैया/ के कृतित्व से पूरा देश सुपरिचित है क्योंकि बुंदेली भाषा में लगभग पन्द्रह सौ वर्षों से जिन तत्वों का अभाव था उन सभी की पूर्ति अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद ने अपने साहित्य सृजन काल में पूरा किया और कराया है। पद्य, गद्य और अनुवाद आदि सभी सृजन किया है यथा- बुन्देली भाषा में गद्य का अभाव था उसकी हर विधा में अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद ने सृजन कर दर्जनों ग्रंथ सृजन कर प्रकाशित किये हैं। जिनमें 'बुंदेली के ललित निबंध' तो ऐसा है जैसा देश की किसी अन्य लोक भाषा में भी उपलब्ध नहीं है। फिर 3 बुंदेली गद्य ग्रंथ-बाँके बोल बुंदेली के, मीठे बोल बुंदेली के और नीके बोल बुंदेली के प्रकाशित कर बुंदेली में सैकड़ों लेखको से सभी विधाओं का सृजन उपलब्ध कराया है। बुंदेली भाषा में महानाट्य नहीं था, कैलाश मड़बैया ने छत्रसाल सम्पूर्ण महानाट्य बुंदेली में ही लिखकर एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। बुंदेली में स्तरीय अनुवाद नहीं था उसे बुंदेली भक्तामर ने पूरा किया है। बुंदेली में खण्ड काव्य 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की' सचित्र और 'आँगन खिली जुंदैया' जैसे अनेक काव्य संकलन एवं 'बुंदेली लोक कथायें बुंदेली में' आदि उल्लेखनीय देन हैं। लगभग 3 दर्जन ग्रंथ अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद/अध्यक्ष श्री कैलाश मड़बैया के प्रकाशित हुये हैं। इसीलिये 50 से अधिक पुरस्कारों के साथ, हिन्दी संस्थान ने 2 लाख रुपयों का लोक भूषण पुरस्कार 2015 में प्रदान किया था। अनेक देशों में अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद ने लोक भाषा में काव्य पाठ कर भारत का नाम रोशन किया और सम्मान पाये है। बुंदेली भाषा की लगभग 500 पुस्तकें संस्था के पास विद्यमान हैं। अंत में पद्माकर के एक बुंदेली छन्द से लालित्य जताते हुये विराम लेता हूँ।

'फाग की भीर अहीरन में, गह गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर, उँपर नाई अबीर सी झोरी।
छीन पीतम्बर कम्मर तें सो बिदै दई मीड़ कपोलन रोरी।
नैन नचाय कहै मुस्क्याय, लला फिर आइयौ खेलन होरी।'

अध्यक्ष - अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद,
75 चित्रगुप्त नगर, कोटरा,
भोपाल म.प्र. 462003
मो 9826015643

दीप कवि कृत स्वप्नाध्याय

– उदय शंकर दुबे

बुंदेलखण्ड भारत का हृदय स्थल है। हिन्दी का आधे से अधिक साहित्य बुंदेलखण्ड की देन है, इसका कारण यह है, कि बुन्देलखण्ड में कुल मिलाकर छोटी-बड़ी सत्ताईस रियासते थी। इन रियासतों में कवि, पंडितों को विशेष आश्रय प्राप्त था। राज्यों के अपने ग्रंथागार (कुतुब खाना) थे। ओरछा (टीकमगढ़), पन्ना, छतरपुर, अजयगढ़, चरखारी, दतिया आदि राज्यों के प्राचीन ग्रंथागारों में लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलियों को देखकर आश्चर्य होता है, राजकीय ग्रंथागारों के अतिरिक्त मठों-मंदिरों एवं व्यक्तिगत संग्रहों में भी पर्याप्त हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित है।

मेरे व्यक्तिगत मित्र पंडित केशव किशोर तिवारी (दाँतरे की नरिया-दतिया म.प्र.) के संग्रह में संस्कृत और हिन्दी भाषा की लगभग अस्सी पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित थी। उन्हीं के संग्रह में मुक्ते दीप कवि कृत स्वप्नाध्याय की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई थी। दुर्भाग्यवश उनका समय स्वर्गवास हो गया। श्री तिवारी जी अच्छे ज्योतिषी थे उन्होंने मेरे पौत्रियों एवं पौत्रों की जन्म कुण्डली बनाया था जो मेरे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

स्वप्न एवं अलौकिक तत्व है। संस्कृत में विषय पर कई ग्रंथ प्राप्त हैं। ब्रहन वैवर्त पुराण (श्रीकृष्ण जन्मखण्ड फल का विस्तृत वर्णन है वाणासुर की पुत्री उषा ने स्वप्न में श्री अनिरुद्ध का दर्शन प्राप्त किया था। फलत: उषा और अनिरुद्ध का विवाह संपन्न हुआ। उषा-अनिरुद्ध की प्रेमकथा लोक में प्रचलित है। महाकाव्यों में स्वप्न-दर्शन के प्रसंग का वर्णन मिलता है गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में कई स्थलों पर स्वप्न-दर्शन का वर्णन किया है ननिहाल में भरत भयानक सपना देखते हैं –

अनरथ अबध अरंभेउ जब तें।
कुसगुन होहि भरत कहुँ तब तें।।
देखहि राति भयानक सपना।
जागि करहि कटु कोटि फल पना।।

चित्रकूट में सीता भी स्वप्न देखती है –

उहाँ राम रजनी अवसेषा।
जागे सीयँ सपन अस देखा।।
सहित समाज भरत जनु आए।
नाथ वियोग ताप तन लाए।।
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन।
भए सोचवस सोच विमोचन।
लखन सपन यह नीक न होई।
कठिन कुचाल सुलाईहि कोई।।
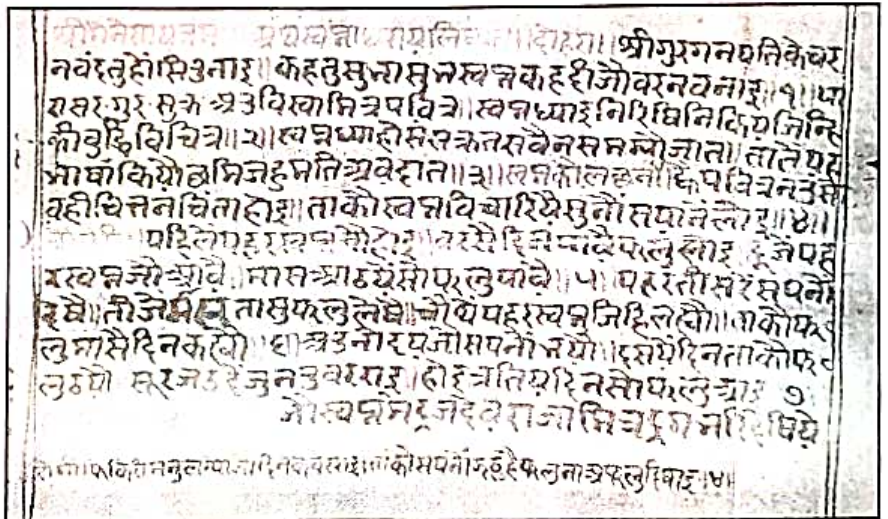
और त्रिजटा ने भी स्वप्न देखा था। वह सीता को भयाक्रान्त करने वाली निशाचरियों से स्पष्ट कहती है, कि यह सपना मै कहउँ पिचारी। होईहै सत्य गये दिन चारी। 'इससे ज्ञात होता है, कि त्रिजटा स्वप्न को फला फल को जानती थी।

हिन्दी में शुभ-अशुभ स्वप्नों को लेकर कई ग्रंथ मिलते हैं। आचार्य चंद्रबली पाण्डेय ने स्वप्न - सिद्धांत'' नामक महत्वूपर्ण ग्रंथ लिखा था। यह ग्रंथ सन 1997 ई. में परितोष प्रकाशन, गुहल्ला-सीता-राम, आजमगढ़ (उ.प्र.) से प्रकाशित हुआ था। इसके संपादक श्री पारसनाथ पाण्डेय ''गोबर्धन'' है। इस ग्रंथ की प्रतियाँ अब दुर्लभ हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा-काशी की खोज विवर्सर्णकाओं स्वप्न विषयक कई कवियों द्वारा रचे गये ग्रंथों का विवरण मिलता है- यथा- 1. नागरी

प्रचारिणी सभा-काशी की खोज विवसर्णकाओं में स्वप्न विषयक, कई कवियों द्वारा रचे गये ग्रंथों का विवरण मिलता है- यथा 1-स्वप्नार्थ चिन्तामणि - घनश्याम कृत, 2 - स्वप्न मिश्रा - छत्रसाल मिश्र, 3 - स्वप्न परीक्षा- हुलासराय वैध, 4- स्वप्न बोध - सुंदरदास, 5 -स्वप्न भेद - अमरसिंह, 6- स्वप्न विचार -पीताम्बर राय, 7-स्वप्न विचार - रघुपति, 8- स्वप्नाध्याय- कृष्ण सिंह, 1 (हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण- द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 600-601 ना, प्र. सभा-काशी, संवत 2021 वि.) हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों तथा सभा की खोज विवरणियों में दीप कवि और उनकी कृति स्वप्नाध्याय ग्रंथ का उल्लेख नही है। उनकी अन्य किसी रचना की जानकारी भी नही मिलती हैं।

दीप कवि कृत स्वप्नाध्याय का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

ग्रंथ का नाम - स्वप्नाध्याय, रचयिता, दीपकवि, रचना काल - संवत - 1893 वि. (सन 1953 ई.), आधार- देशी कागज, आकार, 7 इंच लंबाई × 5 इंच चौड़ाई, पत्र संख्या 14 पूर्ण (प्रतिपृष्ठ)-12, अक्षर (प्रति पंक्ति)-28, परिमाण (अनुष्टप, छंदों में) - 294 लिपि-नागरी पूरी प्रति कवि के स्वाक्षरों में लिखी हुई है। ऐसी पाण्डुलिपियाँ बहुत कम प्राप्त होती हैं।

आदि -

।। श्री गनेसाय नमः।। अथ स्वप्नाध्याय लिक्यतें।।

दोहा -

श्री गुर गनपति के चरन वंदतु हो सिरू नाइ।।
कहत सुभा सुभ स्वप्न कह दी जौ वरन बनाइ।। 1।।
पारासर गुर सुक अरू विस्वामित्र पवित्र।।
स्वप्नध्याइनि रिशिन किय जिनकी बुद्धि विचित्र।।2।।
स्वप्नध्या हो संसकृत सवै न समझयौ जात।।
ताते यह भाषा कियौ छतिजहु मति अवदात।। 3।।
स्वप्न कौ लच्छन है पवित्र सोवही चिन्त न चिंता होइ।।
ताकौ स्वप्न विचारी मैं सुनीं समाने लोई। 4।।

मध्य -

चौपही जरी वलिग सोवें नरू कोई।
जरी सिंघासन वैठे सोई।।
उज्जल वस्त्र पहिरि नर सेवें।
या सपनें कौ पुन्य अमेवें।। 105

दामेहरा -

कपरा पहिरें वहुत कै जरै आगि लोद्र।
तौ निहचें करि जानिये यह सुभ सपनो होई।।
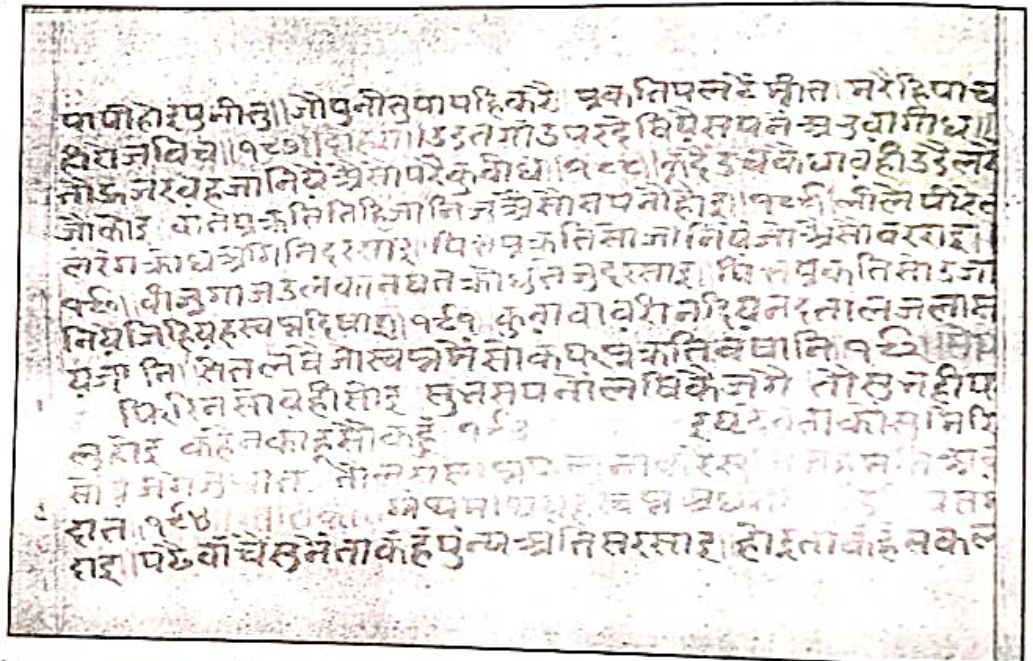
अंत -

चौपही -

अशुभ स्वप्न जौ होइ कजाति।
जाकौ यह उपाइ इहि भांति।।
मृत्युंजय कौ पाठक करावै।
याही मंत्र होमु कर वावै।।
चंदन, लाललु, तिल, खाड, घिउ लेई।
समधै खदिर तासु विच देइ।।
अक्सौ होम करै जो कोइ।
अशुभ स्वप्न ताकों शुभ होइ।।

दोहरा-

चित्रनि दीजै दक्षिना जथा सक्ति अनुमान।
अशुभ स्वप्न शुभ होइ तौ ताकौ यहै प्रमान।।

दोहरा-

धीरज सिंध खुमान कौ आइसु उर में राशि।
स्वप्न या कवि दीप ने कियौ जथामति भाषि।।
गुन, ससि, वसु, ससि, लिखि लशौ संवतु वै मधुमास।
रामनवें के दिन कियौ स्वप्नध्या परगासु।।
स्वप्नध्या जो वाचही।।। कौ है फलु एहि।
पुत्र लाभु, धन-धान्य बहु ताहि सियावरू देहि।।
दितया सुभ अस्थान है इंद्रजीत कौ राज।
गये मधपुरी न्हान कौ तां समये महराज।।

।। संपूर्ण सुभमस्तु।।

दीप कवि परिचय अज्ञात है। स्वप्नध्याय ग्रंथ के अंतिम छंदों, छंद संख्या 111 - 202 तक से ज्ञात होता है, कि वे दतिया निवासी थे और धीरज सिंह खुमान की आज्ञा से उन्होंने स्वप्नध्याय ग्रंथ की रचना की। ग्रंथ का रचना काल संवत 1893 वि. (सन 1953 ई.) हैं।

गुन 3, ससि, (1), वसु (7) ससि (9) लिखित षौ संवतु वै - मधुमास

रामनवें के दिन कियौ स्वप्न ध्याय परगासु।

अंकाना वमतो गतिः कै सिद्धानुसार कवि दीप पे संवत् 1893 वि. मे चैत्रमास में रामनवमी के शुभ दिन ग्रंथ को पूर्ण किया। उस समय दतिया में राजा इंद्रजीत का शासन था। हेतु प्रस्थान किया।' ' दतिया के राव रामचन्द्र दतिया के स्वर्गवास के अनंतर सन् 1736 ई. में उनके पौत्र इंद्रजीत दतिया राज्य के उत्तराधिकारी हुये। मुगल वादशाह शाह आलम ने सन 1760 ई. में बुन्देलखण्ड की यात्रा की। उसने इंद्रजीत को राजा की उपाधि प्रदान की तथा एक सिंहासन (तखतनामा) दोहव जायें और अरबी बाजा प्रदान कर सम्मानित किया था। इंद्रजीत के दरबार में भी कई कवियों को आश्रय प्राप्त था। द्रष्टवय- दतिया-दर्शन-संपादक-हरिमोहन लाल श्रीवास्तव पृष्ठ 12 विंध्य प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन 1953 ई. में प्रकाशित।

दीपकवि ने ग्रथारम्भ में स्पष्ट कर दिया है, कि उन्होंने पाराशर, गुरू, बृहस्पति, शुक्र, और विश्वामित्र जैसे ऋषि है, ऋषियों द्वारा संस्कृत भाषा में होने के कारण सामान्य जन समझने में असमर्थ थे। इस कारण से इसे भाषा में लिखा। वास्तव में दीपकवि ने अत्यंत सरल भाषा स्वप्नाध्याय की रचना की है इसमें बुन्देली शब्दों का बाहुल्य हैं। पूरे ग्रंथ में दोहरा, सोरठा, चौपही, अरिल्ल और गीतिका छंद का प्रयोग है। ग्रंथ में शुभ और अशुभ स्वप्नों का वर्णन है अशुभ स्वप्नों के निराकरण का उपाय भी बताया गया है सबसे महत्वपूर्ण स्वप्न पोथी (ग्रंथ) प्रादी का हैं।

सोरठा -

जा कहँ पोथी देइ, उत्तम अस्त्री स्वप्न मह।
सो कवि होइ अभेइ, यह निहचै करि जानियें।।

दोहरा -

उत्तम अस्त्री स्वप्न मह-जाको देइ पढ़ाइ।
सो पंडितु इमि होइ मनु सरस्वती सुतु आइ।।
जौ अपनें पोथी मिलै कहू गैल में जात।
सो नरू होइ पंडितु जसी जगत मॉह विख्यात।।

आज से दो सौ बारस वर्ष पूर्व दीपकवि द्वारा सरल भाषा में रची गई स्वप्नाध्याय ग्रंथ संक्षिप्त होते हुये भी स्वप्न विषयक महत्वूपर्ण पुस्तक है, संभव है दीप कवि ने और भी ग्रंथों की रचना की हो जो अनुपलब्ध हैं।

साहित्यान्वेषक साहित्य कुटीर
कठारी बाजार, पो. खमरिया
जिला-मदोली (उ.प्र.)
मो. 9889668216

भवदीय

– लीलाधर मंडलोई

भलई मदरसा नइ गये,
भलई ना पढ़े किताप
अटकर सीखो तो मिले,
इज्जत आपई-आप

जब कभी जिन्दगी की भागमभाग और मारा मारी से कुछ समय चुराता हूँ और बीते हुए समय में बिन बुलाए पहुँच जाता हूँ तो मुझे अपनी बोली की छवियाँ घेरने लगती हैं। इन छवियों के बिना मैं आगे बढ़ नहीं पाता। आँख बन्द करता हूँ और चौपाल से कुछ पंक्तियाँ टेरने लगती हैं या कुछ शब्द और मैं उन्हें याद करता कहीं लिख छोड़ता हूँ, जैसे अभी-अभी चोखे कक्का की कही, ये कहनात लिख रहा हूँ-

गुस्सा बस उत्तई करो,
जित्ती हो दरकार
जित्ती ताती हो चहा,
उत्तई फूको यार

मैं ताती, चहा, जित्ती, उत्तई जैसे शब्दों का लयात्मक सौंदर्य गुनता हूँ हैरत में। 'चहा' में जो बात है वो चाय में नहीं। 'ताती' और गरम को आमने सामने रखता हूँ तो 'ताती' में गर्म चाय फूँकने का जो ध्वनि सौंदर्य है वो मुझे चहा के प्याले से अलगकर 'बसी' यानी प्लेट में फूँकने और सुड़कने के ध्वनिलोक में ले जाता है, जहाँ चहा में कक्का की मूँछे भीग रही हैं या कहूँ चहा का स्वाद ले रही हैं, वे भी गुड़ की चाय जिसकी इन दिनों वकालत हो रही है। 'उत्तई' शब्द मुझे याद दिलाता है कि भई ! उतनी ही देर चाय फूँकना 'जित्ती' देर में वह पीने लायक बनी रहे यानी ज्यादा फूँक दी तो स्वाद के साथ सुड़कने का आनंद गया। इधर नगरीय सभ्यता में तो यह सब याद करना या वैसा कुछ करना मेरे जाहिल होने की निशानी है। तब 'चहा' पीना- पिलाना एक आत्मीय राग-सम्बन्ध का सूचक था। महाराष्ट्र में इसे 'चहा' ही कहते-लिखते हैं। इसी चौपाल में बोली के जो शब्द गूँजते थे उन्हें याद करके कुछ और सम्पन्न होता हूँ जैसे हरनचिरी (एक तरह की खरपतवार) सहगी विड़ी (पूरी विड़ी), पचिया (धोती), टूरा (लड़का), चिलकचाव (मन की कसक), पिचकाट (व्यर्थ), कँदला (गंदा), गुलतर्रा (गुलमोहक प्रजाति का एक फूल), मेंदरा (मेंढक), निन्ने पेट (खाली या भूखे पेट), अधन (चूल्हे पर चढ़ा पानी) आदि।

एकांत हो और शांति, तो मैं वहाँ पहुँचकर उसको आज से जोड़ता हूँ और मुझे अर्थ में नवीनता के साथ भाषा में अनोखी दीप्ति का अहसास होता है, साथ में बाज- दफा नागर भाषा की सीमा का भी भान। एक कहावत सुनकर मनई मन हँसी छूटती है अब भी-

लाट गवरनर बन गओ,
पीखे सबको खून।
तेहे कहाँ अच्छा लगहे,
अब ज्वाँरी को चून।

तो एक तरह का अपनी ढब का व्यंग्य और मारक भी खूब जो पंक्तियों में बनाकर कहा जाता है और जो किसी लिखे हुए पर भारी पड़ता है जैसे ये पंक्तियाँ-

जनता ढीली हो गयी,
तो नेता ढीले जान
खटिया ढीली होत हैं,
यदि ढीली अदवान।

यानि जनता (अदवान) सजग हैं तो खटिया (नेता) भी कायदे में रहेगी। इन कहावतों का अपनी बुद्धि से जब मैं अर्थ निकलता था तो वह शब्दानुसार के कारण सतही होता था। तब हमारी अम्मा कहती थीं 'मोड़ा, तें सुग्गापाठ नें कर।' यानि रटा- रटाया पाठ जैसा अर्थ न निकाल। सो हमने कोशिश की मर्म को पकड़ने की यानि शब्द का मर्म। सच कहूँ तो मेरे भीतर सुंदर अर्थों तक पहुँच बनी। अम्मा कहा करती थी कि फिरी फुकट में पालथी मारके ने खाओ, नई ते पाँव में झुनझुनी चढ़ जेहे अर्थात कोरा अर्थ समझोगे और भाव नहीं, तो परेशान रहोगे।

सोचता हूँ तो यह समझ में आता है कि जिन्दगी में यह अच्छा हुआ कि गरीब परिवार में जन्म हुआ और जितना मुसीबत से लड़ता गया, उतना ही धनवान होता गया। और हाँ ! उन लोगों से दोस्ती कभी न की जो बड़े घर के बिगड़ैल थे।

दद्दा की कहनात थी यानी मुहावरा, जो वे बार- बार दुहराते थे-

ऐसे लोगन खे करो,

दूरई से परनाम

मुखड़ा तो नोनो मगर,

ऐंचकतानो काम।

इधर वरिष्ठ नागरिक होने तक जिस दुनिया में हम रहे, दूर से परनाम करते हुए ऐंचकतान वाले कामों से दूर रहे और कोई नफा भले ही न हुआ हो लेकिन घाटा नहीं हुआ। हमने पतली से पतली दाल या सब्जी भी खूब फरक-फरक (बड़े आनंद) के खायीं। फुकट के मजे नहीं लिए। हमें बरबटी की फल्लियों से एक ही शिक्षा मिली कि ऐसे गुणवाली चीज उपजाओ कि उससे जब मन हो दाल बना लो और जब चाहो तरकारी। हमने बहोत हद तक यही किया।

गाँव में जो सीखें मिलीं जो लोक चेतावनियाँ, उनसे जीवन बदल गया। मैं सोचता हूँ डाँटने- मारने से अधिक प्रभाव, उन बातों का पड़ा जिन्हें सुना, वे अच्छी लगीं उन्हें गुना और अपनई-आप धीरे- धीरे बदलते गये।

कुछेक संग- साथ हैं- इनके भीतर हास्य, व्यंग्य, और समझदारी के सूत्र हैं

काजू किसमिस खाएके,

तुम बन गये कुटवार

कोदों- कुटकी खाएके,

हम बने कलेक्टर यार

काजू- किसमिस की कल्पना में तब हम हो न सकते थे और कोदों- कुटकी तो लगभग रोज़ का भोजन था, न सही दोनों तो एक टेम। समझ आया कोदों- कुटकी खाके ही बड़ी जगह तक पहुँच सकते थे। हमारे कई गरीब दोस्त- भाई पहुँचे तो उन्हें मालूम था कि कर सकते हैं, लड़ सकते हैं और जीत सकते हैं। वे ऊपर पहुँचे कि उनको चेतावनी भी देने वाले थे। याद है मुझे जब हम भोपाल पढ़ाई के लिए गाँव से निकले तो अक्का माँ ने कहा था कि बड़े शहर जा रहे हो, दो काम नइ करना गुर्राना और गर्राना। कहने का अर्थ है कि शहर ने गाँव की पढ़ाई के अंकों को मान देके बुला लिया तो घमंड न दिखाना। और शहरी होकर गर्राना मत अर्थात् बदमस्त हो, भूल न जाना अपनी मूल औकात।

अन्त में सतपुड़ा के अवधेश तिवारी की भूले बिसरे मुहावरों और लोकोक्तियों की किताब 'कल्लू के दद्दा कहिन' से एक कहनातके साथ बात समाप्त करता हूँ। इस छोटी सी किताब ने मुझे अपनी बोली के भरे- पूरे खजाने में ले जाकर छोड़ दिया। पढ़िए -

बीस भुजाएँ हों तिरी,

या होंवे दस मूड़

सुख दए बिना सुख नई मिले,

चाहें कित्तई मूड़।

यह मानीखेज बात रावण के सन्दर्भ में है और आज भी मौजूद है।

- संपादक 'नया ज्ञानोदय'
भारती ज्ञानपीठ
नई दिल्ली

छत्रसाल शौर्य पीठ : युवाओं का तीर्थ

– डॉ. बहादुर सिंह परमार

आन-बान और शान की वीर वसुन्धरा बुन्देलखण्ड में सपूत महाराजा छत्रसाल ऐसे शिरोमणि महापुरुष हैं जिनका समूचा व्यक्तित्व व कृतित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत है। इनके पिता चम्पत राय ने अन्याय के लिए खिलाफ मुगल सत्ता के प्रति विद्रोह किया जिससे वे ओरछा राज्य की आँख की किरकरी बने जो आजीवन अनाचार-अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उनके पुत्र वीर छत्रसाल ने पिताश्री से प्रेरणा ग्रहण कर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का बीड़ा उठाया और पच्चीस सवारों से अपनी यात्रा प्रारंभ की और बावन लड़ाइयों में अपराजेय रहे महाराज छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड की सीमा चंबल-से टोंस तथा यमुना से नर्मदा सरिताओं के तटों तक विस्तारित कर दी। उन्होंने अपने शौर्य, पराक्रम, साहस और धैर्य से ऐसी अनूठी गाथा रची जो सदैव प्रेरक रहेगी वे कलम व करबाल के धनी थे। स्वयं सरस्वती सार्थक होने के साथ सरस्वती पुत्रों को सम्मान इतना देते थे कि ओज के कवि भूषण की पालकी को स्वयं अपने कंधे पर उठाया। बरबस भूषण को लिखना पड़ा कि 'शिवा कौ सराहौं, कै छत्रसाल कों' ऐसे वीर योद्धा की कर्मस्थली मऊसहानियाँ ग्राम में अनेक अवशेष खण्डहर हो रहे थे, उनके पुनर्जागिरित कर यहाँ पर महाराज छत्रसाल की विशाल प्रतिमा स्थापित करने का विचार युवा, तरुणाई में चेतना फूँकने वाले, कुशल संगठक भाई डॉ. पवन तिवारी के मस्तिष्क में कौंधा जिसे उन्होंने साकार रूप देने के लिए महाराजा छत्रसाल स्मृति शोध संस्थान का गठन किया।

प्राकृतिक सुषमा से युक्त राष्ट्रीय राजमार्ग ग्वालियर-रीवा के किनारे पहाड़ी की तलहटी में 52 फीट ऊँची प्रतिमा आज महाराज छत्रसाल की गाथा स्वयं बखान कर रही है। इस प्रतिमा को बनाने के लिए पूरे राष्ट्र से दस-दस रुपये के कूपन बेचकर धन संग्रह किया गया। इसके पहले बुन्देलखण्ड अँचल में गाँव-गाँव जाकर धातु संग्रह किया गया। महाराजा छत्रसाल स्मृति शोध संस्थान का विधिवत गठन 21 जून 2015 ई. की शुभ घड़ी में किया गया। घर-घर जाकर धातु व धन संग्रह के उपरांत 27 अक्टूबर 2015 ई. को प्रतिमा स्थल का भूमि पूजन पर श्री ब्रह्मदेव शर्मा द्वारा भारी जन समुदाय की उपस्थिति में किया गया। महाराजा छत्रसाल एक ऐसे योद्धा रहे जो सामाजिक समरसता में ने केवल पूर्ण आस्था रखते थे बल्कि उसे मूर्त रूप देते थे, उनकी सेना में ब्राह्मण, क्षत्रिय, खँगार, यादव, सेन, भाट, बारी तथा समस्त जातियों के लोग शामिल थे। इसी अवधारणा को दृष्टिगत रखकर शोध संस्थान के अध्यक्ष भगवत अग्रवाल व सचिव राधे शुक्ल ने प्रतिमा स्थापना हेतु समस्त समाजों का न केवल आर्थिक सहयोग लिया बल्कि उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर उनकी श्रम सीकरों से प्रतिमा स्थल को सींचा।

महाराजा छत्रसाल स्मृति शोध संस्थान द्वारा वीर छत्रसाल के चरित्र को जन-जन तक पहुँचाने के लिए 23 अक्टूबर 2016 को धुबेला से गौरव जागरण यात्रा निकाली जो महाराज छत्रसाल के जन्मस्थल टीकमगढ़ जिले की मोर पहाड़ी तक गई। इस आठ दिवसीय यात्रा के माध्यम से छत्रसाल जी का कृतित्व को जन-जन तक पहुँचाया गया। महाराज छत्रसाल की जीवनी को भावी पीढ़ी को पढ़ाए जाने का प्रयास शोध संस्थान द्वारा किया गया, जिसमें वह सफल रहा। मध्यप्रदेश शासन द्वारा महाराज छत्रसाल की जीवनी को पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लिया गया। छत्रसाल जी से संबंधित साहित्य को जन सुलभ बनाने के लिए साक्षात्कार व प्रेरणा पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित कराए गए, साथ ही छत्रसाल जी पर केन्द्रीय स्मारिका 'अजेय योद्धा छत्रसाल' का प्रकाशन कराया गया। शोध संस्थान ने विद्या भारती के माध्यम से 'महाराज छत्रसाल ज्ञान परीक्षा' आयोजित की गई जिसमें दस हजार से अधिक बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को महाराज छत्रसाल की जीवनी पर केन्द्रित पुस्तिका दी गई। जिसके माध्यम से उनके जीवन-प्रसंगों से नई पीढ़ी परिचित हुई। इसके साथ ही शोध संस्थान द्वारा महाराज छत्रसाल जी का चित्र लोकार्पित कर समाज में जन-जन तक पहुँचाने का श्रेयस्कर कार्य संपादित किया गया।

महाराज छत्रसाल जी के जन्मदिन पर 3 मई 2017 को दोपहर 12:00 बजे से अखण्ड कवि सम्मेलन शुरू हुआ जो

चौबीस घंटे तक चला जिसमें देश के ख्यात नाम 55 कवियों ने कवि संग्राम के संयोजक सुमित मिश्रा के साथ भाग लेकर राष्ट्रीय भाव की कविताओं का पाठ किया। महाराज छत्रसाल की जीवनी का नाट्य मंचन शिवेन्द्र शुक्ल के निर्देशन में तैयार गया जिसके दस शो देश के अलग-अलग शहरों में किए गए हैं जिसके माध्यम से छत्रसाल के जीवन को जीवन्त कर राष्ट्र के समक्ष रखा गया। यह मंचन छतरपुर, मऊसहानियाँ, भोपाल, जबलपुर, नई दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण स्थलों पर विशिष्ट जनों की उपस्थिति में किया गया। अंकुर यादव के अभिनय ने सभी का मन मोहा।

इक्कीस मार्च 2018 वह शुभ दिन है जिस दिन महाराज छत्रसाल की अश्वारोही विशाल बावन फुट की प्रतिमा का अनावरण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक परम पूज्य मोहन भागवत द्वारा संध्या बेला में देश के प्रतिष्ठित संतों की उपस्थिति में शंख-झालर-व वेद मंत्रों की मधुर मिश्रित ध्वनियों के बीच किया गया। इस लोकार्पण समारोह के साक्षी देश के कोने-कोने से पधारे संत, विद्वान, कवि, कलाकार, शिक्षाविद् तथा राजनेता बने। इस पर परम पूज्य ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने का आव्हान किया। 'छत्रसाल शौर्य पीठ' नाम से स्थापित इस मनोरम तीर्थ में प्रतिमा के समीप में पुष्प-गुल्मों से युक्त वाटिका को विकसित किया गया है।

वाटिका के पार्श्व में वनाच्छित पहाड़ी है जिसमें पलाश सहित स्थानीय वनस्पतियों के बीच खग-कुल वृंद कलरव करता है। यहाँ के सुरम्य वातावरण में सामने जगत सागर तालाब की जलराशि सौन्दर्य गाथाओं का गान करते प्रतीत होते हैं। गुरु प्राणनाथ की वाणी के साथ कबीर की रागनियाँ भी मऊसहानियाँ के मंदिर व आश्रम में सुनी जा सकती हैं। महाराज छत्रसाल स्मृति शोध संस्थान युवा प्रेरक डॉ. पवन तिवारी के सपनों को जन-जन की भावनाओं के साथ साकार करने में संलग्न है। संस्थान का प्रयास है कि यहाँ शोध प्राकल्प तैयार हो, यहाँ समृद्ध पुस्तकालय के साथ भावी शोधार्थियों हेतु समस्त उपादानों को उपलब्ध कराया जाए, जिससे इस वीर योद्धा के साथ इस अँचल की लोक सांस्कृतिक विरासत के साथ ऐतिहासिक तथ्यों का संरक्षण व संवर्धन हो। 'छत्रसाल शौर्य पीठ' भावी पीढ़ी को संस्कार प्रदाता बने। इन्हीं कामनाओं के साथ।

प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. महाराजा महाविद्यालय
छतरपुर म.प्र.
मो. 9425474662

लोकसाहित्यों में मूल्यों की तलाश

– डॉ. कामिनी

हर अंचन की अपनी एक आत्मा होती है इसी आत्मा को मूल्य पुष्ट करते हैं। ये मूल्य, अनुभवों के सहारे और साहित्य के सहारे आगे बढ़ते हैं तथा धरोहर के रूप में अगली पीढ़ियों को सौंप दिये जाते हैं। भारतीय मूल्यों की अपनी निजी विशेषता हैं। इनमें एक ओर लोकजीवन की मिठास है, तो दूसरी ओर नागर जीवन के आदर्श हैं इसी से यहाँ के मूल्य, लोक के साथ वेद को समेट कर आगे बढ़ते हैं। आज-भारतीय मूल्य उपभोक्ता वादी संस्कृति से प्रभावित होकर अपना स्वरूप बदल रहे हैं।

लोक की दृष्टि स्वच्छन्द होने के बाद भी निश्छल होती हैं कोष के अनुसार- लोकस्थान विशेष है, व्यक्ति और जन है तथा समाज हैं। लोक से संबंधित साहित्य में लोक-गीतों के साथ राजकात्र संबंधी पत्र भी हैं। दैनिक व्यवहार की यह लिखा-पढ़ी, लोक-कला, लोकगाथा, वृत-कथा, वैद्यक पाककला, धर्म, संस्कृति आदि से जुड़ी हुई हैं। भारतीय मूल्य सदियों से हमारे समाज को समता और सौहार्द्र में डुवोय हुए हैं। वर्ण व्यवस्था को हमारे समाज में सदियों पूर्व स्वीकार किया गया था और इसी व्यवस्था के अंतर्गत, जातियों, (उपजातियों, वर्गो और गोत्रों की रचना हुई वर्तमान में यह विभाजन सामाजिक समता को निर्बल करने लगा। राजनैतिक आपाधारी के इस युग में जातियाँ समर्थन बटोरने का माध्यम वन गई। लोक का स्वभाव बांटना नही है लोक, जीवन के यथार्थ को भलीभाँति समझता है, इसी से वह नोंनी, राखौ वोला-यानी वरवूला जिंदगानी। लोक के अनुभव में जीवन दूसरों को सताने के लिए नही मिला। जीवन नश्वर है पानी के वरवूले की तरह हवा का झोंका लगते ही विलीन हो जाता है। ऐसी नश्वर जिंदगी की इच्छाओं को पूरा करने के लिए और-और की तृष्णाओं में पड़कर शोषण की दौड़ में सम्मिलित होने के लिए लोकजीवन सहमत नही हैं।

लोक-मन आस्था और विश्वास के मार्ग पर आगे बढ़ता है उसका इतिहास गौरवपूर्ण गाथाओं से परिपूर्ण हैं। लोकजीवन में उत्सर्ग है, शौर्य है, प्रेम प्रसंग है? और परस्पर सहयोग है ढोला मारू के प्रेम प्रसंग आल्हा ऊदल की शौर्य गाथायें, वीरसिंह देव का तुलादान, हरदौल का प्राणोत्सर्ग लोकसाहित्य को प्राणवान बनायें हुए है और लोक की यह प्राणवता जीवन मूल्यों को ह्रासोन्मुखी नही देखना चाहती। इसीसे लोकसाहित्य में सावन की मल्हारें हैं। झूलें है, चकरी भौरें है और राखियाँ है भादों की अँधियारी रात में कन्हैया की गूँज है क्वाँर में मामुलियाँ, सुअटा, झिझियां और नौरता हैं। लोक के मूल्य परिवार से जुड़े है जहाँ माँ का आंचल है पिता की झिड़कियाँ है बहिन भाई का सहन स्नेह है ननद भाभी के बोल है और इन्ही के साथ चौका-बघार हैं। रीझ-खीझ है गालियाँ और दुर्वचन है इन्ही में निबद्ध होकर लोक साहित्य संघर्षो भरे जीवन को पुलक में सरवोरता हुआ आगे बढ़ता हैं।

बुंदेलखण्ड में देवर-भौजी का रिश्ता ऐसा अनूठा है जहाँ शोखी है, शरारत है, चुल बुलापन है, हँसी-मसखरी हैं। छेड़छाड़ है, प्यार है, स्नेह है, मस्ती है पर सब कुछ मर्यादित बेहद संवदेनशील, अत्यंत नाजुक। सह देवर-भाभी का रिश्ता अपनी पराकाष्ठा में माँ--बेटे के प्यार में परिवर्तित हो जाता है यह कोमल रिश्ते समाज में जीवित बने रहे। इन्हें टूटने-विखरने न दिया जाये। लोकसाहित्य में प्रभातियाँ हैं। पालना झुलाते हुए गुनगुनाई जाने वाली लोरियाँ है , सोजा सोजा बारे वीर, वीर बलैयां लैलू, जमुना के तीर की गूँज हैं। भाभी और बहिन के भिन्न भिन्न पक्ष हैं। अनमेल विवाह की कसक, विधवा केत्रास और बाँझ की आशंकाओं ने लोक साहित्य को झकझोरा है और लोक जीवन को सचेष्ट बनाया हैं। माँ बनने की लालसा भविष्य को स्वर्णिम बना देती है-

'अँगना में हरी-हरी दूबा
धिनोंचिन केवरे महाराज।

पुत्र जन्म के बाद दिन सोने के हो जाते है और उरैन डालकर प्रसूता के लिए जड़ी बूटियों वाला पानी (चरूआ) उबाला जाता है सासो माँ और ननद चरूआ धराई नेंग माँगती है-

'आज दिन सोनें कौ महाराज
गैया को गोबर मँगाओ बारी सजनी,
ढ़िग दै अँगन लिपाओ महाराज।,
अँगनवा में खेलै गोरी तेरौ ललना
सासो जो आवें चरूआ धराबै

चरूआ धराई नेग बौई कँगना हों -

अगँनवा में खैले गोरी तेरौ ललना।

'सोहरो' की गूँज से वातावरण गमकने लगता है लाल के बधायें जड़ाऊ बैंदा लैउंगी , जड़ाऊ बैदा लैउगीं, जड़ाऊ बेसर लेंउगी , और जच्चारानी के गजड़े में पहनूँगी के बधाये गवने लगते हैं। ननदरानी आँगन गें नाचती हैं।

'ऊपर बदर घहरायें रे

गेरी धना पनियाँ को निकरी'

जैसे लोकगीतों में परिवार की समरसता को सींचने की कालत्रयी क्षमता हैं।

साहित्य, अनुभवों को एकत्र करता है और अनुभव-प्रत्येक अंचल के प्राण होते हैं। व्यक्ति समाज की अविभाज्य इकाई है यह इकाई सहयोग, समता ओर सामूहिकता को सुदृढ़ बनाती हैं। लोक-मन की अनुभूतियाँ सहज उद्‌गमों की संपत्ति मानी जाती है इसीसे लोकलय में छन्द सुध-बुध खो देता हैं माधुर्य और लालित्य कई गुने दिखलाई देने लगते है। लोक साहित्य में मूल्यों का अध पतन नही है वहाँ विपन्ना भी हँस-खेलकर काटली जाती है अभावों और अकालों ने लोकगीतों को जन्म दिया है - लोककवि वजीर कहते है -

'काये पै पैर लये बजना बिछिया,

काये पै धर लई आड़ रे।

मान्स उरौ विपदा कौ मारौ,

तोये सूजै सिंगार रे।

लोक साहित्य में प्रेम के विधि पक्ष है, आकर्षण के अनेक रूप है श्रद्धा के साथ विश्वास है और करूणा के साथ कोमलता है आत्मीयता, लोकमन को सरबोर कर देती है फिर संगी साथी मेल मुलाकात, राजी-खुशी, पुचकारने-ललकारने, राग-विराग, रीझ-खीझ, हंसी-मजाक और नाते रिश्ते का क्रम सुदृढ़ होने लगता है। यही सुदृढ़ता 'मूल्य' है लोक की व्यापकता बड़ी विशाल हैं। एकात्म कर लेने की अद्‌भुत क्षमता हैं। लोक में यहाँ सब अपने है हरदौल के साथ मेहतर बाबा भी हैं। लोक-जीवन मे 'वचन' का दूध बछड़ा नही पीता। वह माँ के साथ कूँदता फाँदता शेर के पास पहुँचता है और सबसे पहले भोज्य के रूप में अपने आप को अर्पित कर देता हैं।

आजा गेरे मामा

पैले मोई को खालें

पाछे भकौ मेरी माय।

बछड़े के द्वारा 'मामा' संबोधन सुनने बाद शेर का हृदय पिघल जाता है और वह अभयदान दे देता है इसीसे लोक साहित्य में जितनी निजता है उतनी ही समता ओर सहृदयता है इसीलिए यहाँ हर कन्या का पिता हिमांचल जैसा और जनक जैस स्थिर तथा विवेकी है तथा वर का पिता दशरथ जैसा गंभीर हैं। कन्या यहाँ पार्वती स्वरूपा है हर माँ यशोदा और कौशिल्या है इसी से लोक साहित्य में नेकी का दर्जा ऊँचा हैं। कुशल-क्षेम है कल्याण की कामना है और राजी खुशी हैं।

लोक साहित्य, लोक जीवन के साथ गहराई से जुड़ जाता है और उसमें लोक मानस के अमूल्य अनुभव सहेजकर रख दिये जाते है ये अमूल्य अनुभव भावी पीढ़ियो के लिए मार्ग प्रशस्त करते है ओर मूल्यों को आस्था के साथ जोड़ देते है लोक अनुभव का विस्तार स्पष्ट है वह गाँव से निकलकर देश की आजादी के लिए चिंतित है-

'भैया, अब सुराज के लानें,

तन-मन से लग जाने।

लोक-मन सुख के साथ दुख, बैर के साथ प्रीति अच्छे के साथ बुरे, श्रम के साथ आराम के दृश्यों को गूँथ-गूँथकर अनुभवों की माला तैयार कर लेता हैं।

लोक-साहित्य, समाज के साथ गहराई से जुड़ता है और पल पता का हिसाब रखता है, उपभोक्तावदी संस्कृति ने विश्व को बाजार बना दिया है। इन कारकों के लोकमन को प्रभावित किया है लोकरूचियों को पीछे ढकेलने का प्रयास किया है। लोकगीतों की 'फोक' कहकर हँसी उड़ाई हैं। लोक संस्कृति को होयम दर्जे की वस्तु बना दिया है मनुष्य, मशीन बनता जा रहा हैं। मशीन में गति तो होती है परंतु संवेदना नहीं होती और यह संवेदना पहले भी समाज के लिए जरूरी थी और आज भी हैं।

संचारक्रांति को नई पीढ़ी ने अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है मोबाइल संस्कृति ने नौजवानों को ग्रस लिया है, ऐसी विषम परिस्थितियों में हमें लोक की ओर लौटना होगा। लोक-कंठों की गुनगुनाहट से जुड़ना होगा। सोच को बदलना होगा। लोक-साहित्य और लोक संस्कृति, मनोवृत्तियों का परिष्कार करके संवेदनाओं को बचा सकती है तभी समाज में मूल्यों की रक्षा हो सकती है लोक की जड़ों से जुड़ने की आवश्यकता हैं।

नाजिर की बगिया,

सेंबढ़ा, जिला दतिया (म.प्र.)

पिन - 475682

मो. 9893878713

जगनिक और लोक महाकाव्य आल्हखण्ड (आल्हा)

– हरिविष्णु अवस्थी

जिस प्रकार महर्षि बाल्मीकि ने दशरथनंदन श्री राम की शौर्य गाथा को 'रामायण' ग्रंथ में संजोया एवं संत तुलसीदास जी ने उसी गाथा को 'रामचरित मानस' के रूप में प्रस्तुत किया तथा महर्षि वेदव्यास जी ने श्रीमद् भागवत पुराण की रचना कर अयोध्या पति श्रीराम एवं द्वारिकाधीष श्री कृष्ण की गाथा को संजोया तथा सूरदास जी ने सूर सागर के माध्यम से श्री कृष्ण की लीलाओं उनके चरित्र को जनमन मे स्थापित करने का श्लाधनीय कार्य किया। अपनी इस रचना धर्मिता से इन चरित्रनायकों के साथ इनके रचयिता भी अमर हो गए।

ठीक इसी प्रकार आल्हखण्ड / परमाल रासौ की रचनाकर जगनिक ने बुंदेलखण्ड के शूरमा आल्हा, ऊदल की वीरगाथा को जन भाषा बुंदेली में करके उन्हें अमर बना दिया और स्वयं इस रचना के फल-श्रुति के रूप जगनिक अमर हो गए।

धरती माता ने काले - काले मेघों से अपने नेत्रों में काजल आँज लिया है और लाल-लाल बादलों का सेंदुर अपनी मांग में भर लिया है। हरियाली की हरी साड़ी पहनकर वह खड़ी हुई है। यह दृष्य देखकर सारी सृष्टि झूम उठी है। काले मेघों ने गरज के साथ बरसना शुरू कर दिया है। इसी के साथ अल्हैत (आल्हागायक) की धुन को ढोलक की थाप ने ओज से भर दिया।

यह दृश्य किसी स्थान विशेष का नहीं। कम से कम इसे हम पूरे बुंदेलखण्ड का तो दावे के साथ कह सकते है। वैसे पूरे देश में वर्षा ऋतु में आल्हा गायन की परंपरा आज भी कायम है। आल्हा लोक काव्य सैकड़ों वर्षों से लोक कण्ठ में रसा बसा है। इस लोक काव्य का रचियता जगनिक भला कौन था? कहाँ का था? प्रश्न आज भी निरंतर बना हुआ है। देश के हिन्दी साहित्य की शीर्षक विद्वानों में इसको लेकर मत भेद बना हुआ है। इसका मुख्य कारण यही है कि इस ओर शोधार्थियों का ध्यान ही नही गया। आज स्थिति यह है कि विद्वानजन इस विषय में अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग की युक्ति को चरित्रार्थ कर रहे हैं।

आल्हा खण्ड / परमाल रासौ के रचियता महाकवि जगनिक को कुछ विद्वान राजस्थान का निवासी बताते हुए उसकी जाति भाट बताते हैं। उनका तर्क है कि जगनिक जीवकोपार्जन के सिलसिले में बुंदेलखण्ड में आया होगा और उसकी प्रतिमा से प्रभावित होकर तत्कालीन कालिंजराधिपति परमर्दि देव (राजा परमाल) ने उसे राजाश्रय प्रदान कर दिया होगा।

ऐतिहासिक प्रमाणवली और छत्रसाल के लेखक तथा छत्र प्रकाश ग्रंथ के सम्पादक डॉ. महेन्द्र सिंह का मानना है कि जगनिक आगरा जिले में स्थित खैरागढ़ तहसील का निवासी था और जगन सिंह के नाम पर ही उसके जन्म स्थान को 'जगनेर' नाम दिया गया था। विचारणीय है कि जगनिक ने अपनी यश पताका बुंदेलखण्ड में फहराई थी। फिर उसके नाम पर दूरस्थ प्रदेश में किसी ग्राम/नगर का नामकरण होना कहाँ तक संभव है?

डॉ. रामनारायण शर्मा ने अपनी कृति बुन्देलखण्ड के रचनाकार ग्रंथ में जगनिक का देवसागर तालाब एवं वीर दुर्ग (बारीगढ़) के निकट स्थित ग्राम घटहरी का निवासी बताया है। उन्होंने परमाल रासौ की प्राचीन हस्त लिखित प्रति के एक छंद का उद्धरण दिया है–

ग्राम घटहरी घर घरयो, दो दुरगा महरानि।
जेहि देवल दे कही, लहुरी थी जसरबानि।
जनगिर ताहि ग्राम को, वीर वृतिया भट्ट।
महराजा परमाल को, मित रहै रन सथ्थ।

विद्वान लेखक जयसिंह भी जगनिक को घटहरी का ही निवासी मानते है। उनका मानना है कि जगनिक के घटहरी के निवासी होने के कारण ही आल्हा, उदल उन्हें 'मामा' शब्द से सम्बोधित करते थे। क्योंकि उनका ममयावरा घटहरी में ही था। श्री जयसिंह का यह भी कथन हैं कि जगनिक ने अपने सुदृढ़ अस्तित्व के बल पर ही महोबा नगर में 'जगनेरी' नाम का मुहल्ला बसाया होगा। जैसा कि आजकल भी देखने में आता है कि गांवों, नगरों में व्यक्ति विशेष के नामों पर मुहल्लों के नाम हैं और अब भी रखे जाते हैं। उन्होंने अपने तर्कों के आधार पर यह भी स्थापित किया है कि आल्हखण्ड का रचियता महाकवि जगनिक राजा परमर्दि देव या परमाल चंदेल का

दरवारी, कवि, मंत्री दिव्यास्त्रों से सुसज्जित चतुर सेनापति माड़न का सुपुत्र जाति का भाट था।

दमोह निवासी डॉ. छविनाथ पाण्डेय जगनिक का दमोह का निवासी मानते है। इसका उल्लेख उन्होंने जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन दमोह द्वारा प्रकाशित दमोह जिले के साहित्यकार ग्रंथ में किया है।

चार पाँच वर्ष पूर्व जब मैं हटा (दमोह) का बुंदेली मेला देखने गया था तो कुछ विद्वानों को यह कहते हुए सुना था कि- जगनिक का जन्म यहाँ से दस-बारह किलोमीटर दूर स्थित 'सकोर' ग्राम में हुआ था। जब सकोर ग्राम का नाम सामने आ गया तो उस ग्राम की प्राचीनता एवं उसके पुरातात्विक महत्व के संबंध में भी कुछ जान लिया जाय।

सकोर ग्राम 24'10'' उत्तरी एवं 59'40'' पूर्वी अक्षांश देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित चौथी-पाँचवी शताब्दी का गुप्तकालीन एक प्राचीन ग्राम है। ग्राम के निकट खेतों में तत्कालीन ग्राम के अवशेष ईटों, पत्थरों, के रूप में भरे पड़े हैं जो खेतों की जुताई के समय प्रकट होते रहते हैं। इस ग्राम में गुप्तकालीन होने के प्रमाण के रूप में अब से एक सौ वर्ष पूर्व सन् 1914 ई. में यहाँ 24 सोने के सिक्के प्राप्त हुए थे। जिन पर गुप्त शासक चन्द्रगुप्त एवं समुद्रगुप्त का नाम अंकित था। यहाँ प्राप्त सिक्के इस प्राचीन ग्राम सकोर को गुप्तकालीन सिद्ध करने हेतु पर्यटन प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त यहाँ 'मढ़ा' नामक एक प्राचीन मंदिर के अवशेष भी विद्यमान हैं। मंदिर की छत सपाट तथा वर्गाकार है। दीवालों पर कोई नक्कासी नहीं है। मंदिर की चौखट पर अष्ट भुजा देवी की मूर्ति बनी है। देवीजी की मूर्ति की प्रत्येक दिशा में तीन महिला आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। दरवाजे के ऊपरी भाग में शेर का सिर बना हुआ है। देवीजी की मूर्ति के नीचे खिलता हुआ कमल पुष्प अंकित है।

दोनों ओर की बगली चौखटों पर छह नारी आकृतियाँ सुशोभित हैं। निचली चौखट की बगल में नारियों की कुछ बड़ी मूर्तियाँ भी हैं। मंदिर के भीतर दो शिवलिंग हैं जिनमें एक काफी बड़ा है। इसी स्थान पर जैन महावीर भगवान की एक प्राचीन खंडित प्रतिमा भी है। उपस्थित साक्ष्यों के आधार पर इस मंदिर का निर्माण ईसा की छटवी शताब्दी में होना प्रतीत होता है।

इस मंदिर में संवत् 1361 विक्रमी का एक शिलालेख भी है। इस सर्व विधि समपन्न ग्राम को ध्वस्त होने में अनुमानतः पाँच-छः सौ वर्षों का समय तो लगा ही होगा। अनुश्रुतियाँ इतिहास का स्रोत होती है। हो सकता है कि इस क्षेत्र में जगनिक के जन्म लेने संबंधी अनुश्रुति सत्य हो।

इस क्षेत्र के शीर्षस्थ विद्वान डॉ. श्याम सुन्दर जी दुबे, डॉ. एम.एम.पाण्डेय, संत राजनेता डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया आदि से मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है कि वह इस दिशा में शोधकार्य करने हेतु किसी पश्चिमी युवा को प्रोत्साहित कर उसका मार्गदर्शन कर सत्यान्वेषण का प्रयास करें।

विस्तर में न जाते हुए अब आल्हखण्ड की काव्य भाषा पर भी विचार करना उचित होगा डॉ. केशव चन्द्र मिश्र ने अपने शोध प्रबन्ध चंदेल और उनका राजत्व काल ग्रंथ में बुन्देली की उत्पत्ति के संबंध में लिखा है कि- पश्चिमी हिन्दी से बुन्देलखण्डी भाषा का रूप इस समय निखर रहा था। चंदेल साम्राज्य के अधिकांश भागों में बुन्देलखण्डी भाषा अपनी अनके स्थानीय बोलियों के साथ ग्यारवीं बारहवीं सदी में विकसित हो रही थी। ऐसा क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बाँदा, हमीरपुर, जालौन, झाँसी और ललितपुर जिले म.प्र. के जबलपुर , सागर और दमोह जिले ग्वालियर राज्य का सब पूर्वी भाग और बघेलखण्ड का पश्चिमी भाग प्रयाग जिले का गंगावार का भाग भोपाल तथा सारा बुन्देलखण्ड है।

डॉ. मिश्र आगे लिखते है कि हिन्दी के जिस स्वरूप की रचना यहाँ हो रही थी वह बड़ा ही सबाल था। साहित्य में लोकपक्ष की जैसी सुरूचि पूर्ण और प्रौढ़ अभिव्यक्ति उस समय यहाँ प्राप्त होती है अन्यत्र नहीं / ब्रज और अवधी युग तो शताब्दियों बाद आता है। पश्चिमी हिन्दी में लोक गीत, ग्राम साहित्य और सामाजिक जीवन को गीतों में गूँथने की स्वर, लहरी का प्रथम अवतरण यहाँ कोकल कण्ठों में हुआ भाषा में मनको मस्त कर देने वाली लोकोक्तियाँ, व्यंग, कहनौत, टहूका और अहाना तभी से पाये जाते हैं। जगनिक के काव्य इसके मनोहर उदाहरण है।

आल्हखण्ड में बुंदेली शब्दों की भरमार है। लगभग हर काव्य पंक्ति में आपको 1-2 शब्द बुंदेली के निश्चित रूप से मिलेंगे अंत में आल्हा के साथ लगाई जाने वाली साखियों के संबंध में भी थोड़ा विचार कर लिया जाय।

आल्हा गायन में साखियों का समावेश किया जाता है। यद्यपि मूल कथानक से इनका कोई संबंध नहीं होता है। साखियों की रचना आल्हागायक यथा स्थान कथानक की भूमिका तैयार करने तथा अपनी गायकी का रूतवा जमाने हेतु स्वयं कर लेता है। इन साखियों में नीति, ज्ञान, और धर्म संबंधी उपदेश अवश्य ही निहित रहतें है। वह प्रारंभ करता है-

''सावन सुहावनी रे मुरली लगे,
भइया भादौं सुहावनी मोर।
तिरिया सुहावनी रे जवई लगे,
ललना खेले पोर की दोर।''

सूरमाओं का मनोबल बढ़ाने हेतु उन्हें वह अपने कर्तव्य निर्वहन हेतु प्रेरणा देने के साथ ही साथ जीवन की निस्सारता का भी बखान करता हुआ कहता है-

सदाँ तुरैया ने फूले ना,
यारो सदाँ न साउन होय।
सदाँ सूरमा ना रन पै चढ़ै,
यारो जौ दिन सदाँन पावे कोय।।
नौनहरामी रे चाकर मरै,
यारो मरै बैल गरयार।
चढ़ीअनी पै जो कोऊ बिंचलै,
ली की मरै गरम सैं नार।।

एक दृश्य और देखें। माता सीता जी की अशोक वाटिका में स्थिति का कितना मार्मिक चित्रण इस साखी में किया गया हैं-

पतरी उँगरियाँ माता सीता कीं,
जिनके निरबल हो रये सरीर।
बैंठीं बिसरैं गढ़ लंका में,
मोरी सुध काये न लई रघुवीर।।

''जगनिक द्वारा रचित आल्हखण्ड लोक महाकाव्य, ऊर्जा का महाकाव्य है। उसमें रेखांकित व्यक्तिगत वीरता का इतना तीव्र वेग और अवाह प्रवाध है कि वह तत्कालीन परिस्थितियों ओर संदर्भो को लाँघ कर सार्वकालिक और सार्व भौमिक बन गया है। उसके नायक आल्हा, ऊदल अपनी वीरता की आदर्श उच्चता के कारण समाज की शक्ति चेतना के स्फूर्त केन्द्र हो गए हैं। फलस्वरूप उसकी जीवनी शक्ति लोक की बन गई है और आज का लोक भी उससे प्रेरणा पाकर अपने अंदर फूटती ओजस्विता अनुभव करता है परिस्थिति और जीवन की विषमताओं से जूझने की जब तक जरूरत है जगनिक के आल्हखण्ड का जुझरू शौर्य अपनी अस्मितता बनाये रहेगा।

अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
पिन 472001
संपर्क- 9407873003

कालिंजर-सतयुग से कलियुग तक

– एन.डी. सोनी

विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत श्रेणियों में विन्ध्याचल को सुमार किया जाता है। इसी विन्ध्यांचल पर्वत की एक शाखा नीलकंठ पर्वत पर कालिंजर अवस्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति 25°-1' उत्तरी अक्षांश और 80°-29' पूर्वी देशान्तर पर है जो उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला में बाँदा नगर से 56 कि.मी. दूर सड़क मार्ग पर स्थित है। धरातल से लगभग 800 फीट ऊँचे तीव्र ढाल वाले पर्वत पर कालिंजर नामक तीर्थ और किला अवस्थित है। पर्वत के ऊपर लगभग 2850 हेक्टेयर क्षेत्र समतल धरातल के रूप में होने से यहाँ विशाल दुर्ग या किला प्राचीर से घिरा हुआ निर्मित है। इसी प्राचीर के भीतर अनेक धार्मिक स्थल देखने को मिलते है।

सतयुग से लेकर लगभग एक हजार वर्ष पूर्व तक यहाँ घने जंगल पाये जाते थे जहाँ आदिवासी निवास करते थे। इन्हीं जंगलों में ऋषि मुनियों ने अपने आश्रम बनाये और यहाँ तपस्या की। इसे सृष्टि के आदिकालीन स्मारकों में गिना जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, और महेश का यहाँ समय-समय पर वास होने से इसे पवित्र स्थल मानते हुए ऋषियों ने इसे तीर्थ की गरिमा प्रदान की। अपनी तपस्या से प्राप्त ज्ञान का मानव हित में प्रयोग किया और धर्माचरण के नियमादि बनाये। विभिन्न देवी-देवताओं की भक्ति प्रारम्भ हुई और आगे चलकर अनेक मतों के धर्मानुयायिओं ने अपने-अपने ढंग से देवताओं की पूजा हेतु मंदिर या धार्मिक स्थल निर्मित किये। ऋषियों ने देवताओं की पूजा हेतु मंदिर या धार्मिक स्थल निर्मित किये। ऋषियों ने देवताओं की उपासना को मानव हित से जोड़ा। प्राकृतिक शक्तियों जैसे जल, वायु, अग्नि के देवता निर्धारित किये। इसी क्रम में कालिंजर पर्वत पर भी सबसे पहले शैव धर्म के संबंधित स्थलों का निर्माण हुआ। वर्तमान विकास ने सभी क्षेत्रों की प्राकृतिक दशा को नष्ट-भ्रष्ट करके उसके स्वरूप को इतना बदल दिया है कि उसकी प्राचीन दशा की कल्पना करना भी मुश्किल है। इसी कारण कालिंजर की वर्तमान दशा से उसके वेदकालीन स्वरूप को केवल साहित्य या इतिहास के माध्यम से ही जाना जा सकता है। फिर भी आज कालिंजर के अवलोकन में जो स्थल देखने को मिलते है वे अपने गुजरे जमाने की दास्तान कहते जरूर है।

पौराणिक ग्रन्थों में कालिंजर के बारे में कहा गया है कि सतयुग में इसे कीर्ति नगर कहा जाता था जो चेदि नरेश उपरचरि वसु के अधीन रहा था। त्रेता में मध्यगढ़ के नाम से कौशल राज्य मे था जो बाद शिशुपाल के अधीन रहा। द्वापर में सिंहलगढ़ के नाम से जाना गया और कलियुग में कालिंजर कहा जाने लगा।

ऐसा कहा जाता है कि समुद्र मंथन से जो विष प्राप्त हुआ उसे भगवान शंकर ने अपने गले में धारण कर लिया था। उसकी गर्मी को शाँत करने हेतु वे कालिंजर पर्वत पर अगाध सरोवर में लेटे रहे जिससे उसका जल नीला हो गया। वह सरोवर और नीलकंठ मंदिर इसी के प्रतीक हैं जिन्हे अब भी देखा जा सकता है। वेदों व पुराणों में कालिंजर को अति प्राचीन शैव और शाक्त मत का संयुक्त तीर्थ कहा गया है। इसीलिए पर्वत का नाम नीलकंठ पर्वत पड़ा होगा। वायु पुराण इसे पवित्रतम श्राद्ध तीर्थ मानता है। स्कन्द पुराण के अनुसार कालिंजर को मुक्ति स्थल के रूप में प्रयाग, कुरुक्षेत्र, अवन्तिका, मथुरा के समान माना गया है। मत्स्य पुराण इसे सती तीर्थ कहता है और अमरकंटक व महाकालेश्वर उज्जैन के समान अविमुक्त क्षेत्र मानता है जहाँ शिव हमेशा वास करते है। यह वेदोक्त तपोभूमि है। शिव को आदि पुरुष या पौरूष का प्रतीक मानकर लिंग पूजा और काली को आदि शक्ति मानकर योनि की पूजा का विधान ऋषियों ने किया। कालिंजर जहाँ शैव मत के अनेक मंदिर और मूर्तियों को अपने में समेटे हुए है वहीं अन्य धर्मों के देवी-देवताओं के प्रतीक तथा ऋषियों की कथाओं से जुड़े प्रतीक भी दर्शनीय है।

कालिंजर पर्वत पर विशाल किले का निर्माण होने से उसकी प्राचीर लगभग पूरे पर्वत को घेरे हुए है इसलिए समस्त धार्मिक व अन्य दर्शनीय स्थल किले के भीतर ही सुरक्षित हो गये है। यहाँ शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, भैरव की अनेकों मूर्तियाँ और मंदिरों के साथ उनके नाम के जलाशय देखे जा सकते है। किले में जाने के लिए जो सात द्वार पर्वत की चढ़ाई पर बने है। उनमें दूसरा द्वार गणेश द्वार कहलाता है जहाँ गणेश

जी की मूर्ति बनी है। तीसरा द्वार चंडी द्वार कहलाता है जहाँ चट्टान पर शिव की प्रतिमा उकेरी गई है। इसके थोड़ी दूर बलखण्डी महादेव के नाम से द्वार बना है। चौथे स्वर्गारोहण द्वार के पास भैरव कुण्ड, विशाल भैरव प्रतिमा तथा गुफा देखने को मिलती है। पाँचवे द्वार के पास भी चट्टानों पर उकेर कर बनाई गई काली, गणेश, शिव, पार्वती, नंदी, चंडिका तथा शिवलिंग की सुन्दर प्रतिमायें हैं। किले में ऋषियों की सिद्ध गुफा है जिसके आगे भैरो की झिरिया नामक कुण्ड चट्टान पर कई स्तम्भों के सहारे बना है। यहाँ भैरव जी की आठ-नौ फीट ऊँची नग्न प्रस्तर मूर्ति बनी है जो भक्तों के साथ तांत्रिकों के आकर्षण का केन्द्र है। किले में लगभग 90 मीटर से अधिक लम्बा कोटि तीर्थ नामक तालाब है जिसके दक्षिणी भाग में बंधान पर एक छोटा मंदिर है जिसमें कई आकार के शिवलिंग बने है। शैव मत के इस केन्द्र पर भक्तों का कहना है कि इस तालाब में नहाने से कई तीर्थों का पुण्य प्राप्त होता है।

मृगधार नामक एक अत्यंत सुन्दर स्थल है जहाँ से आगे नीलकंठ मंदिर अनेक स्तम्भों पर बना है जिसकी रचना व अलंकरण खजुराहो के समान बेजोड़ है। बताया जाता है कि पहले यह मंदिर सात मंजिला था जो अब एक ही मंजिल का रह गया है। मंदिर में मुख्य शिवलिंग 135 से.मी. ऊँचा है और परिक्रमा में विभिन्न आकारों के अनेक शिवलिंग बने है। स्वर्गारोहण कुण्ड के उपर चार चौकोर खम्भों पर चट्टान काटर महादेव-पार्वती और सर्पों की श्रंखला बनी है। यहीं भैरव, गणेश, ब्रम्हा और सरस्वती (हंस वाहिनी) की मूर्तियाँ दर्शनीय है।

स्वर्गारोहण कुण्ड के दाईं ओर कुण्ड के जल में खड़ी एक महाकाय 16 हाथ उँची भैरवमूर्ति है जिसके ह्रदय पर नरमुण्ड माला, गले में नाग माला, कानों में सर्प के कुण्डल हाथों में सर्प के बलय शोभायमान है। बगल में काली की मूर्ति है। नीलकंठ मंदिर के दाईं ओर सदाशिव की 2) मीटर ऊँची खड़ी प्रतिमा जिसके नौ मुख और अठारह हाथ है। हाथों में धनुष, नरमुण्ड, शक्ति, त्रिशूल, डमरू, रूद्राक्ष, चक्र, खप्पर, अंकुश तलवार, ज्वाला आदि है। दो हाथ आकाश की ओर और एक हाथ अभय मुद्रा में रूपायित है। भाल पर गंगा और अर्द्ध चन्द्र खचित है। शिव के इस रूप के दर्शन शायद और कहीं मिले। कालिंजर से जुड़ी एक कथा यह भी है कि यहाँ शिव और काली का विवाह औपचारिक रूप करवाया गया था। यहाँ ऐसे और भी अनेक स्थल है जो शैव साधना से जुड़े हैं। किले के भीतर के दर्शनीय स्थलों में सर्वाधिक शिव और काली व भैरव को समर्पित हैं। इससे यह बात सिद्ध होती है कि कालिंजर किसी समय शैव मत का अत्यंत महत्वपूर्ण केन्द्र रहा होगा।

शैवधर्म के बाद यहाँ वैष्णव धर्म से संबंधित मंदिर, जलाशय, मूर्तियाँ व अन्य प्रतीक देखने को मिलते है। त्रेता के राम अवतार और द्वापर के कृष्ण अवतार की कथाओं से जुड़े जो स्थल यहाँ विद्यमान हैं उनमें कोटितीर्थ के पास वैष्णव मंदिर के भग्नावशेष, सीता कुण्ड, सीता सेज, मृगधार, हनुमान कुण्ड, आदि है। कहा जाता है कि भगवान राम वनवास के समय यहाँ रहे थे उसी के प्रतीक रूप सीता सेज व सीता कुण्ड बनाये गये। नारायण कुण्ड, सौमित्र क्षेत्र, भगवान सेज, हनुमान द्वार आदि भी वैष्णव धर्म के प्रतीक है। विष्णु के नृसिंह रूप की मूर्ति भी यहाँ स्थापित है। पाण्डवों के वन गमन के समय उनके यहाँ रूकने के प्रतीक रूप पाण्डव गुफा है। रामायण और महाभारत में कालिंजर का वर्णन है। कालिंजर को सतयुग में गंगा, त्रेता में सरस्वती द्वापर में प्रभा और कलयुग में बृद्ध क्षेत्र के नाम से पुकारा गया है। कालिंजर में खुदाई के समय जैन और बौद्ध धर्मों से संबंधित मूर्तियाँ भी मिली हैं जो बताती हैं कि यहाँ हिन्दू धर्म के अलावा अन्य धर्मों के अनुयायी भी रहे होगें भले उनकी संख्या और काल कम रहे हों। मुगल शासन के समय इस्लाम धर्मानुयायी भी कालिंजर में रहे जिसके प्रतीक स्वरूप मस्जिद और मुसलमान योद्धाओं की मूर्तियाँ भी हैं।

कलयुग में कालिंजर का धार्मिक महत्व धीरे-धीरे घटने लगा और विभिन्नशासकों द्वारा शासन के समय अलग-अलग धर्मों का प्रभाव देखा गया। किले के निर्माण से यहाँ का ऐतिहासिक महत्व बढ़ गया। अंग्रेज इतिहासकार कर्नल टाड ने कालिंजर के किले को सर्व प्रथम शकुन्तला- दुष्यन्त पुत्र भरत के द्वारा निर्मित माना। किले का निर्माण शदी के प्रारम्भ काल का भी माना जाता है। कुछ इतिहासकार इसे चौथी शताब्दी में नाग वंश के शासकों द्वारा निर्मित मानते है। इतिहासकार फरिस्ता के अनुसार इसका निर्माण पहले पहल सातवीं शताब्दी में केदार नामक शासक द्वारा माना गया है। किले के निर्माण की

शुरूआत किसी ने की हो लेकिन जिन शासकों ने यहाँ शासन किया उन्होंने अपने हिसाब से कुछ न कुछ निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य किया होगा। धीरे-धीरे किले का आकार बढ़ता गया और इसका वर्तमान स्वरूप आज हमारे सामने है, भले ही यह अनेक जगह ध्वस्त हो गया हो। नाग शासकों से लेकर कालिंजर गुप्त वंश, प्रतिहार, कालचुरी, चंदेल, मुगल और बुन्देला राजाओं के आधिपत्य में विशेष रूप से रहा। किले का अधिकांश निर्माण चंदेल शासकों के समय हुआ। यशोवर्मन चंदेल (930 से 950 ई.) ने इसे प्रतिहारों से जीता और फिर सैकड़ों वर्षों तक उन्हीं के पास रहा। चंदेल शासकों ने धीरे-धीरे पूरे पहाड़ को घेर कर विशाल और मजबूत प्राचीर और उसके भीतर किला तो बनवाया ही साथ में धार्मिक स्थलों की जीर्णोद्धार और नवीन निर्माण भी करवाया। 800 फीट ऊँचे पर्वत पर किले में पहुँचने के लिये सुरक्षा की दृष्टि से सात दरवाजे बनवाये ताकि शत्रु का किले में पहुँचना मुश्किल हो। इसे देश के अजेय दुर्गों में गिना जाता रहा। यहाँ तक कि किले को मुगल जैसी विशाल सेना भी फतह नहीं कर पाई। चंदेल शासकों ने यहाँ भवन, जलाशय, मूर्तियाँ, सेना के बैरक, सड़के, परेड ग्राउन्ड आदि का खूब निर्माण करवाया जिसका दर्शन करने पर्यटक आते है। चंदेल वास्तुकला की यहाँ यह विशेषता देखी जाती है कि किले की मजबूती और विशालता के साथ सौंदर्य भी अप्रतिम है। इतनी ऊँचाई पर वर्षा जल को एकत्र कर जलाशयों में पूरे साल उपयोग करने व्यवस्था की चंदेलों के बाद फिर बुन्देलों ने भी उनकी परम्परा कायम रखते हुए कुछ निर्माण करवाया जिसकी प्रतीक परमाल बैठका अभी भी विद्यमान है। प्रकृति ने सारे निर्माण को भग्नावशेषों के रूप में बदल दिया है। यही भग्नावशेष उपरि वर्णित सारी कथा कहते है। वे ही कालिंजर का गौर बगान कर पर्यटकों को बुलाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. चंदेल और उनका राजत्व काल (केशव चन्द्र मिश्र) प्रकाशक नागरी प्रचारणी सभा, काशी
2. बांदा वैभव (डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव) सन 1994
3. उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर - बाँदा
4. बुन्देल खण्ड का इतिहास (चंदेल कालीन-डॉ. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय)
5. कालंजर प्रबोध (डॉ. हरि ओम ब्रह्म शुक्ल)

राजमहल के पास, टीकमगढ़

मो. 7999375995

बुंदेली भाषाः कुछ सारगर्भित तथ्य

– शरद नारायण खरे

प्राचीन काल में बुंदेली में शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश बीजक, राजपत्र, मंत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते है, कहा तो यह भी जाता है, कि औरंगजेब और शिवाजी भी क्षेत्र के हिन्दू राजाओं से बुंदेली में ही पत्र व्यवहार करते थे। ठेठ बुंदेली का शब्दकोष भी हिन्दी से अलग हैं। और माना जाता है, कि वह संस्कृत पर आधारित नही हैं। एक-एक क्षण के लिए अलग-अलग शब्द हैं। गींतो में प्रकृति के वर्णन के लिए, अकेली संध्या के लिए बुंदेली में इक्कीस शब्द हैं। बुंदेली में वैविध्य हैं इसमें बांदा का अक्खड़पन है और नरसिंहपुर की मधुरता भी विद्यमान हैं।

बुंदेली का पाटी पद्धति में सात स्वर 45 व्यंजन हैं। कामतंत्र व्याकरण ने संस्कृत की सरलीकरण प्रक्रिया में सहयोग दिया। बुंदेली पाटी का शुरूआत ओना मासी मौखिक पाठ से प्रारंभ हुई। विदुर नीति के श्लोक विन्नायके तथा चाणक्य नीति चन्नायके के रूप में याद कराए जाते थे। वणिक प्रिया के गणित के सूत्र रटाये जाते थे। नमः सिद्ध मने ने श्रीगनेशाय नमः का स्थान ले लिया।

कायस्थों तथा वैश्यों ने इस भाषा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया उनकी लिपि मुडिया निम्न मात्रा विहीन थी। स्वर वैया से अक्षर तथा मात्रा ज्ञान कराया गया। चली चली बिजन वखों आड़ का से आई का का ल्याई .... वाक्य विन्यास मौलिक थे। प्राचीन बुंदेली विंध्यशैली के कलापी सूत्र कलापी में प्राप्त हुए हैं।

बुंदेली के वारे में कहा गया है – बुंदेली वा या है जौन में बुंदेलखण्ड के कवियों ने अपनी कविता लिखी, बारता लिखवें वारों ने वारता (गद्य) लिखी। जा भाषा पूरे बुंदेलखण्ड में एकई रूप में मिलत आय। बोली के कई रूप जगा के हिसाब से वदलत जात हैं। जई से कही गई है, कि कोस कोस पे बदले पानी गांव गांव में वानी। बुंदेलखण्ड में जा हिसाब से बहुत सी बोली चलन में है जैसे डंघाई, चौरासी, पवारी, विदीशयीया (विदिशा) जिला में बोली जाने वाली आदि।

बुंदेली का इतिहास – वर्तमान बुंदेलखण्ड चेदि, दशार्ण एवं का रूप से जुड़ा था यहां पर अनेक जनजातियां निवास करती थी। इनमें काल निषाद स्वतंत्र भाषाएं थी जो विचार - अभिव्यक्ति का माध्यम थी भरत स्वतंत्र भाषाएं थी भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में इस बोली का उल्लेख प्राप्त है।

मध्यप्रदेशीय भाषा का अविछन्न रूप से ईसा की प्रथम सहस्त्राब्दी के सोर काल में और इसके पूर्व कायम रहेंगे। नाथ तथा नागपंथों के सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया उसके स्वरूप अलग-अलग जनपदों में भिन्न-भिन्न थे। वह देशज प्रधान लोकभाषा थी। इसके पूर्व भी भवभूति उत्तर रामचरित के ग्रामीणजनों की भाषा विंध्यशैली प्राचीन बुंदेली ही थी। संभवत: चंदेल नरेश गंडदेव (सन 140 से 999 ई.) में तथा उसके उत्तराधिकारी चंदेल विधाधर (999 ई. से 1025 ई.) के काल में बुंदेली के प्रारंभिक रूप में महमूद गजनवी की प्रशंसा की कतिपय पंक्तियां लिखी गई। इसका विकास रासो कृत्य धारा के माध्यम से हुआ। जगनिक आल्हा खंड कवि के रूप में प्राप्त सामग्री के आधार पर जगनिक एवं विष्णुदास सर्वामान्य है, जो बुंदेली की समस्त विशेषताओं से मंडित हैं।

जो बोली दमोह, सागर, झांसी में बोली जाती है वो ठेठ तथा जो विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद में बोली जाती है क्षेत्रीय बुंदेलखंडी कहलाती है यह तो सुस्पष्ट है, कि बुंदेलखण्ड के निवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा बुंदेली है पर यह कहना कठिन है, कि बुंदेली कितनी पुरानी है, लेकिन ठेठ बुंदेली के अनूठे है, जो सदियों के आज तक प्रयोग में आ रहे है बुंदेली के ढेरों शब्दों के अर्थ बंग्ला तथा मैथिली बोलने वाले आसानी से बता सकते है यह तो सभी को मालूम ही है, कि इसकी लिपि देवनागरी है।

बुंदेली की व्याकरणता विशेषताएं – बुंदेली भाषा का बुनियादी शब्द भंडार और व्याकरण अपने जनसमाज की भाषा संबंधी हर आवश्यकता पूरी करने योग्य है यह भाषा समाज के हर प्रकार के विकास के लिए महान अस्त्र है और उसके ऐतिहासिक विकास की महान सफलता भी हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार बुंदेली ध्वनि में 10 स्वर 27 व्यंजन है देवनागरी के शेष 16 अक्षर इसमें नही है। इन दस स्वरों में से उच्चारण हिन्दी साहित्य में भिन्न है बुनियादी 750 शब्दों में से

मुश्किल से 50 शब्द दोनो भाषाओं में होगे। इतने ही और शब्दों को खींच तानकर समानता ढूंढ़ी जा सकती है बाकी बुनियादी तौर पर पृथक है, क्रियाओं के विभिन्न काल बनाने के प्रत्ययों में सब सह दूसरे से भिन्न है और कोई समानता नही है धातुओं में विकास भी भिन्न प्रकार से होती है, क्रियाओं में जुड़ने वाले सब प्रत्ययों का हिन्दी मे अभाव है हिन्दी प्रत्यय संस्कृत से लेती है, जो बुंदेली से बिल्कुल नही मिलते है, बुंदेली संज्ञा शब्दों की हिन्दी से भिन्नता है यह भिन्नता भाववाचक ओर व्यक्ति वाचक नामो में तो बहुत है ही जातिवाचक नाम भी काफी भिन्न प्रकार के है कारक के चिन्हों में से केवल 4 चिन्ह समान है शेष 10 भिन्न है कारण संबंधी विकार भी हिन्दी से भिन्न से भिन्न होता हैं।

बुंदेली सर्वनाम 33 है 10 मूल और 23 रूपांतर कै इनमें केवल 7 एक मूल और 6 रूपांतरों के हिन्दी से समानता रखते है, शेष 26 भिन्न भिन्न हैं। विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक और विस्यमयादि बोधक शब्द, अधिकतर हिन्दी से भिन्न है बुंदेली के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया शब्द सभी अति संक्षिप्त होते हैं स्वरों का भारी उपयो होता है अधिकांश मूल शब्द एक दो अक्षरों के होए गए हैं। तीन अक्षरों से अधिक वाले शब्द केवल सात है चार से ज्यादा तो विरले ही होते है इसके मुकाबले हिन्दी के शब्द अधिकतर भारी भरकम होते हैं।

वास्तव में बुंदेली भाषा जीवित व वैज्ञानिक भाषा है जबकि हिन्दी किसी भी क्षेत्र की मातृभाषा नही है वस्तुत: बुंदेली का बुनियादी शब्दभंडार और व्याकरण का सांगोपात्र ढीचा व्यापक रूप में प्रकाश में लाये जाने की आवश्यकता है जिससे बुंदेली गद्य का समय विकास भलीभूत हो सकेगा औ जीवंत क्रियाशीलता विकसित हो सकेगी।

शासकीय जे.एम.सी. महिला महाविद्यालय
मंडला म.प्र. 481661
मो. 9425484382

अज्ञात संत जूड़ीराम : संत साहित्य की नवीन उपलब्धि

– डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

भारत भूमि आध्यात्मिक संस्कारों की पुण्य भूमि हैं यहाँ व्यक्ति को जन्म से ही धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण मिलता है। जीवन जगत का यही वातावरण व्यक्ति के सोच और आचरण को जाने-अनजाने प्रभावित करता है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अनुभूति और संवेदना की तरंगे सतत तरंगित होती रहती है जो समाय पाकर किसी न किसी माध्यम से प्रस्फुतित होती है। यही तरंगे रचना का स्तर पाती हैं। रचना किसी भी व्यक्ति के अन्तार्जगत की अभिव्यक्ति होती है। यह ज्ञानी-अज्ञानी, पढ़ा-अपढ़ा कुछ नहीं देखती भावनाओं का यह प्रवाह पहाड़ी झरनों की तरह है जो कहीं भी शिलाओं के बीच से वह निकलता है। यही कारण है कि हमारे गाँव-गाँव में ऐसी प्रतिमायें मिल जाती है जिन्होंने विधिवत शिक्षा भले न पाई पर सत्संग और अनुभवों ने उन्हें ज्ञानी बना दिया। भारत वर्ष में निर्गुणिया संतों की परम्परा किसी विद्यालयीन उपाधियों के बल पर पल्लवित नहीं हुई, अपितु जीवन-जगत के अनुभवों और देश-दुनिया के दर्द-पीड़ाओं, दुख-सुखों तथा ईश्वरीय विश्वासों ने उन्हें ऐसी क्षमता दी कि वे ज्ञानी संतों की कोटि में प्रतिदिन हुए। इनकी संख्या सैकड़ों में नहीं बल्कि हजारों में है।

इनमें भी तीन श्रेणियों के संत कवि है। पहले तो वे जो समय के साथ समाज में प्रकाशित संकलित और प्रतिष्ठित हुये। इन्हें हम प्रख्यात या ज्ञात श्रेणी में रख सकते है। दूसरे वे जिन्हें अपने समय में उतनी ख्याति नहीं मिली, प्रचार-प्रसार भी कम हुआ और कृतिव भी सामने नहीं आ सका। यहाँ-वहाँ कभी कभी नामोल्लेख अवश्य होता रहा। इन संत कवियों को हम अल्पज्ञान श्रेणी में परिगणित करते है। तीसरे वे संत-कवि है जो अपनी सीमाओं में रहकर भक्ति परक भावनायें यहाँ-वहाँ व्यक्त करते रहे। उनके शिष्यों या शुभचिन्तकों ने उन्हें सुनकर याद करके यहाँ-वहाँ कागजों में अंकित कर लिया हो या लोककंठ में स्मृति के बल पर जीवित रह गये है। परन्तु न तो उनकी रचनाओं का विधिवत संकलन हुआ न ही समाज में दूर-दूर तक ख्याति मिली। ऐसे अज्ञान कवि संतों की संख्या सैकड़ों में है जो कभी-कभार साहित्य-प्रेमियों या शोधार्थियों के हाथ लग जाते है और उन्हें प्रकाशन का अवसर मिल जाता है। संत कवि जूड़ीराम तृतीय श्रेणी के सर्वथा अज्ञात संत कवि हैं जो अभी तक अंधेरे में पड़े थे। उन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय जाने-माने विद्वान डॉ. श्यामसुन्दर दुबे को है जिन्होंने एक ग्रामीण से उनके भजनों का संग्रह पाकर आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल के माध्यम के प्रकाशित करवाकर साहित्य-जगत को एक नये संत-कवि से परिचित कराया।

बरखेरा गाँव के हरिशंकर परिवार भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इतने वर्षों तक संत जूड़ीराम की हस्त लिखित पोथी को सुरक्षित रखा और सुयोग्य व्यक्ति को सौपकर सत्कृत्य किया। यह कृति नाम बिन चीन्है शीर्षक से प्रकाशित हैं लगभग दो सौ वर्ष पूर्व संत जूड़ीराम बरखेरा गाँव में मौजूद थे जिन्होंने अपनी पोथी जोड़ीराम गंथ बजिक खैत्र सुधा संवद 1902 मुकाम बरखेरा में पूरी की यह सन् 1845 की बात है।

डॉ. दुबे ने ग्रंथ की भूमिका में संत कवि और उनके भजनों का गहन विश्लेषण किया है और उन्हें निर्गुण काव्य-परमारा के संत मार्गी प्रवृति का बतलाया है। भजनों का देखने से भी इसकी पुष्टि होती है। असल में भक्ति जगत के किसी भी संत को पूरी तरह निर्गुण या सगुण कोटि में रखना कठिन होता है। यद्यपि अध्ययन-अध्ययन की सुविधा के लिए संत की रचनाओं में आई प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर निर्धारण आवश्यक हो जाता है। भक्तिकाव्य परमारा में निर्गुण और सगुण दो प्रमुख धारायें रही है। निर्गुण में ज्ञानमार्ग और प्रेममार्ग तथा सगुण में रामकाव्य धारा और कृष्णकाव्य धारा प्रमुख है। तुलसीदास सगुणधारा के प्रमुख कवि माने जाते है। परन्तु वे भी लिखते है- अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा। कबीर निर्गुणधारा के प्रमुख कवि होकर भी राम का सादर स्मरण करते हैं- राममोरे पीउ में राम की बहुरिया या मैं तो कूता राम का मोतिया मेरा नामी संत जूड़ीराम भी निर्गुण पंथ के होकर भी तमाम देवी-देवताओं को ईश्वरीय गुणों स्वरूपों का बार-बार स्मारण किया है किसी भारतीय संत ने सगुण को पूरी तरह से नहीं नकारा। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार- ''प्रेम दोनों का ही मार्ग था, सुख ज्ञान दोनों को ही अंतिम था, केवल

बाहयाचार दोनों में से किसी को भी संमत नहीं था आन्तरिक प्रेम निवेदन दोनों को ही कुष्टता, अहैतक भक्ति दोनों की काव्य थी, आत्म-समर्पण दोनों के साधन थे, भगवान की लीला में दोनों ही विश्वास करते थे।

(मध्यकालीन धर्म साधन)

निर्गुण संतों की तरह जूड़ीराम भी प्रतिमा-पूजन व अवतार वाद को नहीं मानते थे। पाखंड छुआछूत जाति-पांति, आडम्बरी रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, जप-तप आदि को उन्होंने भी नकारा गुरू की महिमा प्रतिपादित की। अपने को दुर्गुणों का भंडार और आराध्य को गुणों का सागर सर्व समर्थ सबका पाजन और उद्धार करने वाला बताया है। उन तमाम के नाम गिनये जिनका प्रभु ने उद्धार किया वे अपने उद्धार के लिए बार-बार निवेदन करते है। आराध्य की महत्त और अपनी तुच्छता का अनेक प्रकार से बखान करते है। यद्यपि उन प्रसंगों को नहीं मूलते जिनमें भक्तों के उद्धार के ईश्वर अनेक रूपों में प्रगट हुए। यहाँ अवतारवाद की पुष्टि हो जाती है। इस प्रकार उनके विरोधाभास भी तमाम संतों में मिलेंगें लेकिन इन विरोधाभासों में कहीं दुराग्रह नही है। प्रेम, समर्पण, और विश्वास प्रमुख है। निर्गुण संतों की तरह जूड़ीराम ने भी मारी से दूर रहने की सलाह दी है। सामाई जीवन में व्याप्त कुरीतियों, रीति, रिवाजों, धार्मिक पाखंडों, भेद के विरोध का उद्देश्य समाज को सत्य से अवगत कराकर जगाना था। जनमानस को झकझोर कर सचाई और अच्छाई के मार्ग पर लाना था। जूड़ीराम उसी परम्परा के ग्रामीण से हैं जो अत्यंत विनम्र और अहंकार-शून्य हैं। उन तमाम तथ्यों की पुष्टि डॉ. दुबे ने अपनी भूमिका में यद्यपि उदाहरण किया है। संसार की नश्वरता और जीवन की क्षण भंगुरता सभी संतों में देखी जा सकती है।

जुड़ीदास का यह संग्रह चार भागों में विभाजित है- भज के अन्तर्गत 123 भजन है। जिनके स्वर हैं- भजन विनातन कथा वहायो।......भजन बिना जुग-जुग उहकायो। ....अपने प्रिया जू गीत जगाई। ....अब गुरू सरन लियो तक तेरो।.....भूल खलघ खलघ माया की। ....दिल कहुँ न मिला जग ठगिय है।....राम रस पवित्र पीर शमाई.......जनक सुता पति सर तुम्हारे।''

संत कवियों की तरह जूड़ीराम ने भी संसार को या और क्षणभंगुर कहा है। देह मोह से दूर रहने की बात कही बसन्त के अनतरित 6 पद है- ''होली खेलो सकी हरि के संग।.....देखो साधो रित बसंत होरी खेलत आहू अंत 3- मंगल में कुल 7 पद है- ''बिन सतगुरू के उपदेश नर सोई रे........ जूड़ीराम चित चेत भजो हरनाम रे 4 दुलरी मे 9 पद हैं- गुरू समरत दीनदयाल होदी जान दया करो। संग्रह के चार भाग भले हों, पर सर्वत्र वही भावनायें दोहराई गई हैं। वे ठाकुरदास को अपना मानते हैं। उनका अनेक बार स्मरण किया है- सर्वत्र ठाकुरदास सतगुरू मिलें हो नासो सकल कलेस हो।

जूड़ीराम की भाषा ग्रामीण अशिक्षित संत-जन की है जिसमें किसी प्रकार का बनावश्रृंगार नहीं हैं। शुद्धता-अशुद्धता की चिन्ता नही है। जैसा वोलना-चालना, उसी को अंकित करना किसी अलंकारिता का प्रयास नही। चूंकि वे बुन्देलखण्ड के थे, अतः बुन्देली शब्दावली का सहज प्रयोग है। भावनायें मुख्यत: निर्गुण संतो जैसी है। हर पद के अंत जूड़ीराम नाम जुड़ा हुआ है जिससे किसी और का होने का कतई भ्रम नहीं है।

डॉ. श्यामसुन्दर दुबे बधाई के पात्र है। जिन्होंने अज्ञात संत कवि और उसके कृतित्व से अवगत कराया। विद्वता भूमिका के साथ प्रत्येक पद का अर्थ भी दिया ताकि पाठकों को समझने में असुविधा न हो। हो सकता है कि कतिपय शब्दों के अर्थ को लेकर मत-भिन्नता हो कि यह कोई गंभीर बात नहीं है। आदिवासी लोककला परिषद म.प्र. भोपाल ऐसी कृतियाँ का प्रकाशन दर प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

संत कवि की भाव-भाषा-शैली जानने के लिए तीन भजन उदाहरणार्थ

1. ऐसो जीव जाल पचिहारो।
   रच रच रहो गहीन मारग काम क्रोध माया मतवारो।
   नाइक भार भरो माया को वन-वन फिरे भार नहिं डारो।
   नहि जानत कब कालम पारे जैसे बाजझवा को मारी।
   जूड़ीराम नाम बिन चीन्हें, फिर-फिर जगत जालमें डारों
2. जूब ते आयो राम के।
   भगो विवाद कल्पना जीव की पचि-पचि रट बस एक नाम को।
   उर आनन्द कंद सब छूटो तिमिर नास भयो उदै भान के।
   दुविधा दूर भई सब तन की मन बैठी आनन्द धाम के।
   जूड़ीराम काम भयो पूरन, आठ पहर धुन ध्यान धाम के।

ए-7 फारचून पार्क, जी-3 गुलमोहर
भोपाल (म.प्र.) 462039
मो. 9425376413

बुंदेली लोकगीतों की लुप्त होती विधाएं

– डॉ. दुर्गेश दीक्षित

बुंदेली लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं और लौकोक्तियों में बुंदेली में बुंदेली लोक संस्कृति का अक्षय भण्डार सुरक्षित हैं। यहाँ के पर्वों, त्योहारों ऋतुओं और संस्कारों के लोकगीत अलग-अलग लोक ध्वनियों में आबद्ध हैं। आज से पचास वर्ष पूर्व इनका आनन्द ही अलग था। लोकगीतों की लोक ध्वनियों को सुनकर लोग ऋतुएँ, पर्वों, त्योहारों और संस्कारो का अनुमान लगा लेते थे। फसल काटती हुई महिलाएँ, समवेत स्वर में जब बिलवाई गाने लगती थी और तब आनंद-रस की वृष्टि होने लगती थी और मार्ग चलने वाले पथिक ठिठक कर रह जाते थे और उस मधुर स्वर लहरी का आनंद लेते रहते थे। जरा सुनिए, उस स्वर लहरी को –

"दिन वूड़े धरा दई लम्मी मांग, किसान भइया
वेरा तो भई रे घर जावे की"
"घालों-घालों री धरम के दो-दो हाथ, किसान भड़या,
वेरा तो भई रे घर जावे की"

महिलाएं दिन भर खेतों में काम करती रहती थी और उन्हें जरा भी थकावट का अनुभव नहीं होता था। वे हंसती-ठिलठिलाती हुई घर लौट जाती थीं। लोकगीत गाने से श्रम का परिष्कार अपने आप हो जाता था। आज कल फसल कटाई का काम हारवेसटर से हो रहा है महिलाएं वेरोजगार होती जा रही हैं। इस कारण से उन्हें बिलवाई गीत गाने का अवसर ही नही मिलता औ ये लोक-धुन विलुप्त होती जा रही हैं।

तीर्थाट बुंदेल-वालाएं समवेत स्वर में बाबा के गीतों का गायन करती हुई मीलों पैदल चली जाती थी और कभी बैलगाड़ियों में बैठकर लमटेरा गा-गा कर रस-वर्षा करती थी। छम-छम करती हुई बैलगाड़ियाँ में दौड़ती जाती थी और उनमें बाबा के गीतों के स्वर रस-वर्षा करते थे, कितना आनन्द आता था उन लमटेरा लोकगीतों में नर-नारियों का उत्साह, लगन और निष्ठा देखते ही बनती थी।

"दरस की अरे वेरा तो भई रे, वेरा भई रे,
पट खोलो छबीले महराज हो, दरस की अरे हो।"
"गनेश बाबा गजरा खौं विरजे, गजरा खौं विरजे,
भोरई टांड़े मलनियां के दोर हो, गनेश बाबा अरे हो।"

अब तो सारा तीर्थाटन रेलों बसों के द्वारा होता है। लमटेरा लोकगीतों को गाने और सुनने वाला है, कौन? पहले तो संक्रांति के अवसर पर इन गीतों से सारा वातावरण गूँज उठता था।

कार्तिक का माह आराधना और भक्ति भावना का माह माना जाता था। बुंदेल-वालाएं पूरे माह भर स्नान, व्रत और उपवास करके गोपी का रूप धारण करके कृष्ण की लीलाओं का अनुकरण किया करती थी प्रातः काल के झुण्ड के झुण्ड कार्तिक के गीतों को गाते हुए निकल पड़ते थे। उन गीतों से सारा ग्रामीण परिवेश गूँज उठता था। उन दिनों महिलाओं की लगन और निष्ठा देखते ही बनती थी। उनकी मधुर स्वर-लहरी को सुनकर श्रोताओं के मन की कली खिल उठती थी। कितना माधुर्य था उनके गीतों में :-

"सखी री, मैं तो भई न बिरज की मोर।
वन में रैती वनफल खाती, वनई में करती किलोर।।
उड़-उड़ पंख गिरे धरनी पे, बीने जुगलकिशोर।
उन पंख कौ मुकुट बनाके, बांधे कृष्णकिशोर।।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण, चरण-कमल चितचोर।"

धीरे-धीरे ये स्वर विलीन होते जा रहे हैं। नारियों में वह लगन और उत्साह दिखाई नही देता। वे बालकृष्ण के पालने में लिटाकर गाया करती थी। –

"झुलादो माई श्याम परे पलना।
जो मोरे ललना कौ पलना झूलावै, उयै गढ़ाऊँ ककना।।
काऊ गुजरिया की नजर लगी है, सुखी भये ललना।
राई नौंन उतारे जशोदा सुखी भये ललना।।
झुलादो माई श्याम परे पलना"

किंतु आज की सुशिक्षित महिलाएं इन सब क्रियाकलापों को कोरा आडम्बर समझकर इनसे दूर रहती हैं। यही कारण है, कतकारियों की संख्या घटती जा रही है और कार्तिक के गीतों के स्वर बहुत ही कम सुनाई देते हैं। यही स्थिति नवरात्रि के अवसर पर गाये जाने वाले देवी के भजनों की है। ये आस्था और भक्ति-भावना का पर्व हैं। नौ दिन तक धार्मिक आयोजनों की धूम रहती थी। देवी मंदिरों पर अपार जन समूह एकत्रित

होता था। महिलाएं भक्ति-भाव से ओत-प्रोत होकर समवेत स्वर में गाया करती थी। उनकी उमंग और उत्साह देखते ही बनता था-

''कैसे कैं दरसन पांऊरी, माई तोरी ऊँची अटरियाँ।
ऊँची अटरियाँ तोरी सकरी दुअरियां
कैसे कैं दरसन पांऊरी
माई के दुआरैं इक अंधा पुकारें
देव नैंना घर जाऊरी, माई तोरी संकरी दुअरियां
माई के दुआरैं इक गूंगा पुकारें
देव बानी घर जाऊंरी, माई तोरी संकरी दुअरियां
माई के दुआरें इक लंगड़ा पुकारे,
देव गोड़े घर जाऊँरी, माई तोरी सकरी दुअरियां
माई के दुआरैं इक बांझान पुकारें,
देव ललन घर जाऊंरी, माई तोरी सकरी दुअरियां।''

आज के नर-नारी घर-गृहस्थी के कार्यों में इतने अधिक व्यस्त है, कि उन्हें नवरात्रि के पुनीत पर्व का कोई ध्यान नही हैं। फिर देवी के गीत गाने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। हिंदुओं के सौलह संस्कारों में जन्म और विवाह दो महत्वपूर्ण संस्कार है। पुत्र ज़न्म के अवसर पर सोहरे गाये जाते थे और विवाह के अवसर पर ''वनरा'' नाम के लोकगीत गाये जाते थे। जन्मोत्सव के अवसर पर चरूआ, सतिया धराई, सोर, दस्टौन, पच और कुआ पूजन के नेंग होते थे और हर नेंग के अवसर पर अलग-अलग लोकगीत गाये जाते थे। पुत्र जन्मोत्सव के अवसर पुरा-पड़ोस की महिलाएं एकत्रित होकर समवेत स्वर में सोहर गीत गाया करती थी। ढोलक की थाप पर ये स्वर सुनाई देते थे। -

आज दिन सोंने कौ महराज।
सोने को सब दिन, चांदी की रात,
सोने के दियल धराओं महराज।
गौवा कौ गोबर मंगाव मोरी सजनी,
ढिक धर आंगन लिपाव महराज।।
ढिक धर आंगन लिपाव गोरी सजनी,
मुंतियन चौक पुराव महराज।
मुंतियन चौक पुराव मोरी सजनी,
कंचन-कलश धराओं महराज।।
कंचन-कलश धराओं गोरी सजनी,
जच्चा को चौक में बिठाओ महराज।।

आजकल तो सारी प्रसव-क्रियाए अस्पतालों में सम्पन्न होने लगी हैं। पुत्रों के उत्पन्न होने पर नर्सो को थोड़ा-बहुत ले देकर महिलाएं जच्चा को लेकर घर लौट जाती है। उन्हें सोहर गीत गाने के लिये अवकाश ही नही मिलता। आजकल की बधू-बेटियां जो इन सोहर गीतों को भूलती सीं जा रही है। इन गीतों के स्वर अब घरों.में सुनाई ही नही देते है और यह भी एक शोध का विषय बन गया हैं।

प्राय: विवाहों में ''वनरा'' गीतों की धूम रहती थी। हर नेंग के अवसर पर अलग-अलग लोकगीत गाये जाते थे। द्वारचार, चढ़ाव, भांवर और विदा के अलग-अलग लोकगीत होते थे। जेवनार के गीतों का तो आनन्द ही निराला था और तो नारियों को गारियों की सौदा भी दी जाती थी। लौंग, लायची, कत्था, सुपारी, चूना, तम्बाकू, और कुछ द्रव्य से एक थाल सुसज्जित किया जाता था और बराती मण्डप मे बैठकर गारियों का आनन्द लेते थे। इधर मण्डप में पंगत बैठती थी और पत्तले डालकर परोस होने लगती थी और उधर कोकिल-कण्ठी महिलाओं कलित-कण्ठों से मधुर स्वर फूट पड़ते थे। -

कुत्ता पाल लो, मोरी समदी जजमान, कुत्ता पाल लो,
कुत्ता की पूंछ जैसे समदी की मूंछ,
कुत्ता फेर लो, मोरे समदी जजमान, कुत्ता पाल लो।
कुत्ता के कान, जैसे महुवे के पान,
बीरा चावलो, मोरे समदी जजमान, कुत्ता पाल लो।
कुत्ता की खुरी जैसी मोंन दई पुरी,
एक और लो, मोरे समदी जजमान, कुत्ता पाल लो।

बेटी की विदा का दृश्य कारूणिक और हृदय-द्रावक होता है किसी की भी लड़की की विदा हो रही हो देखने वाले लोग अपने आप रो पड़ते हैं। ये बुंदेली संस्कृति की विशेषता है कि माँ बेटी की बिदा करते समय शुभाशीष देकर जीवन-मूल्य की उत्तम शिक्षा देती हैं।

'जाव लली तुम फूलियों फलियों,
सदा सुहागिन रइयों मोरे लाल।
सास-ससुर की सेवा करियो,
ननदी के ऐंगरे रइयों मोरे लाल।
कोंनाके रोंय नदी जमुना बहत है,
कोंनाके रोंय बेलाताल मोरे लाल।
माईके रोंय नदी जमना बहत है,
बाबुल कहें रोंय बेलाताल मोरे लाल।

बाबुल कहें बेटी रोजऊं आइयों,
माई कहें दोई जोर मोरे लाल।
भइया कहें बैना जब कब आइयौ,
भौजी कौ जियरा कठोर मोरे लाल।''

किंतु आज के समय में भारी परिवर्तन हो गया है। समस्त वैवाहिक कार्यक्रम शादी घरों में बारह घण्टों में सम्पन्न हो जाते है। रात को आठ बजे बारात आती है और प्रात: आठ बजे बिदा हो जाती है। स्वरूचि भोज दो घण्टे में पूर्ण हो जाता है, ऐसी स्थिति में जेवनार की गारियां सुनने और सुनाने वाला है कौन? वहाँ कहाँ महिलाएं है, जो तुम्हे जेवनार के मधुर गीत सुनायें? आजकल के विवाह तो केवल औपचारिक रह गये है। विदा के समय दी गई माता की शिक्षा का तो अब कोई महत्व नही रहा। शादी होने के बाद नव बधुएं तुरंत अलग चूल्हा रख लेती है। उन्हे सास-ससुर और ननद के साथ रहना पसंद नही रहता।

आजकल सारे पर्व और त्योहार केवल औपचारिक बनकर रह गये है। लोगों में रंचमात्र भी उमंग और उत्साह नही रहा। अपने त्यौहारों के प्रति। पहले त्योहारों की महीनों प्रतिक्षा करते थे। पहले से लोग तैयारी किया करते थे। वे चार्वाक के सिद्धान्त का अनुगमन करते थे-

''ऋणं कृत्वा, घृतं पिवेत्'' की उक्ति उन पर चरितार्थ होती थी ऐसा कहां जाता था कि होली के अवसर पर पुरुष और विवाह उत्सव में महिलाएं अनियंत्रित और अमर्यादित हो जाती थी उनका उत्साह देखते ही बनता था फागोत्सव का आनन्द जो अलग ही था। ''उड़त गुलाल लाल भयें बादर'' नवयुवक पिचकारियां लेकर नवयुवतियों को सरबौर कर देते थे। लोग मदांत होकर झूम रहे थे बड़ा ही आनन्ददायक वातावरण होता था फागोत्सव का। कोकिल-कंठी कृषक-किशोरियां झूम-झूमकर गोपियों के रूप में गाया करती थी।-

हम पै रंगा न डारो सामलिया।
मैं तो ऊसई अतर में भीगी,
लला-हम पै रंगा न डारों सामलिया
काहे कौ जौ रंगा बनायो,
काहे की पिचकारी लला- हम पै रंगा न
केसर कौ जौ रंगा बनायो,
सोने की पिचकारी लला- हम पै रंगा न
भर पिचकारी सम्मुख मारी,
भींज गई पचरंग सारी लला- हम पै रंगा न

ढोलक-नगढ़िया, झांझो और झेला के स्वरों में फगवारों के टोलिया समवेत स्वरों में गाया करती थी-

''रामा लला गोविन्दा लला,
जा होरी खेल गये रामालला''

इस अवसर पर लोक कवि ईसुरी की फागें गाई जाती थी। कुछ गांव में फागों में फड़ जमते थे दो टोलियों में होड़ लग जाती थी। रंगो की फांगे प्रस्तुत करके जय और पराजय का खेल होता था। रात-रात भर जागकर नर-नारी आनन्द लेते थे।

फाग के पहले फगवारे कबीर और ख्याल गया करते थे और फिर चौकड़िया फाग की एक ही पंक्ति पर पर बेड़िनी छम-छम कर नाच कर उठती थी और नगड़िया के स्वर में घण्टों उसका नाच होता था। बीच-बीच में स्वाँग होते थे जो उन दिनों मनोरंजन के उत्तम साधन थे। प्राय: ख्याल एक ही पंक्ति कहा जाता था-

''राजा चढ़ गये पहाड़, लेके दुनाली शेर मार गये।''
''जिन घालों गुलेल, बारी में डोंकिया बीद मरो रे।''
ख्याल के बाद तुरंत चौकड़िया फाग गाई जाती थी-
जा भई दसा लगन के मारे, रजऊ तुमारे द्ववारे।
जिन तन फूल छड़ी न लागी, तिनें घली तरवारें।।
हम तो टंगे नीम की डारन, रजुआ करें बहारें।
ठांडी हती टिकी चौखट सें, अब भई ओट किवारें।।
काकर सकत अकेले ईसुर, सबरऊ गांव इतारे।।

हालांकि पहली ही पंक्ति पर बेड़िनी के पांव थिरकने लगते थे और वह घण्टो नाचती रहती थी। किंतु आज के वातावरण में भारी अंतर आ गया है। लोगो की रूचियां पूरी तरह से बदल चुकी है। अब न गांव में फागों के फल लगते हैं। राई और नोटंकी देखने वालों की संख्या भी घटती जा रही है। गांव के लोग भी टीव्ही और फेसबुक चलाने में जुटे रहते है और तो और बालिकाएं भी इस मोबाइल संस्कृति में फसकर पथ-भ्रष्ट और चरित्र-हीन हो रही है बलात्कार, हत्या, हरान की घटनाएं इसी कारण से घटित हो रही है। आज हर बालिका के हाथ में मोबाइल दिखाई दे रहा हैं। बुंदेली संस्कृति में भरे-परे लोक कल्याण कारक बुंदेली लोकगीत विलुप्त होते जा रहे हैं। वे आनन्द दायिनी ध्वनियां सुनाई ही नहीं देती। उन सबको संजोकर रखने की आवश्यकता है।

पता- कुण्डेश्वर, जि. टीकमगढ़
मो. 9630792227

सकराँत (मकर संक्राति)

– अभिनंदन गोइल

हमाए देस में परव औ त्यौहारन की भरमार है, पै दिवारी, दसैरौ, होरी, राखी औ सकरांत तौ भौतई हुलास से मनाए जात। इन परवन में सकरांत कौ महत खास हैं। ई त्यौहार में धरम, स्नान औ दान करवे की विधान है, तौ खानपान औ नाच-गाना से हुलसवे कौ चलन सोऊ जुग-जुग से चलो आ रऔ।

सकरांत तौ परव कौ बुंदेली नाव आए पै ई कौ शास्त्रीय नाव मकर-संक्रांति हैं। जादांतर हिंदू परव चन्द्रमास की गणना सें मनाए जात पै सकरांत अकेलौ ऐसौ परव हैं जो सूरज की गति की गणना करकें बरहमेस एकई तारीख 14 जनवरी खों मनाऔ जात। भगवान भास्कर साल में छै मइना दक्षिणायन औ छै मइना उत्तरायन में भ्रमन करत। सकरांत के दिन वे दक्षिणायन से उत्तरायन में प्रवेश करत औ संगे कर्क रासि से मकर रासि में पौंच जात। ऐई से ई दिना कौ ''मकर-संक्रांति'' नाव दऔ गऔ हैं। संकरांत खौ कैऊ और नावनं से सौऊ जानौ जात जैसे- बिहार में औ उत्तरप्रदेश में खिचड़ी, मिथलांचल में तिल सक्रांति हरियाना और हिमाचल में माघी, असम में बिहू, कश्मीर में सिसुर, सैंक्रांत तमिलनाडू में पोंगल, कर्नाटक मे सुग्गी हब्बा, बंगाल में पौष संक्रांति औ पंजाब में लोहड़ी। बुंदेलखण्ड में तौ सकरांत और बुड़की जे दो नाव चलत हैं।

सकरांत आदिदेव, आदिशक्ति औ सूरज की पूजा-अरचना कौ पावन दिन हैं। ऋसियन-मुनियन कौ कैवौ है कै सूरज की आराधना सें आतमा सुद्ध होत, संकल्प शक्ति बढ़त ज्ञान-तंतु खुल जात और नई चेतना सें भक्त कौ तन-मन भर जात।

सूरज के उत्तरायन होतनई ब्रम्ह मुहूरत में भगवत उपासना कौ पुण्य काल लग जात। जौ समव परा-अपरा विधा पावे कौ काल आए, सौ जौ सिद्धि काल सोऊ कहाउत। संकराँत के एक दिना पैले से व्रत-उपवास करत आए, नीकें पात्रन खों दान दऔ चइए। ऐसौ शास्त्रन कौ विधान हैं।

हमाए देस की संस्कृति में सूर्य भगवान की पूजा कौ चलन रामायन काल सें चलो आ रऔ। रामकथा में बरनन है कै भगवान राम नित्य सूर्य पूजा करत ते। राजा भागीरथ सूर्यवंशी हते और वे कठोर तप-साधना के प्रभाव सें पापनासिनी गंगा मैया खों धरती पै ल्याय ते। उनने अपने पितरन कौ तर्पन गंगाजल, अक्षत औ तिल सें करो तो तबई से माघ संक्रांति स्नान/मकर संक्रांति स्नान औ श्राद्ध तर्पन कौ चलन चलो आ रऔ हैं। महाराजा भागीरथ कौ तर्पन स्वीकार करकें गंगा मैया सागर में जा समानी तीं, सो वौ स्थल गंगा-सागर बजन लगो। उतै सकरांत खों बड़ौ भारी मेला सोऊ भरत है। ई कथा से दृढ़ संकल्प औ अपने बुजुर्गन कौ मान सम्मान करवे की प्रेरना मिलत हैं।

कपिल मुनि के आश्रम में गंगा मैया कौ पदारपन सकरांत के दिन भऔ तो। गंगा के पावन जल कौ दरस-परस करके कपिल मुनि ने महाराजा भागीरथ खों आसीस दऔ तो कै जे गंगा मैया अब से बरहमेस जन-जन के पाप हरन करें और भक्त जनन की सात पैरियन खों मोक्ष कौं मारग खोलें। गंगा जल कौं स्परस, पान दरसन स्नान और पुन्यदायी हुइऐं।

महाभारत की जा कथा सब कोऊ जानत कै जब अरजुन के तीरन से भीष्म जू रनभूम में गिरे तौ उनकी देह में इत्ते तीर भिद गए ते कै वे तीरन की शैया पै अधर में सध गए। उन दिनन सूरज देवता दक्षिनायन हते औ पुण्यात्मा भीष्म जू देह में घनघोर पीड़ा भोगत भए भी सूरज की ई दशा में प्रान नई त्यागन चाउत ते। उने इच्छा-मृत्यु कौ वरदान हतो, सो वे छै महिना लों सूरज के उत्तरायन होवे की बाट हेरत रए और सूरज की गति उत्तरायन होवे पै उनते प्रान त्यागे। कौरवन-पाण्डवन ने उनकौ श्राद्ध संस्कार और तिल कौ अरघ जल तर्पन करो। तबई से पितरन की खुशी के लाने सकरांत खों जा रूढ़ि चली आ रई।

पुरानन में जौ बरनन है कै सकरांत के दिना सूरज भगवान अपने पुत्र शनि महाराज के घरै जात है। मकर कौ स्वामी शनि है, ऐसौ सोऊ मानो जात। वैसें ज्योतिष शास्त्र कौ कैवौ तौ जौ है कै सूरज औ शनि कभऊँ नही मिल सकत। सो अपन खौं तौंई कथा से पिता-पुत्र में प्रेम बढ़ावे की प्रेरना लऔ चइए ऐई दिना भगवान विष्णु ने असुरन कौ अंत करकें, उनकी मूढ़े मंदार पर्वत में चपा दई तीं। सो हम सकरांत के दिन

खों बुराइयन पै अच्छाइयन की विजय सोऊ मान सकत।

सूरज की सातवीं किरन कौ प्रभाव हमाए देस में गंगा औ जमना के बीच में भौत समय तक रत हैं। ई भौगोलिक स्थिति के कारन हरिद्वार औ प्रयाग में मकर संक्रांति, पूर्ण कुंभ औ अर्ध कुंभ जैसे धरम और संस्कृति खों बढ़ावे के कारज बढ़े हुलास सें करें जात।

सकरांत के परव में तिली कौ खास महत्त हैं। विष्णु धर्मसूत्र में कथन है, कि पितरन आत्मशांति और स्व-पर कल्याण के लाने सकरांत के दिना तिली के छै उपयोग पुण्य कारक होत है। वे है- तिल कौ उबटन, तिल जल सें स्नान, तिल कौ जल में अर्पन, तिल कौ दान, तिल की आहुति औ तिल सें बनो भोजन करबौ।

सास्त्रन की बातें तौ अपनी-अपनी श्रद्धा की बातें है, पै त्यौहार में तौ सब कोऊ जानत कै सकरांत नई फसल कौ परव सोऊ है। ई सें खूब पकवान बनाए जात, ई दिना। बुंदेलखण्ड में तौ मइना भर पैलें से कैऊ तरा के लड्डआ बनत ते। इतै के गांव कस्बन में तौ अबै लों तरा-तरा के लडुआ, गड़िया-घुल्ला, खुरमा-खुरमी, गुनी पपैयाँ, सेव, पुआ ठरूला, ठेंटरा, गुलरियाँ आदि पकवान बनावे खावे कौ चलन चलो आ रऔ। इन सब में तिल और गुर कौ सबसे जादां महत्त है। ई कौ व्योहारिक कारन तौ जो लगत कै ठंड के मौसम में तिल-गुर खायसें ठंडे मौसम सें मुकावले की ताकत मिलत औ काया तंदरूस्त बनी रत। ठंड में तन सोऊ रूखयात, जिऐ चीकनौ रखवे खों तिली कौ तेल पुराने जमाने सें चलो आ रऔ। तिली बाँट के ऊ कौ उपटनौ, आँग खों चीकनौ औ नरम बनाए रत। पैलें सकरांत के दिना तौ सबई जने तिली कौं उबटन लगाकें, नदी - तालाब में बुड़की लेत ते। अब तौ नए चलन में जे पुरानी परिपाटी तौ हिरा सी गई।

सकरांत कड़कें हौलें-हौलें ठंड घटन लगत औ बसंत कौ सुहानौ मौसम आ जात। सो सकरांत रितु परिवर्तन कौ परव सौऊ हैं। मौसम के परिवर्तन खों तौ हम सब जानत है, सोऊ के हिसाब से अपन खों ढाल लेत। ऐसई जब जिंदगी में परिवर्तन आउत औ मुस्किलन की तपन बढ़त तौ हमें घबराऔ नई चइए, जौ सोचो चइए कै फिरकऊँ जीवन में बसंत आए। हमें तो बरहमेस जीवन में त्यौहारन जैसौ हुलास बनाएँ रखो चईए।

बाजार जैन मंदिर मार्ग
टीकमगढ़ म.प्र.
मो.9424923622

सागर मण्डल में 1857-58 की क्रान्ति

– श्रवण सिंह सेंगर (पी.सी.एस.)

1857-58 में क्रान्ति प्रारम्भ होने के पूर्व प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार सागर तथा नरवदा अमलदारी के नाम से कमिश्नरी थी। इसमें जालौन, झाँसी, चन्देरी, नागौद, सागर, दमोह, जवलपुर, मण्डला, सिवनी, नरसिंहपुर, होशंगाबाद तथा वैतूल के नाम के बारह जिले थे। शासन के आदेश सं. 493 दिनांक 10 मई 1858 के अनुसार प्रथम तीन जिले इस कमिश्नरी से प्रथक करके उक्त समय के प्रशासक कैप्टेन स्केन सुपरिडैण्ट झाँसी के अधीन कर दिये गये थे। गवर्नर जनरल के सामान्य आदेश संख्या 37 दिनांक 15 फरवरी 1858 के अनुसार चतुर्थ जिला नागौद राजनीतिक विभाग को हस्तान्तरित कर दिया गया था। इस प्रकार आठ जिलों की इस कमिश्नरी में 33000 वर्ग मील अर्थात 54800 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र रह गया था। वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह कमिश्नरी काफी वड़ी थी।

इस डिवीजन का नाम जवलपुर डिवीजन था। दिल्ली तथा मेरठ में विप्ल व प्रारम्भ होने के पूर्व यहाँ पूर्ण शांति थी। जनवरी 1857 के लगभग मेहूँ के आटे की च शति माँ का वितरण अत्यन्त गुप्त रूप से रहस्यात्मक ढंग से एक ग्राम से दूसरे ग्राम को प्रारम्भ हुआ। अंग्रेज कमिश्नर के अनुसार यद्यपि सभी चकित थे, कि कुछ हो रहा है लेकिन उसके अनुसार इस का पूर्वा आए नहीं हो सका, जब तक कि सागर के बाजार में कानाफूसी शुरू नहीं हुई। कमिश्नर के द्वारा शासन को रिपोर्ट प्रेषित की गई कि मामला इस प्रकार का है, लेकिन यह अव भी सन्देह जनक है, कि चपाती के इस सन्देश को लोगों द्वारा उस मतलव समझा जा रहा है। आयुक्त को वाद में समझ में आया कि यह सामान्यतया लगभग सभी लोगों को जानकारी थी, कि यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का संकेत था।

अप्रैल 1857 को बंगाल रेजीमेण्ट के कुछ सिपाहियों में कुछ स्थानों पर यह उत्तेजना हुई कि चर्बी वाले कारतूस दिये जा रहे हैं। और सरकार उनको धर्म भ्रष्ट कर रही है। यह धारणा भविष्य के लिये आयुक्त को अपशकुन प्रतीत हुई।

मई 1857 तक लक्ष्य विषयक अभ्यास, यहाँ तक कि मई के अंत तक सामान्यतया चलता रहा, आयुक्त को इसकी अनुभूति ही नही हो पाई कि देशी सिपाहियों में उत्तेजना है। सेना के अधिकारियों ने यह विश्वास दिलाने के प्रयास किये कि यह कहानियाँ सव असत्य हैं कि देशी सैनिकों में कोई असन्तोष पनप रहा है।

17 मई 1857 को सागर तथा जवलपुर में एवं 18 मई को दमोह में मेरठ तथा दिल्ली में जो क्रान्तिकारी घटनाएं हुई थीं, उनके दुखद समाचारों ने दमोह में पदस्थ अंग्रेज अधिकारियों को व्यथित कर दिया। यद्यपि स्थानीय जनता को इन समाचारों ने उत्तेजित नहीं किया, किन्तु फिर भी एक प्रतिक्रिया व्यक्त की गई, और सिपाही तथा कस्बा के निवासियों में भय व्याप्त हो गया। किन्तु कोई घटना घटित नहीं हुई।

19 मई 1857 के प्रात: 02 वजे ठगी विभाग के अधीक्षक मि. स्लीमैन ने मि. स्केन आयुक्त को जगाया और सूचित किया कि प्रात: काल ही वावनवीं वटालियन के देशी सिपाही समस्त यूरोपवासियों का वध कर देगें। रेवेन्यू सर्वेयर ने यह सूचना उसे दी थी। अंग्रेज कमिश्नर ने तुरंत कपड़े पहने और अध्यक्ष ठगी विभाग के पास पहुँच गया, उसने स्पष्ट किया कि जवलपुर में जितने यूरोप वासी अधिकारी आदि हैं, वे सव तैयारी कर रहे थे कि एकत्र होकर हवाई जहाज से प्रस्थान कर दिया जाय। लेकिन उसने देखा कि लाइन में सिपाही सभी शांति पूर्वक रह रहे हैं, इसलिये जब तक कोई अप्रिय संकेत समझ में न आयें तव तक प्रतीक्षा की जानी चाहिए। सभी अधिकारीगण तथा उनकी महिलाऐं जो एकत्र हो गयी थी, वापिस लाइन में चली गईं।

दिनांक 22 मई 1857 को जवलपुर में उत्तेजना अधिक थीं अंग्रेज अधिकारियों ने गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श करते हुये यह निश्चय किया कि सभी लोग मिलने हेतु कोई स्थान चयनित कर लें, और संकट का लीन परिस्थितियों के लिये कोई सार्वजनिक शासकीय भवन चयनित किया जाय। जेल भवन को चुना गया, और उसमें ठहरने रहने के लिये खाद्यान्न आदि की व्यवस्था की गई, तथा यह भी सुनिश्चित किया कि यदि भागना पड़े तो कहाँ से भागेंगे। किन्तु इस स्थान पर गर्मी अधिक थी, और बन्द अधिक था इसलिये जेल का उपयोग करने का विचार त्याग दिया गया।

5 जून 1857 तक सभी स्थानों पर शांति वनी रही किन्तु जवलपुर में रहने वाले अंग्रेज अशान्त रहे। जवलपुर में रहने

यारे अंग्रेज अशान्त रहें। जबलपुर से मिस्टर कैम्पबेल ने एक चेतावनी भेज दी कि सभी अंग्रेज सतर्क बने रहें।

किन्तु स्केन तथा कैप्टेन पिंकने उपायुक्त ने यह निश्चय किया कि कोई घटना घटित हो हम लोग अपने स्थान को नहीं छोड़ेंगे। अपनी महिलाओं तथा बच्चों को इस स्थान को छोड़कर कलकत्ता अथवा नागपुर जाने के संबंध में विचार किया। समस्त समाचारों तथा स्थितियों के संबंध में जबलपुर के अंग्रेज अधिकारियों ने अपनी उत्तर पश्चिमी प्रान्त की सरकार को विस्तार पूर्वक रिपोर्ट भेज दी। यह रिपोर्ट दिनांक 30 मई को भेजी गई।

झाँसी में महारानी लक्ष्मीबाई द्वारा जो अंग्रेजों के विरुद्ध कार्यवाही की गई तथा स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के द्वारा जो मारकाट की गई उस की सूचना 8 जून 1858 को जबलपुर पहुँच गई, तथा झाँसी के उपायुक्त कप्तान एफ. गॉर्डन की एक टिप्पणी भी आगामी दिवस को प्राप्त हो गई। यह संक्षिप्त टिप्पणी गॉर्डन ने झाँसी दुर्ग से 7 जून को लिखी थी। उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुये लिखा था कि हम लोग शीघ्र ही मुक्त कर दिये जायेंगे, किन्तु 8 जून 1858 अर्थात आगामी दिवस, मिस्टर डब्ल्यू. टू सी. एरस्किन मेजर आयुक्त के कथनानुसार समस्त यूरोपवासियों जिनकी संख्या 76 थी, रानी के आदेशानुसार अत्यन्त लोग हर्षक स्थिति में विश्वासघात पूर्वक उनका वध कर दिया गया।

मिस्टर एरस्किन का यह कथन असत्य है कि झाँसी में अंग्रेजों की सामूहिक हत्या रानी झाँसी के आदेश से की गई थी। महारानी लक्ष्मीबाई ने सामूहिक वध करने का आदेश कभी नहीं दिया था। बख्शीश अली, जेल दारोगा और उसके सहायकों के द्वारा अंग्रेजों का सामूहिक वध किया गया था। इस हत्याकाण्ड से नाना साहब भी दुखी हुये थे। झाँसी के इस हत्याकाण्ड के विषय में मार्टिन नामक एक अंग्रेज के द्वारा 20 अगस्त 1889 को आगरा से महारानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र श्रीमन्त दामोदर राव को एक पत्र लिखा था, सुसंगत अंश निम्नवत है।

"आपकी माँ के साथ अन्याय पूर्ण एवं अत्यन्त क्रूर व्यवहार हुआ है। सन् 1857 के जून मास में झाँसी में यूरोप वासियों की जो हत्यायें हुई थीं, उनसे उस बेचारी का कोई सम्बन्ध नहीं था। जब किले में थे, तो रानी ने उन्हें दो दिन तक भोजन दिया। कतिपय अन्य इतिहासकार भी यह स्वीकार करते है कि अंग्रेजों के झाँसी में झोकन बाग में सामूहिक वध में महारानी झाँसी का कोई हाथ नहीं था।"

यूरोपवासियों के विरुद्ध जनाक्रोश बढ़ता जा रहा था। अंग्रेजों के मतानुसार जबलपुर जनपद शान्त थां किन्तु उन्हें अपने सूत्रों से ज्ञात हुआ कि कुछ ठाकुर तथा मालगुजार विद्रोह करने के लिये उद्यत हैं। सितम्बर 1857 के प्रारम्भ में कप्तान मैक्टन अंग्रेज को एक पण्डित सिपाही से सूचना प्राप्त हुई कि पेंशन प्राप्त गोंड़ राजा- शंकरशाह यूरोपियन अर्थात अंग्रेजों पर आक्रमण करके उनका वध करने की योजना बना रहे हैं। जिसमें कुछ जमींदार कुछ सिपाही भी शामिल हैं। राजकुमार रघुनाथशाह भी इसी प्रकार की मंत्रणा कर रहे हैं।

सेठ कुशलचन्द राजा के विरुद्ध जासूसी कर रहा था। 14 सितम्बर 1857 को सेठ ने राजा शंकरशाह तथा राजकुमार रघुनाथ शाह को जेल में बन्द करा दिया। अंग्रेजों ने राजा के अलावा कुछ अन्य लोगों को भी बंद कर दिया। राजा साहब के यहाँ तलाशी लेने पर कुछ दस्तावेज ऐसे प्राप्त हुये, जिनसे यह सिद्ध होता था कि उनके द्वारा अंग्रेजों का विरोध किया जा रहा है। अंग्रेजों ने कुछ दस्तावेजों का विवरण परिशिष्ट में दिया है, उनका हिन्दी अनुवाद निम्नवत है।

हिन्दी अनुवाद

हे शत्रुसंहारिका!! शत्रु विनाशिनी देवी इन अंग्रेज कलंकियों के मुँह बन्द कर दो, चुगल खोरों को काटो और खा जाओ तथा इन पापिओं को कुचल डालो, हे माता चण्डी! अंग्रेजों को मार डालो। हे! संहारिका देवी माता अंग्रेज इनकी महिलाएँ और बच्चे भाग न पावें।

श्री शंकर जी सहायता करो, अपने दास की सहायता करो। धर्म की हुंकार को सुनो हे! मातृपालका देवी, इन म्लेच्छों को खा जाओ, देर न करो।

हे! घोर मात कालका- अब उन्हें निगल जाओ और यह सब जल्दी जल्दी करो।

सन्दर्भ-नैरेटिव ऑफ इवेण्टस- ए.ओ.डी. रेस्टोरेशन ऑफ अथार्टी-1, 2 पृष्ठ सं. 1- 3, 4, 5 पृष्ठ सं.-2- 6, 7, 8 पृष्ठ सं.-3- 9 गजेटियर (झाँसी 1965) पृष्ठ सं.ऋ(57)-10 नैरेटिव.... पृष्ठ सं-19- 11- पृष्ठ सं.-20- तथा 12-पृष्ठ संख्या-60

कैरोखर हाउस, गुरसराय (झाँसी)
मो. 8318152523, 9415189841

बुन्देली शब्दों का लालित्य और व्यावहारिकता

– डॉ. रमेशचन्द्र खरे

विन्ध्या की घाटी और बुन्देली माटी की सोंधी गंध में रची-बसी उसकी आंचलिक बुंदेली ललित भाषा का लालित्य, किसी ग्राम्या के अकृत्रिम लावण्य से कम नहीं। उसकी लुनाई की समता, नगरीय संस्कृति की औपचारिकता में आवृत्त नागरी हिंदी नहीं कर सकती। हम उसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीय व्याकरणिक खड़ी बोली हिन्दी के बौद्धिक स्तर से न मापें। यह तो हृदय से हृदय का संवेदनशील, रसात्मक सहज संवाद है। जैसे अवधी, बृज, राजस्थानी या मध्यप्रदेश की छत्तीसगढ़ी, बघेलखंडी, मालवी में आंचलिकता है, वैसे की माँ के आंचल में दुलार पाती बुंदेली है जिसे कई स्वनामधन्य कवियों ने अपने श्रम से सँवारा है। मुंशी अजमेरी जी के शब्दों में-

'तुलसी, के शव, लाल, बिहारी, श्रीपति, गिरधर,
रसनिधि, रायप्रवीण, पजन, ठाकुर, पऽाकर,
कविता मंदिर कलश, सुकवि कितने उपजाये,
कौन गिनावे नाम, जाँय किसके गुण गाये,
यह कमनीय काव्य कला की जन्मभूमि है।
सदा सरस बुन्देलखण्ड साहित्य भूमि है।'

डॉ. ग्रियर्सन के बुन्देलखंडी भाषायी सर्वेक्षण और लोक साहित्य में, बुंदेलखण्ड की सीमा स्वरूप, महाराज छत्रसाल बुंदेला की साम्राज्य सीमा ही मान्य है-

'इत यमुना, उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस
छत्रसाल से लड़न की, रही न काहू हौंस।'

ऐसे प्रदेश की सभ्यता और संस्कृति उसकी अपनी भाषा में अक्षुण्ण है। उ.प्र. के बुंदेली के वीरत्व से ऊर्जास्वित झाँसी संभाग के अलावा म.प्र. के सागर संभाग में सागर और दमोह तो सीधे ब्रिटिश साम्राज्य के भाषायी स्तर से प्रभावित हुए पर छतरपुर, टीकमगढ़ और पन्ना जिले रेल सुविधाओं से कटे हुए, अपने रियासती परिवेश में स्वतंत्रता पूर्व तक बुंदेली को अपने मूल रूप से संजोये रखें। बुन्देली साहित्य, मुख्यत: शौर्य प्रधान है। उसमें ओजगुण टपकता है। पर जहाँ श्रृंगार और भक्ति का प्रसंग आता है, अनवरत माधुर्य और प्रसाद गुणों की झलक है। उसके देशज शब्दों के लालित्य के बारे में डॉ. बलभद्र तिवारी का कथन है- 'लालित्य के प्रति सहज रूचि और भाव प्रवणता का अतिशय उद्रेक, साहित्य के प्रत्येक काल में दृष्टिगत होता है। कथा काव्य काल की कृतियों में उस लालित्य और भाव प्रवणता का सहज स्वरूप मुखर हुआ है, पर रीति-भक्ति काल के समस्त ग्रंथों में इसकी विशिष्टता और सघनता का आभास केशव की रामचन्द्रिका के प्रसंगों में मिलता है। 'कविप्रिया' और 'रसिक प्रिया' में इसके सुंदर उदाहरण हैं। सांस्कृतिक उन्मेष काल में छत्रविलास, कामरूपा कथा महाकाव्य महिमा समुद्र, स्नेह सागर, विरह विलास, विरह वारीश में तथा श्रृंगार काव्य काल में राम रसायन, गंगा लहरी, जगद विनोद में विकसित होता गया। यह बुंदेली समाज की अपनी कलाप्रियता और सौंदर्यप्रियता को अभिव्यक्त करती है। बुन्देली संस्कृति में लालित्य, ओज और कल्पना का सहज समावेश मिलता है।' (लेख- 'बुंदेली समाज और संस्कृतिः एक विहंगम दृष्टि"ईसुरी अंक 4 (86-87) खंड-3, इतिहास और संस्कृति पृ-3')

बुन्देली का पूर्व रूप 'भाषा' माना जाता है। जिसे संस्कृत के बाद 'देसिल बअना' के रूप में 17वीं सदी तक इसी संज्ञा से अपनाया गया। यही बुन्देली की जनक है। रीति-भक्ति काल में केशव ने इसमें प्रचलित अरबी, फारसी, उर्दू का भी नगण्य सामंजस्य बिठाया। बुन्देली के कई शब्दों के तो संस्कृत में भी मूल नहीं मिलते। इनकी व्युत्पत्ति अतीत के अंतराल में खो गई है। इसके लिए तत्कालीन ऐतिहासिक संदर्भों में जाना होगा। जैसे बंदरों को भगाने का एक शब्द है 'हूड़जा' जो तत्कालीन हूण राजा तोरमण की बंदरों जैसी क्रियाओं से संबंध रखता है। यह 'हूजड़ा' हूण का अपभ्रंश है। यही बुंदेली संस्कृति के लोक पक्ष की खोज है। कथित बुंदेली बोली कही जाने वाली पश्चिमी हिन्दी के प्रचुर साहित्य ने उसे भाषायी लालित्य तक पहुंचाया। बुन्देलखण्ड में आल्हा के जनकवि जगनिक लोकनायक हरदौल और लोककवि ईसुरी की गाथा जन जन में चर्चित है। बुंदेली जन-जीवन मृदंग की थापों और ईसुरी की फागों से जब तब गूंज उठता है। उनकी नाजुक ख्याली, बिहारी या किसी उर्दू शायर से कम नहीं जिसमें निश्छल श्रृंगारिक भाव-ऊष्मा है। इसी भाषा का लालित्य ईसुरी

की फागों में अमूल्य धरोहर के रूप में संचित है। श्रृंगार, प्रेम, करूणा, सहानुभूति, कसक जैसी मार्मिक अनुभूतियां यहाँ ह्दय को गुदगुदाते हुए दिल को छूती है। एक रूप दृश्य देखिये अविस्मरणीय-

'हम खों बिसरत नईं बिसारी/ हेरन हँसी तुम्हारी
जुवन विशाल, चाल महतारी/पतली कमर इकारी
भौंह कमान बान से तानें/ नजर तिरीछी मारी
ईसुर कत हमाई कोदउ/तनक हेर लो प्यारी।'

इस स्थूल श्रृंगार में भी भाषा की बुंदेली कहन निराली है। 'हम खों'- हमारे लिए, 'बिसरत नईं बिसारी'- भुलाये नहीं भूलती, 'हेरन'-दृष्टि 'महतारी'-मतवाली, 'इकारी'- इकहरी, दुबली, 'कत'-कहने, कोदउ-की तरफ, 'हेर लो'-देख लो, शब्दों का बुंदेली लहजा ही उनका लालित्य है। बुंदेली में बहुधा का बहुवचन बनाते समय, 'न' प्रत्यय का प्रयोग होता है- लड़कन बिटियन, भैयन, बहिनन, गाँवन, नगरन, स्कूलन, किताबन, कापियन, धुतियन, पोलकन, नदियन, पहारन हजारों शब्द हैं जो 'न' के नाद सौंदर्य से पंचम वर्ग के अंत्यानुप्रास की आलंकारिक छटा बिखेरते है। यहाँ तक अंग्रेजी शब्दों में भी यह 'न' बेहिचक जुड़ता है- एक मित्र ने बताया - उसने 'केसटन' की दुकान खोली है, मैंने नासमझ जिज्ञासा दर्शाई- 'क्या मतलब?' वे बोले- 'इतना नहीं समझते गानों के 'केसिट्स' केसटन।' पंत भी कोमलकांत पदावली की तरह बुंदेली की कामिनी सी कमनीयता सायास नहीं, नैसर्गिक अनायास है जो कवियों ही नहीं आम आदमी की भाषा में बसी है। बिहारी की नायिका सी उसकी लचक मनमोहक है। दो बधिर ग्रामीण वृद्धाओं की बातचीत सुनिये-

'काय, वड़ी वऊ! किते अ जा रईं? बजारे अ जा रईं?'
'ऊं हूँ, बिन्ना! बजारे अ जा रये।'
'नोंनी कई। मैं समझी, बजारे अ जा रईं।'

इस सहज सुनी-अनसुनी वार्ता में भी कहीं बुंदेली लालित्य है।

फगुनाहट में 'फाग' ही नहीं, लोकगीत 'राई' के बोलों के मिश्री घोलों में भी बुलंद बुंदेली के श्रृंगार की वही मनुहार है। मेला जाते हुए प्रियतम से-

'ढीले गाढ़े न होंय, ढीले गाढ़े न होंय।
पोलका ठगाने के ल्याइयो'

इस 'ठगाने' ने बुंदेली शब्द चयन, मांसल सौन्दर्य की आँखों ही आँखों में उपयुक्त माप जोख की रसग्रंथि है-

'शब्द ही रस ग्रंथि है, शब्द ही विष वेल
शब्द ही लालित्य लीला, मेल ही का खेल।'

संयोग श्रृंगार ही नहीं, विप्रलंभ में भी बुंदेली 'फाग' की कसकती मार्मिक पीड़ा अभिव्यक्त है-

'अब रितु आई बसंत बहारन, पान, फूल, फल डारन
बगन, बनन, बंगलन, केलिन, बीथी नगर बजारन
हारन, हद्द पहारन, पारन, धवल धाम जल धारन
तपसी कुटी कंदरन माही, गई बैराग बिगारन
ईसुरी अंत कंत हैं जिनके तिन्हें देत दुख दारून।'

बुन्देली के संस्कार गीतों में- जन्मोत्सव के 'बधाई गीत', विवाहोत्सव के 'गारी गीत', वर्षा ऋतु के कजरी और मल्हार, त्योहार गीतों में फाग और दिवारी मेलों में बुंबुलियों या 'भोला गीतों' में कांवरियों के स्वर- 'नरवदा मैया हो.......' बड़े सुहावने लगते हैं। इनके शब्दों की अपनी अलग देशज छटा है, खेतों और खानों की खनक है, नगाड़ों की गमक है, ठेठ बुंदेली का ठाठ है, रस की गांठ है जिसे जरा सा दबाते ही मिठास चू पड़ती है। ऐसा शब्द लालित्य और कहाँ? तुलसी कविताओं में राम के वन गमन में चित्रकूट पदार्पण से ही बुंदेली जन जीवन और भाषा का जनाग्रह दृष्टि गोचर होने लगता है- 'गिराग्राम सिय रामजस, गावहिं सुनहिं, सुजान।' राज महल से निकलते ही धरि धीर दये पग मे पग द्वै के साथ जो सीता- 'पूछत है चलनो अब केतिक? ' और माथै पर ही कणी सी पसीने की बूंदें छलछला आईं। उनको सुकुमारता का वर्णन करने में अवधी-बुंदेली की जुगलबंदी वहां बेमिसाल हैं। उसी परंपरा को पद्माकर और ईसुरी ने आगे बढ़ाया है। डॉ. श्याम सुंदर दुबे के अनुसार- 'ईसुरी जब रजउ के रूप का वर्णन करने लगते है तो सौन्दर्य का अपरंपार झरना फूट पड़ता है। वे रजऊ के एक एक अंग का ऐसा लासानी वर्णन करते हैं कि उनके सामने श्रृंगार के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कवि भी पानी भरने लगते है। रजऊ की हेरन, हँसन, चलन के अनेक क्रियात्मक बिंबों का चमत्कारिक अनुभव ईसुरी की फागों में केन्द्रित हैं।'

(बुंदेली गूंज - भिलाई। बुंदेलखण्ड: ईसुरी के झरोखे से)

अनूठी बुंदेली उपमाएँ भी उनके बोधगम्य अर्थ के लालित्य को बढ़ाती है। सा, से, सी जैसे वाचक शब्दों से उपमान, उपमेय को सहज बनाता है। बुंदेली में दीं सी टिरकत, गिंजाई सी चलन, बंदरा सो बमकन, लपसी सी चाटत, मटी

सी धरी, बेड़नी सी नाचत आदि अनेक बुंदेली उपमाओं का ललित श्रृंगार हैं। बुंदेली के सर्वनाम तक- नांय, मांय, इतई, उतई, ईखों, ऊखों रसमय है।

ईसुरी भी प्रेमिका/ पत्नी 'रजऊ के होने' और न होने के विवाद से परे (ईसुरी अंक-5) बुंदेलखण्ड के बुलंद व्यक्तित्व अम्बिका प्रसाद दिव्य ने उन फागों के अंग्रेजी अनुवाद सहित उनके जीवन पर 'प्रेम तपस्वी' उपन्यास ही लिख डाला। इसके पूर्व भी 'निमियां' से प्रारंभ उनके 13 ऐतिहासिक उपन्यासों में बुंदेलखण्ड बोलता है, उसकी संस्कृति और भाषा मुखरित होती है। उसके बुंदेली पात्र अपनी आंचलिक बोली में वाणी रस घोलते हैं। सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के ग्यारहवें खंड के भाग-1 में 'इंडो आर्यन फेमिली' के सेंट्रल ग्रुप की 'वेस्टर्न हिंदी' शाखा के अंतर्गत बुंदेली विवरणी प्रस्तुत है। परंतु प्रदत्त बुंदेली सूची, सहायकों की अज्ञानता के कारण भ्रामक है। बुंदेली पीठ, सागर वि.वि. की 'ईसुरी' पत्रिका में बुंदेली पर्यायवाची शब्दों की चयनिका धारावाहिक प्रकाशित की गई है, जिसमें खेती-किसानी, व्यवसाय, त्यौहार आदि वर्गीकरण से एक शब्द कोष का निर्माण प्रस्तावित है। करीब 1650 बुंदेली शब्दों की सूची यहाँ दी गई है।

बुंदेली शब्द लालित्य की ललक केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, लोकानुभव से संपन्न लोक व्यवहार में भी देखी जाती है। मिट्टी के सोंधेपन से जुड़ाव, लोक कल्याणकारी, बुंदेली लोक साहित्य का नित्य रूप है जो व्यावहारिक धरातल पर वैज्ञानिक कसौटी पर भी खरा उतरता है। 'अंगूठे के अभिशाप' के बावजूद जीवंत यथार्थ के प्रकृति बोध का वरदान यहां के संस्कारों में रमा रहा। घाघ और भड्डरी यहाँ के मौसम वैज्ञानिक ही जिनके प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण के फलस्वरूप वर्षा, ज्योतिष, स्वास्थ्य, समाजशास्त्र के कई अनुभव उनकी लोकोक्तियां और कहावतों में जन जन की जबान पर हैं। ये लोक की शक्तियाँ ही हैं जो व्यक्तिगत स्तरों से परिणाम स्तरों से परिणाम सिद्ध हो, लोकोन्नत होती हुई सूत्र वाक्य बनी हैं। इनकी पारंपरिक मान्यता बड़े जीवन सत्योद्घाटन करती है।

अपने शोध के दौरान श्री अम्बिका प्रसाद 'दिव्य' की अप्रकाशित साहित्य समिधाओं के बीच मुझे उनका लोकोक्ति सागर भी मिला जिसमें हजारों लोकोक्तियाँ हैं। उनकी प्रकृति के अनुसार उनके निम्नांकित सात भेद किये गये हैं-

1. ढकोसला (बेमेल कुतूहल)
2. ओटपाय (कुचाल)
3. खुंस (क्रोधावेश में दोष दर्शन)
4. भेरि (क्रोध दिलाने वाली क्रिया जनक)
5. अचका (अतिषयोक्ति)
6. ओलना और
7. गहगड्ड (आनंदवर्धन उक्तियां)। ये लोक प्रचलित हैं-

'एक आंख तो धुंआ कानी, दूजी लई मिचकाय
भीत पे चढ़ के दौड़न लागे, मरबे के अटपाय।'

× × × × × ×

एक तो बसे सड़क के गाँव, दूजे बड़न बड़न सों न्याव
तीजे खड़े द्रव्य सों हीन, खुंस के ऊपर खुंस तीन।

उन्होंने प्रचलित कहावतों का भी वर्गीकरण किया है-

1. आलोचनात्मक - धोबी को कुत्ता घर को नें घाट को।
2. शिक्षाप्रद - राजा करे सो न्याव, पांसो परे सो दांव।
3. पोषणात्मक- गेवड़े खेती, गाँव सगाई, विरले भी होय भलाई
4. अंग्रेजी प्रभाव- पोलो चना, बाजे घना (Epty Vessels MÇ÷UÇUke More Sound)

तत्कालीन 'मधुकर' पत्रिका में तो बुन्देली शब्द या कहावतें भेजने वाले को एक वर्ष मुफ्त पत्रिका देने की संपादकीय टिप्पणी थी। (16 मार्च 1941)

घाघ और भड्डरी की लोक व्यवहार पर खरी उतरी लोकोक्तियाँ तो ग्राम्य अंचल में आज भी जीवंत हैं।

वर्षा -

1. 'शुक्रवार की बदरिया, रहे शनिश्च छाय
ऐसी बोले भड्डरी, बिन बरसें नें जाये।'
2. 'जो पै पवन पुरवैया आवे
उपजे अन्न मेघ फिर लावे।'
3. 'अग्नि कोन की बहै समीरा (आग्नेय दिशा)
पूरे काल दुख दयै सरीरा।'
5. 'दच्छिन बहे जल थल अलकौरा
ताव समय जूझे बहुवीरा।'

'नक्षत्र विज्ञान' भी यहाँ मार्ग दर्शक है-

'जो कँऊ बरसे स्वांत निसात (स्वाति नक्षत्र)
चलेन रांटा, बजैन तांत
जे कँऊ बरसे हांती (हस्ति नक्षत्र)
गेऊँ लग है छाती।

तिथि संकेत-

'माघ सप्तमी ऊजरी, बादर मेघ करंत
तौ असाड़ में भड्डरी, घना मेघ बरसंत।'

पर- कृष्ण असाड़ी प्रतिपदा, को अंवर गरंत
छत्री छत्री जूझिय, निहचे काल पडंत। (युद्ध अकाल)

कबीर की तरह ही बुंदेली कवि कागद लेखी पर नही 'आंखन देखी' पर विश्वास करता हैं। बुंदेली कठिन जीवन संघर्ष अनुभवों की भट्टी में पकी है। स्वास्थ्य विज्ञान की व्याधिमुक्ति की कुंजी इसी में है। शतायु या अल्पायु का रहस्य भी इसी नियमावली में छुपा है-

'सावन व्यारी कबहुन कीजे, भादों व्यारी नाव न लीजे
क्वांर के दो पाख, जी जतन जतन सों राख
कातक मास दिवारी, ठेलम ठेल व्यारी।'

इसके साथ ही बारह मासा में सेवनीय और असेवनीय खाद्य पदार्थों की सूची भी बुंदेली वैद्यों के गहन अनुभव की परिचायक है। ये सेवनीय सूत्र है-

'मीठी चैते चीपरी, बैसाख मीठो मठा
जेठ मीठी डोबरी, असाढ़ मीठो लटा
सावन मीठी खीर-खाँड, भादों भुंजे चना
क्वांर मीठी कुदई-काकरी, त्याव कोरी रोर कै
कातक मीठी कुदई, दही डारो गोर के
अगहन खाव जूनरी, भर्ता नीबू जोर के
पूस मीठी खीचरी, गुर डारो फोर के
माघ मीठे जोड़ा बेर, फागुन होरा बालैं।

ऐसे ही सेवनीय शतायु सूत्र और भी हैं-

'कातक दूध, अगहन में आलू।
पूस पात और माघ रतालू।
फागुन में शक्कर जो खायें।
चैत्र आंवला कच्चा खायें।
वैसाख जो खांय करेला।
जेठ दाख, असाढ़ केला।
सावन निशि में जब तक खावे।
भादों न्यार कबहु नहि पावै।
क्वांर कामना देय बचाय। तो शत वर्ष आयु हो जाय।'

पर इस विधान के साथ जरूरी है असेवनीय निषेध का ध्यान।

'चेत गुड़, बैसाखे तेल, महुआ जेठ, अषाढ़ बेल
सावन साग न भादो मही, क्वांर करेला, कातक दही
अगहन जोरा, पूस धना, माघ में मिश्री, फागुन चनां।'

ये बुंदेली वर्जनाएँ, सावधान जन जन को अल्पायु से बचाती हैं। यह व्यावहारिकता ही बुंदेली को लोकभाषा की गरिमा देती है और एक बोली को लालित्य पूर्ण लोक साहित्य में पदोन्नत करती है।

विशुद्ध बुंदेली काव्य से परे भी बुंदेलखण्ड के यशस्वी कवियों ने अपने खड़ी बोली हिंदी काव्यों में प्रस्तुत आंचलिकता को बुंदेली के लालित्य की लालिमा से अरूणाभ किया है। डॉ. श्याम सुन्दर दुबे का 'धरती के अनंत चक्करों में' ऐसा ही काव्य है जिसे डॉ. विजय बहादुर सिंह ने 'खेत की भाषा में लिखी गई कविताएँ' कहा है। उसमें 'पहलौटी विदा की बहुरिया', 'गियान धियान', कनबुच्ची साधे, धुकर पुकर, अबारी बेरा, अंगर खंगड़, 'गरदनन की मरोड़' जैसे सैकड़ों शब्द हैं जो खड़ी बोली बुंदेली की जुगलबंदी करते है। वे एक ललित निबंधकार भी है। अत: उनका गद्य भी इसी बुंदेली की बुलंदी को छूता है। वैसे शुद्ध बुंदेली गद्य का आविर्भाव काल सौ वर्ष के भीतर ही है। बसारी, छतरपुर के बुंदेली विकास संस्थान के बुंदेली बसंत स्मारिका के विगत आठ अंक भी बहादुर सिंह परमार के कुशल संपादन में बुंदेली के नवोत्कर्ष के परिचायक है। उसके बुंदेली गद्यकारों में डॉ. दुर्गेश दीक्षित, डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त, गुणसागर, सत्यार्थी, रामस्वरूप दीक्षित, वीरेन्द्र शर्मा, कौशिक, डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया, आदि प्रतिष्ठित नाम हैं। दमोह के डॉ. छविनाथ तिवारी ने 'बुंदेल शब्द सामर्थ्य' पर शोधकार्य कर बुंदेली रथ के अश्वों की दुलकी चाल के लालित्य की लगाम थामी है। भाषा शास्त्री, यही नियंत्रण का काम करके अनुशासित करता है। बुंदेली में भी 'अब दिन ललित बसंती आन लगे।'

एम.आई.जी.बी.
73, विवेकानंद नगर, दमोह (म.प्र.)
221829, 09893340894

चंदेरी का युद्धः बुंदेलखण्ड की महत्वपूर्ण घटना

– डॉ. [illegible]

चंदेरी का युद्ध 1528 ई. में मुगलों और राजपूतों के मध्य लड़ा गया था। इसमें एक ओर मुगलबादशाह बाबर की सेना थी, तो दूसरी ओर राजपूत राजा मंदिनीराय था खाण्डवा के युद्ध में राणा सांगा (राणासंग्रम सिंह) को हराने के बाद बाबर मंदिनीराय की राजधानी चंदेरी को जीतने के लिए बढ़ा था। यह युद्ध रानी मणिमाला व अनेक स्त्रियों के सामूहिक जौहर करने के कारण इतिहास के पृष्ठों पर रोमांच व राजपूती शौर्यगाथा के रूप में उत्कृष्टता के साथ दर्ज हैं।

चंदेरी किला मध्यप्रदेश के जिला अशोकनगर में स्थित है। चंदेरी का निकटतम रेल्वे स्टेशन एक ओर मुंगावली म.प्र. है तो दूसरी ओर ललितपुर (उ.प्र.) है वर्तमान में चंदेरी यहाँ की कशीद कारी के काम व साड़ियों के लिए जाना जाता हैं। प्रसिद्ध संगीतकार वैजू बावरा की समाधि, कटा पहाड़ (कटी घाटी), पहाड़ स्थित किला, सतखंडा महल और अन्य अनेक प्रसिद्ध स्थानों की विशिष्टता के कारण जाना जाता हैं।

बाबर के द्वारा किए गए आक्रमण से यह किला लगभग तबाह हो गया था। कहा जाता है कि सामरिक दृष्टि महत्वपूर्ण होने के कारण यह किला बाबर के लिए काफी महत्व था इसलिए उस चंदेरी के राजा राजपूत राजा मंदिनीराय से अपने जीते हुए कई किलों के बदले में यह किला मांगा, पर मंदिनीराय राजी न हुआ। वैसे भी 152 खानवा के युद्ध में मंदिनीराय राणासांगा की ओस से बाबर के विरुद्ध लड़ा था। इसलिए भी बाबर की निगाहें चंदेरी दुर्ग में थी।

चंदेरी का किला – चंदेरी का किला बहुत महत्वपूर्ण था। यह किला की पहाड़ियों ये घिरा हुआ था और मंदिनीराय इस बात से कि बाबर के लिए यहाँ तक पहुंचना आसान नही है, लेकिन मध्यभारत में अपनी सैनिक विशिष्टता के कारण यह किला बाबर के लिए अत्यंत महत्वूपर्ण नजर आया। अत: वह इसे प्राप्त करने के लिऐ कटिवद्ध हो गया था।

बाबर ने अपनी सेना व तोपों सहित युद्ध सामग्री को कटी घाटी जिसको मालवा शासक जोमन शाह ने कटवाया था। की ओर से चंदेरी में प्रवेश कराया, तोपें चलवाई, किले की दीवालों को तोड़ा और मंदिनीराय को किले से बाहर निकलने को विवश कर दिया।

मंदिनीराय ने राजपूती शान व साहस का परिचय देते हुये केसरिया बाना धारण कर अपनी सेना को लेकर दुर्ग का द्वार (अब इसे खूनी दरवाजा कहते हैं) खोल अंतिम आहुति के लिए उपस्थित किया क्योंकि बाबर की विशाल सेना के सामने मुट्ठीभर राजपूतों की पराजय सुनिश्चित थी। राजपूतों ने अपनी स्त्रियों से अंतिम भेंट की और रणभूमि में कूद पड़े। उधर रानी मणिमाला के नेतृत्व में स्त्रियों ने श्रृंगार कर शिवपूजा की, और तालाब (कीर्ति तालाब) के किनारे (दुर्ग में ही) सामूहिक चिता में प्रवेश कर जौहर कर आत्मोत्सर्ग कर लिया।

बाबर ने जब दुर्ग में विजयोपरांत प्रवेश किया तो उसे जलती चिता के अलावा और नजर नहीं आया राजपूतों का शौर्य व राजपूतानियों का जौहर संपूर्ण बुंदेलखण्ड के लिए गौरव व शान का विषय है मंदिनीराय, रानी मणिमाला व अन्य सहस्त्रों राजपूतों व राजपूतानियों ने जिस प्रकार से चंदेरी का युद्ध में अपने शौर्य की गाथा रची वह युग-युग तक बुंदेलखण्ड के लिए आन-बान-शान की प्रतीक बनी रहेगी। यही कहना चाहिए कि,

'चंदेरी के युद्ध ने, रचा नया इतिहास।
राजपुताना शौर्य पर और बढ़ा विश्वास।।
मणिमाला रानी प्रखर, था सूरज-सा ताप।
बुन्देली बलशालिता, कौन सकेगा नाप।।
नमन करूं, वंदन करूं और झुकाऊं माथ।
कभी न छोड़े वीरता, बुन्देलों का साथ।।

आजाद वार्ड- चौक
मंडला (म.प्र.)- 481661
मो. 9425484382

बुन्देली भाषा में सन्धि, समास और कारकों की स्थिति

– डॉ. अवधेश चन्सौलिया (प्राध्यापक हिन्दी)

बुंदेली भाषा का क्षेत्र लगभग 67, 500 वर्ग मील तक फैला हुआ है, यह चार सौ वर्षों तक राजभाषा के रूप में भी व्यक्त होती रही है, डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार "बुन्देली शुद्ध रूप में झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा (टीकमगढ़), सागर, नरसिंहपुर, सिवनी, तथा होशंगाबाद में बोली जाती है, इसके मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, दमोह, बालाघाट तथा नरसिंहपुर में प्रचलित है, " बुंदेली का व्याकरण खड़ी बोली हिन्दी के समान ही है, क्योंकि यह हिन्दी की प्रधान शाखा है, फिर भी बुंदेली की कुछ अपनी निजता भी है, जिसके कारण उसकी अपनी अलग पहचान भी है, संधि, समास, और कारकों के व्याकरणिक अध्ययन से यह स्पष्ट भी हो जायेगा।

संधि

'संधि' एक ध्वनिगत प्रक्रिया है। जब दो निर्दिष्ट वर्ण परस्पर निकट होने के कारण मिल जाते है तब उनके मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते है, जैसे- सु + आगत – सु + उ + आ + गत। इसमें चिह्नित वर्णों के मिल जाने से सु + व् + आ + गत – स्वागत हो जाता है। संधि तीन प्रकार की होती है (1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि।

(1) स्वर संधि (अच् संधि)-जब दो स्वर परस्पर निकट होने के कारण मिल जाते है, तब उनके मेल से जो विकार होता है उसे स्वर संधि कहते है, स्वर संधि से बने बुंदेली के कुछ शब्द निम्नानुसार हैं- महासय (महाशय), सिस्टाचार (शिष्टाचार), परमारथ (परमार्थ), परमेसुर (परमेश्वर), परतच्छ (प्रत्यक्ष) आदि।

(2) व्यंजन संधि (हल् सन्धि)- जब व्यंजन वर्ण से परे स्वर या व्यंजन वर्ण रहे, तब दोनों के मिलने से जो विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते है।

व्यंजन संधि से निर्मित बुंदेली के शब्द – तिसना (तृष्णा), संकलप (संकल्प), संपूरन (सम्पूर्ण), उच्चारन (उच्चारण) आदि।

(3) विसर्ग संधि- व्यंजन अथवा स्वर के विसर्ग के साथ मिलने से जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते है।

विसर्ग संधि से निर्मित बुंदेली के शब्द - दुरपरिनाम (दुर्परिणाम), निस्फल (निष्फल), निसन्देह (निःसन्देह), निरगुन (निर्गुण), प्रातकाल (प्रातःकाल) आदि।

जिस तरह हिन्दी तद्भव के संधि शब्द निर्मित हुए उसी तरह बुंदेली के भी संधि रूप बने जैसे-

"अब + ही – अभी – अब-ई

कहां + ही – कहीं – कऊँ

वह + ही – वहीं – वांई, वई, वऊ, वांई, वोऊ

न + ही– नहीं – नई

समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नवीन शब्द की रचना करते हैं, उसे समास कहते है, इसमें आपस में संबंधित शब्दों का या विभक्तियों का लोप रहता है। इन शब्दों के योग से बने शब्द को सामासिक पद कहते है। इन शब्दों को एक दूसरे से अलग करके, उनके मध्य में जो संबंध बताया जाता है, उसे विग्रह कहते है। ये छः प्रकार के होते है।

1. अव्ययी भाव- जिस समास में सामासिक शब्द का पूर्व पद प्रधान हो और जो अव्यय हो, उसे अव्ययी भाव समास कहते है। जैसे- प्रतिदिन, हरसाल आदि।

संस्कृत के अव्ययी भाव समास की अपेक्षा बुंदेली के अव्ययी भाव समास में अन्तर रहता है, संस्कृत में अव्ययी भाव समास का पहला पद अव्यय होता है और दूसरा शब्द संज्ञा अथवा विशेषण रहता है परन्तु बुंदेली में पहले अव्यय के बदले बहुधा संज्ञा ही पायी जाती है। जैसे- जथास्थान (यथास्थान), आजनम (आजन्म), आमरन (आमरण), बिरथा (व्यर्थ)

प्रतिशब्द के बदले उसी संज्ञा की द्विरुक्ति प्रथम शब्द में बहुधा विकृति करके भी अव्ययी भाव समास बनाये जाते है, जैसे- हाताई हात (हाथों हाथ), रातईरात (रातों रात), दिनई दिन (दिनों दिन) आदि कभी-कभी द्विरुक्ति शब्दों के बीच ई अथवा 'आ' जुड़ जाता है, जैसे- मनई मन (मन ही मन),

आपई आप (आप ही आप), मोंई -मों (मुहामुँह) आदि

2. तत्पुरुष समास- इसके प्रथम पद में कर्ता एवं सम्बोधन कारक के अलावा समस्त कारकों की विभक्ति का लोप रहता है और दूसरा पद प्रधान होता है, जैसे- माखन चोर, जातिगत आदि जिस कारक को विभक्ति का लोप होता है, उसी के नाम पर उस समास का नाम रखा जाता है, जैसे कर्मकारक की विभक्ति के लोप होने पर द्वितीय तत्पुरुष आदि।

(क) द्वितीय तत्पुरुष- चिड़ीमार, हांती डुब्बान, सेर भरो, कठ कोला आदि।

(ख) तृतीय तत्पुरुष- लूहरलगो, भुकमरो, दईमारो, मनमानों, मों-माँगो आदि

(ग) चतुर्थ तत्पुरुष- रेल भारौ, हतकरी, गैलखर्च, ठकुर-सुहाती, मालगुदाम आदि।

(घ) पंचमी तत्पुरुष- देस निकारौ, कामचोर, हरामखोर, अकलहीन, जन्मान्द आदि

(च) षष्ठी तत्पुरुष- दईबरा, दिन लौंटे, जलधरा, दिवालौ, सिवालौ, गंगाजल आदि

(घ) सप्तमी तत्पुरुष- बैदराज, कानाफूसी, रतजगौ, घुर-चढ़ी आनंद मगन, मनमौजी आदि

3. कर्मधारय समास - कर्मधारय समास तत्पुरुष समास का ही रूप है, इसमें प्रथम पद विशेषण होता है तथा दूसरा पद विशेष्य होता है। जैसे- सुपेत गैया, कारी-मिरच, भले मानुस, सेंदो नोंन, कारो पानी, खटमिट्टौ, लाल-लीलौ, पीरो-हरीरो आदि

4. बहुब्रीहि समास - इसमें कोई भी पद प्रमुख नहीं होता वल्कि सांकेतिक अर्थ प्रधान होता है। जैसे 'पीताम्बर' शब्द का अर्थ केवल पीला कपड़ा है तो वह कर्मधारय है, परंतु यदि उससे पीला कपड़ा है जिसका अर्थात विष्णु का अर्थ लिया जाय तो वह बहुब्रीहि है, इसी तरह चन्द्रशेखर जिसके सेखर पर चंदा हो अर्थात् महादेव जी, नील कंठ- नीला हो कंठ जिसका अर्थात् शिवजी

5. द्वन्द्व समास - इस समास में दोनों पद प्रधान होते है, इस समास के दो शब्दों या पदों के बीच से समुच्चय बोधक अव्यय लुप्त होकर उन दोनों शब्दों का अपने मूल रूप में संयोग होता है। बुंदेली में द्वन्द्व समास के उदाहरण इस प्रकार है-

राजा-परजा, मताई-बिटिया, देवरानी-जिठानी, देवर-भौजाई, दार-भात, लुचई-लडुवा, नोन-तेल, दूद-भात आदि।

6. द्विगु समास - इस समास में पहला पद संख्या-वाचक होता है, जैसे-तिपाई, चौमासो, पचगजी, पसेरी, सतनजा, सतखंडा, दुपट्टा, दुअन्नी, नौदुर्गा, आदि

बुंदेली समास की कुछ मुख्य विशेषताएँ-

1. तत्पुरुष समास में यदि प्रथम पद का आद्य स्वर दीर्घ हो तो वह ह्रस्व हो जाता है, जैसे- घुरदौर, रजबाड़ौ

2. कर्मधारय समास का पूर्व पद यदि आकारान्त हो तो वह अकारान्त हो जाता है, यथा- लँमडौर

3. बहुब्रीहि और द्विगु समास में जो पूर्व संख्या वाचक विशेषण आते हैं, वे विकृत हो जाते है,

जैसे- दुगुनों, चौखूँटा, सतखंडा

कारक

संज्ञा का सर्वनाम शब्द के उस रूप को कारक कहते है, जिसके द्वारा उनका संबंध वाक्य या वाक्य खण्ड के अन्य शब्द के साथ जाना जाता है। जैसे- मोहन का घोड़ा सड़क पर दौड़ता है। यहाँ 'मोहन का घोड़ा' और 'सड़क पर' में मोहन, घोड़ा और सड़क संज्ञा शब्दों के रूपान्तर हैं, जो इनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से सूचित करते हैं,

कारक का रूप बताने के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ कहते है- जैसे- मोहन ने सोहन को चाय का प्याला दिया, इसमें 'नें', 'को', 'एवं', 'का' विभक्तियों या परसर्ग हैं।

कारकों की अनेक परिभाषाऐं हैं जिनमें कुछ इस प्रकार है- 'क्रिया के साथ जिसका सीधा संबंध हो उसे कारक कहते हैं'।

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट होता है, कारक कहलाता है।

संस्कृत वैयाकरणों ने छः कारक माने है-

(1) कर्ता, (2) कर्म, (3) करण, (4) सम्प्रदान, (5) आपादान, (6) अधिकरण

कामता प्रसाद गुरू ने संबंध और सम्बोधन को भी

कारक मानते हुए आठ कारक माने हैं, बुंदेली भाषा में भी आठों कारकों के रूप मिलते हैं। जैसे-

(1) कर्ता कारक- नें, नें

वाक्य में प्रयोग- मोहन ने लुचई खाई

(2) कर्म कारक- कों, खों, खां, हां, अै

वाक्य में प्रयोग- मौंड़ा खों बुलाव

(3) करण कारक- सें, सों।

वाक्य में प्रयोग - कलम से लिखबाव।

(4) सम्प्रदान कारक- कों, खों, खाँ, के लाने, कें, लाजें, के काजें

वाक्य में प्रयोग- लरका के लानें, चटुआलियाव

(5) अपादान कारक- कौ, के, की, रो, रे, री

वाक्य में प्रयोग- नीम के पेड़ सें निबौरी गिर गयी।

(6) संबंध कारक- कौ, के, की, रो, रे, री

वाक्य में प्रयोग- मोहन के भैया इतै आव,

सीता की मताई हारै गयी हती

(7) अधिकरण कारक- में, पै, लौ

वाक्य में प्रयोग- हाय राम! मौंड़ा पे इतनो बोझ लाद दओ!

(8) सम्बोधन कारक- ये, हो, ओ, अरे, ओर, अरी, ए री

वाक्य में प्रयोग- ये मौंड़ा! ऊदम करौ तो मार खायगो

बुंदेली भाषा की भी अनेक उपबोलियाँ है। जैसे- मध्यप्रदेश के उत्तरी क्षेत्र- भिण्ड, ग्वालियर जिले जो उत्तर प्रदेश के आगरा, मैनपुरी और इटावा से सटे हुए हैं वहाँ ब्रज मिश्रित, कन्नौजी मिश्रित, खड़ी बोली मिश्रित रूप प्रचलित हैं, ये तीनों रूप अदावरी और तोमरगढ़ी कहे जाते हैं।

मध्यप्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र में बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी और बालाघाट में बोली जाने वाली बुंदेली सम्मिलित है, बुंदेली के पूर्वी क्षेत्र में जालौन, हमीरपुर, छतरपुर, पन्ना, जबलपुर, कानपुर एवं फतेहपुर जिलों की सीमाएं आपस में मिलती है। अत: इस क्षेत्र में बुंदेली के सात रूप- शुद्ध बुंदेली, लोधान्ती, कुन्द्री, निभट्टा, बनाफरी, तिरहरी एवं बघेली मिश्रित बुंदेली बोली जाती है, बुंदेलखण्ड के पश्चिमी क्षेत्र में मुरैना, शिवपुरी, गुना, विदिशा, सीहोर, भोपाल, होशंगाबाद एवं इसके आसपास के क्षेत्र आते है। अत: इस बुंदेली में भी कुछ भिन्नता है, मध्यवर्ती क्षेत्र में दतिया, झाँसी, टीकमगढ़, सागर, दमोह, नरसिंहपुर आदि जिले है। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली बुंदेली की भी अपनी अलग विशिष्टता है। इसलिए क्षेत्र विशेष की बुंदेली में अपनी-अपनी व्याकरणिक विशेषताएं है। बुंदेली अब स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित हो रही है।

संदर्भ-

1. सं. अशोक शर्मा बुंदेली भाषा और साहित्य, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 6 सन् 2004
2. डॉ. रमा जैन परिनिष्ठित बुंदेली का व्याकरणिक अध्ययन, विन्ध्यांचल प्रकाशन, छतरपुर पृ. 45 सन् 1980
3. पं. किशोरी दास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुसार पृ. 136
4. पं. भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण पृ. 52

डी.एम. 242, दीन दयाल नगर
ग्वालियर- म.प्र. 474005
मो. 09425187203

श्री कृष्ण रास मंडल बरास्ता वक्त पाजेब-सा मेरे पैरों में बँध...

– डॉ. राहुल मिश्र, प्राध्यापक हिन्दी

किर्र्‌...र...र...किड़ -किड़ ....धम्म... हे प्रभु गिरिधर..... गोवर्धनधारी...... अब राखो पत हमारी..... हम आए सरन तिहारी......किड़-धम्म-धम्म.... और वक्त पाजेब-सा मेरे पैरों में बँध, धड़कनों से संग सुर मिलाया करे... साज बजते ही साथी देखो यहाँ, रौनकें दिल में सबके बढ़ाया करे..... के साथ ही हे मात मेरे चरणों में .... आकाश झुका देंगे .... आँसू न बहा माता, मोती न लुटा माता ...... जैसे बोल बाँदा के उन तमाम बाशिंदों के लिए स्मृतियों की मधुर पूँजी बनकर आज भी संचित होंगे जिन्होने बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के संधिकाल में अपनी तरूणाई को देखा होगा। आज के तमाम युवाओं के लिए भी यादों में ये पंक्तियां होगी, किंतु यहाँ सीमा-रेखा खींचकर बताना इसलिए आवश्यक हो गया, क्योंकि इक्कीसवीं सदी के शुरूआती दशक में आई 'इंटरनेट क्रांति ने अचानक ही बहुत बड़ा बदलाव ला दिया था। और इस बड़े बदलाव ने सामूहिक मनोरंजन के केंद्रों को तेजी के साथ सिकोड़ दिया, चाहे बात सिनेमाघरों की हो, या फिर रंगमंचीय परंपराओं की हो.....।

नगाड़े की धमक और ढोलक की थापों के बीच गूँजते ऐसे चौवालों, कड़ो दोहों, दौड़, लँगड़ी दौड़, लावनी और लँगड़ी लावनी जैसे छंद-विधानों और सुर-लय-तालो के साथ जुड़ी हुई है, बाँदा के ठठराही मोहल्ले के श्रीकृष्ण रास मंडल की स्मृतियाँ ....। बाँदा नगर की धुर पुरानी आबादी के बीच स्थित वह ठठराही मोहल्ला, जिसके साथ छोटी बाजार की पहचान भी शामिल है .... चौक बाजार या बड़ी बाजार के अस्तित्व में आने के बाद से ही .....। वैसे तो ठठराही को ताँबे, पीतल, काँसे के पुराने बर्तनों का अस्पताल भी कहा जा सकता है, क्योंकि यहाँ साल-भर बर्तनों की ठक-ठक गूँजती ही रहती है, मगर बसंत पंचमी के आने के साथ ही इस मोहल्ले में कुछ ऐसी सांस्कृतिक हलचलें भी बढ़ने लगती है, जिनका संबंध श्रीकृष्ण रास मंडल से जुड़ता है। होलिकादहन के बाद आने वाली पंचमी से शुरू होने वाली रासलीला के लिए तैयारियां वसंत पंचमी से ही शुरू हो जाती है, इसमें एक तरफ कलाकार अपने अभिनय की तैयारी करते है, तो दूसरी रंग-रोगन करके रंगमंच को व्यवस्थित करने का क्रम चल निकलता है। वैसे तो रंगशाला ज्यादा पुरानी नही हैं। पुराने जमाने में मंचन के लिए सड़क में ही तखत बिछाकर और उनके ऊपर चाँदनी लगाकर मंच तैयार कर लिया जाता था। समय और स्थितियों के बदलाव के साथ, और लोगों के आकर्षण व लगाव के कारण ऊँचा और पक्का मंच अस्तित्व में आया, जिसे आज भी देखा जा सकता है। रंगशाला के दोनों तरफ से गुजरने वाले रास्तों के कारण यह अपनी स्वाभाविक, भौगोलिक स्थिति के कारण ही थियेटर के बड़े परदे जैसा बन गया है। बाकी की कमी दूर तक चली जानी वाली चौड़ी सड़क के दोनों किनारों पर बने मकानों के चबूतरों नें पूरी कर दी है, जो दर्शकों के बैंठने के लिए अच्छा और ऊँचा उपलब्ध करा देते हैं।

अगर अतीत में उतरकर देखे, तो साफ नजर आता है, कि होली की पंचमी के आने के साथ ही श्रीकृष्ण रास मंडल के ऊँचे मंच के निकट के मकानों के चबूतरों पर अस्थाई कब्जा कर लेने की होड़ चल पड़ती थी घरों के मालिकान अपने-अपने घरों के छज्जों में बैठकर, तो दूर-दराज से आने वाले दर्शकगण मकानों के चबूतरों में बैठकर रासलीला का आनंद लिया करते थे। नजदीक की, और अच्छी वाली जगह की तलाश के लिए शायद पंचमी की सुबह का इंतजार भी नही किया जाता होगा, ऐसा भी कहा जा सकता है, क्योंकि अच्छी जगह के लिए बड़ी मारामारी होती थी, यहाँ तक कि कई बार झगड़े भी हो जाया करते थे। होली की पंचमी से दस दिनों तक चलने वाली रासलीला के लिए दर्शकों द्वारा तय की गई जगह, जिसे धुर बुंदेलखण्डी में छेकी गई जगह कहा जा सकता है, पूरे के पूरे दस दिनों के लिए आरक्षित हो जाती थी। पूरे दिन चबूतरों पर बिछी रहने वाली फट्टियाँ और बोरे इस बात को बखूबी बता दिया करते थे, कि लोगों में रासलीला और स्वाँग देखने के लिए कितना आकर्षण होता था।

कमोबेश ऐसा ही आकर्षण स्थानीय कलाकारों के लिए भी होता था, जिन्हे रासमंडली में बतौर कलाकार काम करने का मौका मिल जाता था। लोकनाट्य विधाओं के प्रति आकर्षण रखने वालों के लिए श्रीकृष्ण रासमंडल का दस दिवसीय

आयोजन किसी बड़े 'इवेंट' से कम नही होता था, और श्रीकृष्ण रास मंडल गीत-संगीत-अभिनय आदि में रूचि रखने वाले स्थानीय लोगों को एक अवसर उपलब्ध कराने का माध्यम बन जाता था। इसी कारण जिस कलाकार को रास मंडली में अभिनय का मौका मिलता, वह गर्व से फूला नही समाता था। पुराने समय में महिला कलाकारों के लिए ऐसे मंच वर्जित होते थे, इस कारण महिला पात्रों का अभिनय भी पुरुष ही करते थे, और वह भी ऐसा जबरदस्त, कि सचमुच की महिलाएँ भी हार मान बैठे। इन कलाकारों की छाप लोगो के मन में ऐसी बैठती थी, कि मंच के बाहर भी उनकी अपनी एक पहचान बन जाती थी दिमान हरदौल का अभिनय करने वाले रिछारिया जी, सरदार भगत सिंह और भक्त मोरध्वज का अभिनय करने वाले पन्नालाल स्वर्णकार, शालिगराम गुप्त, फुल्ले महाराज और ग्याल महाराज जैसे नामचीन कलाकर भले ही आज इस दुनिया में न हो, लेकिन उनके अभिनय-कौशल को आज भी लोग याद करते हैं।

चैत्र मास की कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पंचमी तक चलने वाले होलिकोत्सव का रंग उतरते-उतरते कृष्ण पंचमी यानि रंगपंचमी के आगमन के साथ ही बाँदा और इसके आसपास के गाँवो का उत्सवधर्मी समाज श्रीकृष्ण रासमंडल की लीलाओं को देखने के लिए तैयार हो जाता, साल-भर की लंबी प्रतीक्षा के बाद........। मगर बुंदेलखण्ड में रासलीला? ...... श्रीकृष्ण की लीलाओं का मंचन........? यह तो रामलीलाओं की भूमि है...... चित्रकूट में कोल-भीलों के बीच दोना पत्तलों में कंद-मूल-फल खाने वाले वनवासी श्रीराम की भूमि है ..... राजा के रूप में विराजमान ओरछा के अधिष्ठाता की भूमि है, गोस्वामी तुलसीदास के श्रीरामचरितमानस की पंकियों को रात-दिन गुनगुनाने वाली रंग-रंग में जोश भर देने वाले आल्हा के गवैयों की भूमि है ..... तब यहाँ कन्हैयाजी अपनी लीलाओं के साथ कैसे आ गए? यह बड़ा प्रश्न श्रीकृष्ण रास मंडल का जिक्र होते ही अनेक लोगो के मन में उठ खड़ा होता होगा। प्रश्न भी स्वाभाविक ही है ..... और उत्तर बुंदेलखण्ड की अपनी अनूठी पहचान में निहित है समन्वय का भाव बुंदेलखण्ड के कण-कण में बसा है। अगर प्रभु श्रीराम चित्रकूट में, रामराजा ओरछा में विराजते है, तो ओरछा में ही दिमान हरदौल भी पूजे के आराध्य शिव और शक्ति के प्रतीकों को, परमालों-प्रतिहारों की देवियों को लोग बड़ी आस्था के साथ पूजते है। बुंदेलखण्ड की सतत् संघर्षशील प्रवृत्ति के बीच लोकरक्षकों का वजन लोकरंजक से कुछ ज्यादा रहा, संभवतः इसी कारण प्रलयंकर शिव, शक्तिस्वरूपा चंद्रिका और महेश्वरीमाता, और दुष्टों के संहारक श्रीराम अपेक्षाकृत अधिक स्थान जनआस्थाओं में पा सके, बजाय लीलाधारी नटवरनागर कन्हैया जी के ...। बुंदेलखण्ड की रामलीला बहुत प्रसिद्ध है, और उसमें भी राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद का प्रसंग तो दूर-दूर तक अपनी ख्याति रखता है, किंतु कृष्ण की लीलाएँ इस क्षेत्र की पहचान से नही जुड़ी हैं। इस कारण से भी श्रीकृष्ण रास मंडल का वैशिष्ट्य बढ़ जाता है, क्योकि इस रंगमंच ने बुंदेलखण्ड की अनूठी समन्वय की प्रवृत्ति को पिछले दो-ढाई सौ वर्षो से जीवंत करके रखा है। इसी विशेषता के आधार पर यह भी कहा जा सकता है, कि समूचे बुंदेलखण्ड में श्रीकृष्ण की रासलीलाओं के मंचन का यह सबसे पहला, इकलौता और पुराना केंद्र होगा।

अगर मथुरा की रासलीला का बुंदेलखण्डी संस्करण श्रीकृष्ण रास मंडल में होने वाली माखनचोरी चंद्रखिलौना, कंसवध और नाग-नथैया जैसी लीलाओं में देखा जा सकता है, तो अलग-अलग कथानकों पर आधारित स्वाँग की परंपरा का विस्तार भी यहाँ देखने को मिलता है। कलगी और तुर्रा नाम के ख्यालबाजी के अखाड़ो से निकली स्वाँग की परंपरा हाथरस, वृंदावन और मथुरा में विशेष रूप से देखी जा सकती है इसको विस्तार देने का काम हाथरस वाले पंडित नथाराम शर्मा गौड़ ने किया। वस्तुत: उनके आगमन के साथ ही नौटंकी के स्वाँगो का लिखित रूप तैयार होने लगा था, जिसने रंगमंचों को व्यवस्थित करने का बड़ा काम किया। गुरू शिष्य के रूप में चलने वाली परंपरा में स्वाँग की पुस्तकों के आगमन के साथ ही संवादों को, संगीत की धुनों को तैयार करना सरल हो गया। हाथरस की स्वाँग की यह परंपरा श्रीकृष्ण रासमंडल में भी दिखाई देने लगी। इसमें बड़ी भूमिका गुरू-शिष्य परंपरा की भी रही है, जो आज भी कायम है, पंडित नाथूराम शर्मा गौड़ द्वारा रचित स्वाँगों की तर्ज पर श्रीकृष्ण रासमंडल में भी स्वाँग लिखने और मंचन करने की शुरूआत हुई। इसमें सबसे बड़ा नाम फूलचंद गुप्ता बताशेवाले का आता है उन्होंने बभ्रुवाहन नामक स्वाँग लिखा था। फूलचंद गुप्ता रास मंडली से भी जुड़े

हुए थे, इस कारण उन्होंने स्थानीय बहुत पसंद किया जाता था। वभ्रुवाहन स्वाँग के साथ ही वीर अभिमन्यु, भक्त मोरध्वज और राजा हरदौल के स्वाँग भी बहुत प्रसिद्ध रहे है, जिनका मंचन हर साल किया जाता रहा है। इन स्वाँगो को देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ती थी। बुंदेलखण्ड की अपनी पहचान बुंदेलखण्डी लोकगायकी, जैसे-लमटेरा, फाग, दादरा, रसिया, कजरी, उमाह, कछियाई, राई आदि को दस दिवसीय रासलीला का प्रमुख आकर्षण कहा जा सकता है। बुंदेलखण्ड के लोकगायकों के लिए, यह मंच बड़ा अवसर उपलब्ध कराता था। इस मंच के गायकों को दूसरे स्थानों में भी विशेष मान-प्रतिष्ठा मिलती थी।

वक्त पाजेब-सा मेरे पैरो में बँध धड़कनों के संग सुर मिलाया करे.... लावनी की ये पंक्तिया श्रीकृष्ण रास मंडल के संदर्भ में एकदम खरी उतरती है, क्योकि ठठराही मोहल्ले का यह साधारण-सा आयोजन समय और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाने में पीछे नही रहा है। समय के साथ आते बदलावों की हर हरारत को इसने अपने में उतारा है। श्रीकृष्ण की भक्ति-विषयक लीलाओं और दशावतार के मंचन के बाद मनोरंजन के लिए इसमें स्वाँगों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों-बुराईयों के प्रति लोगो को सचेत करने का काम बखूबी होता रहा। इतना ही नही, देश की आजादी के आंदोलन के दौरान, और उसके बाद भी श्रीकृष्ण रासमंडल अपनी रंगमंचीय प्रस्तुतियों के माध्यम से समय और समाज के साथ निरंतर जुड़ा रहता है। आजादी के आंदोलन में पारसी रंगमंचों की बड़ी भूमिका रही है। अंग्रेजो के कोप से बचने के लिए रंगमंच में इस तरह से प्रस्तुतियाँ दी जाती थी, कि क्रांतिकारियों का संदेश लोगों तक पहुँच भी जाएँ और अंग्रेजों की पकड़ में भी न आए। कमोवेश ऐसा ही दायित्व उस कालखंड में श्रीकृष्ण रासमंडल ने भी निभाया। पौराणिक पात्रों के साथ ही राजा हरदौल और भक्त मोरध्वज जैसे स्वागों के मंचन में देश की आजादी के आंदोलन के साथ जुडने के संदेश निहित होते थे। देश की आजादी के लिए शहीद होने वाले क्रांतिकारियों के जीवन का मंचन करके लोगो के मन में पहले आजादी की अलख जगाने, और आजादी के बाद इन क्रांतिकारियों की स्मृतियों को जीवंत रखने में भी रास मंडल की बड़ी भूमिका रही है। रासलीलाओं के क्रम में आने वाले शहीद भगतसिंह नाटक में सुखदेव, राजगुरू, चंद्रशेखर आजाद, बटुकेश्वर दत्त आदि क्रांतिकारियों के जीवन को उतारा जाता था। इतना ही नही, है, और इसे देखने के लिए भी भारी भीड़ इकट्ठी हुआ करती थी अगर रंगपंचमी से दस दिनों के भीतर 23 मार्च आ जाता था, तो सरदार भगतसिंह का मंचन 23 मार्च, अर्थात सरदार भगतसिंह के बलिदान दिवस पर होता था। यह क्रम आज भी अनवरत जारी हैं।

बाँदा के इस अनूठे रंगमंच के नामचीन कलाकार कस्सी गुरू की मृत्य नब्बे वर्ष की आयु में हुई थी, उनकी मृत्यु को लगभग तीस वर्ष हो चुके है। कस्सी गुरू बताया करते थे, कि उनके बाबाजी के रहस के मंचन को देखा था। अपने बाबा से प्रेरित होकर की कस्सी गुरू रास मंडल से जुड़े थे। कस्सी गुरू के बताने के अनुसार पंचलैट के उजाले में बिना ध्वनि-विस्तारक यंत्रों की मदद के, अस्थायी मंच बनाकर जितने उत्साह के साथ दस दिनों तक रासलीलाओं का आयोजन होता था, वह निश्चित तौर पर आज के समय में कल्पनातीत है। नक्कारे की धमक भी ऐसी होती थी, कि बाँदा के आसपास के लगभग बीच-पचीस किलोमीटर के दायरे में आने वाले गाँवों के लोग इकट्ठे हो जाते थे। कभी कभी सिर पर आ गए सूर्यदेव की परवाह किए बिना लोग डटे ही रहते थे।, मानो पूरे स्वाँग को देखकर ही उठने का प्रण लेकर आए हो..... कब रात गुजर गई, कब दिन चढ़ आया इससे बेखबर...। कस्सी गुरू की बातो का सहारा लेकर अगर श्रीकृष्ण रास मंडल का काल-निर्धारण किया जाए, तो यह परंपरा सीधे तौर पर दौ सौ वर्षों से अधिक पुरानी नजर आती है।

वैसे ठठराही के ही प्रेम चच्चा, उर्फ बैरागी डॉक्टर उर्फ प्रेम श्रीवास्तव जी के पास भी इस रंगशाला से जुड़ी ढ़ेरों स्मृतियाँ थी। आज उनको दिवंगत हुए कई वर्ष गुजर गए है, किंतु उनकी मोहक वंशी की धुन को कभी भुलाया नही जा सकता। अपने नाम से अनुरूप ही वे बैरागियों जैसा तंबा और बंडी पहनते थे। होम्योपैथी के अच्छे जानकार थे, साथ ही गीत-संगीत से विशेष लगाव रहते थे। यही एक कारण था, जो उनको श्रीकृष्ण रासमंडल से जोड़ें हुए था। उनकी परंपरा को उनके बेटे प्रशांत ने आगे बढ़ाया है। बंशी, ढोलक, हारमोनियम आदि विभिन्न वाद्य-यंत्रों में पारंगत प्रशांत जी की श्रीकृष्ण रासमंडल में सक्रियता सुखद है, सुंदर है। आज पुरानी पीढ़ी के

तमाम कलाकार या तो दिवंगत हो चुके है. या फिर शारीरिक रूप से अक्षम हो चले है। ऐसी स्थिति में उनके वंशजों ने दौ सौ साल पुरानी इस परंपरा को जिलाए रखने का यत्न किया है. जो कई अर्थों में महत्वपूर्ण है. सराहनीय हैं।

श्रीकृष्ण रास मंडल के प्रमुख कर्ता-धर्ता श्री बसंतलाल जी सराफ एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है. जिन्होंने लंबे समय तक सभी को जोड़कर रखा है. और इसके लिए वे आज भी सक्रिय है. अपनी बढ़ती उम्र की विवशता के बाद भी ....। किंतु उनकी वेदना आज के बदलते समय को लेकर है। सूचना और संचार क्रांति ने बहुत कुछ बदल दिया है। लोगों के पास उपलब्ध दूसरे तमाम मनोरंजन के साधनों ने दौड़ती-भागती जिदंगी ने श्रीकृष्ण रास मंडल की उस पुरानी हनक को ठेस पहुँचाई है. जिसके बूते इस रंगमंच ने समाज का मनोरंजन भी किया. समाज को नसीहतें भी बाँटी और बुंदेली माटी की पहचान को जिलाए रखा। बसंतलाल जी के सुपुत्र विजय की पीढ़ी भी उसी सक्रियता के साथ परंपरा को निभाते आ रही है. किंतु तेजी से बदलते समाज और दौड़ती-भागती जिंदगी के बीच सामूहिक रूप से बैठकर कुछ मनोरंजन कर लेने. अपनी सांस्कृतिक पहचान को दुहरा लेने और लोकजीवन का सहकार-सानिध्य पा लेने के अवसर घटते जा रहे है. या कहें. कि हम अपनी जिंदगी के जरूरी कामों को सूची से इन्हें हटाते जा रहे है। संभवतः इसी कारण बुंदेलखण्ड का यह अनूठा रंगमंच अपने लगभग दो सौ वर्षों के गौरवपूर्ण अतीत को समेटकर अस्तित्व के लिए संघर्ष करने को विवश हो गया हैं।

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (मानद विश्वविद्यालय)
लेह-लद्दाख-194101 (जम्मू कश्मीर)
संपर्क- 09452031190/09419973362

जल संरक्षण के विलक्षण स्रोत : चन्देल कालीन तालाब

– शिवभूषण सिंह गौतम

जल मानव जीवन के लिये परम आवश्यक तत्व है, किन्तु इसकी उपलब्धता निरंतर घटती जा रही है। परिणाम स्वरुप जीव जगत का जीवन जल संकटापन्न होता जा रहा है विश्व में उपलब्ध कुल जल का 97 प्रतिशत (सन्तानवे प्रतिशत) महासागरों व समुद्रों में है, जब कि मात्र 3 प्रतिशत (तीन प्रतिशत) ही शुद्ध जल बचता है। वह भी विश्व की वर्तमान जन संख्या के मान से वर्ष 2025 तक के ही यथेष्ठ हो पायेगा।

भारत वर्ष में तो यह स्थिति है, कि वर्तमान में केवल 40 प्रतिशत (चालिस प्रतिशत) लोगों को ही स्वच्छ पेयजल सुगमता से उपलब्ध हो पाता है। जबकि देश की 60 प्रतिशत (साठ प्रतिशत) आबादी आज भी जल संकट से जूझ रही है। इसमें भी दो प्रकार की समस्याये सामनें आ रही हैं। एक तो पानी के प्राकृतिक श्रोतों की कमीं और दूसरी है पीने योग्य शुद्ध पेयजल का अभाव।

प्राकृतिक संसाधनो का मानव के हित में जब तक संवहनीय संदोहन संतुलित रुप से होता रहा, सब कुछ ठीक ठाक रहा, किन्तु जैसे-जैसे मनुष्य की लोभी प्रवृत्ति पर आक्रामक होती गई, वर्षा की मात्रा और निश्चितता में परिवर्तन होता गया। वन क्षेत्र घटने लगे और जल क्षेत्र भी सिकुड़ने लगा। तालाबो के उदर मे गोद जमने लगी, जिससे गहराई कम होकर जल वहन क्षमता प्रभावित हुई।

भूमिगत जल के असंतुलित दोहन तथा वनों की अन्धाधुन्ध कटाई ने जल स्त्रोतों को मृत प्राय बना दिया है तो औद्योगिक और मानवीय गतिविधियों ने उपलब्ध जल स्त्रोतों को दूषित कर दिया है। यह संकट देश व्यापी है! गाँव व शहर प्राय: सभी इसकी चपेट में है।

बुन्देलखण्ड का अधिकांश भू-भाग पहाड़ी पठारी वनाच्छादित जल विहीन चरागाही क्षेत्र रहा है। सर्व प्रथम चन्देल शासकों ने इस भू-भाग के सर्वागीण विकास हेतु गम्भीरता पूर्वक विचार किया, ओर ''जल ही जीवन है'' की अवधारणा को स्वीकारते हुये उसके संरक्षण व संवर्धन हेतु लोक कल्याणकारी कदम उठाये।

चन्देल शासकों ने वर्षा के धरातलीय प्रवाहित जल को पहाड़ियों टौरियों के बीच की निचली भूमि तथा नालों और पहाड़ी नदियों को पत्थरों की शिलाओं को सीढ़ी नुमा रख कर उन की दरारों को मिट्टी से भर कर सुदृढ़ और चौड़े बंधानों वाले तालाबों को निर्माण करा कर आवश्यक रुप से होने वाले जल बहाव को रोकने का काम किया।

तालाबो में जल भरा तो क्षेत्र के लोगों के जीवन में स्थायित्व के साथ साथ समृद्धि भी आई। तालाबो के आस-पास पानी के आश्रय से बस्तियाँ बसी। पानी के सहारे आस पास के क्षेत्रों में खेती-बारी होनें ली। इस प्रकार क्षेत्र में तालाबों का जितना निर्माण होता गया, उतना ही अधिक विकास होता गया।

चन्देल राज्य की सुदृढ़ जल व्यवस्था उनकी समृद्धि का मुख्य कारण बनती गई। जिसमें उनके द्वारा गाँव-गाँव मे बनवाये गये इन तालाबो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परिणामत: बुन्देलखंड की ऊबड़ -खाबड़ धरती शताब्दियो से शस्य श्यामला हैं। आज भी इन तालाबों से हजारों एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। इन तालाबो के जल से भूमिगत जल के स्तर को बनाये रखने में सहयोग मिलता है और कुआं, बावडियों से भी जल की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में बनी रहती है।

जिस राज्य में कृषि उन्नति के इतने सुदृढ़ उपाय किये हो उसकी समृद्धि तो सहज ही सम्मान्य है। कृषि ही उस काल में समृद्धि का मूल आधार थी। चन्देल शासको के पास पारस पत्थर की परिकल्पना उनकी समृद्धि का ही घोतक है।

चन्देलों ने प्रमुख रुप से दो प्रकार के तालाबों का निर्माण करवाया था। एक तो स्वतंत्र अस्तित्व वाले बड़े-बड़े सागर या सरोवर, जिनके अस्तित्व ने इस क्षेत्र में प्राकृतिक झीलो के अभाव की पूर्ति, और दूसरे वे तालाब जो एक दूसरे से सम्बद्ध होकर श्रृंखलाबद्ध होते थे।

इन्हे सांकल तालाब भी कहा जाता था। चन्देलों की इस जल प्रंबंधन व्यवस्था को उनके परवर्ती शासको ने भी अपनाया था। छतरपुर, चरखाये दतिया, टीकमगढ़ आदि के श्रृंखलाबद्ध तालाब इसके ज्वलन्त प्रमाण है।

चंदेल नरेश यशोवर्मन ने छतरपुर की पूर्वी सीमा पर

केन नदी के पश्चिमी पार्श्व में मनियॉगिरि पर्वत पर, प्रसिद्ध मनियॉगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया था। जिसके बीच में व आस-पास आठ विशाल तालाबों का भी निर्माण करवाया। इसके कारण ही इसके जल दुर्ग की भी संज्ञा दी जाती थी।

इसी प्रकार महाराज मदनबर्मन ने महोबा में मदन सागर के साथ साथ इसी नाम के अन्य तालाव भी बनवाये थे। जैतपुर का बेलाताल बल्देवगढ़ का ग्वाल सागर भी इन्ही मदन वर्मन के शासन काल में बनवाये गये थे।

महोबा को तो चन्देलवंश की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। जिसमें शाहिल सागर, विजय सागर कीरत सागर, मदन सागर, कल्याण सागर, किड़ारी तालाब आदि है, जो आज अपने आस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि प्राय: सभी चंदेल राजाओं ने अपने-अपने शासन काल में लगभग 22 छोटे-बड़े जलाशयों का निर्माण करवाया था जिसमें से वर्तमान में उपरोक्त पांच-छह तालाब ही दृष्टि गोचर होते है।

कई तालाबों को आधार बना कर उनके किनारे बाद में बसी बस्तियों का नामकरण उन तालाबों के नाम पर ही हुआ है। सागर - बेला, ताल धुबेला, ईशानगर, खोंप निवारी दोनी, किड़ारी रानीताल, कूंड़नताल आदि ऐसे ही उदाहरण हैं। जबलपुर में तो ऐसे कई उपनगर मुहल्ला ही तालाबों को पाटकर बसे हैं। जिनमें रानीताल आधारताल, चेरीताल आदि प्रमुख हैं।

इन तालाबों की एक विशेषता यह भी है, कि यह जितने विशाल हैं उतने ही मजबूत भी हैं। इनके तटों पर चतुर्दिक स्नानार्थ पक्के मनोहर घाट हैं, तो वही तट बंधों पर देवालयो के साथ बरगद, पीपल, गूलर, जामुन, इमली, कदम, पाकर आदि के सघन विशाल दीर्घजीवी वृक्ष भी लगाये गये है। इन सरोवरों ने अपने निर्माताओ की कीर्ति को आज तक अक्षुण्य बनाये रखा है।

इन सभी तालाबों का निर्माण शासक वर्ग नें ही नही किया है वरन इस पुण्यकार्य में राजन्य वर्ग से इतर कई अन्य लोगो द्वारा भी सम्पन्न कराया गया ह। इनमें से कई साधन सम्पन्न थे तो कई विपन्न होकर भी दृढ़ संकल्प रहे है जिनकी कीर्ति कथायें आज भी लोक में प्रचलित हैं।

वर्तमान में इन अजस्र जल श्रोतों की घोर उपेक्षा नें इन्हें भारी क्षति पहुँचाई है। इनका अस्तित्व दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है। पुरानें तालाबों में कुछ फूट गये है, कुछ मिट्टी से भर गये है। कुछ अतिक्रमण का शिकार हो गये है। बचे हुये तालाबों में भी कुछ के पेटे गोंद से भर गये हैं, तो कुछ के तटबंधों में रिसाव होनें लगा है। कुओं और बाबड़ियों को कचड़ा घर में तब्दील कर दिया गया है। बुन्देलखण्ड में कभी हजारों की संख्या में बने यह तालाब आज सैकड़ों की संख्या में सिमट कर रह गये है।

यदि हम आज भी बुन्देलखण्ड में व्याप्त इस जल संकट से उबरना चाहते हैं तो चंदेलों द्वारा निर्मित इन विलक्षण जल श्रोतों का पुरुद्धार कर पुनर्जीवित करना होगा, ताकि जल संरक्षण कर हम अपने जीवन को सहज सरस और सुरक्षित रख सकें।

"अंतर्वेद"
कमला कालोनी
छतरपुर (म.प्र.)
मो. 9826756929

छतरपुर में स्थित गुसाईयों की समाधियां

– नरेश कुमार पाठक

मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल साम्राज्य का विघटन शुरू हुआ। उनके सूबेदारों, नवाबों और छोटे-छोटे राजाओं ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये उनके आपसी संघर्षों का लाभ उठा कर उत्तर भारत पर नादिर शाह, अहमदशाह अब्दाली ने आक्रमण किया, साथ ही मराठों, अंग्रेजों के सैनिक अभियानों ने स्थिति और खराब कर दी थी। शान्ति और सुरक्षा के अभाव में खेती उद्योगधंधे व व्यापार तो जैसे ठप्प ही हो गया। व्यापारियों के कारवे और बाजारों की लदाने मार्गों की असुरक्षा के कारण सम्भव नही रह गयी। ऐसे ही समय देश के अन्तरदेशीय व्यापार के कुछ विखरे सूत्र संयोग के नागा गुसाई साधुओं के हाथ आ गये। अठारवीं शती ईस्वी के अंग्रेजी विवरणों में उनके उल्लेख सन्यासी ट्रेडर्स के नाम से मिलते है। साधु सन्यासी सनुदायों की परम्परायें हमारे देश मे बहुत पुरानी है, उनके दलों द्वारा लम्बी-लम्बी यात्रा करने माघ मेलों आदि में सदलबल भाग लेने के अनेक उल्लेख मिलते है, इन साधु सम्प्रदायों में कुछ ऐसे सम्प्रदाय भी थे जो आत्मरक्षा के लिये शारीरिक बल और अस्त्र-शस्त्रों के प्रशिक्षण को महत्व देते थे। नागा गुसाई ऐसे ही योद्धा साधुओं के वर्ग के थे। नागा गुसाईयों ने साधुओं के रूप में ख्याति अर्जित की हैं अपने व्यापारिक गतिविधियों के लिये भी वे कम महत्वपूर्ण न थे। ये बलशाली योद्धा भी थे। इन्होंने बुन्देलखण्ड के राजाओं के लिए अनेक युद्ध लड़े, 19 वीं शती ई. तक भारत पर अंग्रेजों की सत्ता स्थापित होते ही गुसाईयों की उग्रता पर अंकुश लगता गया। बुन्देलखण्ड के गुसाई मठों के महन्तों, चेलों, और व्यापारियों के रूप में बसने लगे। फलस्वरूप उनके स्वभाव की उग्रता और आक्रमणता भी धीरे-धीरे पहले से कम होती गयी। गुसाई मुख्य रूप से शैव थे। उनमें अधिकतर अपने मृतकों को भूमि समाधि कर समाधि के ऊपर शिव मंदिर निर्मित करा देते थे। छतरपुर जिले के गुसाईयों के अधिकांश पूरी गिरी और वन गोसाई है। इन्होंने परम्परागत अपने मृतकों की पादकों स्थित स्थायी रखने के लिये अनेक समाधियों का निर्माण कराया।

छतरपुर नगर में कुल 28 समाधियां है, जिन्हे अध्ययन की दृष्टि इस प्रकार विभाजित किया गया है। प्रथम समूह में छतरपुर नारायणपुरा मार्ग पर क्रमांक 01 से 07 तक की सात समाधियां हैं। द्वितीय समूह छतरपुर बस स्टेण्ड पर समाधि क्रमांक 08 से 12 तक पांच समाधि है। तृतीय समूह में छतरपुर - नौगांव मार्ग पर दायी ओर समाधि क्रमांक 13 से 14 तक दो समाधियां है। चतुर्थ समूह छतरपुर – नौगांव मार्ग के बाई ओर क्रिश्चन स्कूल के पीछे क्रमांक 15 से 19 तक की पांच समाधियां है। पंचम समूह में सिद्ध गणेश मार्ग छतरपुर में क्रमांक 20 से 23 तक चार समाधियां है। एवं छटे समूह में विश्वनाथ कालोनी छतरपुर में क्रमांक 24 से 28 तक कुल पांच समाधियां है, जिनका विवरण इस प्रकार है:-

प्रथम समूह में छतरपुर-नारायणपुर मार्ग क्रमांक 1 से 7 तक कुल सात समाधियां है।

समाधि क्रमांक- हनुमान गिरी बाबा की समाधि है जो मध्य में निर्मित है। यह ऊँची जगती पर निर्मित है। इसमें मण्डप अन्तराल और गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु तीन ओर मेहरावदार द्वार है। उसके ऊपर सुन्दर कंगूरो पर छज्जा है। छज्जे के नीचे चित्र बने हुए है। ऊपर कमलदल अलंकरण, मध्य में गुम्बद उसके चारों कोनो पर लघु शिखर और गुम्बद के सहारे आले निर्मित है। गर्भगृह का आंतरिक भाग खाली है। जंघा भाग में सुन्दर आले उसके ऊपर लघु मंदिर शिखर कंगूरों पर छज्जा है। छज्जे के नीचे पृष्ठ में हनुमान, साधुओं के चित्रों का चित्रण है। समाधि क्रमांक 02 हनुमान गिरी बाबा की पत्नी की समाधि है। ऊँची जगती पर निर्मित समाधि में गर्भगृह अन्तराल और मण्डप का प्रवेश द्वार मेहरावदार है। यह बेलबूटों से अंलकृत है, ऊपर कंगूरा, छज्जा है। शिखर के मध्य खरबूजानुमा गोल गुम्बद है, उसके चारों ओर लघु शिखर उसके मध्य गणेश प्रतिमा निर्मित है। इसी प्रकार दायी ओर दुर्गा जी की प्रतिमा का अंकन है। अन्तराल और गर्भगृह का जंघा भाग अंलकृत है। ऊपर गोलाकर गुम्बद है। गर्भगृह का आन्तरिक भाग खाली है। समाधि क्रमांक 03 हनुमान गिरि बाबा की पत्नी की समाधि के दायी ओर निर्मित समाधि है। ऊँची जगती पर निर्मित समाधि में गर्भगृह अन्तराल और मण्डप है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार तीन ओर निर्मित है। ऊपर खरबूजानुमा गोल गुम्बद है, चारों ओर लघु शिखर उनके मध्य आचंनुमा आले में गणेश प्रतिमा उत्कीर्ण है, गर्भगृह भाग अलंकृत है। शिखर शंक्वाकार है। गर्भगृह का आंतरिक भाग खाली है।

समाधि क्रमांक 04 हनुमान गिरि बाबा की समाधि के बाई ओर निर्मित समाधि है यह ऊँची जगती पर निर्मित समाधि में गर्भगृह अन्तराज और मण्डप है। मण्डप का प्रवेश द्वार मेहरावदार है। यह तीन ओर से खुला है। ऊपर कंगूरों पर छज्जा है। शीर्ष भाग पर खरबूजा कार गुम्वद एवं उसके चारों ओर लघु छतररियां है। अन्तराल भाग सादा है। गर्भगृह के शीर्ष पर शक्वाकार शिखर सामने के भाग पर लघु शिखर क्रमशः छतरी, पीछे की छतरी भग्न है। गर्भगृह का आन्तरिक भाग खाली है। समाधि क्रमांक 05 हनुमान गिरि बाबा की समाधि के सामने की समाधि है यह ऊँची जगती पर निर्मित समाधि चतुष्कोणीय है। प्रवेश द्वार मेहरावदार है, ऊपर कंगूरों पर आधारित छज्जा है। ग्रीवा भाग कमल पंखुड़ियों से अलंकृत है। शीर्ष पर गोल गुम्वद है। आन्तरिक भाग खाली है। समाधि क्रमांक 06 हनुमान गिरि बाबा की समाधि के पीछे की समाधि है यह ऊँची जगती पर अष्टकोणीय स्तम्भों पर आधारित है। ऊपर अलंकृत कंगूरों पर सुन्दर छज्जे का अलंकरण है। ग्रीवा भाग में कमलदल का अलंकरण है। शीर्ष पर गोल गुम्वद है। आन्तरिक भाग खाली है। समाधि क्रमांक 07 छतरपुर से नारायणपुरा मार्ग पर निर्मित समाधि है। इसमें मण्डप, अन्तराल और गर्भगृह है। बाह्य भाग में सुन्दर कंगूरों तथा मण्डप पर गोल गुम्वद है। गर्भगृह के गुम्वद के चारों ओर लघु गुम्वद रहे होंगे, जिसमें पश्चिम की ओर का गुम्वद नष्ट हो गया है।

द्वितीय समूह में छतरपुर बस स्टेण्ड पर क्रमांक आठ से बारह तक पांच समाधि है। समाधि क्रमांक 08 बस स्टेण्ड छतरपुर पर निर्मित समाधि है। यह ऊँची जगती पर निर्मित है, इसमें मात्र गर्भगृह है। गर्भगृह पर गोल गुम्बद हैं उसमें चारों ओर मेहरावदार अलंकरण है। ऊपर कमलदल का सुन्दर अंकन है। यह समाधि लगभग 19वीं शदी ईस्वी की है। समाधि क्रमांक 09 बस स्टेण्ड छतरपुर के श्री सतपाल सिंह के खेत में स्थित है। दायी ओर प्रथम समाधि ऊँची जगति पर निर्मित है, समाधि में मण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह है, मण्डप का प्रवेश द्वार बेलबूटों से अलंकृत है। अन्तराल भाग में बाई ओर हनुमान एवं दायी ओर गरूड़ की प्रतिमा निर्मित है। बाह्य भाग में कंगूरों पर मानव आकृतियां भद्र रथिका पर हनुमान, अस्पष्ट मूर्ति एवं एक ओर की भद्र रथिका पर पुरुष निर्मित है। समाधि का आन्तरिक ऊपरी भाग विकसित कमल अलंकरण से अलंकृत है। गर्भगृह पर शंखयाकार गुम्वद तथा उससे लगे हुये चार लघु शिखर है। मण्डप के ऊपर गोल गुम्वद है। समाधि क्रमांक 10 बस स्टेण्ड छतरपुर के श्री सतपाल सिंह के खेत में समाधि क्रमांक 09 के वायी ओर स्थित है, ऊँची जगति पर निर्मित समाधि में मण्डप अन्तराल और गर्भगृह है। जंघा भाग पर सुन्दर कंगूरों पर छज्जा है। गर्भगृह के ऊपर शंक्वाकार गुम्वद उसके चारों ओर लघु शिखर है। मण्डप तीन ओर से खुला है, उसके ऊपर गोल गुम्वद है। समाधि क्रमांक 11 बस स्टेण्ड छतरपुर के श्रीसतपाल सिंह के खेत में समाधि क्रमांक दस के वायी ओर स्थित है। ऊँची जगति पर निर्मित लघु आकार की समाधि है, इसमें मात्र गर्भग्रह है, समाधि का प्रवेश द्वार अलंकृत है। बाह्य भाग में कमलदल से अलंकृत है, शिखर गज पीठिका के आकार का है। समाधि क्रमांक 12 ऊँची जगति पर निर्मित यह जीर्ण शीर्ण अवस्था में है। यह पूर्वाभिमुखी है, इसमें मण्डप, गर्भगृह का शिखर शंक्वाकार है। इसमें चारों ओर लघु शिखर मेहरावदार अलंकरण है।

तृतीय समूह में छतरपुर नौगांव मार्ग पर दायी ओर समाधि क्रमांक 13 एवं 14 स्थित है। समाधि क्रमांक 13 ऊँची जगती पर निर्मित है। इसमें मण्डप, अन्तराल एवं गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार, ऊपर पुष्प गुच्छ अलंकरण ऊपर सुन्दर छज्जा उसमें ऊपर कमलदल अलंकरण है। शिखर पर शंक्वाकार गुम्बद है। अन्तराल भाग पुष्प गुच्छों से अच्छादित है। गर्भगृह पुष्प गुच्छों से अलंकृत है। गुम्बद के सिरों भाग पर आमलक कलश आदि का अलंकरण है। समाधि क्रमांक 14 ऊँची जगती पर निर्मित यह समाधि उत्तराभिमुखी है। इसमें मण्डप, अन्तराल और गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार है। द्वार के पार्श्व में मानव और सिरदल में देवी देवताओं का अंकन है। शिखर का शंक्वाकार गुम्वद है। अन्तराल के बाह्य भाग में हनुमान, गणेश, की प्रतिमा का अंकन है। गर्भगृह के शिखर पर शंक्वाकार गुम्बद, लघु शिखर, आमलक कलश का अलंकरण है।

चतुर्थ समूह छतरपुर नौगांव मार्ग के बायी ओर क्रिश्चन स्कूल के पीछे समाधि क्रमांक 15 से 19 तक पांच समाधियां है। समाधि क्रमांक 15 ऊंची जगती पर निर्मित है। इसमें मण्डप अन्तराल और गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार है। ऊपर सुन्दर कंगूरों पर छज्जा है। मण्डप के शिखर भाग पर शंक्वाकार गुम्वद है। गुम्बद के मध्य भाग में गणेश का अंकन है। ऊपर शंक्वाकार शिखर है। शिखर में पुरुष का अंकन है। समाधि लगभग 19वीं शदी ईस्वी की है। समाधि क्रमांक 16 ऊँची जगती पर निर्मित समाधि उत्तराभिमुखी है।

इसमें मण्डप अन्तराल और गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार है, उसके ऊपर कंगूरों पर छज्जा है। चारों कोनों पर लघु शिखर तथा मध्य में शंक्वाकार गुम्वद है। गुम्वद के सम्मुख भाग में गणेश उत्कीर्ण है। गर्भगृह के चारों कानों पर लघु शिखर एवं मध्य में शंक्वाकार गुम्वद है। समाधि क्रमांक 17 ऊँची जगती पर निर्मित अष्टकोणीय है। यह आठ स्तम्भों पर आधारित हैं। मकवरे में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार चारों ओर खुले हुए है, ऊपर सुन्दर कंगूरों पर छज्जा है, उसके ऊपर कमलदल अलंकरण शीर्ष पर खरवूजा आकार का गुम्वद है। समाधि क्रमांक 18 ऊँची जगती पर निर्मित समाधि चतुष्कोणीय है। यह चार स्तम्भों पर आधारित है। इसके चारों कोनों पर लघु शिखर रहे होंगे जो नष्ट हो गये है। मध्य में खरवूजा आकार का गुम्वद वना है। समाधि क्रमांक 19 अष्ट स्तम्भों पर आधारित है। यह ऊँची जगती पर निर्मित यह समाधि अष्टकोणीय, आठ स्तम्भों पर आधारित है। ऊपरी भाग पर खरवुजिया आकार का गुम्वद है।

पंचम समूह में सिद्ध गणेश मार्ग छतरपुर में समाधि क्रमांक 20 से 23 तक चार समाधियां है। समाधि क्रमांक 20 श्री सुरेन्द्र गोस्वामी के मकान के वाई ओर स्थित है। इसका निर्माण जमीन से प्रारम्भ कर तैयार किया गया है, इसमे गर्भगृह, अन्तराल और मण्डप है। ऊपर अलंकृत कंगूरों पर छज्जा है। शिखर भाग में शंक्वाकार शिखर एवं शिखर के चारों कोनों पर आठ लघु शंक्वाकार शिखर का निर्माण किया गया है। गर्भगृह के ऊपर शंक्वाकार शिखर, शिखर के चारों ओर लघु शिखर है। समाधि क्रमांक 21श्री सुरेन्द्र गोस्वामी के मकान के दायी ओर स्थित है। इसमें मण्डप और गर्भगृह है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार, ऊपर अंलकृत कंगूरों पर छज्जे निर्मित है। मण्डप का शिखर शंक्वाकार गुम्वद उस पर चारों ओर लघु शिखर एवं चारों कोनों पर शंक्वाकार लघु शिखर का अंकन है। गर्भगृह के शिखर पर शंक्वाकार गुम्वद उसके चारों ओर लघु शिखर का अलंकरण है। समाधि क्रमांक 22 श्री सुरेन्द्र गोस्वामी के भवन के दायी ओर निर्मित समाधि के वाजू में निर्मित है, इसमें गर्भगृह, अन्तराल और मण्डप भाग है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार ऊपर सुन्दर कंगूरों पर छज्जा शिखर पर सामने अलंकृत आले में गणेश की खण्डित प्रतिमा, कोनों पर लघु शिखर मध्य में शंक्वाकार गुम्वद है। अन्तराल भाग के दाई अलंकृत आले में सिंह वाहिनी देवी का अंकन है। गर्भगृह पर शंक्वाकार गुम्वद का निर्माण किया गया है। समाधि क्रमांक 23 श्री प्रीतम सिंह सरदार जी के भवन के दायी ओर निर्मित है। यह पश्चिमाभिमुखी है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार दरवाजा, ऊपर सुन्दर कंगूरों पर छज्जा शिखर पर चार स्तम्भों पर आधारित छतरी निर्मित है। गर्भगृह के चारों कोनों पर लघु शिखर मध्य में शंक्वाकार शिखर है। शिखर के ऊपरी भाग में आमलक कलश आदि का अलंकरण है।

छटे समूह विश्वनाथ कालोनी छतरपुर में समाधि क्रमांक 24 से 28 तक कुल पांच समाधियां है, समाधि क्रमांक 24 ऊंची जगती पर निर्मित समाधि में गर्भगृह और मण्डप है। मण्डप के ऊपर शंक्वाकार गुम्वद, मेंहरावदार दरवाजे है, उसके ऊपर कमल दल अलंकरण है। गर्भगृह शंक्वाकार गुम्वद, चारों ओर मेहरावदार अलंकरण और उसके ऊपरी भाग कमलदल से अलंकृत है। समाधि क्रमांक 25 ऊंची जगती पर निर्मित है। समाधि में गर्भगृह, अन्तराल और मण्डप भाग है। समाधि का वाह्य भाग सुन्दर कंगूरों पर छज्जे का अलंकरण से अलंकृत है। गर्भगृह के ऊपर शंक्वाकार गुम्वद है गुम्वद के चारों ओर लघु शिखर है। अन्तराल के ऊपर गज की खण्डित मूर्ति है, पुरुष लेटा हुआ दिखाया गया है। मण्डप का शिखर शंक्वाकार हैं, उसके चारों ओर लघु शिखर निर्मित है। मण्डप तीन ओर से खुला है। मण्डप में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार है। समाधि क्रमांक 26 श्री मिहीलाल अहिरवार के मकान के पास यह समाधि स्थित है। समाधि ऊँची जगती पर निर्मित है। समाधि पर गोल गुम्वद, उसके नीचे चारो ओर मेहरावदार अलंकरण उसके मध्य गणेश की खण्डित प्रतिमा और आलों के मध्य अस्पष्ट प्रतिमाओं का अंकन है। समाधि क्रमांक 27 उत्तराभिमुखी है। इसमें मण्डप, अन्तराल, और गर्भगृह है। गर्भगृह और मण्डप पर शंक्वाकार गुम्वद का निचला भाग कमलदल अलंकरण से अलंकृत है। समाधि में प्रवेश हेतु मेहरावदार द्वार है। समाधि क्रमांक 28 विशाल आकार की समाधि है। मण्डप के ऊपर शंक्वाकार गुम्वद उसके चारों ओर लघु आकार के गुम्वद, अलंकृत भाग पर मेहरावदार झरोखे वने है। गर्भगृह पर शंक्वाकार गुम्वद है। उस पर अनके लघु शिखर है। जंधा भाग पर सुन्दर कंगूरों पर छज्जे का अलंकरण है। ऊपर कमल दल का अलंकरण है।

उपरोक्त गुसाईयों की समाधियां क्षेत्रीय बुन्देलखण्ड के पवार कालीन स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

24 रामानुज नगर रामवाटिका के पीछे
गोविन्दपुरी के सामने सिटी सेन्टर,
ग्वालियर(म.प्र.)
मो. 98263-41257

तालवेहट के हनुमान और शिव मंदिर

– आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

संस्कार और संस्कृति, स्थान विशेष की विशिष्ट पहचान होते हैं। भारत देश की पहचान "विश्वबन्धुत्वैया, वसुधैव कुटुम्बकम से इस धराधाम पर अपना पावन उन्मेष विखेरती आई है उसी प्रकार इस देश के सहस्त्राधिक नगर-ग्राम भी अपने सांस्कृतिक सौहार्द तथा मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण से इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अपनी शोभन छबीली छटा से अनवरत अपनी प्रदीप्ति के पुण्य प्राप्त हैं। उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले का एक प्यारा सा कस्वा, जो प्रकृति की पवित्र अड़्क में अपने अनुपमेय अस्तित्व को सैजायें हुये है अपने राष्ट्रभक्ति के गौरव से अपनी प्रभूत गरिमा अभिव्यक्त करता है, यहाँ की सुशोभन संस्कृति सत्य शिव और सौन्दर्य की संस्कृति हैं। तथा संस्कार सच्चित और आनंद से ओतप्रोत हैं। इनका आधार श्री राम की कृपा प्राप्त हनुमान तथा सदा एक रस में रहने वाले जगत् कल्याणकर्ता समता के देव शिवजी की सुमूर्तियों का प्रतिष्ठपन है इस छोटी सी पावन नगरी तालवेहट में इन देवों के महिमामय विग्रह के विषय में यहाँ संक्षेप में परिचय देने का उपक्रम दृष्टव्य हैं।

'तालवेहट' कस्वा या इस लघु नगर की पहचान यहाँ पर निर्मित मनोहारी विषाल तालाब है जो प्राय: दो किलो मीटर लम्वाई और लगभग एक किलोमीटर चौड़ाई लिये हुये अथाह जल से सम्पन्न है, इस नगर की यशस्विता परम देशभक्त एवं स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी राजा मर्दनसिंह से सुस्थिर एवं स्मरण योग्य है तालाव के पश्चिम किनारे से संलग्न अद्भुत एवं सुदृढ़ किला आज भी अपनी विजय एवं शौर्यगाथा को अपने अन्तस् में सजाये हुये है किले की प्राचीर में भव्य एवं विपालकाय दरवाजे तथा किले के भीतर बने हुये अनके कक्ष पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। षिल्प की दृष्टि से भी यह किला आज भी अपने आकर्षण को मनुष्य के अन्तस् में अंकित कर उसे प्रभावित करने में पूर्णतया सक्षम हैं।

इस किला की निर्मिति की दास्तान अचम्भित करने वाली है। कल या यान्त्रिकी व्यवस्था विहीन पन्द्रह सोलह वां शताब्दी में ऐसे अद्भुत स्थापत्य का अमोघ निर्माण किसी अलौकिक अदृश्य शक्ति के बिना संभव नहीं अथवा यो कहें कि अकथ तपस्या के पुण्य के बिना यह असम्भव कथ्य है इस किला के पार्श्व में आज नागर बस्ती है, जिसमें सभी वर्ग वर्ण एवं सम्प्रदाय के अधिकांशत: अधीत या पढ़े लिखे लोग निवास करते हैं। यह पूरा नगर पर्यावरणीय दृष्टि से पवित्र एवं स्वच्छ प्रदृष्ट हैं।

'तालवेहट' नगर हनुमान एवं शिवमंदिरों की बहुलता का प्रस्थान है। तालाब के पश्चिम किनारे अनेकानेक हनुमान एवं शिवमंदिर हैं। वाहर कोट पर तालाब किनारे ही पहले हनुमान मंदिर तथा इसके समीपस्थ ही हजारिया महादेव की लुभाविनी प्रभावी मूर्ति विद्यमान हैं। यह मूर्ति मंदिर के भीतर ही विराजमान हैं। इस मूर्ति से लगभग सौ मीटर के फसले पर एक शिवालय में शिवजी सहित उनका पूरा परिवार विद्यमान है। यह बड़ा सिद्धमंदिर हैं। इस मंदिर के समीप में ही अंगद और हनुमानजी की मड़िया है इन दोनो मंदिरों तथा मड़ियों से लगा हुआ लम्बा चौड़ा चबूतरा तालाब में उतरने की सीढ़िया तथा कई गुर्जा बने हुये है इस पूरे परिसर की पवित्रता एवं पुण्यअर्जन की दृष्टि से वर्ष में यहाँ एक बार मेला का भी समायोजन होता है। 'तालवेहट' के इस तालाब की लम्बाई पर्याप्त है। इसके उत्तर पश्चिम में तालाब के किनारे ही एक और हजारिया महादेव की दिव्यमूर्ति हैं। प्राणप्रतिष्ठा होने से यह शिवमूर्ति भी दर्शकों तथा अर्चना पूजा करने वालों को परम प्रभावित करती हैं

'तालवेहट' मंदिर- बाहुल्य नगर है श्री हनुमान जी के यहाँ परशताधिक मंदिर दृष्टव्य हैं। ध्रुव कुटी के हनुमान, लंका के हनुमान, अंजनी के हनुमान, बार कोट के हनुमान, स्टेशन रोड के हनुमान, अगरियां हनुमान, खैरवारा के हनुमान, आदि हनुमान-विग्रह तथा उनके मंदिर यहाँ मनोरम रूप में दर्षनीय हैं। इन मंदिरों में विराजमान रामभक्त हनुमान की मूर्तियाँ प्राणप्रतिष्ठा-सम्पन्न होने से सिद्ध भी हैं। अन्त:करण -विशुद्ध व्यक्ति इन हनुमत-मूर्तियों के समक्ष प्रत्यक्ष होकर इनके दर्शन से अविलंब लाभान्वित होता है भारतीय वाङ्मय में चौदह विधायें प्रतिष्ठित हैं। यथोलेख है, कि

''पुराणन्यायमी मांसा धर्मशास्त्रङ्गतिश्रिता:।
वेदा: स्थानानि विधानां धर्मस्य च चतुर्दश''।।
- पास्करस्मृति

अर्थात पुराण न्याय, मीमांसा धर्मशास्त्र छह वेदाङ्ग (व्याकरण, कल्प, निरूक्त, शिक्षा, ज्योतिष और छंद) तथा चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) ये चौदह विद्यास्थान हैं।

उपर्युक्त सभी विधाओं एवं विधास्थानों का योगक्षेम अध्यात्म विधा से होता है यथोक है, कि

प्रदीप: सर्वविद्याना मुपाय: सर्व कर्मणाम्।
आश्रय: सर्वधर्माणां शश्वादान्वी क्षिकी मता।।
कौटिलीय - अर्थशास्त्र 1-2-1

अर्थात आन्वीक्षिकी विद्या समस्त विद्याओं का दीपक, सब कार्यो की सधिका एवं सब प्रकार के वैदिक तथा लौकिक धर्मो की आश्रय स्वरूपा हैं।

अस्तु आन्वीक्षिकी या आध्यात्म विद्या षड्विकारों से मुक्त कर षड्सम्पत्तियों की प्रदात्री बनकर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है इस आध्यात्म से ही व्यक्ति अपने इष्ट से सान्निध्य प्राप्त करने में सक्षम होता हैं। पुनश्चमाया-मुक्त होकर आत्मदर्शन से परमानंद प्राप्त करता हैं।

हनुमान जी और शिवजी इस कलह पूर्ण कलिकाल को काटने के लिये सर्वशक्तिमान है ऊँ हनुमते: नम: और ऊँ नम: शिवाय में सरल सुबोध सुमंत्र इन सिद्ध प्रसिद्ध देवों के सान्निध्य के लिये पर्याप्त है इन देवों का सच्चिदानंद रूप दर्शन उक्त मंत्रों से सहज हो जाता हैं।

निष्कर्ष यह है, कि परम अलौकिकशक्ति श्रीमद्भागवद् गीता के अनुसार विविध देवों के माध्यम से अपनी पूजा स्वीकार कर व्यक्ति की अभीष्ट सिद्धि करता हैं। यथो लेख है, कि

''येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता:।
तेऽपिमामेव कौन्तेय यजन्त्यविधि पूर्वकम्।।
- श्रीमद्भगवत गीता -9 - 23

श्री शिवजी और श्री हनुमान जी दोनों ही स्वयं महान् भक्त एवं महातपस्वी हैं और उनका मानना भी है कि परमात्मतत्व का स्मरण न करना ही व्यक्ति के लिये विपत्ति का कारण हैं। यथा प्रदृष्ट है, कि -

कह हनुमन्त विपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरन भजन न होई।।
- रामचरितमानस -5-21-2

तालवेहट जिला ललितपुर (उ.प्र.) में श्री हनुमान और श्री शिवजी के तप: पूत विग्रह दर्शनीय तो निश्चित रूप से है, साथ ही सद्बुद्धि -प्रेरक तथा सन्मार्ग प्रदर्शक भी है, वस्तुत: इन्ही सिद्ध मूर्तियों से यह तालवेहट कस्वा एक सुतीर्थ के रूप में अखिल बुन्देलखण्ड में अपनी छबीली छाप बनाये हुये है, इसे बुन्देलखण्ड का गौरव कहें, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। बुन्देलखण्ड की इस पवित्र भूमि का दर्शन और यहाँ विराजित हनुमान जी और श्री शिव दर्शन मानवमात्र एवं प्राणिमात्र के योग प्रेम का कारक है ऐसा पूर्ण विश्वास हैं।

प्रस्तोतानिवास - श्रीमति लक्ष्मीगुप्ता - भवन
उद्योगविभाग के पास, सिविल लाइन्स
दतिया (म.प्र.) 475661
तालवेहट जिला ललितपुर (उ.प्र.)
मो. 9826249448

बुन्देलखण्ड का तीर्थ सूर्य : उनाव (बालाजी)

– डॉ. राज गोस्वामी, दतिया

सतयुग में काशी नरेश राजा मरूत हुए थे। वह बहुत की धार्मिक एवं प्रजापालक थे। राजा मरूत में 10 हजार हाथियों के बराबर बल था उनके धार्मिक कार्यों की वजह से उनके राज्य की भूमि बिना जोते एवं बोये बगैर ही अन्न का उत्पादन करती थी राजा मरूत द्वारा अपने जीवन काल में 100 यज्ञ पूर्ण कर लिये थे। जिसके बाद उनको 101 वां राजसूर्य यज्ञ करना चाह रहे थे। उन्होंने उस यज्ञ के लिये देवताओं के गुरू बृहस्पति जी से निवेदन अनुरोध किया कि आप मेरा राजसूर्य यज्ञ के पुरोहित बनना स्वीकार करें। इस पर बृहस्पति जी ने अपने पुरोहित नेतृत्व में यज्ञ के लिये हॉं कह दिये जब राजा मरूत के 101 वे यज्ञ की जानकारी देवताओं के राजा इन्द्र को मालूम हुई तो उन्होंने बृहस्पति जी से राजा मरूत के यज्ञ को न कराने का निर्देश दिया। इतना सुनते ही राजा मरूत ने जंगल में जाकर अन्न त्यागकर अपने प्राण देने का निश्चय किया इसके पश्चात राजा मरूत जो अत्यंत ही धार्मिक एवं बलशाली राजा हुआ करते थे अपना वंश बदलकर सिर नीचा किये जंगल की तरफ चल दिये इतने धार्मिक राजा को विचलित देखकर श्री भगवान नारद जी इनके सामने जंगल में मिल गये। राजा मरूत को रोककर नारद जी ने कहा राजन् इस समय इस अवस्था में आप इतने विचलित क्यों दिख रहे हो आप तो धीर गम्भीर हैं। इस पर राजा मरूत ने कहा कि मैंने राजसूर्य यज्ञ का निश्चय किया हुआ है संत बृहस्पति जी ने हम को मना कर दिया है।

दतिया / सूर्य मंदिर उनाव बालाजी का पहूज नदी की ओर से लिया गया दृश्य

इसलिये मैं आत्महत्या के विचार से जंगल में जा रहा हूँ। इस पर नारद जी ने कहा महाराज इस संसार में बृहस्पति जी से ज्यादा विद्वान उनके भाई संव्रत जी हैं। जो इस दुनिया के महान अघोरी संत भी हैं। आप अपना यज्ञ उनके द्वारा सम्पन्न कराइये। ये आपका यज्ञ बृहस्पति जी से अच्छा करायेंगे। इस पर राजा मरूत ने संव्रत जी का पता पूछा तो नारद जी ने कहा कि वह सवेरे सवेरे प्रतिदिन भगवान महाकाल के दर्शनों के लिये उज्जैन नगरी में आते हैं तब राजा मरूत ने कहा कि नारद जी हम उनको कैसे पहचानोगे। तब नारद जी ने कहा कि वह अघोरी का नही बल्कि वह मनुष्य रूप में प्रतिदिन भगवान के दर्शन के लिये आते हैं उनकी पहचान वह भगवान के दर्शन कर वापिस न मुड़ते हुए पीछे की तरफ तीन कदम रखतें हैं फिर वापस मुड़ते आप उन्हें पहचान सकते हैं। राजा मरूत ने अगले दिन उज्जैन के लिये प्रस्थान किया वहां पहुँचकर राजा मरूत भगवान महाकाल के समक्ष खड़े होकर प्रत्येक व्यक्ति की गतिविधि देखने लगे। तभी एक व्यक्ति महाकाल भगवान के दर्शन कर पीछे की तरफ तीन कदम बढ़कर फिर मुड़ता हुआ दिखाई दिया तभी राजा मरूत ने उन अघोरी का पीछा किया एवं उनको रोकने का प्रयास किया जब राजा ने अघोरी को रोका तब उसने राजा पर कीचड़, मलमूत्र, इत्यादि फेंकना शुरू किया लेकिन राजा मरूत कहाँ मानने वाले थे, उन्होंने उनका पीछा करते हुए उज्जैन के बाहर जंगल की तरफ उनके पैर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगे बोले आप मेरा यज्ञ सम्पन्न कराइये। नही तो मै आत्महत्या कर लूँगा तब संव्रत जी ने कहा कि मैं तो अघोरी हूँ। मेरा यज्ञ से क्या वास्ता है आप किसी और के पास जाइये। तब राजा मरूत ने कहा कि मै आपसे ही यज्ञ कराऊँगा। तब संव्रत जी ने कहा कि आपको मेरा पता किसने बताया है तब राजा ने कहा कि मुझे नारदजी ने आपका पता बताया है। पहले मेरा बृहस्पति जी करवा रहे थे। लेकिन इंद्र के कहने पर उन्होंने यज्ञ कराने से इंकार कर दिया है। इतना सुनते ही संव्रत जी ने यज्ञ के लिए हॉं कर दी एवं राजा से यज्ञ में सम्पूर्ण बर्तन सोने के बनाने का निर्देश दिया इस पर राजा मरूत ने कहा संत जी मेरे खजाने में इतना सोना नही है इस पर संव्रत जी ने राजा मरूत को सोने का सुमेर पर्वत हिमालय पर बताया कहा, कितना सोना लगे इसमें से ले लेना, यज्ञ के बाद बापिस यहीं रख जाना राजा मरूत ने यज्ञ की सभी तैयारियां पूर्ण की जब

सम्पूर्ण तैयारियां हो चुकी थी, तब संव्रत जी ने राजा से कहा कि तीनों लोकों में कोई प्राणी मात्र भगवान, नर, वानर, किन्नर सभी जीवों को आमंत्रित किया जावे राजा मरूत ने ऐसा ही किया जब यज्ञ चालू हुआ सभी देवता इत्यादि आ चुके थे। सूर्य भगवान ने नीचे की तरफ आना चालू किया इस पर सभी पृथ्वी निवासी जीव, पेड़, पौधे सभी से आह्वान कर वापिस जाने का निवेदन किया तब सूर्य भगवान ने कहा कि हम निमंत्रण पर आये है, हम वापिस नही जायेंगें। इस पर सभी देवताओं ने विनती की जिस पर सूर्य भगवान ने कहा कि आप मेरा एक सूर्य यंत्र बनाईये। मैं उसमें अपना तेज वापिस कर चला जाऊंगा। आप इस यंत्र की यज्ञ में पूजा करना एवं बाद में गंगा जी में विसर्जित कर देना। जब यह यज्ञ पूर्ण हो गया। तब सभी देवतागण वापिस अपने अपने धाम चले गये एवं राजा मरूत विर्सजन करना भूलकर अपने राजपाट में लग गये। कालान्तर में राजा मरूत के पधारने के पश्चात यंत्र मिट्टी में दब गया, तब वहां पर राजा मरूत के राजपुरोहित परिवार के सदस्य पंडित अमरसिंह पुरोहित को उस यंत्र के द्वारा सिद्धी प्राप्ती होने लगी, जब उस स्थान पर सिद्धियों का मेला लगने लगा, तब राजा मरूत के परिवार के नरेश द्वारा उस यंत्र को उनसे छुड़ाने का प्रयास किया गया, तब यंत्र द्वारा पंडित अमरसिंह सौरा नामक व्यक्ति को सपना दिया कि आपसे यंत्र छुड़ाने का प्रयास किया जा रहा है। तब वह व्यक्ति यंत्र को लेकर घोड़े पर सवार होकर तब के झालगऊ गाँव जो अब उनाव है, लेकर आया एवं नदी के किनारे झोपड़ी बनाकर रहने लगा, कालान्तर में पंडित अमरसिंह सौरा नामक व्यक्ति की मृत्यु के उपरांत यह यंत्र नदी किनारे की मिट्टी में दब गया, समय बीतता गया सदियाँ बीतीं इसके बाद 5वी सदी में यंत्र द्वारा फिर से चमत्कार किया गया। जहाँ यंत्र मिट्टी में दबा था यह गाँव वास्तव में पहले लोधी राजपूत समुदाय का हुआ करता था। इस स्थान पर क्रोधित होकर गाय की हत्या कर दी थी। तब सूर्य भगवान ने उस लोधी को श्राप दिया कि तुम अपनी सम्पूर्ण कौम के साथ उनाव सीमा से बाहर जाकर बस जाओ नहीं तो तुम्हारी सम्पूर्ण समाज का विनाश हो जावेगा। तब लोधी राजपूतों ने उनाव से तीन किलोमीटर दूर अपना नया गाँव धिसलनी बसाया, तब से उनाव में कोई राजपूत नहीं रहता है।

उनाव बालाजी मंदिर का भीतरी मार्ग

कालान्तर में सूर्य यंत्र द्वारा दो ब्राह्मण बालकों को जो कि मऊरानीपुर के पास कुरेचा ग्राम में रहते थे। रात को सपना दिया कि आप उनाव आकर मिट्टी में दबे यंत्र को निकालकर हमारी स्थापना करें दोनों बालकों जिनका नाम श्री सदाराम एवं पताराम पंडा था, दोनों तेजस्वी बालक उनाव बालाजी में आकर मंदिर के पीछे कुशवाहा मौहल्ला में श्री बरमजू काछी के घर पर रूकें एवं उस यंत्र को नदी से निकालकर उस स्थान पर गोबर एवं ईट से निर्मित कच्चे मंदिर की स्थापना की एव नित्य आरती एवं भगवान प्रसादी, फूलमाला अर्पित की कालान्तर में दो ब्राह्मण बालकों की शादी एवं उनसे संतान उत्पत्ति हुई,

सदाराम पंडा के चार बालक - रामदीन / श्यामदीन/ बद्रीदीन / रामेश्वर

पताराम पंडा के तीन बालक - राजशरण / महावीर/ रूक्के

बरमजू काछी के एक बालक- लालाराम

इस तरह इन तीनों के कुल आठ बालक हुए जो कि सामान्यतौर पर मंदिर की इस सेवा में कुल आठ कमेटी मेंम्बर बनाये गए, इनमें सात पंडा एवं एक कुशवाहा शामिल था, इसमें पंडा पुजारी का कार्य एवं कुशवाहा माली का कार्य फूलमाला इत्यादि शामिल था। इस मंदिर के बनने के बाद सेवा पूजा आरंभ हुई इसी दरम्यान झाँसी नरेश नारूशंकर को शरीर में कुष्ठ रोग हो गया उन्होंने बालाजी आकर ठीक होने के एवज में सवा लाख रु. से धर्मशाला निर्माण हेतु घोषणा की तो उनका कुष्ठ रोग ठीक हो गया, मराठा राजाओं द्वारा बड़ी-बड़ी धर्मशाला कमरों का निर्माण होने लगा जब आधा निर्माण हो गया, तो दतिया नरेश द्वारा उसको रोक दिया गया कि हमारे राज्य में किला निर्माण झाँसी राजा नहीं करा सकते हैं, तब जाकर आधा पैसा कानपुर के बिठूर घाट पर ऐसा ही आधा भवन बनाया गया है, कालान्तर में इस मंदिर के बाहर लगी मूर्तियाँ जो विभिन्न देवी देवताओं की थी मुगल आक्रांता द्वारा मंदिर आक्रमण कर

तोड़ने लगे तब सूर्य भगवान ने उस मुगल आक्रांता की मय सेना के ऑखें फोड़ दी तब उस मुगल शासक ने कहा हे सूर्य देवता हमारी ऑखें खोलदों मैं वापिस अपने राज्य चला जाऊँगा, एवं आपको अपने सबसे बड़े उपासक की उपाधि से नवाजूंगा तब से मुसलमान सूर्य भगवान को ''वालापीर'' के नाम से पुकारते है एवं हमेशा पूजा करने आते रहते हैं। भारत के मराठा नरेश जो कि अपनी सर्वोच्च शक्ति को बालाजी नाम से पुकारते है।

इसलिये इस सूर्य यंत्र को उन्होंने बालाजी सर्वोच्च शक्ति की उपाधि से नवाजा है। इसलिये सूर्य भगवान को बालाजी नाम दिया गया है। यह लेख सिराज-नामा के आधार पर प्राप्त लेख से प्रस्तुत है।

काया के स्वामी श्री सूर्य भगवान -

सूर्य भगवान मनुष्य की काया के स्वामी है। यह सभी ग्रहों के स्वामी है, यहॉ पर शरीर संबंधी जैसे- कुष्ठ, छाजन, सेवुआ, चर्म संबंधी व्याधि से तुरंत मुक्ति मिलती है। यहॉ की मान्यता के अनुसार यहां घी चढ़ाने का विशेष महत्व है, यहां सदियों से अखण्ड ज्योति जलती है इसमें प्रतिदिन 5 किलोग्राम शुद्ध घी लगता है। यहॉ पर घी के बहुत बड़े बड़े भंडार है, जितना एक साल में खर्च होता है उससे ज्यादा दुगना चढ़ावे में आता है, यहॉ न तो घी बेचा जाता है, न ही खाया जाता है। बस अखण्ड ज्योति एवं हवन के प्रयोग में लिया जाता है। अगर कोई व्यक्ति गलत नीयत से घी चुराता है या घी का पैसा रख लेता है तो वह व्यक्ति कुष्ठ रोगी हो जाता है। यहाँ देश भर से कुष्ठ रोगी पहुंच नदी में स्नानकर गीले वस्त्रों से भगवान को जल चढ़ाते है जिससे उनका चर्म संबंधी विकार दूर हो जाते है। श्री बालाजी मंदिर इमारत वास्तुशास्त्र के अनुसार बनाया गया है। सूर्य भगवान की पहली किरण इमारत को चीरती हुई सूर्य यंत्र पर पड़ती है। एवं सूर्य यंत्र पर जल चढ़ाने से जल लगाने से चर्म रोग दूर होता है। मंदिर के मुख्य द्वारों पर गणेश जी विराजमान है, नदी में पूर्व की तरफ जल निकासी का शिवलिंग है जो भारतवर्ष में अनोखा है। जो भगवान सूर्य को आर्ध्य देता है, शिव पिंडी की निकासी हमेशा उत्तर की तरफ होती है। यह शिवलिंग मंदिर स्थापना से पहले शिव आराधना के लिये बनाया गया था। यह अद्भुत शिवलिंग केवल उनाव में स्थापित है।

उनाव बालाजी मंदिर का भीतरी मार्ग

उनाव का इतिहास -

उनाव से 3 कि.मी. दूर दो नदियों का संगम स्थल अनगोरी एवं पहुज नदी है। यहाँ पर दोनों नदियाँ मिलती है वह संगम क्षेत्र कहलाता है। कुछ लोग अज्ञानवश उन्हें बालाजी का छोटा भाई तो कोई बालाजी उद्गम स्थल कहता है। जबकि वास्तव में इतिहास कुछ और ही है। मेरे पुस्तक अध्ययन एवं पिछले पुराने रिकार्ड के अनुसार महाभारतीय- महाभारत कालीन स्थल है। गोवर्धन जीजो उनाव में स्थित है।

एक बार भगवान कृष्ण दुखी अवस्था में व्याकुल होते हुए अपने महल में एकांत मनन में लीन थे। क्योंकि भगवान कृष्ण के पुत्र प्राप्ति नही थी, वह जन्मदाता चाहते थे। भगवान होते हुए भी मर्यादा में बंधे होने के कारण वह लोकहित में सभी मनुष्यों के समान आचरण एवं सोचनीय हो चले थे। जब भगवान कृष्ण चिंतित अवस्था में थे जब भगवान नारद जी पहुंचे बाले भगवान आपके चेहरे पर तो चिंता की लकीरें दिख रही है, भगवान ने कहा प्रभु मेरे पुत्र प्राप्त नही हुआ है इसलिये मे दुखी हूँ, एवं पुत्र प्राप्ति की चाह में भटक रहा हूँ, इस पर भगवान नारद जी ने कहा आपको सूर्य भगवान की तपस्या करनी होगी, क्योंकि सभी पुत्रों के पिता श्री सूर्य भगवान ही है। उन्हे किसी के भी पुत्र होने पर खुशी होती है, क्योंकि पुत्र उन्हें ही जल प्रदान करता है, इसलिये आप हे कृष्ण! आप यहाँ मथुरा से दूर मध्यांचल में दो नदियों का संगम है, मैं पृथ्वी लोक भ्रमण करता हूँ। आप घनघोर जंगल के बीच नदियों का संगम है जहाँ पर एकांतवास में पत्थर पर सूर्य भगवान की मूर्ति उकेर कर आप उनकी तपस्या कीजिये निश्चित ही पुत्र प्राप्ति होगी, ऐसा कहकर नारद जी ने कृष्ण को यह स्थान बताकर तपस्या करने को कहा भगवान कृष्ण ने पत्थर पर सूर्य भगवान की मूर्ति उकेरी एवं तपस्या कर पुत्र प्राप्ती की इसीलिए यह स्थान संगम एवं सूर्य भगवान का कहलाता है। बुंदेलखण्ड का हर

गांव, नगर प्राकृतिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व रखता है। बुन्देलखण्ड के तीर्थस्थलों की बात आती है, तो उनाव में बालाजी सूर्यमंदिर बुन्देलखण्ड के पुष्पदल के समान है। साहित्य और शौर्य की दृष्टि से ही नहीं वरन सौन्दर्य की दृष्टि से भी बुन्देलखण्ड की महिमा सर्वोपरि रही है। बुन्देली का सीधा संबंध प्राकृत से है तथा उनके स्वरूप में भी साम्य है। इसी प्रकृत से संस्कारित होकर संस्कृत का स्वरूप संवरा है इसीलिये बुंदेली को संस्कृत की बड़ी बहिन कहा जाता है। प्राकृति से संस्कारित होकर वर्तमान संस्कृति का जन्म हुआ। बुन्देलखण्ड प्राकृत स्थलों में उनाव के बालाजी सूर्यदेवता के रूप में विख्यात हैं। जिनके मुख मण्डल का तेज, लाल त्रिपुण्ड, शंख, चक्रधारी रूप बालाजी जिन्होंने मरूत यज्ञ करवाया। पंडित रामेश्वर प्रसाद पटैरिया जी ने अपने सूर्य चालीसा में वर्णित किया है।

अमर सिंह वह मूरत पाई, जो उनाव में आन छिपाई।
सदाराम अरू भानुप्रकाशा, ग्राम कुरैचा करहि निवासा।।
ग्राम उनाव विप्र तुम जाना, उनको स्वप्न दिया भगवाना।
छिपी गौरिधन मूर्ति हमारी उसे उठाकर बनो पुजारी।।
बालाजी सा देव न दूजा, गीले वस्त्र करें सब पूजा।
सभी जाति के नर औ नारी, सेवा कर पाते फल चारी।।
नारू शंकर राजा आयौ, बालाजी ने कुष्ठ मिटायौ।
आगा खां ने बिनती कीन्ही, उनकी सुंदर काया कीन्हीं।।
जो पहुज में आन नहाबै, पत्र पुष्प् फल नीर चढ़ावै।
श्रद्धा सहित करै जो सेवा, कष्ट हरै बालाजी देवा।।
क्लसा, छाजन, सेव चढ़ावै, मन में शंका कभी न लावै।
दान करैरज भस्म चढ़ावै, दाद, खाज, छाजन मिट जावै।।
जिनकों कुष्ठ होय दुखदाई, पूजा करै सविधि सुखदायी।
जो रविवार करै उपवासा, छोड़ै दूध, नमक, मधु, मासा।।
बारह पाठ करै नित कोई, नौ दिन में सब कारज होई।
करै जो बालाजी की पूजा, एहिसम कोई उपाय न दूजा।।
जो जब चाहे निज कल्याना, ग्रह की शांति, सुगति, सुखनाना।

उक्त चालीसा पाठ उनाव निवासी श्री घनश्याम पटेल ने वर्षों से किया जिसके फलस्वरूप् अपने परिवार में रहकर सम्पदायुक्त का संतोष करते है। सूर्य चालीसा नित पढ़ने से साधकों और पाठकों की ज्योति सदैव प्रकाशवान रहती है वे सदैव नेत्रों से निरोगी रहते है। वहीं आजकल सूर्य की आराधना करने वाले शिक्षक और संत मानस किंकर श्री रामहजूर दांगी ने अपनी सूर्यवंदना में उल्लेखित किया है,

दतिया जिले में उनाव ग्राम है, बना वहीं बालाजी धाम है।
दूर दूर से यात्री आते है, पहुज नदीं में खूब नहाते है।।
जल भर कर दर्शन को जाते, माला फूल प्रसाद चढ़ातें।
एक वर्ष में उत्सव चर्चित, मकर संक्रांति पर्व सुनिश्चित।।
असाढ़ शुक्ल की ग्यारस जानों, रथ यात्रा के दर्शन पानो।
अखण्ड ज्योत दीपक की जलरइ, पातक उपपातक सब हर रइ।।
ज्ञान, कर्म, भक्ति के बोधक, पूर्ण समर्पण गति के शोधक।

बालाजी महाराज के दर्शन पाकर हम और हमारे साथी श्री हरिकृष्ण हरि उनाव जाकर वहाँ के निवासी समिति के सदस्य श्री बच्चीलाल पण्डा, परमेश्वरी पण्डा, सुनील पण्डा, जयनारायण पण्डा, कालका पण्डा, अशोक पण्डा, श्री राजेन्द्र लखनलाल पण्डा और लक्ष्मन कुशवाहा, जो समाज के मुखिया भी है, इसके अतिरिक्त रामनिवास पण्डा, रामसहाय पण्डा, रामनिवास शर्मा 'जलज' राजू पण्डा सभी से चर्चा के दौरान कुछ खास बातें ज्ञात कराई गई जिनको उल्लेखित किया गया है। विस्तार में जानकारी श्री जयनारायण शर्मा द्वारा प्राप्त कर इस शोध लेख को पूर्णता प्राप्त हुई है। चित्रों का सहयोग यहीं के निवासी श्री अभिराम शर्मा, प्रमोद शर्मा तथा विनोद शर्मा, महेन्द्र विश्वकर्मा तथा पंडित हरिमोहन शर्मा (पुरोहित) के द्वारा मिला। इसी के साथ दतिया से विनय समाधिया, एवं संजय रावत से भी भगवान बालाजी के संबंध में जानकारी प्राप्त की, आदित्य पुराण के अनुसार दैत्यों द्वारा देवताओं के पराजित होने पर तथा देवताओं की प्रार्थना पर अदिति के गर्भ से मार्तण्ड उत्पन्न हुए। सब देवों के मित्र होने के कारण उन्हें मित्र भी कहा गया। उन्हें ही सूर्य, ज्योतिष, रवि और जगच्छु आदि नामों से संबोधित किया गया। दुःखी देवताओं ने सूर्य की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना सुनकर सूर्य ने कहा- मैं दानवों का संहार करने के लिए दृढ़ एवं अजेय शास्त्रों को उत्पन्न करूँगा। ध्यानमग्न होकर सूर्य ने स्वकीय तेज से पूरित रक्तवर्ण के दक्षिण तट पर विश्वकर्मा ने उस शिला से सर्वलक्षण सम्पन्न उत्तरार्क का दिव्य यंत्र (प्रतिमा) बनायी। शिला के गढ़े जाने पर पत्थरों के टुकड़ों (शस्त्रों) द्वारा देव सेना को सुसज्जित कर दैत्यों पर विजय प्राप्त की। वहां शिला के अवघट्टन (रगड़) से जो गड्डा बना, वह जलाशय, उत्तरमानस के नाम से विख्यात हुआ। उसमें स्नान कर देवताओं ने रक्त चन्दनयुक्त करवीर (कनैर) के पुष्प तथा अक्षत आदि से उत्तरार्क की पूजा की। इस पूजन के फलस्वरूप उत्तरार्क ने देवों को अजेय होने का वर दिया। अपनी उत्पत्ति के विषय में यह कहा है कि पौष

मास की सप्तमी तिथि रविवार उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र में मेरा जन्म हुआ। सूर्य की कृपा के फलस्वरूप देवों ने उत्तरार्क के पूर्व में गणेश, दक्षिण में क्षेत्रपाल तथा भैरव एवं पश्चिम में उत्तर मानसरोवर स्थापित किए। यह मानसरोवर जलरूप में सूर्य की शक्ति 'छाया' मानी गई। इसके उत्तर में स्वयं उत्तरार्क विराजमान है। उनकी दायीं ओर धर्मकूप बनवाया गया। वाराणसी की उत्तरी सीमा का सूर्यपीठ उत्तरार्क है। इससे सम्वद्ध जलाशय उत्तरार्क कुण्ड के नाम से विख्यात था। वर्तमान में यह बकरिया कुण्ड कहलाता है। कदाचित यह बालाजी कुण्ड का ही अपभ्रंश है। इसकी वर्तमान स्थिति पूर्वोत्तर रेलवे स्टेशन अलईपुर (वाराणसी नगर) के समीप ही है। मुसलमानों के आधिपत्य सन् 1194 ई. के बाद कुतुबद्दीन ऐबक की सेना ने वाराणसी की सेना पर विजय प्राप्त कर राजघाट का किला ढहा दिया। तभी अनेक मठ-मंदिरों का भी विध्वंस हुआ। उस समय के विध्वस्त मंदिरों में उत्तरार्क (बकरिया कुण्ड) का मंदिर भी है। इस क्षेत्र के आसपास की विध्वस्त मूर्तियों में से बकरियां कुण्ड से प्राप्त गोवर्धनधारी कृष्ण की गुप्तकालीन विशाल मूर्तिकला भवन सुरक्षित है। उसी समय श्री अमरसिंह सौरा जो उत्तरार्क मंदिर में आराधना करते थे, इस यंत्र को उठा लाये। कुछ मनीषियों का कहना है कि यह यंत्र राजा मरूत के यज्ञ में जब सभी देवताओं का आह्वान किया। उसी समय इस यंत्र की राजा मरूत ने प्रतिष्ठा कराई थी। यज्ञ पूर्ण होने पर अन्य देवताओं को विदा कर दिया पर इस यंत्र को विसर्जित करना भूल गए। इस यंत्र के बल पर ही श्री अमर सिंह सौरा अनेकों सिद्धियों से सम्पन्न हो गए। उन्होंने शास्त्रार्थ में अनेक बड़े बड़े विद्वानों से टक्कर ली। वे शंकराचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित होने पर सूर्य यंत्र को रातोंरात काशी से चलकर पहूज नदी के किनारे उनाव ले आये। जहाँ उन्होंने नदी किनारे यंत्र को भूमिगत कर दिया। उन दिनों पहूज के किनारे घना जंगल था और बस्ती कुछ दूर हटकर थी। यह सूर्य यंत्र (प्रतिमा) एक विशाल पीपल वृक्ष के नीचे छोटे से टीले में लम्बी अवधि तक भूमिगत रही। दतिया के पुरातत्वविद् स्व. श्री राधाचरण गोस्वामी के अनुसार इस प्रकार के सूर्य यंत्र केवल दो ही स्थानों पर प्राप्त होते है जिसमें एक उनाव (दतिया) में तथा दूसरा पेरू दक्षिण अमेरिका में स्थित है। सूर्य यंत्र को उनाव लाने वाले अमरसिंह सौर 'अमरकोश' के रचयिता हुए। किवदन्ती है कि उनाव के एक लोधी मुखिया की अत्यंत दुधारू गाय जब इस स्थान पर आती थी तो आपसे स्तनों का समस्त दुग्ध स्रवित हो जाता था। मुखिया को जब बहुत समय तक दूध के विषय में निराशा रही, तो उसने एक दिन छिपकर गाय की दिनचर्या का पता लगाया। गाय द्वारा अपना दूध चढ़ाने का चमत्कार अपनी आंखों से देखकर उसे इतना रोष हुआ कि उसने बिना सोच-समझे उस गाय पर लाठी का भरपूर प्रहार कर दिया और गाय वहीं पर चलबसी। रात्रि में मुखिया को स्वप्न हुआ- "तूने गौ हत्या का महान पातक कमाया है और मुझे दूध पीने से वंचित कर दिया है। तेरे विनाश को अब कोई शक्ति नही रोक सकती। सचमुच कुछ ही दिनों बाद वह मुखिया भयंकर यातनाओं को झेलते हुए अपनी करनी का फल पा गया। झांसी जिले में मऊरानीपुर के निकट 'कुरैचा' नामक ग्राम में एक धर्मनिष्ठ कश्यप गोत्रीय लिटौरिया (जुझौतिया) ब्राह्मण के दो बालक सदाशिव एवं भानुप्रकाश किसी दिव्य प्रेरणा से अपना घर छोड़कर घूमते-घूमते उनाव आये। वहां बरमजू काछी ने उन ब्राह्मण बालकों को यथेष्ठ सत्कार किया और उन्हें सम्मानपूर्वक अपनी कुटिया में ठहराया। रात्रि को इन ब्राम्हण बालकों को स्वप्न हुआ कि नदी के किनारे पीपल के पेड़ के नीचे टीले को खोदने से उन्हें अपने आराध्यदेव के दर्शन होंगे। स्वप्न में एक अनुपम तेजधारी महात्मा ने उन्हें यह भी बताया कि वे लोधियों से कह दें किवे इस ग्राम को छोड़कर कहीं दूर चले जावें अन्यथा मुखिया की भांति वे निर्वंश को जायेंगे। प्रात: काल जैसे ही द्विज पुत्रों के स्वप्न की बात लोगों को सुन पड़ी, ग्रामीणों की एक अच्छी भीड़ उस विशाल पीपल वृक्ष के नीचे इकट्ठी हो गई। बड़ी श्रद्धा के साथ उन ब्राह्मण कुमारों ने पीपल की जड़ के पास खुदाई की, तो कुछ ही श्रम से चक्र रूप में सूर्य भगवान प्रकट हुए। इस सूर्य यंत्र की प्रतिष्ठा शीघ्र ही एक कच्चा चबूतरा बनाकर दी गई। ब्राह्मण परिवार सेवा पूजा का अधिकारी हुआ, परंतु उसने काछी को भी पूजापे में साझेदार बनाने की उदारता दिखाई। लोधी परिवार उनाव छोड़कर अन्यत्र जा बसे और पुजारियों ने पीढ़ी दर पीढ़ी भक्ति-भावना से पूजा का व्रत लिया। प्राय: 400 बर्ष से पंडों का यह परिवार उनाव में फलफूल रहा है। वृत्ताकार यंत्र के किनारों पर 21 छोटे त्रिकोण सूर्य की विभिन्न कलाओं के द्योतक हैं। यंत्र का प्रस्तर खण्ड ईंटों के एक कच्चे चबूतरे पर प्रतिष्ठित है जो पीतल की चादर से ढंका है। कुष्ठ और छाजन जैसे भयंकर चर्म रोगों के निवारण में स्थान की महिमा सुन सुनकर दूर दूर से श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगी।

किवदन्ती है कि झांसी के राजा नारायणराव (नारूशंकर)

कुष्ठ से पीड़ित हुए। बालाजी की महिमा सुनकर उन्होंने सवा लाख रूपयों का संकल्प लिया और श्रद्धापूर्वक बालाजी से रोग मुक्ति के लिए विनय की। सूर्य भगवान की कृपा से वे शीघ्र ही स्वस्थ हो गए, तुरंत उन्होंने मंदिर का निर्माण प्रारम्भ कर दिया। किले नुमा बुर्ज बनते देखकर किसी गुप्तचर ने दतिया नरेश को सूचना दी। अपने राज्य में पेशवाओं की घुसपैठ से आशंकाग्रस्त दतिया नरेश ने विनम्र प्रतिरोध किया कि उनके राज्य में कृपापूर्वक अवतीर्ण होने वाले सूर्यदेव के मंदिर का निर्माण उनका कर्तव्य है। जिससे उन्हें वंचित न किया जाए। झांसी नरेश ने मंदिर का निर्माण अधूरा छोड़ दिया और अपने संकल्प की अवशिष्ट राशि से विठूर में गंगा तट पर ब्रह्मघाट बनवा दिया। बाद में दतिया नरेश रावराजा इन्द्रजीत ने सन1736 से 1762 के बीच मंदिर को पूरा करवाया। 'दतिया स्टेट गजेटियर' के अनुसार सन् 1854 में सिंधिया के मंत्री मामा साहब जादव ने मंदिर का विस्तार कराया। महाराजा भवानीसिंह के राज्य में भी मंदिर के विकास पर ध्यान दिया गया। (सन् 1857 से 1907 ई. तक) कभी जहां सघन वन था, अब एक भव्य मंदिर है। दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर बसी हुई पुरानी बस्ती भी अब उसके बिल्कुल निकट आ चुकी है। खदार दानियों के सहयोग से मंदिर के चारों ओर बड़ी-बड़ी दालानें निर्मित हो गई और टीन के सायेबान भी लग गए है। मंदिर से प्रायः सौ फीट की निचाई पर पहुज (पुष्पावती) नदी बहती है। नदी के तट से मंदिर तक 42 पक्की सीढ़ियां बनी हुई हैं जिन्हें प्रशासन यात्रियों की भीड़ के कारण दो-दो भागों में बांट दिया गया है। इस मार्ग में दोनों और गणेश जी और हनुमान जी की विशाल मूर्तियां है। जलवायु की दृष्टि से स्थान आरोग्यप्रद है। कुष्ठाश्रम के लिए तो यह स्थान सर्वथा उपयुक्त है। बालाजी भगवान की कृपा और पुण्यतोया पहुज के जल में रक्तशोधक तत्वों का प्रभाव मिलकर कुष्ठ में व्याधि हरने में सहायक होती है। मुगलकाल में सरदार आगा खां ने मंदिर को किले जैसा देखकर उसको अपने आक्रमण का लक्ष्य बनाया, पण्डों को घायल करके जैसे ही वह मंदिर की ओर बढ़ा तो उसके शरीर में कोढ़ का भयंकर विस्फोट हुआ और वह वहीं गिरकर छिटपिटाने लगा। पण्डों के परामर्श से उसने कृपा के सागर बालाजी भगवान से बालापीर के नाम से सिजदा किया, सूर्य भगवान की कृपा से शीघ्र ही रोग मुक्त हो गया। धार्मिक भावना के अनुसार अंशुमाली बालाजी भगवान भास्कर पर अंजलि अर्पण करने से समस्त चर्मरोगों का नाश होता है। यहां ऊँच-नीच, जाति-पांति का कोई भेद नही है।

यहां से स्नान कर आर्द्र वस्त्र धारण किए ही बालाजी पर जल चढ़ाने हेतु मंदिर पर जाते है।

रविवार, बुधवार, आषाढ़ शुक्ल एकादशी, रथयात्रा, मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, रंगपंचमी, एवं दशमी तिथि के साथ यदि रविवार हो तो मेले की शोभा कई गुना बढ़ जाती है। मंदिर के निर्माण समय से ही घी का दीपक (परा) जल रहा है, जो कभी नही बुझता। एक बार इसके बुझने से तात्कालिक दतिया नरेश को काफी विपत्तियों का सामना करना पड़ा था। मंदिर के लिए दिया गया घी का दान कोई भी व्यक्ति उपयोग नही कर सकता। जिसने घी का पैसा या घी का उपयोग किया वह कुष्ठ रोगी हुआ।

वर्तमान में मंदिर की पूजा और आय व्यय की व्यवस्था सात मुखिया (पण्डों) की समिति संचालित करती है। जिसके पदेन अध्यक्ष दतिया कलेक्टर होते है। तथा झांसी से उत्तर में 17 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां आने के लिए निजी बसों का साधन है।

अन्य तीर्थ स्थलों की भांति इस तीर्थस्थल को भी शासन पर्यटन एवं धार्मिक स्थल घोशित कर पवित्र नगरी के रूप मान्यता देता है तो नवग्रहों के देवता भगवान सूर्य की कृपा का लाभ समस्त भारतवर्ष के व्यक्तियों को प्राप्त हो सकेगा।

संदर्भ सूची-

1. सूर्य चालीसा रचयिता पंडित श्री रामेश्वर प्रसाद पटैरिया प्रकाशक : पंडित ए.के. पटैरिया उनाव रथ सप्तभी 15 फरवरी 2005
2. सूर्य वंदना रचयिता मानस किंकर श्री रामहजूर दांगी दतिया (अप्रकाशित)।
3. 57 वीं राष्ट्रीय शालेय ताइक्वाण्डो एवं खो खो प्रतियोगिता स्मारिका 2011 प्रकाशक म.प्र. शासन शिक्षा विभाग, दतिया (म.प्र.) पृष्ठ 27।
4. सिजरानामा के आधार पर संग्रहीत।
5. दतिया स्टेट गजेटियर से उद्धत।

श्रीसदन सिविल लाइंस
अनामय आश्रम के सामने
दतिया (म.प्र.)
मो. 9229688096
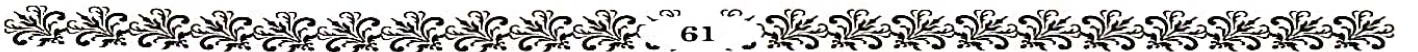
बुन्देलखंड की प्रमुख लोक देवियाँ

– कुँवर रमाकांत पाल सिंह

बुन्देलखंड भारतीय प्रायद्वीप के मध्यभाग में स्थित हैं, जिसका भौगोलिक विस्तार ग्वालियर और विंध्य के कगार के मध्य यमुना नदी तक उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश राज्यों में हैं। इसकी ऊँचाई समुद्र तल से 300 से 600 मीटर हैं। भारत के प्रायदीपीय उत्तरप्रदेश की मध्यवर्ती अग्रभूमि के इस विशिष्ट एवं प्राकृतिक रुप से सम्पन्न भू भाग को 'बुन्देलखंड की उच्च भूमि के नाम से जाना जाता हैं। चम्वल, केन, टौंस, वेतवा, सोन, महुअर, पहुज, और सिंध आदि नदियाँ इस क्षेत्र में अपवाही जलतंत्र को निर्माण करती हैं। इसके अंतर्गत उ.प्र.के महोवा, झाँसी, वाँदा, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर एवं चित्रकूट तथा म.प्र.के छतरपुर, सागर, पन्ना, टीकमगढ़, दमोह, दतिया, भिण्ड एवं सतना आदि जिले सम्मिलित हैं। वुन्देलखंड में अनेक लोक देवियों की पूजा की जाती हैं जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं –

1. रतनगढ़ वाली माड़ूला माता

दतिया जिलें की सेवड़ा तहसील में रतनगढ़ की पहाड़ी पर स्थित माड़ूला देवी बुन्देलखंड की प्रमुख लोक देवी हैं। माडूला देवी रतनगढ़ के राजा रतन सिंह परमार की अविवाहित पुत्री थीं। सन् 1305 ईस्वी में जव अलाउद्दीन खिलजी ने रतनगढ़ पर आक्रमण किया तव उन्होंने पहाड़ से कूदकर प्राणोत्सर्ग कर लिया था। 17 वीं शताव्दी में मराठा शासक शिवाजी के गुरू समर्थ स्वामी रामदास ने इनके मंदिर का निर्माण करवाया था। सर्पदंश से पीड़ित लोग माड़ूला माता के आशीष से ठीक हो जाते हैं ऐसी लोक मान्यता हैं। कार्तिक माह में दूज के दिन रतनगढ़ में लख्खी मेला लगता है जिसमें 12 लाख तक श्रद्धालु दर्शन एवं पूजन करने पहुँचते हैं।

2. झड़िया वाली मनसिल माता

दतिया जिले से 5 कि.मी. दूर झड़िया तथा रिछरा गाँव के वीच 'राजा का वाग' मनसिल देवी का मुख्य स्थान हैं। 'मनसिल' जाति की 'चमार' थी इसलिए उसे चमारी माता भी कहा जाता हैं। दतिया के वुन्देला राजा को उससे प्रेम हो गया था। मनसिल ने राजा से अपने अनुयाइयों को ठाकुर का दर्जा और भूमियाँ दिलवाई अपने लिए कुआँ तथा वाग का निर्माण करवाया और आत्मा के रूप में सदा राजा के साथ रहने की प्रतिज्ञा कर कुँवे में कूद कर देह त्याग दी थी। तबसे संतानोत्पत्ति, दुख निवारण ऊपरी हवा आदि के निवारण के लिये लोग वलि विधान के साथ मनसिल की पूजा करते हैं। मनसिल के स्थान वुन्देलखंड में ही नहीं दक्षिण भारत तथा कनाडा में भी हैं।

3. झांसी की कैमासन - बैमासन माता

कैमासन तथा वैमासन दोनों सगी वहिनें थी। सत्रहवीं शताब्दी में मुगलों से अपनी इज्जत वचाने के लिए उन्होंने आत्मोत्सर्ग का मार्ग अपनाया था। ओरछा के शासक वीर सिंह जू देव ने उनके मंदिरों का निर्माण करवाया था। कैमासिन माता का मंदिर बुन्देलखंड यूनिवर्सिटी के पीछे पहाड़ पर हैं जिसकी 136 सीढ़ियाँ हैं इस मंदिर में कामाख्या माता की मूर्ति विराजमान है। और कैमासिन की मूर्ति पंच कुइया मंदिर में हैं। वैमासिन माता का मंदिर आर्मी एरिया में हैं। स्त्रियाँ संतानोत्पत्ति के लिए इनके व्रत करती हैं तथा नारियल चढ़ा कर धागे में गांठ लगाती हैं जिसे मनोकामना पूरी होने पर खोला जाता हैं।

4. महोबे की मनियाँ देवी

मनियाँ देवी महोवे के चंदेल शासकों की कुलदेवी थी। इनका मंदिर महोवा में मदन सागर झील के किनारे हैं जिसके पास ही मुवारक शाह की दरगाह भी हैं इतिहासकार वी. ए.स्मिथ इन्हें मनियाँ देव (मणिभद्र यक्ष)कहते हैं जिन्हे वाद में मनियाँ देवी कहा जाने लगा। द्विज हरिकेश ने भी 'पारस' देने वाले यक्ष का उल्लेख ही किया हैं। 'वैगलर' का मत है कि मनियाँ देवी यक्षिणी थीं। मेरा मत भी यही है कि मणिभद्र यक्ष की आत्मशक्ति पद्मावती यक्षिणी ही मनियाँ देवी के रूप में पूजी जाती हैं। आल्हा तथा अन्य ग्रंथों में भी उन्हें देवी ही माना गया हैं।

5. विशहरी माता मनसा देवी

मनसादेवी कश्यप ऋषि की पत्नी 'कद्रू' से उत्पन्न संतान थी। नागराज बासुकि द्वारा भगवान शिव के मस्तक से उत्पन्न हुआ उसे ही कश्यप ऋषि की पत्नी कद्रू ने धारण किया था इसलिए इनका एक नाम 'रूदांश' भी हैं। इनका विवाह ऋषि जरत्कारू से हुआ था। एक अन्य कथानुसार वासुकि ने इस शिव तेज को हलाहल को पोषण के लिए सौंपा था। जहरीले प्राणियों से रक्षा तथा सर्पविष पीड़ित के उपचार

हेतु इनकी पूजा होती हैं। सपेरे (कालवेलिए) सापुड़े इनकी पूजा 'विषघट' के रूप में करते हैं। सम्पूर्ण बुन्देलखंड में इनके चबूतरे एवं मंदिर हैं।

6. आसमानी माता

आसमानी माता उल्का, तड़ित, ओले, वर्षा आदि शक्तियों से सम्पन्न आकाश की अधिष्ठात्री देवी हैं। आसमानी विपत्तियों से रक्षा के लिए इनकी पूजा की जाती हैं। एवं नवरात्रियों में जवारे निकाले जाते तथा सांग चढ़ाई जाती हैं।

7. वांगर वाली तेलिन माता

वांगर वाली माता मूल रूप से राजस्थान के वाँगरक्षेत्र की निवासिनी थी जो देवगढ़ के राजा अजैपाल के राज्य में ब्याही थी। तंत्र -मंत्र की कुशल ज्ञाता इस देवी की साधना अनेक सिद्धियाँ प्राप्त करने तथा सुख संपत्ति व संतानोत्पत्ति की कामना से वलिविधान पूर्वक की जाती हैं।

8. मरई माता, मरी माता या मरही माता

मरी माता, और मरही माता के नाम से पूर्वोत्तर भारत तथा राजस्थान में करणी माता के नाम से प्रसिद्ध देवी बुन्देलखंड में 'मरई माता' के नाम से जानी जाती हैं। दक्षपुत्री भगवती सती को मृत्युपरांत मरी माता के नाम जाना गया हैं। 'प्लेग' नामक महामारी की देवी मरई माता की पूजा से हादसे टल जाते हैं ऐसी जनश्रुति हैं।

9. आसोमाई

आसोमाई द्यूत विद्या (जुये) की देवी हैं। इनकी कृपा से जुये द्वारा अकूत संपत्ति प्राप्त होने की कथा भी व्रत के दौरान पढ़ी सुनी जाती हैं। फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक किसी एक दिन इनकी पूजा की जाती हैं। उस दिन गोटियों वाला मंगल सूत्र पहना कर आसों माता का पूजन किया जाता हैं। अब इनका संवंध संतानोत्पत्ति से माना जाता हैं संतान हो जाने पर इनका उद्यापन किया जाता हैं।

10. सांझी (झिझिया) एवं मामुलिया

मामुलिया घटोत्कच की पुत्री थीं जिनका अपहरण सुआटा (अलंबुस) दैत्य ने कर लिया था। जिसे घटोत्कच के पुत्र बब्बरभान (बर्वरीक) जिन्हें टेसू और खाटू श्याम के नाम से जाना जाता हैं ने सुआटा को मारकर मुक्त कराया था और झिंझिया से विवाह था जो सुआटा की पुत्री थी। पितृपक्ष के प्रारंभ होते ही क्वारी लड़कियाँ सांझी खेलती हैं। वे एक मटकी में छेद कर उसमें दीपक रखकर गाते हुये घरों से पैसे माँगती हैं। और सोलहवें दिन उसका विवाह रचाती हैं। मामुलिया के रूप में बेर आदि की कटीली झाड़ी को ओड़नी फूल, फल मिष्ठान से सजाकर पूजा की जाती और नदी तालाब में विसर्जन किया जाता हैं।

इन लोक देवियों के अतिरिक्त वै माता (गर्भावस्था की देवी) दुवडीमाता, (संतानों के जीवन की देवी) अवसान माता (औसान वी वी), देवल या माता (आल्हा उदल की माँ), अछरू माता (टीकमगढ़), रोढ़ी माता (ललितपुर), जालौन देवी, खडेरीमाता, कंकाली माता, अवहा माता, बड़ी देवी, शीतला माता, होरी, मालदेवी, वीजासेन माता, सती मईया, बेटियें, समैया माता, चौरादेवी, कर्माबाई, बागराजन माता, गाँव की देवी, दंतेसुरी माता, दुल्ही देवी, खेर माता, संतोषी माता, पुतरिया माता, कोरिनगाई, वेइया माता, एला दे (कारसदेव की वहिन) समईमाता, कंजरों की (मालका, चैथमाता, नथिया माता), माल देवी, भर्जुनामाता, छट्टी माता, छोटी माता, दशारानी, अकीमाई, आदि अनेक लोक देवियों की पूजा बुन्देलखंड में प्रचलित हैं। इन सभी चमत्कारिक लोक कथाऐं जुड़ी हैं जो हमारे बुन्देलखंड की लोक संस्कृति की अक्षय विरासत हैं।

व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
10/07 जयनिवास
पंकज शुक्ला गली, छोटा बाजार
दतिया (म.प्र.) पिन कोड 475-661
मो. 9893018955

बुन्देलखण्ड के तीज त्यौहार एवं पर्व

– डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार 'अभय'

हमारे जीवन में तीज त्यौहारों एवं पर्वों का विशिष्ट महत्व है। ये हमारे व्यस्तता से भरे जीवन में सरसता और समरसता का संचार कर एक विशेष प्रकार की चेतना की जागृति करते हैं। इन्हीं तीज त्यौहारों एवं पर्वों के माध्यम से हम अपनी उन परम्पराओं का सफल निर्वाहन करते हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांरित होकर हम तक पहुँचती है।

तीज त्यौहार लोक जीवन में प्रेम विश्वास और निजता को प्रदर्शित करते हुए हमारी मूक भावनाओं को मुखरित कर उन्हें साकार रूप प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। बुन्देलखण्ड में जो तीज त्यौहार एवं पर्व प्रमुखता से मनाए जाते हैं उनका वर्णन हम यहाँ कर रहे है ताकि अन्य प्रान्तों के लोग भी इनका परिचय प्राप्त कर यहाँ की गौरवशाली संस्कृति से परिचित हो सकें।

पजनूँ पूनेः-यह चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। इस दिन एक मटके को सफेदी से पोतकर उस पर हल्दी के घोल से माँ तथा बच्चे (पजनूँ) की आकृति बनाई जाती है तथा मटके में लड्डू भर देते है। पूजन के उपरांत पुत्र लड्डू निकालकर माँ को देता है, माँ उस लड्डू को अपने हाथ से अपने बेटे को खिलाती है। यह माँ बेटे के पवित्र प्रेम की कहानी है।

आसमाईः- इसकौ वैशाख कृष्ण द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। पूजा वाले स्थान को गोवर से लीपा जाता है और उस पर आटे से चौक पूरा जाता है। पान के एक पत्ते पर चन्दन या हरिद्रिका (हल्दी) के घोल से आसमाई तथा उसकी बहनें भूखमाई, प्यासमाई, तथा नींदमाई की पुतलियाँ उन पर चार कौड़ियाँ रखते है तथा गुड़ व आटे की आसें बनाकर भोग लगाते है। पूजा के समय इस व्रत से सम्बद्ध एक कहानी भी कही जाती है।

कुनघुसू पूनेंः- यह आषाढ़ की शुक्ल पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला व्रत है। इसे बुन्देल खण्ड में गृहलक्ष्मी की पूजा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन घर के पूजा वाले कक्ष में घट की जेष्ठ महिला घर के चारों कोने गोबर या पोतनी (विशेष प्रकार की मिट्टी) से लीपती या पोतती है तथा कोनों में हल्दी के घोल से पुतलियाँ अंकित करती है। इन पुतलियों का घर की बहुएँ हल्दी चंदन अक्षत से पूजन करती है और गुण घी का भोग लगाती है। तथा परिवार की प्रसन्नता व मंगल की प्रार्थना करती हैं इस त्यौहार पर पूजा के समय सास बहू की कहानी कही जाती है।

हरजोतीः- इस पर्व की हरी जोत के नाम से भी अभिहित किया जाता है। यह पर्व बालिकाओं के सम्मान का पर्व है। इसे श्रावण मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। इस दिन पूजा वाले कमरे को गोबर से लीपा जाता है तथा पुतलियाँ अंकित कर विधि विधान से पूजन किया जाता है। इस अवसर पर एक कहानी भी कही जाती है। घर के मुख्य द्वार पर सोनी सोना नामक आकृतियाँ अंकित की जाती है जिनके अंकन में हल्दी और चावल के घोल का प्रयोग किया जाता है।

नाग पाँचेः- यह त्यौहार श्रावण शुक्ल पंचमी तिथि को मनाया जाता है। इस त्यौहार को मनाने की प्रथा महाराज हैहय के समय से चली आ रही है। यह पर्व नागों को प्रसन्न करने तथा उनसे अभय दान प्राप्त करने के लिए मनाया जाता है। इस दिन घर के भीतर अथवा मुख्य द्वार पर अगल बगल में गेरू के या कोयलें के घोल से नागों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं और उनकी विधि विधान से पूजा की जाती है। इस पर्व पर बाँमी पर जाकर नागों का पूजन करने और उन्हें दूध पिलाने की परम्परा भी है। इस नागों का दर्शन शुभ माना जाता है। जो लोग इस दिन उपवास रखते है और नागों का विधि पूर्वक पूजन करते है उन्हें नाग भय से मुक्ति मिल जाती है इस व्रत को रखने से कुण्डली में पड़ा कालसर्प योग निष्प्रभावी हो जाता है।

साउनसुदी नमेंः- इसे श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की नौमी तिथि को मनाया जाता है। यह त्यौहार पति पत्नी की समरसता का प्रतीक है इस दिन अनाज से भरे कुठलों को चूने या मिट्टी से पोतकर और गंगा जल छिड़क कर मिट्टी या गोबर से नौ पुतलियाँ निर्मित की जाती है जिनका पूजन पति पत्नी दोनों मिलकर करते है। इस दिन पूजन के समय व्रत से सम्बन्ध रखने वाली कहानी सुनी जाती है।

कजरी:- सावन की पूर्णिमा के दिन पड़ने वाला यह पर्व बुन्देल खण्ड का सर्वाधिक चर्चित और लोक प्रिय पर्व है। इस दिन महिलाएँ दोनों या मिट्टी के कटारों में बोए जवों की जिन्हें कजरी (कजली या भुँजरियाँ) कहते है, की पूजा करती है। पूजन के उपरांत उन कजलियों (भुँजरियों) को किसी नदी या तालाब में विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। कजली विसर्जन के पूर्व उन्हें खौंट लिया जाता है। जिन्हें लोग आपस में बाँटकर एक दूसरे को गले लगाते है। बहिने इन कजलियों को अपने भाइयों को देकर उनकी कलाई पर राखी (रक्षा सूत्र) बाँधती है। इस अवसर पर भाई बहिन की रक्षा का संकल्प लेकर उन्हें अभय दान दे देता है कजली का यह त्यौहार आल्हा ऊदल के समय से मनता आ रहा हैं। इस पर्व को महोबे में भादों प्रतिपदा के दिन मनाया जाता है क्योंकि पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के कारण इसे निश्चित तिथि पर नहीं मनाया जा सका आल्हा खण्ड में कजलियाँ की लड़ाई इतिहास प्रसिद्ध रही है।

हरछठ:- इसे भादौ मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को भगवान वलराम के जन्म दिन के रूप में मनाया जाता है। इस दिन घर की दीवाल को भैंस के गोबर से लीपकर उस पर चावल के घोल से आलेखन बनाया जाता है जिसमें कृष्ण बलराम छः भाई एक वहिन, जरिया, छेवला, दूध वाली, हल चलाता किसान, स्याऊझालर, गाय खिलौने, सूर्य, चन्द्र, गंगा, यमुना, तुलसी आदि के चित्र चित्रित किए जाते है। कहीं कहीं ढाक के एक पत्ते पर एक पुतली अंकित कर उसे जरिया या काँस के साथ रखकर पूजते है। भोग के रूप में मक्का, ज्वार, जवा (जौ) मटर, चना, बाजरा, तेवरा, महुओं आदि को भूनकर दोनों में प्रसाद के रूप में रखा जाता है। इन सभी को भोग लगाकर पुतली की आरती उतारी जाती है। इस अवसर पर व्रत संबंधित एक कहानी भी कही जाती है। इस दिन स्त्रियाँ हल के प्रयोग द्वारा उगाए गए किसी भी अनाज को या उसके बने पकवान को ग्रहण नही करतीं। अपना व्रत समा के चावल, साबूदाने की खीर, अथवा फल खाकर तोड़ देती है। इस व्रत में शक्कर गुड़ आदि का प्रयोग वर्जित रहता है।

कन्हैया आठें:- यह पर्व कृष्ण जन्म के रूप में मनाया जाता है। भाद्र पद अष्टमी को पड़ने वाले इस त्यौहार के दिन पुरुष व स्त्रियाँ उपवास रखते है। इस दिन सारे घर आँगन की लिपाई पुताई की जाती है। पूजा वाले कक्ष की दीवाल को सफेदी से पोतकर उस पर कृष्ण लीलाओं का चित्रांकन किया जाता है। रात्रि के बारह बजे कृष्ण जन्म मनाकर पूजन अर्चन कर व्रत तोड़ दिया जाता है।

बाबू की दोज:- इसे भाद्र पद शुक्ल की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व सम्पूर्ण परिवार के सम्मिलन और एकत्रीकरण का पर्व है। इस दिन पूजा वाले घर में माँय के पट की पूजा की जाती है। यह पट गोबर से लिया या चूने से पुता होता है जिस पर गेरू के घोल से छः पुतलियां बनाई जाती है। पट के समक्ष कोरा कपड़ा बिछाकर उस पर कोरा (घर में बने व्यंजन) पसार दिए जाते है जो परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुसार होते है। पट आदि का हल्दी चाँवल से पूजन कर घी का दीपक जलाया जाता है इस दीपक की ज्योति को परिवार के सभी सदस्यों द्वारा देखा जाना अनिवार्य होता है। घर की बालिकाओं को इस पूजन से अलग रखा जाता है।

तीजा:- इस व्रत को हरितालिका नाम से भी जाना जाता है। भाद्र पद शुक्ल तृतीया को पड़ने वाले इस व्रत को सौभाग्यवती स्त्रियाँ और बालिकाएँ दोनों ही मनाती है। इस व्रत की पूर्व संध्या से ही तैयारी होने लगती है स्त्रियाँ उस शाम कुछ खाती पीती नहीं है। सुबह व्रत के दिन शाम को पूजा स्थल पर गौरा पार्वती की झाँकी सजाई जाती है जिनका सौभाग्यवती स्त्रियाँ और बालिकाएँ विधि बिधान से पूजा कर सारी रात्रि गा बजाकर जागरण करती है। सुबह होने पर गौरा पार्वती की मूर्तियों को किसी तालाब या नदी में विसर्जित कर उपवास तोड़ दिया जाता है। सौभाग्य बती स्त्रियाँ इस व्रत को अपने अखण्ड सौभाग्य की कामना को लेकर तथा बालिकाएँ योग्य वर की कामना को लेकर करती है।

मोराई छठ:- यह त्यौहार भाद्र पद शुक्ल पक्ष की षष्ठी को पड़ता है। इस दिन बुन्देल खण्ड में शादी के मोर किसी तालाब या नदी में विसर्जित किए जाते है। सौभाग्य वती स्त्रियाँ घर से गाती बजाती हुयी पूजन की थाली में मोर रख कर नदी या तालाब पर जाती है और वहाँ मोर का पूजन कर उसे विसर्जित कर घर लौट आती हैं। इस दिन घर में इच्छानुसार सगूदी रोटी (कच्चा खाना जिसमें कढी, चावल, दाल, बरा आदि होते है) बनाया जाता है या फिर पक्का खाना बना लिया जाता है।

अनन्त चउदसः- यह व्रत भाद्र पद शुक्ल पक्ष में पड़ता है। इस दिन अनन्तों (रंग बिरंगे धागों के बने गण्डों) की पूजा की जाती है। इस दिन उपवास रखने वाले को नमक का खाना निषिद्ध होता है। वह केवल पुओं को खाता है। पूजा सम्पन्न करते इस व्रत से संबंधित काव्यात्मक लघु कहानी कही जाती है।

महालक्ष्मीः- महालक्ष्मी का व्रत राधाष्ठमी (शुक्ल पक्ष) से प्रारम्भ होता है प्रतिदिन सुबह चिरचिटा की दातुन की जाती है तथा दूर्वा के सोलह दल लेकर सोलह लोटो से स्नान किया जाता या नदी तालाब में सोलह बार डुबकी लगाई जाती है। व्रत क्वांर मास की कृष्ण पक्ष की अष्ठमी को पड़ता है। इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियाँ व्रत रखती है तथा मिट्टी के बने हाथी की पूजा के बाद व्रत तोड़ दिया जाता है।

अहोई आठेंः- इसे कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की अष्ठमी को मनाया जाता है इस दिन घट की दीवाल को सफेदी से पोतकर आलेखन बनाया जाता है, जिसमें विविध रंगों का प्रयोग किया जाता है। पूजा के समय कहानी कही जाती है। इस व्रत को वैमाता की पूजा के रूप में सम्पन्न किया जाता है।

भाई दूजः- इसको भाई दोज का भी नाम दिया जाता है। इस दिन घर के मुख्य द्वार पर गोवर से दोजें बनाई जाती है। जिनका आकर गोधनों की भाँति होता है। वहनें इनकी सुवह पूजा करती है। इस अवसर पर भाई वहिन के पवित्र प्रेम की कहानी कही जाती है। मान्यता है कि इस दिन यदि भाई वहिन के घर जाकर भोजन करता है तो उसकी आयु में वृद्धि होती है।

अक्षय नौमीः- (ऑवरिया नमें) इस त्यौहार को कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की नमें को मनाया जाता है। स्त्रियाँ अपने अपने घट से पकवान बनाकर आँवले के पेड़ के नीचे ले जाकर उनसे प्रसाद रूप में चढ़ाकर आँवले की पूजा करती है तथा वही बैठकर अपने बच्चों आदि के साथ भोजन करती है। इस समय तक आँवला पक जाता है। आँवला पूजन के बाद उसको तोड़ना प्रारम्भ कर दिया जाता है।

मकर संक्रान्तिः- इसे बुन्देल खण्ड में वुड़की पर्व या सँकरात के नाम से जाना जाता है। इस दिन लोग किसी नदी तालाब आदि में तिलों को शरीर के ऊपर मलकर वुड़की लेते है (गोता लगाते है) ततपश्चात घर पर आकर तिल चटकाकर मगोड़े आदि खाते है। इस त्यौहार पर घर में वहुत सारे पकवान बनाकर धर लिए जाते है जो हप्तों चलते है।

भवराँतः- सँकरात के अगले दिन भँवरात का त्यौहार पड़ता है। इस दिन मिट्टी या धातु आदि से वने हाथी घोड़ों की पूजा की जाती है और उन पर खुरमों (एक विशेष प्रकार के व्यजंनों) को गौन (कपड़े की दोनो ओर वनी खोली में भरकर लादा जाता है। पूजन में शक्कर से बने घुल्लों का प्रसाद के रूप में उपयोग किया जाता है। गौन से लदे हाथी गेड़े और गाड़ियों को वच्चे आगे पीछे खीचते हुए चलते है। इसे वंजी झौरी करना कहते है।

अन्य त्यौहारः- इन व्रतों और तीज त्यौहारों के अतिरिक्त बुन्देल खण्ड में अकती, गंगा दशहरा, दुर्गा अष्टमी, दसहरा (विजय दसमी) दीपावली होली आदि पर्व और त्यौहारों को भी बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद इण्टर कॉलेज
ईगुई, बँगरा, जालौन (उ.प्र.)
पिनकोड 285121
मो. 7897049524

बुन्देली व्यंग्य -

छपास कौ भयंकर रोग

– राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

वैसे तो प्रत्येक कवि उर साहित्यकार को छपास कौ राग होत, पै कछू टुच्चे कवियन में ईके कीटाणु भौत जादा मात्रा में पाए जात। ऐसे छपास रोगी कवि प्राय: हर शहर हर गाँवन में आपखों दो -चार की संख्या में तो देखवे को मिलइ जैहे। ऐसइ हमाय शहर के एक कवि महोदय को 'छपास रोग' ई कदर लग गओ के पूँछो मत।

वे हर कवि गोष्ठी में आ धमकत, बस कोनउ प्रकार से इनै पतो भर चल जाए उर कवि सम्मेलन में तो जुगाड़ करकें घुंसइ जात उर फ्री सेवा में अपने स्थानीय शहर तो शहर, बाहर तक के शहरन में अपने वाहन सहित बिना पइसन में पौंच जात। ऊके बाद इने छपास कौ कीरा काटन लगत उर दूसरे दिना उनें अपनौ नाँव समाचार पत्रन में पढ़वे कौ बेहद जुनून पागलपन की हद तक सवार हो जात।

कभउ- कभउ तो कवि सम्मेलन चलइ रओ होत उर जे अपनी कविता सुनाकै उये तुरंतइ अपने मोबाइल से केवल सामने वारे के हात - पाँव जोड़ के उये ऐन मक्खन लगाके, मीठीं बातन में बिदाकें अपनी फोटो खिंचवाके उये फेसबुक पै उतै बैठे बैठे केवल अपनी महिमा मंडित करत भए फोटो डाल देत, मानों सबरे कवि सम्मेलन में केवल इनइ ने कविता पढ़ी हों, और तो और कार्यक्रम में कौन मुख्य अतिथि है कौने, अध्यक्षता करी, ईसें इने कोनउ मतलब नइयाँ, उनकौ नाँव तक नइँ देत और बेचारे आयोजक - संयोजक महोदय कौ भी आभार प्रकट करवौ तो दूर उसकौ सोउ नाँव तक नइँ देत है केवल आत्म प्रशंसा उर दंभ से भरी भई अपनी कविता की चार लाइनें लिख देत है उर पूरे समाचार की ....कर देत है।

कुल जमा पूंजी की अपनी वे ही दो-चार घिसीपिटी कविता घुमाफिरा कर सुनाते उर उनई में से दो लाइनें समाचार पत्रों में छपवें को दे देते। जे वेंइ लाइनें होत आय जोन गोल्डन जुबली, डायमंड जुबली मना चुकी होत है।

अन्य संगी कवि तो ठीक, समाचार लिखनेवारे पत्रकारों तक को वे लाइनें कंठस्थ याद हो गयी, एक बार ऐसेइ एक दिना एक कवि सम्मेलन कौ समाचार छपौ जीमें इनकी लाइनें अदृश्य हती, फिर का हतो, इनने तुरंत मोबाइल करो, कायसे कै कार्यक्रम हमाये संयोजन में भओ हतो। न हेलो, न हाय, सीधे धांय-धांय और सीधे वाकयुद्ध शुरू, तुम पक्षपात करत हो, अपने को भौत बड़ौ समझत हो, तुमने हमाओ नाँव काय नइ दओ, का भओं कै इनकी लाइनें उदना पेपर में जागा खाली नइँ हती एइसें नइँ छपी। ऐइसें उनकी लाइनों को केवल पढ़कै इ उनें प्रणाम करके मुक्ति दै देत ते उर ऊके स्थान पै दूसरे कवि की कविता की लैनें छाप देत।

जी दिन समाचार में उनकी लैनें आ गयी तब तो ठीक है वर्ना उ आयोजक व संयोजक की शामत आ जात। जे महोदय भुन्सारे से पेपर पढ़तेइ जब अपनी लाइनें नइ देखत तो आगबबूला हो जात उर तुरंतइ मोबाइल से कवि गोष्ठी कें संयोजक महोदय को ऐसे फटकारत जैसे इनने उ कार्यक्रम के लाने मानों भौत कछु चंदा दऔ होय, वो भी सपने में कायसें कै हकीकत में तो जे 'चमड़ी जाये पै दमडी न जाये'उक्ति के परम भक्त है, मजाल है कै कोनउ इनसें कार्यक्रम के नाँव से एक रूपइया भी प्राप्त कर सके। हाँ, कछू संस्थाओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देने पै इनें भौतइ जादा अंदरूनी कष्ट पहुँचता है, लेकिन जे देवौ उनकी मजबूरी हती वर्ना वार्षिक कार्यक्रम व कवि सम्मेलन ने इनकी दाल नइ गलती उर फिर मंच पै आवौ असंभव हो जातौ।

हाँ, तो हम बात कर रयते जी दिना इन कवि महोदय की कविताओं की लाइनें नइँ छपती, जे तुरंतइ संयोजक को मोबाइल पै हिला देत, मानों कौनउ भूकंप आ गऔ होय।

संयोजक महोदय बेचारे समझात-समझात थक जात कै हमनें तो आपकी लाइनें दयी हतीं, अब पेपरवारें ने नइ छापी तो हम का करे। हो सकत है ऊ दिना कौनउ विज्ञापन मिल गओ हुइए उर उये छाप दिऔ हुइये या पेपर में जादा जागा नइँ हुइए तो उनने समाचार काटकै अपने हिसाब सें कर दऔ, लेकिन ऐसी केई जात है कै- अनपढ़ को समझाऔ जा सकत, लेकिन एक पढ़े लिखे मूरख को नइँ' वे इतैक बड़े मूरख है कै वे कौनउ बात खों मानवे कौ तैयार नइँ होत।

आज कौ पेपर पढ़ो हम समझ गए कै आज फिर

पागलपन की छपास की दौरा जरूर पड़ई फिर भी हमने अनजान बनत भए कइ नइ, काय का, बात है। वे बोले आज फिर केवल हमाइ लाइनें नइँ छपी है बाकी सबरन छपी है अर हमाओ तो नाँव तक गोल है। (हमने मनइ मन में कईं के- तुम खुदइ गोल हो अर्थात शून्य हो, जीरो हो, लेकिन समझत अपने को हीरो हो।)

मैंने उने अपनी सफाई देत भए कई के भई मैंने तो सबरइ की लाइनें दयी हतीं, बिस्वास नइँ होय तो हमाइ रिपोर्ट की फोटो कापी देख लो, बात तो उनकी समझ में आ गयी के पेपरवाले नेइ नइँ छापी है, लेकिन फिर बेइ जुमला दोहराओ के इ प्रमुख पेपर में हमाओ नाँव कभउँ नइँ आत है। मैंने कइ, भई दूसरे पेपरन में तो तुमाओ नाँव है, दस पेपरन में से कौनउ एकाध में नइँ आओ तो का गजब हो गओ।

वे फिर खुनसयात भए बोले- अरे वाह! कैसे नइँ हो गओ। जो पेपर शहर में सबसे जादा पढ़ो जात (हमने मनइ मन फिर बुदबुदात भए कई के एइसें तो आपको नाँव उने नइँ दओ वो समझदार पत्रकार है) मैंने कइ के- हमने तो दओ हतो अब अगर उने नइ छापो तो इमें हमाओ का दोस है।

हो सकत उनकी तुमाइ पिछले जन्म की दुश्मनी हुइए, एइसें वो इ जनम में तुमें नइं छाप के, अपनी दुश्मनी भंजा रओ है। इतैक सुनबो हतो के उनने फौरन अपनी मोबाइल काट दओ हमने सोउ राहत की सांस लयी, सोसो चलो, पीछो छूटो।

संपादक 'आकांक्षा' पत्रिका
अध्यक्ष- म.प्र. लेखक संघ, टीकमगढ़
शिवनगर कालौनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
पिन: 472001 मोबाइल- 9893520965

बुन्देली फड़ काव्य (फाग) के आशु कवि 'स्व. श्री रामसहाय कारीगर' पी-एच.डी.

– डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन'

बुन्देलखंड में बुन्देली काव्य की अनेक विधायें हैं, जैसे ख्याल, चौकड़िया, लावनी, भजन, छंदयाऊ फागें, शैर आदि प्रमुख हैं। आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व फड़ काव्य के अखाड़े बुन्देली काव्य खूब चलते थे अपने झांसी जनपद में झांसी मऊरानीपुर, कटेरा, स्यावरी, उल्दन, रानीपुर, टोड़ी फतेहपुर, गुरसरॉय तथा औरेखी, जालौन, आदि स्थानों पर शैर-फाग के गायक व बनाने वाले पर्याप्त थे क्योंकि उस समय इनका प्रचलन था और हाथों हाथ चिट्ठी भेज दी जाता थी तथा गायक लोग जाकर भाग लेते थे। झांसी में स्व. श्री नाथूराम माहौर ज्योतिषी भगवानदास, रंगी मंडल मऊरानीपुर में वित्र घनश्यामदास व उनके सहयोगी पर्याप्त चर्चित थे। म.प्र. में छतरपुर में भी फड़ काव्य के पर्याप्त गायक थे। सैर मुज तड़ाका चौकड़िया छंद के आचार्य लोक कवि ईसरी गंगाधर ख्यालीराम छंद दार फागों में स्व. कारीगर रामसहांय, भुजवन सिंह, रंगीलाल झांसी, गोटीराम (नत्थू) नाथूराम कटेरा, प्रागीलाल गुरसरॉय, मे से भोगीलाल व उनके सहयोगी ख्याल विधा में प्रसिद्ध थे। फड़ काव्य में राठ कस्वा (हमीरपुर) के स्व. गनेशीलाल बुधैलिया ने पी.एच.डी. प्राप्त की थी। इसी प्रकार आचार्य श्यामसुन्दर बादल राठ वालों ने फाग साहित्य पर डाक्ट्रेट प्राप्त भी किया था। वर्तमान समय में तुर्रा पक्ष के कार्यक्रम यत्र तंत्र सुनाई देते हैं। वर्तमान समय में तुर्रा पक्ष के कार्यक्रम यत्र तंत्र सुनाई देते हैं। फाग फड़ काव्य की विधा समाप्त प्राय: सो हैं। इसे संजीवनी प्रदान करने की आवश्यकता हैं क्योंकि छंदयाऊ फागों वेदपुराणों का श्रेष्ठतम ज्ञान भरा पड़ा हैं।

इसी फड़ काव्य परम्परा के आशु कवि बुन्देली फागु कार स्व.श्री रामसहांय कारीगर का जन्म उ.प्र.के झांसी जनपद की मऊरानीपुर तहसील के ग्राम स्यावरी में सन् 1898 ई. में हुआ था। इनके पिता व दादा भी अच्छे कवि थे। कविता इन्हें विरासतन प्राप्त हुई थी। आप फड़ के बाने बंद गायक व कवि थे। आपकी काव्य प्रतिभा पर सर्व प्रथम डॉ. सियाशरण शर्मा जी ने सन् 1979 ई. में एक शोध पूर्ण आलेख बुन्देल खंड का अज्ञात साहित्य नाम से दैनिक जागरण झांसी में प्रकाशित करवाया। उनके अनुसार ....सामान्य शिक्षा प्राप्त करने वाले इस कवि में आशु कविता के अलौकिक गुण विद्यमान थे।

'डॉ. बहादुर सिंह परमार डिग्री कॉलेज छतरपुर ने अपने शोधपूर्ण निबंध में कवि के बारे लिखा हैं .... फड़ काव्य की त्वरित रचनायें दंगल में लिखकर गाना इनका प्रमुख शौक था जिससे वे गायकी के दंगल जीतते रहें।'

अंग्रेजी राज में ओनरेरी मजिस्ट्रेट रहे बाबू श्री गुरुदयाल श्रीवास्तव ने रामसहांय कारीगर के विषय में लिखा हैं -.......... लेखक इसी ग्राम का निवासी होने के कारण उनके इस अलौकिक गुण का महान प्रशंसक रहा हैं डॉ. रामनारायन शर्मा ने उसके बारे में लिखो - लोक कवि राम सहाय कारीगर की कविता में भाव पक्ष की भांति कला पक्ष मजबूत हैं। फड़बाजी की काव्य कला में उनकी अनौखी काव्य कला के दरशन होत हैं।..................।

डॉ. जवाहर लाल कंचन झांसी ने उनके बारे में .... वे फड़ों के सदा विजेता रहें। तुरंत ही छंद बनाकर गाना व फड़ में प्रतिद्वन्दी को निरन्तर कर परास्त कर देने में उन्हे विशेष आनंद प्राप्त होता होगा ....।'इसी प्रकार डॉ. कन्हैया लाल शर्मा कलश डॉ. मोतीलाल त्रिपाठी अशांत आदि विद्वानों ने यत्र तंत्र इनके काव्य की प्रशंसा की हैं।

कारीगर के काव्य का विषय सामाजिक कुरीतियां जमीदारी समय में इनके अत्याचारों का वर्णन, राष्ट्रीय, सामाजिक, समस्या पूरक, राम, कृष्ण, आल्हखंड, गरीबों के प्रति सहानुभति पूर्ण कलात्मक रचनायें उनके काव्य में भरी पड़ी हैं। इनके गुरू पं. श्री बैजनाथ द्विवेदी जी थे। जैसा कि उन्होंने अपनी एक रचना की उड़ान में लिखा हैं। -

'रामसहांय आज दुश्मन खां फड़ से चाउत हटावन।
नातर मम गुरू बैजनाथ के तीन बेर गिर पांवन।।'

उनकी एक अक्षर की एक रचना की बानगी देखें -

'नानी नान नुनों नन्नी ना, नन्नी नान नुनी ना।
नन्नी ना नौ नागें नैं नैं, नें नें नुनें ननीना।।'

बुन्देल खंड में नुनवां फसल काटवें से कहा जाता हैं।

उनकी गता गत रचना की एक बानगी स्वरूप कुछ पंक्तियां देखें।

दोहा- 'न्यामत साई मंगाई, सुन चेला दै ध्यान।
न आ न जा कऊ दीन कै, भिक्षा दीजौ आल।।'
टेक- चेला जा जा काम बजाजा जा ल्या न्यामत ल्याजा
एक सिहा विलोपन रचना देखें। (अल्ह खंड)
दोहा- 'जागन जोधा बांकुरौ, मरो समर में आज।
आज करन रन को चलो, आला सुत इंदैराज।।'
टेक- जे दल इंजैराज जोधाके, धाके रन हित दांके।

छंद- दाँके जोधा इंजल बीर, पौचे जां धीरा के तीर गज के कारडारे हैं चीर एकई कर से कर सें लैके परों दुधारों, मारों धीर बीर मतवारौ उड़रओ खूनन कौ भवकारौ - बाके घर उनको छंदो में अधरोष्ठ (अधर) छंद भी बड़े मार्मिक व वेजोड़ है। अधरोष्ठ रचना में पवर्ग निकाल दिया जाता है।

जैसे दोहा - 'श्री शारदा आनके कर कंठन स्थान।
हे जननी हरि के चरित्र करन चहत कछु गान'
शैर - अज्ञान जान जननी दै जान को ज्ञाना।
दै ज़ोर कड़ी छंद शैर सुनै सुजाना।।'
टेक - राजा टेक धनुष की टानें सीता जी के लाने।...

उनकी उलट गता गत रचनायें भी बड़े कमाल की है - यथा दोहा -

गूजरि ने गुलचा दिया पकर स्याम का हांत।
तहां पटक दधिझटक कें कान्ह कुंवर भगजात।।
टेक - तुरतई तजा स्याम बौ दैआ आदे खुड़ी कनैआ।
आनै पाय ग्वालिन ऐंगर भागत मौत तरैआ।
आरैगोपी पीछे लागी गई जा जसुदा मैया।
आमें माता तोय बतादों भरी डरी अगनैआ।
आनै जात कंस से कैदों राम सहाय दिखैया।।

इसी प्रकार से इंदल जीतने वाली फागें सभी बेजोड़ है आज कल कहीं कहीं होली के अवसर पर झांझें नगड़िया ढोलक सुनाई देती है। 80-100 वर्ष पूर्व इन फागों का प्रचार पर्याप्त था। इन फागों में सभी प्रकार का अपार ज्ञान भंडार है। कवि की प्रश्नावली की रचनायें व कूट पदावली की रचनाओं का लालित्य व अनौखा पन अन्यत्र दुर्लभ है। एक प्रश्नावली की बानगी देखिये -

दोहा- 'सायर से अरजी करों, फाग इतै दो छेड़।
तनक बात निनवार दो बीज बड़ी के पेड़।।
टेक- जइयो बात तनक बतलाके कहाँ भेद सब गाकें।
छंद- मोरी बात समझ ना आवे कौऊ जेठो पेड़ बतावै,
कोडर फल खां बड्डो गावै-की की मानें।
जानत तुमें भौतर हुश्यार, ईसें प्रश्न करो उच्चार, सायर तुम दिइयों निनवर हम सुख मानें।
उड़ान- मैं ईमें जानत नहीं कहाँ भेद समझके।
दो में कौन बड़ौ को छोटे- कहौ भेद सब गावों।।

ईतरा से उनकी रचनायें वेजोड़ होत गई और फड़ बाजी में विजय श्री उनके हाथों से कभी नहीं गई। एक फूट पदावली का उदाहरण देखें दोहा - तीन सुता पैदा करी, नारी कंत विहीन।

रमन कौन के संग किया, सुनिये चतुर प्रवीन।।
टेक- जनमन कीनें तीन सुताके कौन नार कऔ गाके।

इस लोक कवि की कविता विद्वानों को महाकवि केशवदास द्वारा रचित छंदो जैसा चमत्कार देखने को मिल जाता हैं। चरण को उल्टा सीधा किसी तरफ से पढ़ा जाय उच्चारण एक सा ही निकलता हैं-यथा-

जा जा कें या सखि खिस याकें, कैना बना बना कें।
ना झामस दै दै समझाना कैना मना मना के।।
वे नर जानों नो जा रन वे, कैसा कसा कसा के।
ना जा जां वे वे जां जाना, कै बानर रन वाके।।

इस रचना में अंगद को रावण के लिये समझाने भेजने का प्रसंग हैं।

कवि की दो अंग, चौ अंग, अठंग, छेड़ गतागत सघर अधर रचनायें दर्शनीय व ललित भाषा में हैं। रामसहांय कारीगर ने अपनी समस्त रचनाओं को नई टकसार का नाम दिया हैं। उन्होंने व्यक्ति सैवैया, ख्याल, गारी, कीर्तन आदि लोक प्रचलित छंद भी रचे हैं। नई टकसार पुस्तक का उनके पुत्र डॉ. दयाराम वर्मा बेचैन द्वारा मुद्रित कराकर प्रकाशित भी करा दिया गया है जो एक सराहनीय कार्य हैं। फड़ काव्य बुन्देली शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण सहायक हो सकता हैं।

सारांश में बुन्देलखंड की फाग गायकी विधा को संजीवनी प्रदान करने की आवश्यकता हैं। इस विधा में बुन्देलखंड की समग्र संस्कृति का चित्रण कवियों द्वारा किया गया हैं। इस साहित्य को संजोने तथा उत्साहित करने से पुरानी फाग गायकी जीवंत हो सकती हैं।

पूर्व प्राचार्य
अखण्डानंद जनता इण्टर कॉलेज
गरौठा, जिला झांसी (उ.प्र.)
ग्राम स्यावरी तह. मऊरानीपुर (झांसी)
मो. 09794419115

चल्लनी चालत गओ जनम हम्मारो

– श्री अमितकाम दुबे अध्यापक

एक कहावत है "पानी पीजे छानं गुरु कीजे जान" पानी को छान कर पीना चाहिए। अनेक समुदाय अभी भी कपड़े से छानकर पानी पीते है। पानी के साथ छानना क्रिया जोड़ दी गई है यद्पि छानना वहुत सहज प्रक्रिया नहीं है। छानना क्रिया का प्रयोग अनाजौं के संदर्भ में अनेक शब्दो के रुप में होता है। अनाज छानने के लिये जिन उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता है बुन्देलखण्ड में उन्हें चलनी, चलना, छजिया और छाज शब्द प्रयुक्त होते है। आटा जैसे महीन पदार्थ को छानने के लिये चल्लनी का प्रयोग होता हैं चल्लनी का आकार वृत्ताकर उठे हुए होठो वाले पात्र. के रुप में देखा जा सकता है इसके निम्न भाग में अनेक छिद्रो वाली जाली लगी रहती हैं। यह छलनी भी है और चल्लनी भी हैं आटा छानने के काम के कारण इसे छलनी कहा जा सकता है और इसमें बार-बार आटा चलाया जाता है तब छानकर नीचे आता है इसलिए इसे चलनी भी कहा जाता है। चल्लनी के सदंर्भ में आटा चालना बोला जाता है। चलनी को लेकर अनेक कहावते बनी है जैसे चलनी से पानी छानना अर्थात् व्यर्थ में परिश्रम करना। सूप बोले तो बोले चलनी भी बोलने लगी जिसमें हजार छेद इसका अर्थ है यदि कोई सही गुणवान आदमी कमेंट करें तो उसका महत्व है, यदि हीन चरित्र आदगी भी कमेंट करने लगे तो उसका क्या अर्थ। चलनी पर एक दोहा भी लिखा गया है जो श्रोता को लक्ष्य बनाकर कहा गया है श्रोता ऐसा नहीं हो ज्यों चलनी की स्वभाव थोथा पोथा गह रहे आटा देय उड़ाय।" श्रोता चल्लनी जैसा नहीं होना चाहिए जो वक्त को सारहीन चीजों को ग्रहण करें। बुंदेलखण्ड में कुछ वर्षो से करवा चौथ का व्रत महिलायें रखने लगी है। यद्पि करवा चौथ का व्रत परम्परागत हैं यह पति की दीर्घ आयु के लिये पत्नियों द्वारा रखा जाता है। कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को यह व्रत पड़ता है। ऊगते हुए चॉद को चल्लनी के माध्यम से पति-पत्नि देखतें है लगता है जैसे चन्द्रमा से आने वाली अमृत किरणों को चलनी के माध्यम से छान-छान कर अपने चेहरे पर लिया जा रहा है।

चलनी से आकार में बड़ा चॅलना होता है चल्लना आयताकार होता हैं इसमें जो जाली लगी रहती है उसमें लोहे के पत्ते पर टांकी से कुछ सेन्टीमीटर के छेद वनाये जाते है ये छेद बनाये जाते है ये छेद ही निर्धारित होते है, कि इसमें किस अनाज को छानना है चल्लना प्राय: दालों को छानने में काम आता है इसमें विभिन्न अनाज की जिंसो को भी छाना जा सकता है। ये घरेलू उपयोग के पात्र है। जब अनाज को बड़ी मात्रा में छाना जाता है तब छाज का प्रयोग होता है। इसके भी दो रुप होते है छजिया और छाज। छजिया छाज का छोटा रुप है यह छोटे दाने वाले अनाज को छानने का उपकरण हैं। छजिया और छाज की बनावट लगभग एक जैसी होती है। ये लकड़ी के फ्रेम के बने आयताकार के होते है। इसमें चार से पॉच इंच की खड़ी दीवार रहती है। नीचे छानने की छननी रहती है। दोनों तरफ पकड़ने के लिए हेंडल लगे रहते है। इसे दो आदमी आमने - सामने पकड़कर छजाई का कार्य करते है। आजकल यांत्रिक छन्ना भी काम में आने लगे है।

बुन्देलखण्ड में छानने की एक क्रिया को कपड़छन भी कहा जाता है, जब औषधियों और मसालों को बहुत बारीक छानना पड़ता है तब इन्हें पीसकर कपड़े से छाना जाता है। इसे ही कपड़छन कहते है। छानने की यह क्रियायें वैज्ञानिक आधार पर निश्चित की गई क्रियायें हो छानने का विशेष महत्व ये है कि छानने के बाद हम शुद्व और विशिष्ट चीज प्राप्त कर लेते है।

- चण्डी जी वार्ड
हटा, जिला दमोह (म.प्र.)
मो. 8435185488

बुन्देली किस्सा गोई आद्यान्त

– डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी

''साहित्य समाज का दर्पण है''। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की यह उक्ति किसी भी परिनिष्ठित भाषा के साहित्य की अपेक्षा लोक साहित्य पर सर्वाधिक घटित होती है। चेहरा गाय चैन्ज बुन्देली लोक साहित्य में कहानी, गाथाएँ, गीत, अहाने, ट्उका या टहूका, बुझउअल पहेलियाँ, पटतरें, अटका लोकोक्तियाँ और मुहावरों की विधाएँ पायी जाती है,। इन विधाओं के उद्देश्य भी अलग - अलग होते है।

इनका संक्षिप्त परिचय निम्न अनुसार है-

लोक कथाओं का उद्देश्य मनोरंजन के साथ ही लोकशिक्षा भी होता था। अब उनका कहना- सुनना लगभग समाप्त हो रहा है। कभी - कभार यदि गाँव में किसी कोंड़े (अलाव) या अथाई (गाँव में किसी वृक्ष की छाया में बना चबूतरा, जो पंचायत या सार्वजनिक बैठक के काम में आता था।) पर उनका उपयोग होता भी है, तो उनके पहले कहे जाने वाले मुहावरे, जिन्हें साखी लगाना कहा जाता था, लगभग छूट गये हैं। जैसे कहानी का प्रारंभ बहुधा निम्नलिखित मुहावरों या साखियों से किया जाता था।

किस्सा सी झूँटी, बातन सी मीठीं घरी घरी के बिसराग, जानें, सीता-राम (कही-कहीं बोलो सीता-राम भी सुना गया है।) सक्कर कौ घोड़ा सकल परे की लगाम, छोड़ दो दरयाव में चले जाय छमा-छम, छमा-छम। ई पार घोड़ा ऊ पार घाँस, घाँस घोड़ा खों खाए, न घोड़ा घाँस खों खाय। इतने के बीच में दो लगाई घींच में, तौऊ न आए रीत में, तौं धर कडोरे कीच में, सोई झट्टई आ गए रीत में,। हँसिया सी सूदी, तकुआ सी टेड़ी। पाला (पहला रूई) सौ करौं, पथरा सौ कोंरौ हॉत भर ककरी, ना हॉत बीज होय, होय खेरें गुन होय। जरिया कौ कॉटौ, अठास हॉत लॉचौ, आदी छिरिया ने चर लव, आदे पै बसे तीन कुमार। एक ड़ूँटा, एक लूला, एक के हॉताई नईयॉ। जी के हॉतई नइँया ऊ ने बनाई तीन हँड़िया। एक ओंगू, एक बोंगू एक के ओंठई नईयाँ ऊ में चुरैए तीन चॉउर। एक अच्चौ, एक कच्चौ एक गें ऑचई नइ आई। जी में न्यौते तीन बागन, एक अफरौ, एक डफरौ, एक खों भुँकई नईयाँ। पोंनी कौ डंका, बतेसा कौ नगाड़ौ, जब बजे जब किडी धुग किड़ी धुग। जो इन बातन खो झूँटी समझै तों राज खों डॉड और जात खों रोटी। कहता तो कहता, सुनता खों सावधान पड़ए। न कहबें बारे खों दोस, न सुनवे बारे खों दोस, दोस तौ ऊ कौ जी ने किस्सा रच कनै खड़ी करी।

ये मुहावरे (सखियाँ) सुनने में भले ही अटपटे लगते है, परंतु इनकी भी उपयोगिता थी। लोक कथाओं में पशु-पक्षी बोलते है। पेड़-पौधे बोलते है। मनुष्य किसी पशु-पक्षी या पेड़ पौधों के रूप में बदल जाते है, कुछ सिद्धहस्त किस्सागो तो पात्रों के अनुकूल भाव तथा परिस्थितियों का ऐसा सजीव और हृदयगाही चित्र उपस्थित करते थे, कि उनके बिम्ब मन में उतर आते थे, बीचों-बीच में गीतों के बोल भी गाये जाते थे, इससे कहानी और भी मनोरंजक और प्रभावपूर्ण हो जाती थी, ऐसी स्थिति में कोई बालक, किशोर या अपरिपक्व बुद्धि का व्यक्ति गुलाबकावली, स्वर्णकमल, या गड़े हुए खजाने की खोज में निकल पड़े या कहानी की कल्पना सुन्दरियों के मोहपाश में फॅसकर दीवाने की तरह घर-घर की परवाह छोड़कर न घूमने लगे। इसलिए कहानी कहने के पहले ही इन मुहावरों को ही दिया जाता था, जिनमें स्पष्ट संकेत रहता था, कि कहानी झूठ-सच के घालमेल की ही रचना है, किन्तु पहले से ही झूठ मान कर चलोगे तो कहानी का रस ही जाता रहेगा। इसलिए यह भी कह दिया जाता था, कि जो इन बातन खों झूँटी समझै, तौ राज खों डॉड़ और जात खों रोटी, (देनें परै)। कहानी प्रारंभ करने से पूर्व कितनी साखियाँ मुहावरे लगायी जाती थी, यह कहानी कहने वाले की स्मरण शक्ति या उसके कहानी कहने के कौशल पर निर्भर करता था। इन साखियों का सुनना भी मनोरंजक होता था, क्योंकि इनमें जबरदस्त विसंगतियाँ ओर उलटवाँसियाँ होती थी, इनका एक उद्देश्य कहानी कहने का माहौल बनाना और श्रोताओं की उत्सुकता को तीव्र करना भी हो सकता था।

इनको कहने के बाद कहानी का प्रारंभ ''ऐसे-ऐसे एक राजा हतो'' आदि शब्दों से किया जाता था। ये शब्द भी महत्वपूर्ण हैं, इनमें इस बात को स्पष्ट संकेत है, कि इसी तरह यह कहानी भी होने अनहोने तन्तुओं से बुनी हुई है। मानवीय मूल्यों और नैतिकता की शिक्षा का अंतः सूत्र कहानी के संपूर्ण घटनाक्रम

को अपने आप में पिरोये रहता था।

कहानी समाप्त होने पर कहने के भी कुछ मुहावरे थे। जैसे ''बाड़ई ने बनाई टिकटी, हमाई, किसा हती सो निपटी'' या '' अब हमाई किसा लेत बिसराम सब सुनबे बारन खों सीता राम'' आदि।

इन कहानियों को दिन में कहना निषिद्ध माना जाता था। ऐसी मान्यता थी कि दिन में किसा (कहानी) कहने से मामा रास्ता भूल जाता था। इस मान्यता का स्पष्ट संकेत है, कि फुरसत के समय की मनोरंजन करना चाहिए। काम-काज का समय मनोरंजन में गँवाने के परिणाम हानिकारक हो सकते है।

बुन्देली लोक साहित्य में विषयवस्तु की दृष्टि से मुख्यत: चार प्रकार की कहानियाँ पायी जाती है-

लोकरंजन के लिए। इनमें प्राय: लोक शिक्षा की अन्त: सलिला प्रवाहित होती है, जो मानवीय सगों को नीति के जल से पखार कर परिमार्जित करती हुई चलती हैं। साहित्यिक सौन्दर्य की दृष्टि से यही कहानियाँ श्रेष्ठ होती है, परंतु यह बात भी स्मरणीय हैं, कि वाचिक परम्परा के कारण इनका कोई सुस्थिर स्वरूप नही रह सकता है। कहानी कहने वाले की बौद्धिक, क्षमता, भाषा- ज्ञान, कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता, भावुकता आदि गुणों के कारण कहानी का साहित्यिक सौन्दर्य और श्रोताओं का आनंद घटता-बढ़ता है।

कहानी कहने के पूर्व साखियों का और समापन वाक्यों का प्रयोग नही होता है।

पुरानी नजाई बार्ड
टीकमगढ़, म.प्र.
फोन - 07683-240750
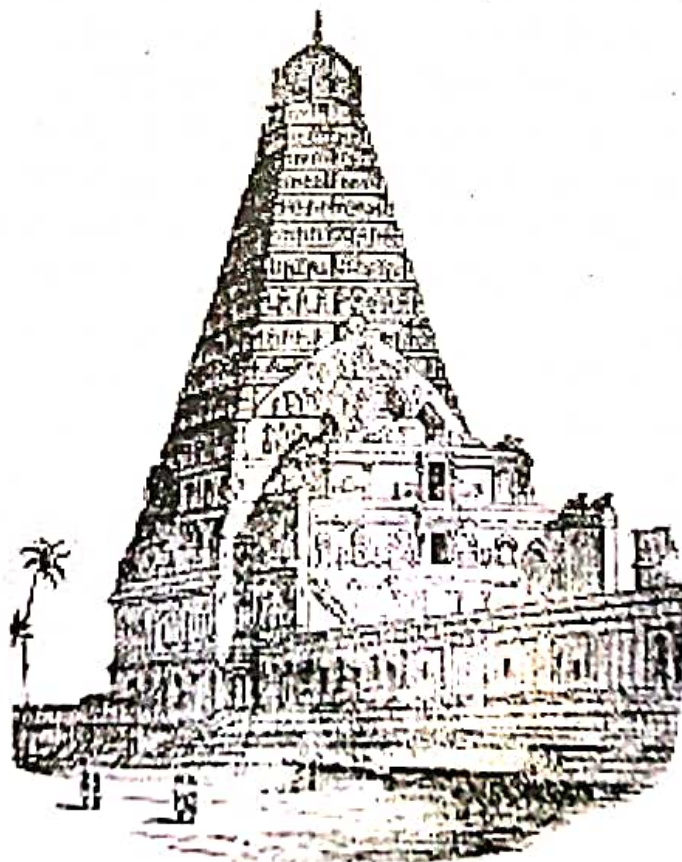
रेशम बागो पैरो राजा बन्ने

– श्रीमति प्रीति दुबे प्राचार्य

बन्ना लोकगीत विवाह के समय ही गाया जाता है। मैं अक्सर एक बन्ना लोकगीत सुनती हूँ तो उस लोकगीत में आये एक विशेष शब्द पर अटक जाती हूँ उस लोकगीत की एक पंक्ति है 'रेशम बागो पैरों राजा बन्ने' बागो शब्द अब पुराना पड़ता जा रहा है। इसको जानने समझने वाले कवित भी अब कम ही बचे है। विवाह में जब दूल्हा को श्रृंगारित किया जाता है। तब इसका वस्तपरिधान ही बागा कहलाता है यह वस्त्र साठ- सत्तर वर्ष पूर्व तक प्रचलन में रहा था। दूल्हा को विवाह के तीन दिन राजा मानने की प्रथा है तो उसका श्रृंगार भी राजा जैसा ही होना चाहिए। बागा वस्त्र परिधान राजपूत, और मुगल राजाओं के द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रो जैसा ही था यह पीले रंग के कपड़े से बनाया जाता था गले से लेकर पॉव के पंजो तक यह एक ही वस्त्र होता था इसकी बाहें भी हथेलियों तक आती थी। ये दो वस्त्रों को मिलाकर एक वस्त्र बनाया गया था। इसका एक हिस्सा कटि के ऊपरवर्ती अंगों को ढ़ंकता था तो दूसरा हिस्सा पंजो तक आता था। ऊपरवर्ती हिस्से में वक्ष के ऊपर तीन चार तनी लगाई जाती थी इसका गला वृत्ताकर फैला- फैला रहता था। कमर के नीचे का हिस्सा लम्बे घॉघरे जैसा हुआ करता था ये दोनों हिस्से एक दूसरे से जुड़े रहते थे। इसके कमर पट्टे पर फूलना लटकते रहते थे। यह एक तरह का आवरण वस्त्र था दूल्ह धोती कुर्ते के ऊपर इसे धारण करता था। बागा कुशल दर्जी सिलता था और यह राजपूताना पोषाक सेमिलता जुलता था। बागा पर जब कमर मे फेंट बॉधी जाती थी तब और अधिक शोभायमान हो उठता था बागा के ऊपर लाल कपड़े की पट्टी का कंधे से लेकर कमर के निचले हिस्से तक एक यज्ञोपवीत जैसी पट्टिका पहनी जाती थी इसे शैलामंडील कहा जाता था यह बागा का ही एक हिस्सा था। बागा कलात्मक ढंग से बनाया जाता था। इसके निचले हिस्से में चुनटे बनाई जाती थी तथा बिल्कुल निम्न भाग में सुंदर बार्डर सजायी जाती थी। बॉहो के कलाई वाले हिस्से में भी बार्डर की कलात्मकता दर्शनीय होती थी। बॉगे की एक जेब में सरौता डाल दिया जाता था और पेंट में एक छोटा बिदुआ रख दिया जाता था। यह राजसी परिधान था आर्थिक स्थिति के अनुसार ही इसके नाम का निर्धारण होता था सूती, रेशमी, मलमल आदि अनेक प्रकार के वस्त्रों से बागा निर्मित होता था। लोकगीत में जिस बागे की चर्चा की गई है वह रेशम का बागा है लोकगीतों में अक्सर ऐश्वर्य से संबधित वस्तुएँ मिलती है दूल्ह की कोई भी हैसियत हो लोकगीतों में वह रेशम का बागा ही पहनेगा। इसिलिए कहा गया था कि 'रेशम बागो पैरो राजा बनरे' बागा पहने के बाद बारात में दूल्ह अलग ही दिखता था। सिरपर खजूर की पतली पत्तियों से बने मौर दो धारण किये हुए दूल्ह किसी राजकुमार से कम नहीं दिखता था। समय का फेर हुआ और दूल्ह की पोषाक भी बदलती गई। अब तो दूल्ह चाहे गाँव का हो चाहे शहर का हो पेंट कोट ओर टाई पहनता है। अंग्रेज हमारे देश में क्या आये उन्होंने दूल्ह की पोषाक को बदल दिया। मौर की जगह पर अब एक छोटी सी कलगी आ गई है। इधर कुछ दिनों से चूड़ीदार पजामा और शेरवानी जैसे वस्त्र का प्रचलन भी दूल्ह के वस्त्र के रुप में प्रारंभ हो गया है। हो सकता है कि आगामी कुछ वर्षों में बागा से फिर दूल्ह सजने लगे यदि ऐसा होता है तो हमारी बुन्देलखण्डी वस्त्र की पहचान बची रहेगी और वे लोकगीत भी बुंदेली छटा बिखेरेते रहेगे जिनमें बागे की चर्चा है। बन्ने की बागा का लहरियाँ खायें लहरियों पें मौरो मन उड़-उड़ जाये। या फिर बागो में सजो मौरो बन्ना नजरया ने जायें मौरोलाल। ऐसे गीत हमारी बुंदेली की आत्मा पें रये हुए है अगर वस्तुएँ समय के दबाव में विलोपित होती है तो उनसे संबंधित लोकगीत भी विलोपित होने लगते है।

चण्डी जी वार्ड
हटा, जिला दमोह (म.प्र.)

परछी

परछी घर के साम्नूं को हिस्सा कहाउत हैं। ई में जाँदातर बैठबो-उठबो होत है। कोऊ बाहर सें आ जावे तो ऊके संगे बातचीत भी परछी में होत है। ये एक खुलो रंगमंच जैसो है ईसें ईमें हम दे रये हैं- अबकी बेर नाटक। इन नाटकों में गांव-घर की समस्यायें तो हैं ही, बोली-बानी के लहजे की सोई ई में तहजीब है। जे नाटक बुंदेली में लिखे गये है।

बुन्देली एकांकी -

उजयारो भओ गाँव में

– डॉ. श्यामसुन्दर दुबे

(दृश्य - एक)

(गाँव का घर। दरवाजे पर बऊ झाड़ू लगा रही हैं। दो आदमी जिनमें एक नेता और एकउनका साथी है। वहाँ पहुँचते हैं, नेता बऊ के हाथ से झाड़ू झपटता - सा है। स्वयं झाड़ू लगाने लगता है।)

बऊ - जो काय कर रये। नें जान नें पैचान। हमाई झाड़ू छीन लई। जो तो बताओ ऐसी कौनसी सी बात भइ के हमाई झाड़ू झपट कें तुम लगाउन लगे। तुम आव कौ!

नेता - बऊ! हम बलराम यॉ! करिया गाँव के।

बऊ - हुईयो करिया गांव के हमखों का परी चाय तुम करिया के होइ चाय तुम गुरिया के! हमाई झाड़ू हमैं देव- देर हो रही है।

नेता - बऊ:: हम खडे हो रये हैं।

बऊ - काये भईया काऊ ने सजा दई के तुम खड़े हो रये! कायखों खड़े हो रये - का ठड़ेसिरी मराज बनने! हम कै रये बैठ जाओं! हमाई झाड़ू हमैं देव- हमै पानी भरवे जाने!

आदमी - बऊ! जे बलराम ऑय! चुनाव में खड़े हो रये हैं! सो आय कै रये। तुमाव वोट मांगबे या आये हैं।

बऊ - सो तो हमने सुनलई अच्छी बात है- पे हमैं नई सुहानो के हमाये हाँत की झाड़ू ले के जे खुदई लगाऊ न लगे।

आदमी - जे तो तुमाये नौकर आँय बऊ!

बऊ - तो रोज झाड़ू लगावे ऑहै। हमईं - मिले बुलयाबे! अरे कछू सरम- लाज नईयाँ का। बूड़ी डुकरिया सें हँसी करवे गिली!

नेता - तुमाये पॉव परत बऊ। नाराज नें होव हम चुनाव में खड़े या हो रये सो तुमाव वोट या चाने। हमाओ चुनाव चिन्न टोपी है। वोई को बटन दवाऊने और रई बात रोज झाड़ू लगाबे की सो कंजत बऊ तुमने हमें जिता दओ तो साँचऊ तुमाये दौरे रोज झाड़ू लगाबे वारी आहे!

बऊ - सो तो ठीक है, पे पाँच बरसें पेलें सोई तुमई घांई एक आदमी आव हतौ! ऐसई टोपी लँगाय तो। हात जोरत फिरत तो। कात हतो के हमईं खों वोट दईयों। तुमाये गाँव खों सुरग बना दें हैं।

आदमी - कहॉ की बातें ले बैठीं बऊ! जो भओ सो भओ अब अगाऊॅ की सोचो। जे भईया जो कै देत हैं सो करत हैं - जा बात गाँठ में बाँद लेव! इनईं खों जिताऊनें!

बऊ - तैं ने अच्छी कई। तें क्वा ? कहाँ से आव हैं। तें सोई खड़ो है का!

आदमी - बऊ! हम नईं खड़े। हम महेवा वारे ऑय। तुमाय गाँव के रिस्तेदार! तुम हमें नईं जानतीं, हम इनखों लेंकें आये हैं। अब जे तुमाई सरन में हैं।

बऊ - सरन में तो देवी जी की जाओ! हमाई का सरन में है।

नेता - हमाये लाने तो तुमईं देवी आव! (बऊ के पाँवों में लोट जाता है)

बऊ - अरे! जो काय करन लगे। खुशी -रहो! उठो! तुमै। हम वोट देंहे पे एक बात सुन लो!

नेता - बताओ, कौन - सी बात!

बऊ - हमाई झाड़ू छोड़ो! नें हमें झाड़ू लगवाऊने नें सेवा करवबऊने। बस तुम ई गांव खों सुरग बना दईयो। ऊ जो पाँच बरस पेलें आव तो ऊने कई हती, पे ऊ ढूंको नईयाँ। हम नरक में हते और अबै हैं। नें हाली - बीमारी खों डागदर, नें दवा - दरमल। नें पानी को इंतजाम दो कोस सें पानी लाऊने परत है। चैंथरी छुल गई। नें सड़क नें स्कूल! अब बताओ तुम का करेहो!

नेता - जो सब अब हो जैहे! तुम हमैं वोट भर दे कें तो देखो।

आदमी - बऊ अबै पूरो गाँव या मझयाऊने! कौनऊ के बरतन माँजने, कौनऊँ की चाय बनाऊने

और कहो कौनऊँ को पानी भरने परे। सो अब हमैं चलन दो! कौनऊ के उन्ना लत्ता स ो इ' पींछने परें! जल्दी करो भईया

बऊ - हम का कै रये - तुमैं काय खों रोक हैं -जाओ! (नेता जी झाड़ू लिए ही आगे बढ़ने लगे।

नेता - तो बऊ टोपी चित्र ध्यान में रखने!

बऊ - सो ध्यान में है पे हमाई झाड़ू क्याँय लयें जात। हमाय पास एकई झाड़ू आ है। नाँय ह म पकराऔ! वताओ कैसो जमानो आ गऔ हमई री चीज पे मन आ गऔ।

नेता - अरे! बऊ हमैं तुमाई झाड़ू नौनी लग रई।

बऊ - अबई सें आँखन देखत चोरी करन लगे। आँगे का करहो। का डाँको डार हो।

(दृश्य - दूसरा)

(नेता जी फूलों के हारों से लदे -फुदे हैं। दो- चार आदमी साथ में हैं।)

एक पुलिस मेन उनकी सुरक्षा में है। वेगांव में आये हैं। अपने मतदाताओं का आभार मानने। वे चुनाव जीत चुके हैं गाँव के लोग घरों से नहीं निकले हैं। नेता बऊ के दरवाजे पर पहुँचते हैं। बऊ दरवाजा लीप रही हैं।)

साथ के लोग- नेता जी जिंदाबाद! नेता जी जिन्दाबाद। हमाओ नाहर जीत गओ।

कुछ लोग और - हओ, हमाओ नाहर जीत गओ। जिन्दावाद गई जिन्दाबाद।

(नेता जी बऊ के पास पहुँचते हैं)

नेता - बऊ! तुमाये आशीष सें हम चुनाव जीत गये।

बऊ - तुम आव कौ!

नेता - इत्ती जल्दी बिसर गये हम!

(वऊ गौर से नेता की तरफ देखती हैं)

वऊ - अरे तुम तो वेई आ जो हमाई झाड़ू चुरा ले गये ते। काय ऊ समै तो झाड़ू लगाउन लगे ते। गये का। आओ लिपवाव अव!

सिपाही - वऊ! जे अव नेता जी आँय! साँचऊ के नेता जी इनसें ऐंसो नई बोलने आऊत!

वऊ - काये नई बोलने आऊत। हमाई झाड़ू ले गओ तो जो!

नेता - तुमाई झाड़ू अबई आ जैहे! तुम जा बताव के अब का करवाऊने ई गांव में!

बऊ - तुमे नई दिखात का! नें मोंड़न - मोड़ियों खों पढ़बे के लाने स्कूल आय, नें डागदर आय, नें पानी आय और कछू बताबें!

नेता - हओ! बताऊत चलो।

बऊ - तो सुनो! सड़क चानें, बिजली चाने, सिचाई चान।

नेता - (पी.ए.से.) नोट करो - माँगे पूरी एई साल में भयो चइये।

पी.ए. - सर! नोट कर लओ।

बऊ - का कर लओ। नोट कर लओ। हम नोट नें देहें। काम होवे चाय नें होबे - भाड़ में तो जाए।

आदमी - बऊ जो काय बर्रान लगीं।

बऊ - जो बर्रावो लग रओ - बताओ अच्छा तुमई बताव - कछू काम बिना नोट - पानी के होत हैं। हमई खों मिली ती पिंसन सो नोट लगे ते के नईं। फिर जब इत्ते काम हुईयें तो नोट नें लग हैं।

आदमी - अब नें लग हैं - सब काम फ्री में हुईयें।

बऊ - फ्री में हुइयें - सो तो का कैने। पे हमाई झाड़ू ते देव (बऊ नेता की ओर ताकती है इसी बीच एक आदमी नई झाड़ू लेकर आता है। बऊ को देने लगता हैं)

बऊ - जा नोईं हमाई झाड़ू! जा तो अवई या खरीदी है।

नेता - हमाई तरफ सें जा नई झाड़ू तुमैं दई जात।

बऊ - हमैं नई चाने! काय लेवें नई झाड़ू! हमें पाप में डुबाऊ चाहत हैं। जाओं हमाई तरफ से ईखों चौराय पे सजाद दो सब जनें देखें के नेता जी कितनी अच्छी झाड़ू लाये हैं।

नेता - नई बऊ जा तुमाये लाने लाये हैं।

बऊ - नई बेटा हमें तो अपनी पुरानी ई झाड़ू चाने! (गाँव के एक आदमी ने झाड़ू ली और चौराहे पर एक गमले में खड़ी कर दी। गाँव के लोग जुड़े आये नेता के साथ सब मिलकर कोरस गाने लगे)

जै झाड़ू देवा: जै झाड़ू देवा।
जे कोऊ तुमखों पकड़े - उसे मिले मेवा।
चमके रस्ता चमके दुआरो
पेलें घर फिर गांव को बुहारो।

मन सोइ साफ करो मोरे वोट के लेवा।
भरियो नें अपनो घर सुन्ने और चाँदी सें
गली-गली फै ले बात अपनी मुनादी से।
सब जनें करो मिल खें अपनी-अपनी सेवा।।

(दृश्य तीन)

(गाँव में चबूतरे पर सरपंच जी पंडित जी और कक्का जू बैठे हैं। इनमें बातचीत चल रही हैं)

कक्का जू - काये सरपंच जी, कछू डब्बल -पईसा मिलो- सड़क के लावें!

सरपंच - एक धेला नंइं मिलो- उलटे हमाई गांठ के खरच हो गये।

कक्का जू- ऐसो काय भओं। सबई जग्गा की सड़कें बन गई। हमाओ गांव काय रे गओ।

पंड़ित - बनो बनाओ खेल बिगर गओ कक्का जू!

कक्का जू- काय कै रये महाराज जी! कैसो खेल बिगर गओ।

पंडित - अब तुमई देख लो! जा झाड़ू हमाये हात लगी। वे दे गये ते-जब उनकी विजै भईती चुनाव में!

सरपंच - पंडित जी सही कै रये हो। हमाई सुध लेबो वारो कोऊ नईयाँ जा सरपंची और गरे पर गई। जो मिलत हैं सो कात हैं, के का कर रये सरपंच बन कें। एई खों हमने सरपंच बनाओ तो।

कक्का जू- सच्ची कै रये: एई गाँव में रैबो पर गओ, सो की खों मौ लुकाऊत फिर हो।
(बऊ आ जाती हैं)

बऊ - काय चल रओ सब पंचन को ?

कक्का जू- का चलने - बस ढलाचला चल रओ हैं ? हो गये पाँच बरस! क भओ गाँव में!

बऊ - का भओ! नें स्कूल खुलो, नें बिजली आई, नें सड़क बनीं। ऊ आओ हतो सो कै रओ तो के सुरग बना देहें - गाँव खों। बन गओ सुरग!

सरपंच - तो बऊ! तुमई बताओ! का करने हमाओ तो दिमांग काम नईं कर रओ!

कक्का जू- बऊ का बातेंहं हम बता रये। चलो पूरो गांव ले कें चले कलेक्टर के पास! उनें तो सुनावें अपने गांव को दुखड़ा।

सरपंच - कई तो तुमने भौतई नौनी बात! पे हम जानत हैं। कलेक्टर सोई कछू ने करपा हैं।

पंडत - सही कई, आजकल नेतन की चलत है। हमाये संगे कौनऊ नेता नईयाँ सो भुगत रये।

बऊ - ठीक कै रये। ऊ आओ तो। मोरी झाड़ू ले गओ। फिर नईं लौटो।

कक्का जू- का झाड़ू-माड़ू लगाये रेत जा बऊ! अरे! समजो कछू तुमई बताओ- तुमाई झाड़ू मिल जैहे तो का गाँव के काम हो जैहें। और तुमने सोई खरीद लईं हुईयें और झाड़ू सो अब झाड़ू खो छोड़ो। चोर- भड़यन सें कौन जीत पाओ।

बऊ - जा कई! कक्का जू ने साँची बात! कोऊ नईं जीत पाओ। पे हम जीत हैं।

सरपंच - सो कैसें बऊ!

बऊ - देखो हमें कहूँ नईं जानें। पूरौ गांव मिलकें काम कर हैं, पेला सड़क बने हैं - फिर बाद में सब देखो जैहे!

कक्का जू- बऊ नें बिलकुल ठीक कई। जाके घर में कूप है, सो कत मरे प्रियास! अरे हमाई ताकत भौत बड़ी हैं। पूरो गाँव मिलकें लग जैहे तो सड़क का हम तो पुल-पुलिया लो बना ले हैं।

सरपंच - तो देर-दार ठीक नईं। गांव में पिटवाओ मुनादी। सब इकट्ठे होय सलाह करें, कौन खों- कौन काम करने सो जुम्मेदारी लेबें।

पंडत - हओ! हो जान दो जोई सओ। सब फ्री में काम करहें। दिखा देहें सबखों के गांव को ऐका का कहाऊत हैं।

(कोरस, सड़क बनने की प्रक्रिया पर)
सड़क बनाओ - सड़क बनाओ।
आओ भैया आओ बहिनों तुम भी आओ तुम भी आओ!
सड़क बनाओ - सड़क बनाओ।
तसला पकड़ो, कुदाल उठाओ।
लाओ गेंती आग जलाओ।
कूड़ा-कर्कट अलग करो सब सीधी लाईन खींच दिखाओ।
सड़क बनाओ - सड़क बनाओ।
पत्थर डालो, मिट्टी डालो,
आओ हिरिया आओ कालो।

पानी सींचो, दुर्मुट ठोको बजरी यहाँ से यहाँ बिछाओ।
सड़क बनाओ – सड़क बनाओ।
सड़क बनेगी तो सुविधा होगी,
बजा चमीटा आया जोगी
अपने हातों भाग रचें हम, अपने हातों दिया जलाओ।
सड़क बनाओ – सड़क बनाओ।

(दृश्य चार)

(सड़क बन गई है। सड़क का उद्घाटन होना है। गाँव के लोग इकत्रित हैं। सरपंच और पंडित बात कर रये हैं)

सरपंच – काये पंडत जी! कैसो नोनो लग रओ! हमने सड़क बना लई, चमक रईं।

पंडत – और का! गाँव भरने खूब काम करो भईया! तन, मन, धन, सें सहयोग भओ। तबई तो बन पाई।

सरपंच – पूजन करौ! और जा बताव के कौन के हाँत से फीता कटाई जावे।

पंडत – जा का पूंछने! तुम गांव के सरपंच तुमई काट लो – फीता!

सरपंच – नईं पंडत जी! हमें नईं परने ई में – हम तो के रये हैं कि बऊ फीता काट हैं।

पंडत – जा कई! बऊ नेतो हमें अकल कई तो – सही गई, बुलाओ बऊ खों।

(बऊ को पंडत जी बैठाते हैं। पूजन करते हैं। फिर बऊ फीता काटती हैं)

सबलोग – गाँव की एकता जिन्दाबाद! गॉव की एकता जिन्दाबाद।

सरपंच – कहौ बऊ का कैने!

बऊ – बस जा बात कैनें के जो काम तो हमने करलओ। अब आगे के काम भी हरें हरें हुईयें पे जे हमाये नेता, हमाये तरफ काय नईं देखत। अबकी चुनाव में भिवाचा हराई जायेगी – और न मानें तो फिर ....! ऑगू हम निन्नें कर हैं! कक्का जू – जा भई बात! हमाये पास ताकत है – एकता की ताक। ई ताकत के सामूँ अच्छू अच्छू झुक जात! टब बिजली सोईं आहे – झकाझक हो जे जो गाँव। पे एकता की ताक बनायें रखने सब जनन खों।
(तालियों की गड़ गड़ाहट)

कक्का जू- जा मई बात! हमाये पास ताकत हैं – एकता की ताकत! इस ताकत के सामने अच्छे-अच्छे झुक जात हैं।

सब मिलकर – हमारी एकता जिन्दाबाद: हमारी एकता जिन्दाबाद।

– चण्डी जी वार्ड,
हटा, जिला दमोह (म.प्र.)
पिन – 470775

'महोबा' इतिहास के झरोखे से

– डॉ. वीरेन्द्र 'निर्झर'

रेल के चलने का स्वर धीरे-धीरे मन्द हो जाता है और वार्तालाप का स्वर उभरता है।

अमित :- सर, अभी आपने कहा कि चन्देल-गौरव के कीर्ति-स्तम्भ महोबा को चन्द्रवंश के प्रथम प्रतापशाली नरेश नन्नुक ने अपनी राजधानी बनाया था और स्वतन्त्र शासन की उद्घोषणा में एक वृहत् महोत्सव किया था। उसी महोत्सव के कारण इस नगर का नाम महोत्सव-नगर और बाद में महोबा हुआ। लेकिन 832 ई.के लगभग तो चन्देल प्रतिहारों के आश्रित थे।

प्रोफेसर :- सत्य है अमित, पर नागभट्ट द्वितीय के शासनकाल में यदि वे पराधीन रहे तो रामभद्र जैसे शासक के समय में स्वतन्त्र भी हो गये। ऐसा नन्नक से पाँचवी पीढ़ी तक रहा। चन्देल-शक्ति के संगठन का जो स्वरूप राहिल एवं हर्षदेव ने प्रशस्त किया था, उसकी उचित प्रतिष्ठा यशोवर्मन से हुई। कीर्तिवर्मन, मदन वर्मन एवं परमर्दि देव के समय पर तो वह अपने चरम उत्कर्ष पर थी।

क्षिप्रा :- लेकिन सर, अपनी थोथी महत्वाकांक्षा के लिए निरर्थक शौर्य -प्रदर्शन और गृहयुद्ध ही हमारे देश की प्रमुख विडम्बना रहे हैं।

प्रोफेसर :- ठीक कहती हो, चन्देलों की महत्वाकांक्षा भी सीमा-विस्तार और शौर्य-प्रदर्शन में रसलेती रही है, किन्तु भारत की मर्यादा और राष्ट्रीयता की कसक भी उनके हृदय में एक युगधर्मी प्रहरी की तरह सदैव सजग रही है। सुबुक्तगीन के आक्रमण करने पर जयपाल की ओर से महाराज धंग का युद्ध में सम्मिलित होना -इसी बात का प्रमाण है। गंडब्रह्म ने भी यवन सेना के विरुद्ध अनंगपाल को सहयोग दिया था। ऐसा ही क्रन्तिकारी इतिहास महाराज विद्याधर का है।

अमित :- महाराज परमर्दिदेव भी इस दिशा में पीछे नहीं रहे। आल्हा उनका माण्डलिक था और सुहृद भी। अन्तिम राज्य-संघ में मुहम्मद गौरी के विरुद्ध उसने ही महोबा का प्रतिनिधित्व किया था। आल्हा ने तो उत्तर-भारत की तीनों महान शक्तियां- जयचन्द, पृथ्वीराज और परमर्दिदेव- को एक करने की पहल की थी।

(रेल प्लेटफॉर्म पर पहुँचती है। एक साथ कुली, चाय, आदि और सवारियों का स्वर तीव्र होकर मन्द हो जाता है और तांगेवालों का-आइये साब, कहाँ चलेंगे का स्वर गूंज उठता है। ... पश्चात् तांगा चलने की आवाज उभरती है।)

तांगावान :- यहाँ का तो कूचा-कूचा चन्देलों की यादगार है साहब। ... वो... जो लाल मोरम की पहाड़ी के ऊपर सुफेद मिट्टी से पुता चबूतरा है-- ताला सैयद की मज़ार कहलाता है। कहते हैं आल्हा ऊदल को लड़ाई का हुनर इन्होंने ही सिखाया था। महोबा से इन्हें बड़ा प्यार था। इनकी आखिरी ख्वाहिश महोबा में ही दफनाये जाने की थी।... साब, इसी पहाड़ी के दक्षिण में कीरतसागर है। यह उसी तालाब का बाँध है। इसी बाँध पर हर साल कजली का मेला लगता है।

अमित :- कीरतसागर तो सर, महोबा के इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ... इसे देखने के लिए हमें यहीं से चढ़ चलना चाहिये।

(अन्तराल संगीत के स्वर।)

प्रोफेसर :- विद्याधर के बाद चन्देल-शक्ति निस्तेज हो चली थी। महाराज कीर्तिवर्मन ने उसकी पुनः प्राण-प्रतिष्ठा कर आगे का मार्ग प्रशस्त किया। वे अपने वंश के सब से प्रसिद्ध और प्रतापशाली नरेश थे। उनके समय में स्थापत्य भी उन्नति पर था। यह तड़ाग उन्हीं का बंधवाया हुआ है। इसके सुघड़ प्रस्तर घाट तथा समतल बांध कितने आकर्षक हैं ...।

क्षिप्रा :- कला, साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से भी वह

काल स्तुत्य है। चन्देलों के सिक्के कीर्ति वमन के राज्यकाल से ही मिलते हैं। नाट्य साहित्य की अमर कृति 'प्रबोध चन्द्रोदय' उसी काल में लिखी गई। सिंहनाद-अवलोकितेश्वर, पद्मपाणि एवं तारा की विश्व-विख्यात प्रतिमायें भी उसी युग की देन हैं।

अमित :- वे प्रतिमायें तो पुरातत्व की अनूठी सम्पत्ति हैं। भारत, सोवियत रूस एवं अन्य यूरोपीय देश उन पर डाक-टिकट भी जारी कर चुके हैं।

क्षिप्रा :- सर, बांध के तल से लगभग बारह फीट ऊँचे चबूतरे पर स्थित यह बारहदरी कितनी सुन्दर है। स्तम्भों आदि से चन्देल-कालीन प्रतीत होती है। पर इसके ये बाहरी कंगूरे और ईंट तथा चूने से भरा भाग बाद का बना हुआ है।

सुन्दरलाल :- सर, इसे आल्हा की बैठक कहते हैं। यहाँ और भी बहुत सी बारहदरी हैं, पर यह विशेष है। बाहर से इसकी आकृति चौकोर है। प्रत्येक ओर तीन-तीन दरवाजे हैं। किन्तु अन्दर से देखने पर इसका गर्भ-स्थल अष्ठभुजीय मण्डप के आकार का है।

अमित :- सचमुच ... अनूठी है ... परन्तु सर, आपका परिचय ...।

सुन्दरलाल :- जी ... मुझे सुन्दरलाल कहते हैं। इसी वीर -भूमि का निवासी हूँ।

क्षिप्रा :- आपने यहाँ के सभी स्थानों को देखा और परखा भी होगा।

सुन्दरलाल:- जी हाँ, वैसे मैं इतिहास का विद्यार्थी भी रहा हूँ।

प्रोफेसर :- ओ ... तब तो यहाँ के पुरातत्व और दर्शनीय-स्थलों को घूमने में आप से काफी सहायता मिलेगी। ... क्या आप सहयोग करेंगे?

सुन्दरलाल :- अवश्य ही, ... कीरतसागर तो आपने देख ही लिया। यह वही सरोवर है जिसमें चन्देलों की प्रसिद्ध पारस मणि पड़ी हुई है। इसी सरोवर के तट पर दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान से चन्देलों का सन् 1182 का युद्ध हुआ था। लगता है जैसे आज भी वह सभी कुछ साकार है ... सुनिये सर ... सुनिये ... वह गीत...।

फ्लश बैक -

दूर से आती हुई ध्वनि
"ऊँचे अटा चढ़ हेरे चन्द्रावल,
आये न ऊदल वीर,
माई मोरी आसो की कजरियाँ आँसू भरीं।"

मल्हना :- बेटी हम रक्षाबन्धन का तयोहार कैसे मनायेंगीं। पृथ्वीराज के सैनिक हमें लूट लेने की ताक में हैं। आज अगर ऊदल होते ...।

चन्द्रावलि :- माँ, हम जानती हैं, पर क्या करें। आल्हा - ऊदल नही आयेंगे, ...उनकी बहिन तो है। राजपूतानी जो करती आई हैं- करेंगी।

मल्हना :- किन्तु ...।

चन्द्रावलि :- किन्तु कुछ नहीं माँ। कोई हमें रोक नहीं सकता। जो सामने आयेगा हमारी कृपाण की बलि होगा। तुम धीरज खो रही हो माँ। यह तुम्हें शोभा नहीं देता। हम अपनी धरती के लिए प्राणों से प्रेम नहीं करतीं।

(युद्ध का स्वर सुन पड़ता है।)

चन्द्रावलि :- (आवेश में) बहनों, अपनी अपनी तलवारें लेकर डोली से बाहर निकल आओ। शत्रु हमारी मर्यादा को लूटने के लिए कीरतसागर के तट तक आ पहुँचा है...।

ऊदल :- (दूर के स्थान से निकट की ओर आता हुआ स्वर) ठहरो बहिन, ... ठहरो, मैं आया तुम्हें शस्त्र उठाने की आवश्यकता नहीं होगी। ऊदल के रहते इस धरती के सम्मान का कोई उच्छेदन नहीं कर सकता। पृथ्वीराज ... सावधान ...। कीरत सागर की उर्मिल धारों में तैर रहे कजली के दोने, कोरे दोने नहीं, चन्देलों की कीर्ति पताकायें हैं, जो शत-शत करों से चन्देल वैभव का गान कर रही हैं। इस धरा की आन हैं और पर्व की मर्यादा।

पृथ्वीरात :- कितने अपमानित और लॉछित हो कर तुम महोबा से निर्वासित हुए थे वीर। वह सब कुछ भूल गये?

ऊदल :- जब जन्मभूमि पर विपत्ति के बादल आच्छादित हों और धर्म की मर्यादा उठ रही हो, उस समय सच्चे क्षत्रिय को व्यक्तिगत मान-अपमान को भूल जाना चाहिये, महाराज (ललकारते हुए) ... चौड़ा ... ।

युद्ध का स्वर विक्रान्त होता है तथा पार्श्व से आल्हाकी पंक्तियाँ सुन पड़ती है

बड़ा प्रतापी रणमडंल माँ ठाकुर उदयसिंह सरदार।
को गति वरणे बघऊदल की बाँका बेंदुल का असवार।
झुकि झुकि मारै औ ललकारै दोऊ हाथ करै तलवार।
बहुदल मारा पृथ्वीराज का नदिया वही रक्त कै धारा।

× × × × × ×

दावे बेंदुला ऊदल आवै लहरत आवै बैगनी पाग।
मुरचन-मुरचन घोड़ा नाचै ऊदल कहैं पुकार-पुकार।
नौकर चाकर कोई नाहीं हौ तुम सब भैया लगौ हमार।
जनमभूम पर यहु संकट है सव भाई मिल लगौ गुहार।।

युद्ध का स्वर थमता है और सुखन्त संगीत के स्वर

मल्हना :- महाराज, आप सिर नीचा किये क्यों खड़े हैं। आप भी इन दोनों भाईयों का भुज पूजन कीजिए।

परमर्दिदेव :- (गदगद स्वर में) ठीक ही कहती हैं देवी, आज मेरी दोनों आँखों की ज्योति फिर से लौटी है।

चन्द्रावलि :- भइया, तुम से महोवा की भूमि कभी उऋण नहीं हो सकती।

(नैपथ्य से जगनिक का स्वर उभरता है)

वाग चिरइया विन सूने हैं ठाकुर विन सूनी चौपाल।
रैना तौ सूनी है चन्दा विन सूने कमल विना है ताल।
विना पत्र के तरुवर सूने सूनी सूर विना है नार।
आल्हा ऊदल के जियरा विन सूनी भूग चंदेलन क्यार।।

(फ्लश बैक)

प्रोफसर :- "आल्हा ऊदल के जियरा विन, सूनी भूग चंदेलन क्यार", कितनी सार्थक है यह पंक्ति सचमुच महोवा का नाम आज चन्देलों से कहीं अधिक आल्हा -ऊदल के नाम से अमर है। इसका श्रेय है जगनिक की उस ओजस्वी वाणी को जिसने आल्हखण्ड जैसा जीवन्त काव्य प्रदान किया है, जो समूचे उत्तर भारत में गाया जाता है।

सुन्दरलाल :-इसी लोकप्रिय काव्य के रणबाँकुरे और जनप्रिय नायक ऊदल की एक विशाल मूर्ति नगर पालिका की ओर से फलताई चौक में स्थापित की गई है। वह बेंदुला पर सवार है।

क्षिप्रा :- चलिए सर ...... ।

(तांगा के चलने का स्वर, साथ ही वार्त्तालाप।)

सुन्दरलाल :-सर, यह प्रान्तीय अनाथालय है। इसका शिलान्यास गाँधी जी के कर-कमलों से सन् 1929 में हुआ था। आज इसकी स्थिति बड़ी ही दयनीय है। ....इसी अनाथालय से लगी हुई यह बिल्डिंग तिलक हाल है जिसकी आधार- शिला 'भारत में अग्रेंजी राज' के विख्यात लेखक कर्मवीर सुन्दर लाल ने रक्खी थी।

अमित :- सर, यहाँ भूतपूर्व नगर पलिका अध्यक्ष तथा पूर्व विधायक श्री बाबूलाल तिवारी का नगर के विकास मे सराहनीय योगदान रहा है।

(तांगा चलने का स्वर ......रुकता है।)

सुन्दरलाल :-सर, यह कुण्ड रामकुण्ड कहलाता है। यह सिद्ध मानगिर बाबा का स्थान है।

क्षिप्रा :- दूर तक फैला पर्वतीय अंचल, बड़ी-बड़ी प्रस्तर शिलायें और बीच में चट्टानों को काटकर बना यह कुण्ड, निर्मल जल, बरगद की घनी एवं शीतल छाया--सभी कहुत मनोरम है।

सुन्दरलाल :-सर, इसके विषय में लोक धारणा है कि चित्रकूट से विचरण करते हुए भगवान राम यहाँ कुछ समय ठहरे थे। पास ही सीता रसोई गुफा भी है।

(अन्तराल संगीत, पश्चात् लमटेरा की स्वर उभरता है..... और धीरे धीरे समाप्त हो जाता है)

रहिलिया के मन्दिर अजूबे रे......ए......ए
मन्दिर अजूबे पट खोलैं,
सूरज बड़ी भीर रे;......ए......ए
रहिलिया के हो ...ओ... ओ
सूरज के तौ कुंडा भरे रे ...ए ...ए... ए
कुंडा भरे रे धीरे नीर,

अबीर घोरै भोर रे;...ए... ए
रहिलिया के हो ...ओ ...ओ ...ओ)

सुन्दरलाल :- महोबा के दक्षिण पश्चिम कोने में राहिलदेव वर्मन का बनवाया यह राहिल सागर है। यह नवीं शताब्दी में निर्मित हुआ था। इसी के पश्चिमी छोर पर राहिलदेव का ही बनवाया हुआ यह सूर्य-मन्दिर है। वह सूरज कुण्ड भी इसी मन्दिर से संलग्न था।

प्रोफेसर :- अमित, यद्यपि इस मन्दिर का एक बड़ा भाग गिर चुका है; फिर भी वक्र पत्थरों से आच्छादित ज्यामितीय आधारों पर बना इसका गुम्बज अत्यन्त आकर्षक है। कहीं कोई सीमैन्ट या चूने का भी प्रयोग नहीं हैं। पुरातत्तव की अद्भुत निधि है और चन्देल राजाओं की अनुपम देन।

क्षिप्रा :- ग्रेनाइट के चौरस पत्थरों से बँधा यह सूर्य-कुण्ड भी कितना विशाल और सुन्दर है। व्यापक मरम्मत की अपेक्षा करता है।

सुन्दरलाल :- कुछ समय पूर्व यहाँ अज्ञात लोगों ने खुदाई की थी। उसमें सूर्य और विष्णु की अत्यन्त कलात्मक प्रतिमायें प्राप्त हुई थीं, किन्तु संग्रहालय के अभाव में यहाँ की मूल्यवान मूर्तियाँ लावारिस पड़ी हैं। किसी व्यक्ति ने इस प्रतिमा का सिर काट लिया है।

......आईये सर, अब हम गोरखगिरि की तरफ पीछे लौट चलें। वहाँ ग्रेनाइट शिला पर शिव की वह विलक्षण प्रतिमा है, जो उत्तर में केवल महोबा में ही प्राप्त है। यद्यपि दक्षिण में ऐलोरा, दारासुरम, है लीविड आदि कई स्थानों में इस प्रकार की पाषाण प्रतिमायें मिलती हैं।

(अन्तराल संगीत के स्वर।)

अमित :- वास्तव में नर -मुण्डों की माला पहने, बिखरी हुई केशराशितथा जटाजूट से सुशोभित यह शिव की अद्वितीय प्रतिमा है। दश भुजाओं वाली शिव की ऐसी विशाल मूर्ति इससे पहले नहीं देखी।

क्षिप्रा :- एक विशेषता औरहै अमित; यह मूर्ति अपने हाथों में गज को उठाये हुए है।

प्रोफेसर :- कुछ समझीं क्षिप्रा, यह प्रतिमा कूर्म-पुराणमें वर्णित शिव द्वारा गजासुर के वध से सम्बन्धित है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे शिव गजासुर का वध करने के बाद उसके शव को अपने हाथों में उठाये प्रलय करने पर तुले हैं और वाम पार्व में बैठी द्विभुजी देवी मूर्ति उनसे इस लीलाको समाप्त करने का अनुरोध कर रही है।...... लेकिन खेद है लोक की अंधीश्रद्धा ने इसकी मरम्मत करवा कर इनैमल रंगों से रंग दिया है। जिससे इसकी प्राचीनता की अपार क्षति हुई है।

क्षिप्रा :- पुरातत्व विभाग को चाहिये कि इसके रंगीन कलेवर को धोकर इसे अपना संरक्षण प्रदान करे। यह वास्तव में उत्तर भारत का गौरव है।

(झरने का कल-कल स्वर सुन पड़ता है।)

प्रोफेसर :- अनोखी है यह पर्वत-श्रेणी। एक के ऊपर एक रखे हुए शिलाखण्ड कितने निर्भीक हैं! भ्रम होता है हवा के एक ही झोंके में नीचे आ गिरेंगे। दूर-दूर तक फैली बिछुलती हरियाली और कलकल करते निर्झरों का स्वर--सभी कितना सम्मोहक है।

सुन्दरलाल :- इस पर्वत की इसी रम्यता ने ही तो गुरू गोरखनाथ को यहाँ रुकने के लिए बाध्य किया था। तभी से इसका नाम गोरखगिरि है। वे आल्हा-ऊदल के धर्म गुरू थे। गोरखनाथ के शिष्य सिद्ध दीपकनाथ की भी यह साधना स्थली रही है। पाषाणों का यह व्यापक समूह अपनी अँधेरी-उजेरी गुफा-कन्दराओं, झरनों तथा मर्दनटुंगा जैसे उत्तुंग शिखरों के कारण वर्षा ऋतु में सैलानियों का एक प्रिय पिकनिक स्थल बन जाता है।

अमित :- सचमुच यह एक सुन्दर पिकनिक स्पॉट है।...... कहिये क्षिप्रा जी इन पहाड़ी सोतों के पानी से कुछ थकावट दूर हुई।

क्षिप्रा :- अवश्य अमित भाई, ... चलिए इस मन्दिर को भी देखें।

सुन्दरलाल :- यह हनुमान जी के बाल-स्वरूप की प्रतिमा है और उधर उस शिला पर शिव परिवार की भी

कुछ मूर्तियाँ अंकित हैं।

अमित :- कितनी सुन्दर-सुन्दर प्रतिमायें हैं.....।

(अन्तराल संगीत, पश्चात धोबियों के वस्त्र- प्रच्छालन का स्वर उभरता है।)

सुन्दरलाल :-लगभग तीन मील के घेरे में फैली यह झील मदन-सरोवर है। इसे चन्देल नरेश मदनवर्मन ने बंधवाया था। इसका उत्तरी किनारा घाटों तथा मन्दिरों से अलंकृत है। शेष तीन ओर पहाड़ियाँ है। सरोवर के मध्य में स्थित यह शिव मन्दिर खखरा मठ कहलाता है।

क्षिप्रा :- यद्यपि सर, इस मन्दिर में बहुत अधिक सजावट नहीं है फिर भी बिना मसाले के अनोखे गणितीय पर्यवेक्षण और स्थैर्य विज्ञान की बेजोड़ तकनीक से स्थापित की गई प्रस्तर शिलाएँ मन्दिर की अपनी एक विशेषता हैं। इसका महामण्डप भी खजुराहो के मन्दिर से बड़ा है।

अमित :- सामने के द्वीप में पड़े हुए शिलाखण्ड भी किसी मन्दिर या मण्डप के ही अवशेष प्रतीत होते हैं।

प्रोफेसर :- अमित, यह रंगशाला रही होगी, जिसके तोरण पाषाण के बड़े-बड़े हाथियों से सुसज्जित थे। ये पड़े हुए हाथी उन्हीं अलंकरणों के भाग हैं, जो सम्भवत: अष्टदिक्पाल के प्रतीक थे।

सुन्दरलाल :-इसी मदन सागर के किनारे मनियादेव का मन्दिर है। सर, महोबा के विकास में पर्यटन एवं परिवहन विकास समिति के संयोजक श्री श्री कृष्ण चौरसिया के अथक परिश्रम एवं प्रयत्नों से यहाँ के पुरातत्व सम्बन्धी विकास में प्रगति आई है तथा शासन का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। आप जहाँ खड़ें हैं इस नेहरू उद्यान को नगरपालिका की ओर से विकसित किया जा रहा है। किले के इस पश्चिमी भाग में चन्देलों के महल रहे हैं।

(अन्तराल संगीत)

सुन्दरला :- भैंसासुर दरवाजे के नीचे स्थित यह शाही मसजिद है। इसमें गया सुद्दीन तुगलक का तुगरा अक्षरों में लिखा शिलालेख लगा हुआ है।

क्षिप्रा :- मस्जिद से लगी हुई यह प्राचीर, दरवाजा और वह बुर्ज किले के ही ध्वंशावेष हैं, जो आज भी जैसे उसकी मजबूती और अभेद्यता की कहानी कह रहे हैं।

प्रोफेसर :- क्षिप्रा, यह देखों मनियादेवी का मन्दिर। ग्रेनाइट पत्थर के स्तंभों पर टिका हुआ इसका मंडप तो चन्देलकालीन है किन्तु इसकी बाहरी बनावट तथा गुम्बज का स्वरूप अधिक प्राचीन नहीं है। ये चन्देलों की कुलदेवी थी।

सुन्दरलाल :-सर, यह देवी नहीं देवता का मन्दिर है। इसका अपना एक इतिहास है। मनियागढ़ के राजा के पास एक अमूल्य मणि थी। परमर्दिदेव ने उसे देखने की इच्छा व्यक्त की। राजा ने मणि को अपने स्वामि भक्त मंत्री द्वारा महाराज की सेवा में भेज दिया, किन्तु उसे देखते ही परमर्दिदेव की नियत बदल गई। मन्त्री ने निराश हो अपने प्राण त्याग दिये। परमर्दिदेव को इससे बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपने इस कलंक का प्रायश्चित मणि को कीरत सागर में प्रवाहित करवा कर किया और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए यज्ञ-अनुष्ठान आदि भी किये। लोक द्वारा पूजित यह वही स्थान है जहाँ मनिया देव ने प्राण त्याग किये थे।

क्षिप्रा :- यह तो बड़ी दर्दनाक कथा है।... वैसे स्मिथ ने इसे गौड़ देवता ही बताया है।

अमित :- क्षिप्रा, मन्दिर के पूरब की ओर ज्यामितीय चित्रों आदि से अलंकृत ये बड़े बड़े स्तम्भ चन्देल कालीन महलों के ही खण्डहर हैं। कितने भव्य और सुन्दर रहे होंगे।

प्रोफेसर :- इधर भी आओ, मन्दिर के सामने यह लगभग अट्ठारह फीट ऊँचा स्तम्भ है। इसका मध्यभाग अष्ठकोणीय और सादा है किन्तु ऊपरी भाग गोल और अलंकृत। स्तम्भ के ऊपर एक चौरस फलक है। आकृति से दीवट लगता है।

सुन्दरलाल :-सर, इसी मदन सरोवर के पूर्वी छोर पर एक दस फीट ऊँचा स्तम्भ आल्हा की गिल्ली कहलाता

है। नीचे की चट्टान में वह कुछ इस प्रकार रखा है कि तनिक से स्पर्श मात्र से घूमने लगता है। उसके पास ही चण्डमतावर स्तम्भ है जिसमें अश्वारोही की मूर्ति बनी है।

प्रोफेसर :- शाम हो रही है, ...चलो, अब शेष स्थान कल घूमेंगे ......और हाँ बन्धु, हम लोग पर्यटक आवास गृह में रुकेंगे, सुबह जल्दी आ जाना, अच्छा रहेगा।

अमित :- लेकिन सर पहले एक एक कप चाय तो हो जाये।

प्रोफेसर :- अच्छा, चलो....।

(दूसरा दिन-सुखान्त संगीत का मधुर स्वर एवं पक्षियों का कलरव)

सुन्दरलाल :-नमस्ते सर,

प्रोफेसर :- नमस्ते... आओ बैठो...क्षिप्रा जरा चाय और नास्ता के लिए तो कह दो।
यहाँ की सुबह भी कितनी मोहक है। मोरम की लाल पहाड़ियों से निकलता बाल सूर्य, चिड़ियों का कलरव, मन्दिर की घण्टा-ध्वनि... ऍक्सीलेन्ट...।

सुन्दरलाल :-यह घंटे का स्वर... सर, शंकर जी के मन्दिर का है। वो ... पहाड़ी पर ... बनखण्डेश्वर कहलाते हैं। वहाँ एक कुआ भी है। उसके नीचे का रोड दुर्गावती-मार्ग कहलाता है।... महारानी दुर्गावती इसी महोबा की पुत्री थी। कीरतराय की पुत्री। जिसने सम्राट अकबर के विरुद्ध युद्ध करते करते वीर गति प्राप्त की।

प्रोफेसर :- बड़ा वीरता पूर्ण इतिहास है महोबे का ...।

अमित :- चलिए सर, वाहनका भी प्रबन्ध हो गया। .... पहले विजयसागर झील चलें ....।

(तांगे के चलने का स्वर क्षीण होता है और पक्षियों का कलरव उभरता है।)

क्षिप्रा :- यह झील तो बहुत विशाल और मनोरम है। घने वृक्षों की सुखद छाया, पुष्पों की मादक सुगन्ध , पक्षियों की चहचहाहट, सभी इसकी रमणीयता में सहायक हैं। यह एक अच्छा पिकनिक स्थल है। ... नौका विहार के लिए भी उपयुक्त है।

सुन्दरलाल:- इस झील को चन्देल नरेश विजयवर्मन ने बनवाया था। यह उत्तर प्रदेश की सुन्दरतम झीलों में से एक है। इस क्षेत्र को और अधिक रमणीक बनाने के लिए वन विभाग की ओर से व्यापक वृक्षारोपण हो रहा है। इसे पक्षी विहार केन्द्र के रूप में भी विकिसत किया जा रहा है।

प्रोफेसर :- मैं सोचता हूँ कि यूरोपीय देश आज जिस-- सरफेस वाटर यूटिलाइजेशन विज्ञान के विकास में लगे हुए हैं। चन्देल शासक उससे पहले ही परिचित थे।

अमित :- निश्चय ही, ये झील और सरोवर, एक एक बूंद पानी का उपयोग और संचयन, इसी बात के प्रमाण हैं।

सुन्दरलाल:- विजय सागर के उत्तर में वह उथला सरोवर दिसरापुर है। इसी दिसरापुर सरोवर की पूर्वी पहाड़ी पर आल्हा के पिता दस्सराज की गढ़ी थी। ... और हाँ सामने पहाड़ी पर जो गढ़ी के खण्डहर हैं -- छत्रसाल के पुत्र मोहन दीवान के हैं। .....चलिए अभी बहुत कुछ देखना है।

(तांगा के चलने का स्वर ..... रुकता है।)

सुन्दरलाल:- सर, कल्याणसागर के पार्श्व में .... वो ... सामने सिंहवाहिनी देवी का मन्दिर है और वो .... चौदह चबूतरे भार राजकुमारों की रानियों के सती स्थल हैं। मलिकशाह से हुए युद्ध में वे काम आये थे।

प्रोफेसर :- इधर आओ अमित, आठ भुजाओं से युक्त, ललितासन में बैठी--विष्णु की यह अनूठी मूर्ति है।

सुन्दरलाल :-पास ही चौमुण्डा देवी की एक प्रतिमा है। किन्तु सर, महोबा के उत्तर में प्राप्त चौमुण्डा देवी की प्रतिमा तो अद्वितीय है। कंकाली वेष, चौसंठ भुजायें, हाथों में गज को उठाये --अत्यन्त कलात्मक है। किन्तु खेद है सर, लोगों ने उसे बीच से तोड़ दिया है।

(अन्तराल संगीत का स्वर... पश्चात् देवी गीत के स्वर उभरते हैं)

"कैसे कै दरशन पाऊँरी, मैया तोरी सकरी दुअरियाँ।
सकरी दुअरियाँ मैया चन्दन किंवरियाँ ...
कैसे कैं ..."

क्षिप्रा :- महिशासुर मर्दिनी माँ दुर्गा की यह कितनी विशाल प्रतिमा है, अमित।

अमित :- ...... और सजीव भी ......कैसी सौम्य मुद्रा है......।

सुन्दरलाल:- अट्‌ठारह भुजाओं से युक्त यह चंद्रिका देवी की मूर्ति है। शिव परिवार के प्रतीक-रूप इसके ऊपर भी गज का चिह्न अंकित है। कहते हैं यह देवी मूर्ति महाराज नन्नुक के समय की है। मदन सागर के पश्चिमी तट पर यहाँ एक छोटी चन्द्रिका का भी मन्दिर है।

प्रोफेसर :- ग्रेनाइट पर तराशा गया यह शिव-लिंग भी कितना कलात्मक है ...ओ.... यहाँ तो पंचमुखी शिवलिंग की एक आकर्षक चौकी भी है। अमित यह शिव, विष्णु, देवी सूर्य गणेश की समन्वित पूजा का प्रतीक है।

क्षिप्रा :- नृत्य करते हुए गणेश की यह प्रतिमा भी विलक्षण है, सर।

सुन्दरलाल:- ऐसी एक से एक सुन्दर न जाने यहाँ कितनी प्रतिमायें है, जो संरक्षण के अभाव में काल-कवलित हो रही हैं। इस मन्दिर के पीछे पहाड़ी तथा उसकी गुफा में भी बहुत सी मुर्तियाँ अंकित हैं।

प्रोफेसर:- अच्छा ......लेकिन पहले पान के खेतों के विषय में जानकारी ले लें।

सुन्दरलाल:- सर, पानों की खेती के सन्दर्भ में रामसेवक चौरसिया से भेंट की जा सकती है।

(पक्षियों का कलरव एवं चलने की पगध्वनि)

प्रोफेसर :- ये मूत्तियाँ तो जैन तीर्थकरों की हैं। चन्देलों के समय में यह जैन अतिशय क्षेत्र रहा होगा। वे टूटे हुए अलंकृत शिलाखंड, सर्वतोभद्र प्रतिमायें तथा मानस्तम्भ इसके धार्मिक महत्व के प्रतीक हैं।

क्षिप्रा :- महोबा के इर्द-गिर्द बिखरे हुए तमाम पुरावशेषों से यह बात स्पष्ट है कि चंदेल शासकों का धार्मिक दृष्टिकोण बहुत उदार था। सभी लोगों को अपने धर्म पालन की स्वतन्त्रता थी।

प्रोफेसर :- उन्हीं चन्देलों की यशस्वी राजधानी महोबा - जिसके संवारने में षिल्पियों ने ग्रेनाइट जैसी कठोर शिलाओं पर भी अपने एक एक स्पन्दन को मूर्तित किया। भविष्यपुराण, प्रबन्धकोष एवं परमाल रासो ने जिसके वैभव को वाणी दी ; देश और विदेशों ने जिसकी कला को सिर-माथे लिया वही आज अपने जीर्ण-शीर्ण कलेवर में कितनी उपेक्षित है। पुरातत्व विभाग ने भी कभी इसकी ओर गौर से नहीं देखा। .....पान पानी और कृपाण की धनी वीरभूमि, जिसके गौरव की रक्षा के लिए आल्हा ऊदल जैसे कितने ही वीर यज्ञ की आहुति हो गये, अपने टूटे-फूटे खंडहरों में अतीत की स्मृतियों को सहेजे इतिहास के खोजी की प्रतीक्षा कर रही है।

अमित :- अतीत के प्रति इसका यह दर्प सराहनीय है--
ऊदल जैसा दर्पीला है आल्हा जैसा वीर।
कालिंजर की ऊँचाई सा मलखे जैसा वीर।
देवलदे जैसी निश्छलता , मल्हना जैसी पीर।
आल्हाखंड के महाकाव्य सा तन मन गहन गंभीर।
वीर भू मेरा तुझे नमन।

- एम.पी. 120 पार्ट बी,
पानी की टंकी के पास,
न्यू इंदिरा कालोनी,
बुरहानपुर-450331
मो. 9425951295

अबहूँ सुधर जाओ

– भास्कर सिंह माणिक

पत्र परिचय

1) चन्दी - सीधी साधी लड़की
2) विक्रान्त - रईस बिगड़ैल मोड़ा
3) बेंचेलाल - चन्दी का पढ़ा-लिख भाई
4) खरीदेलाल - चन्दी का बाप (पिता)
5) धनवन्ती - चन्दी की अम्मा (माँ)
6) सुधीर, रजतमणि, उस्मान - गाँव के संभ्रान्त नागरिक
7) रामप्रताप - गाँव का प्रधान
8) श्रीधर - विक्रान्त के पिता
9) पंडित - कर्मकाण्ड कराने वाला विद्वान

(परिचय से पैलां नाटक का कोरस गीत सभी पात्र एक साथ गाते है)

कोरस गीत

अपय गाँव कों स्वर्ग से सुन्दर नोंनो हमें बनाने है
ऊँच नीचे को भाव इतें सें, मिलकें हमें मिटानें है
पढ़े लिखें सब मोड़ी मोड़ा अनपढ़ कोउ न रै जाये
जो धन कोउ लूट ना पै है, अब सबको जोई बताने हैं
अपय गाँव को

आपस में न लड़ो कबहूँ, सब मिलकें रैवो सीखों
सुख में दुख में हात बटा के, संग निभावों सीखों
वड़े-वड़े सब काम निपट जै ना भार काउ पै रै जे
प्यार करे सब माटी से सब कों जोई सिखाने हैं
अपय गाँव को

मोड़ी-मोड़न में अन्तर न रखईयों कोनऊ मन में
दोऊं कुलन को मान राखवे भेद न करइयों इन में
जें जग के उजयारे है देश को मान वढ़े हैं
घर घर में जाकें सब को सोई बात समझानें हैं
अपय गाँव को

(1)

झूठ से कोनऊ काम काऊको बनो कबहूँ नईयाँ
लालच में जो परगओं डूबी ऊ की नइया
कोरी शान दिखावे सें नाव कछू न होनें
मिलकें माणिक अपय देश को मान बढ़ाने है
अपय गाँव को

प्रथम दृश्य

(मलिन बस्ती। चन्दी अपने द्वार पै झाडू लगा रही हैं। उसी समय विक्रान्त उते से निकरत है। चन्दी को देख के रुक जात। चन्दी झाडू लगात रत। विक्रान्त चन्दी को निहारत रत। जब चन्दी की नजर विक्रान्त पर परत चन्दी अपनों दुपट्टा संभारन लगत और अपनी आँखे झुका के घरके भीतर चली जात। विक्रान्त चन्दी के पीछें घर में घुस जात। चन्दी पीछे मुड़ के देखत वो हक्की बक्की रै जात।)

विक्रान्त - का देख रई तुमाये बापू कां गये।
चन्दी - वे तो खेत पै गये।
चिक्रान्त - तुमाई अम्मा और तुमाये छोटे भइया-बहिन नई दिखा रये।
चन्दी - बेऊ कटाई कर रये।
विक्रान्त - तुम काये नई गई।
चन्दी - हम खाना-पीना ले के जे हैं
विक्रान्त - चलो कोनऊ बात नईया हम चलत है। (विक्रान्त पीछे मुड़ता है एक-दो कदम बढ़ात और रूक जात)
विक्रान्त - (स्वयं से बात करता) हाय क्या जवानी और वा पै घर सूनो ऐसो नोंनो मौका का मिल है। (विक्रान्त के अन्दर को शैतान जग जात और वो पीछे मुड़त। बिना सोचे समझे विक्रान्त भीतर घुस जात। चन्दी हड़बड़ा जात।)
चन्दी - तुम इते कैसे आ गये। तुम तो चले गये ते।
विक्रान्त - कछू नई मोय प्यास लगी सोची पानी पी लें।

(2)

(चन्दी गिलास में पानी ले के विक्रान्त कों देत है। विक्रान्त चन्दी को हाथ पकर लेत)

चन्दी - छोड़ो हांत काय पकर रये पानी पीओ और चलत बनो। (विक्रान्त पानी को गिलास फेंक देत और चन्दी के संगे मनमानी करन लगत।)

विक्रान्त - सुनो अगर काऊ सें कछू कई तो समझ लियो ठीक न हुए और जोऊ समझ लो तुम जितनी चिकनी हो हम तुमें उतनोई खुरदरों बना दें आई बात समझ में। (चन्दी सिसया के रै जात विक्रान्त चलो जात। चन्दी अपने कपड़ा संभारत रोटी बांधत अपने आप को कोसत)

चन्दी - (स्वयं से बात करत) हम की को मों दिखाये, की सें कां कये। ई सें नोंनो तो मर जावो है। नई, अगर हम मर गये कोऊ का कै हमाये छोटे भइया-बैनन को का हुए कोऊ कां कै है। (चन्दी खुद सें बात करई रईती तबई चन्दी की अम्मा धनवन्ती आ जाती है)

धनवन्ती - कलमुही, अलाल, कामचोर का बड़बड़ा रई। (चन्दी घबराजात)

चन्दी - कछू नई अम्मा, रोटी बांध रईती।

धनवन्ती - रोटी बांध रईती कै हमाये हड़उवा बांध रईती जो दुफरई हो गई उते सब भूखे लगे। तें बैठी-बैठी मजा उड़ा रई। नेकऊ शरम नई लगत। काल के दिना ससुरार जे है और मोय थुके हैं।

चन्दी - आ तो रईती अम्मा।

धनवन्ती - कां आ रईती

चन्दी - (चन्दी रोने लगती है) अम्मा, झाड़ू-पोंछा करो। रोटी-सब्जी बनाई।

धनवन्ती - हौं सो काये नई। पुरे घर को बौझा तुमई तो उठाती। तनक सुबीतो तो परन दो जल्दी-से तोरो मों करइया कर दें। अब काये रो रई बैठी-बैठी अबे हम जिन्दा बैठे है। (चन्दी रोटी उठा के चलन लगत)

धनवन्ती - अरे, तो कों करइया खा जाये। जो साग को पतेला का तोरो खसम ले जे। (चन्दी पानी की बोतल साग को पतेला उठा के चलन लगत)

धनवन्ती - ते होतनई काये नई मर गई, हमऊ तो चल रये। तारो तुमाये कौन से दद्दा लगान आये। (धनवन्ती घर में तारो लगान लगत ओई टेम चन्दी को भइया शहर से आ जात)

बेंचेलाल - (धनवन्ती के पाँव छू के) अम्मा का जा रईं।

(3)

धनवन्ती - कऊँ नई बेटा, कटाई लगी खेत पै खावे को लै जा रये।

बेंचेलाल - चलो हमऊ उतई चलें।

धनवन्ती - तुम सफर-खोर लो इतनी दूर सें आये थक गये हुओ। चन्दी तुम खावे को ले जाओ हम बेंचेलाल के लानें कछू खावे कों बना दें।

चन्दी - हओ, अम्मा।

बेंचेलाल - अम्मा हम स्नान कर के जो रक्खो हुए सो खा लें।

धनवन्ती - ऐसी काये कै रओ, चन्दी खेत पै जा के कछू तुमाये बापू को हांत बटे है। हम तुमाये लानें कछू नींको नोनो बना दें।

बेंचेलाल - अम्मा तुम नई मान तुमे जैसो अच्छो लगे सो करो।

धनवन्ती - (चन्दी की ओर देख कें) काये ठाड़ी जात काये नईयां।

चन्दी - जा तो रये अम्मा।

धनवन्ती - जा तो रये। इते का लड़ूआ बट रये सो ठांड़ी।

बेंचेलाल - अम्मा काये उल्टो-सूधो बोलती। जितनो ऊ को वजन नईयाँ ऊ से ज्यादा ऊ पै वजन रख देती।

धनवन्ती - तुम का जानों जो बहुत अलाल हो गई। जा को काम में मांस कां दबत आय जाको जित्तो हांको उतनेई पाँव धरत।

बेंचेलाल - अम्मा तुमें का हो गओ तुम चांये कछू बकन लगती। (चन्दी चली जाती हैं)

धनवन्ती - चलो बेटा कपड़ा उतारों सफर लो तुम अबे कां जानों घर ग्रहस्थी की बातन को

बेंचेलाल - घर ग्रहस्थी कां से आ गई। जित्तो हक हमाओ है तुमाये ऊपर उतनोई हक चन्दी को है।

धनवन्ती - बड़ो आओ चन्दी को हमदर्द काल के दिना बाय ससुरार पठाने। काम-काज तो सिखानेई पर अगर नई सिखे हैं तो गारी तो हमई को सुनने

पर।

बेंचेलाल - अम्मा अब जमानों बदल गओ मोड़ी-मोड़ा बराबर के हकदार होत। रई ब्याओ की बात ऊ की चिन्ता तुम काये करती ऊ के लानें तो हम पढ़ो-लिखो लड़का ढूढ़ है।

धनवन्ती - इतने पईसा कां हैं। अबे तुम का जानों मोड़ी के हाथ पीरे करवे में पाँव में फलका पर जात जब कऊं जा के कितऊ ठिकानों लगत।

बेंचेलाल - तुम तो पुराने जमानें की बातें कर रई। अब ऐसो कछू नईयाँ। (धनवन्ती, बेंचेलाल की बातचीत होई रईती ओई टेम सुधीर सिंह, रजत मणि उस्मान आ जाते हैं)

सुधीर - राम-राम बेंचेलाल भइया।

(4)

(धनवन्ती भीतर चली जाती)

बेंचेलाल - राम-राम आओ इते कां से निकर परे।

उस्मान - होरा खावे गये ते।

रजतमणि - तुम खाओ तो मगा दे कोनऊ मोड़ा सें।

उस्मान - होरा के लानें बड़े-बड़े लार टपकाऊत।

सुधीर - जो तो हमऊँजानत को काये के लानें लार टपकात।

उस्मान - सुधीर तुमऊ, अच्छा जे बातें छोड़ो (बेंचेलाल की तरफ इशारा करत भये) बेंचेलाल तुम जो तो बताओ शहर में का कर रये।

बेंचेलाल - कछू नई कर रये पढ़ रये और पढ़ा रये।

उस्मान - का कै रये।

रजतमणि - उस्मान तुम समझ नई पाये। मोड़ियन को पढ़ा रये। खुद पढ़ रये।

उस्मान - हमाई नकल कर रये। एक ठूंसा दे देईगे। चबूतरा बिगर जायेगा।

बेंचेलाल - रजत मजाक कर रओ। हम शहर में कानून की पढ़ाई कर रये और खर्चा चलावे के लानें टूशन करत। अब तो समझ गये हुए।

सुधीर - अच्छा जो बताओ कोनऊ भौजाई-ओजाई ढूढ़ी के नई। (जई बीच भीतर से धनवन्ती आवाज देत। बेंचेलाल खाना तैयार हो गओ।)

बेंचेलाल - हओ, आ रये। (सभी हंसते हुए उठते हैं)

बेंचेलाल - संजा के चौपाल पै आत तबई बातें कर हैं तबई बता दे भैजाई - ओजाई मिली के नई

(पर्दा गिरता है।)

(दूसरा दृश्य)

(चन्दी घर के पीछे बने मंदिर में पूजा कर रई। ओई टेम विक्रान्त उतई पौंच जात और चुपचाप ठंडो हो जात) (चन्दी आरती गा रई)

आरती

ओम जय-जय-जय जगदम्बे मईया
माँ जय-जय-जय जगदम्बे मईया
तुम पार लगा दो जीवन नईया
ओम 1

(5)

तुमने असुर संहारे भक्तन को तारे
वो हो गओ सिन्धु पर, जानें चरन निहारे
ओम 2

इन्द्रादिक सब देवा तोरो ध्यान धरें
ऋषि मुनि जश गावे ते भवसिन्धु तरें
ओम 3

तुम हो मुक्ति की दाता कलयुग की स्वामिनी
तुम हो महाशक्ति, गदा शंख चक्रधारनी
ओम 4

तुम जीवन की हो रक्षक माँ अंतरयामी
तुम दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती हो विष्णु गामी
ओम 5

सच्चे मन सें जो कोऊ तुमको ध्यावे
सब दुख मिटवे ऊके मनवांछित फल पावे
ओम 6

जगदम्बे माता ने ऊ के कष्ट हरे
जानें करी आरती पूजा पाठ करे
ओम 7

(जैसेई चन्दी आरती गावो बन्दकरत)

विक्रान्त - का मांग लओ देवी जी से (चन्दी आँखे नीचे कर के मंदिर की सीढ़ियन से उतरन लगत)

विक्रान्त - (चन्दी को हांत पकर के एक पैड़ की आड़ में ले जात) हमनें ऐसो का कर दओ जो हमें देख के भग रई।

चन्दी - (क्रोध में) हात छोड़ो, नई तो।

विक्रान्त - नई तो का।

चन्दी - रस्ता छोड़ो।

विक्रान्त - नई छोड़े तो?

चन्दी - हम सब को इतई इकट्ठो का लें।

(6)

विक्रान्त - ऐन इकट्ठो कर लो हमें का हम कै दे तुमने बुलाओ तो। हम जोऊ बता दे सब जनें खेत पै गये ते ऊ दिना भी बुलाओ तो।

चन्दी - झूटी काये बोल रये।

विक्रान्त - तो हमाओ कै वो मान लो। नई तो फिर हम तुमें पूरे गाँव में बदनाम कर देवी। (चन्दी चुपचाप हो जाती हैं)

विक्रान्त - आज शाम के हमें तुम अपनी चौपयरी वाली बखई में मिलिओ।

चन्दी - देखो कां तुम और कां हम

विक्रान्त - तुमें हमई कसम।

चन्दी - नई जो नई हो सकत। हम ऐसी वैसी मोड़ी नईया जो हो गओ सो हो गओ हमनें काऊ से कछू नई कई।

विक्रान्त - (मुस्कुराते हुए) तुम कैसी बातें कररई।

चन्दी - तो तुम ब्याओ काये नई कर लेत।

विक्रान्त - ब्याओं कर हैं तो तुम सें नई तो हम बिना ब्याओं के रै हैं।

चन्दी - अपने दद्दा-बाई सें तो पूछ लो।

विक्रान्त - का पूछने। मियाँ-बीबी राजी, तो का कर है काजी।

चन्दी - (मुस्कुरा देती) जाओ। झूटा कऊको।

विक्रान्त - हम देवी माँ की कसम खा के कै रये ब्याओ कर हैं तो तुमई से कर हैं।

चन्दी - अच्छा अब तुम जाओं हमें देर हो रई।

विक्रान्त - चौपियारी में (दोनों मुस्कुरा देते हैं पर्दा गिरता है)

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(विक्रान्त मस्ती में गाना गात चलो जा रओ गाना गाते-गाते चौपियारी में प्रवेश करता है) (चौपियारी में गाय, भैंस, बकरी आदि बंधी है। चन्दी जानवरन को पानी पिला रही है। विक्रान्त दबे पाँव चारों तरफ देख के चौपियारी में घुस जाता और चन्दी की आँखन पै हांत रख के आँखे बन्द कर देता। चन्दी होंतन से अन्दाजा कर के विक्रान्त को पहचान लेत)

लोकगीत

चन्दा सी गौरी मिसरी सी मीठी
बातन बातें करे वो रसीरीली
ले गई ले गई रे रातन की निदिया
वो तो छोड़ गई अटारी पै बिदिया

(7)

ढूढ़ें-ढूढ़ें मिले नई गलियाँ
सब ऊ की पूछ रये बतिया
अचकन की देख-देख रोली
भौजी करे मनचीती ठिठोली
चन्दा ......
आँखन में कजरा जूड़ा पै गजरा
वो छोड़ गई अटारी पै कंगना
ढूढ़ें-ढूढ़ें मिले नई रस्ता
ले गई रे दिन को सुखना
पल्ली की देख-देख खोली
भौजी करे मनचीती ठिठोली
कानन के झुमका पाँव पायलिया
वो छोड़ गई अटारी पै करधनिया
ढूढ़े-ढूढ़े मिली नई नथनियाँ
लूट ले गई रे दिल की दुकनियाँ
अटरिया पै महकी चमेली
भौजी करे मनचीती ठिठोली

चन्दी - जो का है। तुमनें तो हमें डरा दओ

विक्रान्त - (हंस पड़ता है) तुम और डरा जाओ।

चन्दी - तुम इतें से जाओ नई कोऊ आ जाये।

विक्रान्त - का इतें कोऊ औरऊ आ रओ

चन्दी - धत, हमाये कैवे को जो मतलब नईया। हमाई

अम्मा आ रई हुए।

विक्रान्त - (आँख को इशारो करत) आओ न।

चन्दी - तुम इते सें जाओ

विक्रान्त - सब समझती हो फिरऊ। आओ ना।

चन्दी - नई, पहले तुम ब्याओ करो, बाद में।

विक्रान्त - (हांत पकर के) छोड़ो न। ब्याओ तो तुमई से कर है।

चन्दी - पैलां ब्याओ कर लो और अपनें घरें लिवा चलो।

(8)

विक्रान्त - हम तुमें घरें लिवा ले जे और ब्याओ भी कर है। अबे तुम।

चन्दी - नई, पैला ब्याओ बाद में सब कछू।

विक्रान्त - तुमे हमाई कसम।

चन्दी - देखो अब तुमाई हम एकऊ नईमान।

विक्रान्त - काये।

चन्दी - तुमनें कईती हम अब जबई आये। दूला बन के आये।

विक्रान्त - हाँ कई तो हती। अबे हम का दूला से कम लग रये।

चन्दी - तनक शरम खाओ हम तुमाये बच्चा की अम्मा बनवे बाले है।

विक्रान्त - का कई फिर से कईयो।

चन्दी - हम अम्मा बननें बारे है।

विक्रान्त - (झुंलाकर) तुम अम्मा बनने बाली हो। जो का कै रई।

चन्दी - हाँ सई कै रई। अब कवे कर हो ब्याओ।

विक्रान्त - (जेब से रुपया निकारत है) जे लेओ और बच्चा गिरवा दो।

चन्दी - का कै रये तुमने का हमें ऐसी-वैसी समझ लओ। अब तुम ब्याओ करो नई तो।

विक्रान्त - नई तो तुम कर हो।

चन्दी - जो तो तुम समझ लो का हो सकत।

विक्रान्त - तुम का हमें धमका रई।

चन्दी - हम तुमें धमका नई रये हम तुमें समझारये। कऊ कोनऊ वखेड़ा खड़ो न हो जाये और तुमें नीचो देखने परे।

विक्रान्त - (गुस्से से) हम कोनऊ अखेड़ा-बखेड़ा को नई डरात। हमनें जो तुम सें कई तुम बोई करो। बच्चा गिरादो।

चन्दी - का कई बच्चा गिरा दो। तुमनें का कईती।

विक्रान्त - हमने कछू नई कईती।

चन्दी - तुमनें नई कईती। ब्याओ तुमई से कर और काऊ से से नई।

विक्रान्त - ब्याओ और तुम सें। का हो गओ तुमें? (चन्दी रोने लगती है)

विक्रान्त - रोवो-गावो छोड़ो और बच्चा गिरा दो जितनो खर्च-हुए हम कर है। काल कछू बहानों कर के आ जईओ हम डाक्टर से मिल के बच्चा गिरवा दें। कोऊ नई जान पै।

चन्दी - कोऊ नई जान पै। हम बच्चा कोनऊ सूरत में नई गिरवाये और बच्चा को तुमई को नाम दे है।

विक्रान्त - हमनें जो कई सो करो अन्यथा?

(9)

विक्रान्त - हमनें जो कई सो करो अन्यथा। (विक्रान्त और चन्दी की सारी बातें बेंचेलाल दीवारं की आड़ में ठड़ो-ठड़ो सुनरओतो जैसेई विक्रान्त अन्यथा कत ओई टेम बेंचेलाल निकर के सामनूं आ जात)

बेंचेलाल - अन्यथा का कर ले ओ हो

विक्रान्त - बोई जो अबे तक करत रये। तुम जैसन के संगे

बेंचेलाल - (क्रोध में) तनक जवान को लगाम देओ वरना।

विक्रान्त - वरना का कर हो।

बेंचेलाल - तुमें जेल की चक्की पिसवा दें।

विक्रान्त - हमें

बेंचेलाल - हाँ तुमे

विक्रान्त - (चापलूसी करत भय) देखो भईया जो हो गओ सो हो गओ। ऊ के लानें हम माफी मांगत अगर तुम कओ तो हम तुमे कछू पईसा दे देवी और रई चन्दी की बात ऊँ को ब्याओ को पूरो खरच हम तुमें दे देवी। बात बड़ाये सें का हुए। तुमाई बदनामी हुए चन्दी की बदनामी हुए। हमाओ का हम कछू दिना के लानें जेल चले जे और का हुए।

बेंचेलाल - हमें पईसन सें खरीदवो चारये। जे पईसा और काऊ को दियो। जैसो तुमने करो ऊकी सजा तो तुमे मिल है।

विक्रान्त - देखो भईया हम कछू रस्ता निकारत हमें एक दिना को समय देओ।

बेंवेलाल - आज को दिना तुमाओ और काल का दिना हमाओ। (बेंचेलाल विक्रान्त की बहस होई रईती उसी समय सुधीर सिंह, रजतमणि, उस्मान आ जाते हैं।

उस्मान - का हो गओ, विक्रान्त का कैरओतो (बेंचेलाल सुधीर सिंह, उस्मान, रजतमणि को सारी बातें बता देता है) (नेपथ्य)

सुधीर सिंह - तुमें डरानें नईया। तुमाई बहिन सो हमाई बहिन। गाँव में हम लोग कोनऊ भी ऐसे वैसे काम नई होन दें और तुम तो कानून जानत हो। अब तो ऊ कों चन्दी सें ब्याओ करनेई पर है।

रजतमणि - जो बात एक चन्दी की नईयां अगर अपय गाँव को अच्छो गाँव बनाने है तो ई के लाने विक्रान्त जैसे बुरे विचारन वाले लोगन से हमें लड़ने पर और उनें सवक भी सिखाने पर, अब तो ई को कानून बन गओ। जो लोग अभऊ जाति-पात मानत हैं और धर्म-धर्म की झूठी शान में रत ऐसे लोगन कों गाँव में नई रन दें। बोलो तुम सब लोग हमाओ संग देओ हो (सब लोग एक संगे बोल परत)

हम सब एक हैं एक रहेगे
अपनी संस्कृति का मान रखेगे
आदतें बुरी हम मिटायेगे
प्रेम की गंगा हम बहायेगे

(नेपथ्य से गीत)

हम अरदमी है आदमी से प्यार करेंगे
हर आदमी का हम सत्कार करेंगे
जो वर्गवादी बातें यहाँ करते बैठ कर
हम ऐसो लोगों का तृष्कार करेंगे
मिटा के भेद भाव हम एक रहेगे।

हम आदमी
हिन्दू हो या मुस्लमांन सब भारत के लाल है
हैं ईद की सिमई होली के हम गुलाल है
सिख ईसाई पारसी वतन की शान हैं
अपनी धरा का हर समय रखते ऊँचा भाल हैं
तम को मिटा के हम यहाँ प्रकाश करेंगे
हम आदमी है आदमी से प्यार करेंगे
खाईयाँ जो खोदते है जति धर्म की
होते वही दफन पाते सजा है कर्म की
सद्भावना के भाव जो पालते यहाँ
तोड़ी उसीने बेड़ियाँ रूढ़िवाद की यहाँ
हम मिल के प्रीति की यहाँ गंगा बहायेंगे
हम अरदमी है आदमी से प्यार करेंगे

(पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

रामप्रताप - (पंचायत भवन में प्रधान रामप्रताप सुधीर सिंह, रजतमणि, उस्मान, बेंचेलाल, खरीदे लाल, धनवन्ती, चन्दी, विक्रान्त, श्रीधर आदि लोग बैठे हैं)

रामप्रताप - खरीदे लाल बताओ का बात है।

खरीदे लाल - प्रधान जू हम का बतावें विक्रान्त ने तो हमें कितऊ को नई छोड़ो।

विक्रान्त - (बेतुके ढंग से) हमें झूठो काये फसा रये हमनें कछू नई करो।

बेंचेलाल - तुमने कछू नई करो काय झूठी बोल रये।

विक्रान्त - (क्रोध में) हओ हम बोल रये झूठी जो उखारतन बन जाये सो उखार लो

बेंचेलाल - तुम हमाई चौपियारी में का करन गयते?

विक्रान्त - हम कबे गये तुमाई चौपियारी में?

धनवन्ती - (हांत जोड़कर) लल्ला हम हांत जोर के विनती कर रई और हमाई मोड़ी के पेट में तुमाओ बच्चा पल रओ और तुमने ब्याओ करवे की कईती अब काये पलट रये।

श्रीधर - का कै रई धनवन्ती?

धनवन्ती - मैं सई कै रई तुमाये मोड़ा ने ब्याओं की कै के हमाई सीधी गइया सी मोड़ी को ....?

श्रीधर - चुप रओ। नेकऊ शरम नई लगत तुमे।

धनवन्ती - अगर जोई तुमाई मोड़ी के संगे हो गओ होतो तो?

श्रीधर - (क्रोध में उठकर) जादा बकर-बकर करी तो तुमाई जीभ निकार लें। तुम हमाये बराबर बैठवो चारई।

खरीदे लाल - तो का तुम हमे छोटो समझत। तुम हमाई इज्जत से खेलो और हम कछू न कये

प्रधान - तनक शांत रओ। चन्दी तुम बताओ। (चन्दी चुपचाप खड़ी रहती हैं)

प्रधान - विक्रान्त ने का तुमाये संगे कभऊ कोनऊ जबरदस्ती करी का। (चन्दी मुड़ी हिला देत)

प्रधान - तुम नेकऊ नई डराओ जो बात होय सो सांची-सांची बताओ।

बेंचेलाल - प्रधान जू सई बात तो जो है। एक दिना सूनो घर पा के विक्रान्त घर में घुस गओ तो और ओई दिना से (उगली देखाते हुए) जो ब्याओ की कै के अबे तक चन्दी को मों बन्द करे रओ। चन्दी ई को विश्वास करत रई। जब हमनें विक्रान्त को पकर लओ तो ऊ टेम हात-पाँवजोर के ब्याओ करवे के लानें हाँ कै दईती

विक्रान्त - हम ब्याओ कर है जो तुमने कैसे सोच लईती। हमनें ओई दिनां के दईती लें दें के निपटा लो जो हो गओ सो हो गओ। हम पूरो खर्च दें दें हम ब्याओ करे और तुम जैसे कमीनन सें।

बेंचेलाल - (उठकर विक्रान्त का कलर पकड़ के खींचातानी करने लगता है) हरामजादे, आज हम कमीन है, तुमाये बराबर के नईया।

(सुधीर सिंह, रजतमणि, उस्मान दोंनो को अलग कर देते है)

सुधीर सिंह - जो तो तुमे पैला सोचनेती, विक्रान्त? जब तुमने चन्दी को हाथ पकरो तो ऊ टेम का वो तुमाये बराबर की हती जब ऊ के संगे खारये-पी रये ते।

श्रीधर - तनक चुप रओ जादा पंच के मौसिया नई बनो।

बेंचेलाल - सई बात कै दई सो तुमे चिनमिनों लग रओ

विक्रान्त - (गुस्से से) हरामजादे, अपनी औकात में रओ, तुम अबे हमें नई जानत।

बेंचेलाल - (गुस्से से) कुत्ते, तुम रओ अपनी औकात में हम तुमाई औकात अच्छी तंरा सें जानत।

(12)

विक्रान्त - तुम अपनी जावन संभालो नई तो?

बेंचेलाल - नई तो का कर लेओ हो। बेशरम, हमें पईसा दे के खरीदवो चाउत तो।

विक्रान्त - तुम जैसे हमाये पांव की जूती साफ करत। बड़ो आओ ब्याओ करावे वालो।

बेंचेलाल - अबे जैसे तैसे जेल से आओ फिर तोय जेल भिजवा दें। चलो दद्दा हम तो जा को देख लें।

प्रधान - रूको, श्रीधर हम नई चाहत गाँव की नाक नीची होवे जो गलती तुमाये लरका ने करी ऊकी का सजा होत जो तो तुम जानत हो।

बेंचेलाल - (तेज आवाज में) प्रधान जू, जे नई मानवे बारे अब तो इने कानूनई समझा पै।

विक्रान्त - जाओ-जाओ तुमे देख लें और तुमाये कानून को देख लें।

रजतमणि - बेंचेलाल पैलां चलके थाने में रिपोट लिखवाओ और चन्दी की डाक्टरी करवाओ फिर जे ब्याओ भी कर है और होवे वाले बच्चा को नाम भी दे है।

विक्रान्त - (रजतमणि को बन्दूक दिखा के) जाओ कैसे जात थाने। कैसे करात डाक्टरी।

उस्मान - (पीछे से आकर बन्दूक छुड़ा लेता है) तुम का समझ रये जौन दिना तुमाओ डी.एन. ए टेस्ट हुए ऊ दिना दूध, को दूध, पानी को पानी होजे। ब्याओ करियो चाय कबहूँ न करियो चन्दी को हिस्सा तो तुमे देनेई पर (उस्मान की बात सुनके सब लोग अश्चार्य चकित रह जाते है।)

श्रीधर - (प्रधान की तरफ हॉत जोर के) प्रधान जू जो कछू हो गओ सौ हो गओ ऊ के लानें हम माफी मांगत चन्दी के ब्याओ में जितनो खर्च हुए हम

देवी।

रामप्रकाश - जा बात को इताई खतम कराओ।

प्रधान - सुनो आप लोग लड़ो नई। जो कछू अबे श्रीधर ने कई बापे का तुम सब जनें राजी हो कै नई।

चन्दी - (धीरे से) प्रधान चाचा जू हम ब्याओ कर है तो विक्रान्तई से कर है नई तो मर जावी।

रामप्रकाश प्रधान - ऐसो काये।

चन्दी- प्रधान चाचा जो तो तुमऊ जानत एक बेर इज्जत गई तो का लोटत है कभऊ।

रामप्रकाश प्रधान - बात समझवें की कोशिश करो।

चन्दी - कछू हमऊ की इज्जत आये। हम की को मों दिखे हैं। की-की को-का बते हैं। ई से तो अच्छो मर जावों है।

विक्रान्त - तो मर काये नई जाती।

सुधीर सिंह - चन्दी काये मर जाये। मरने तो अब तुमे पर है और सुन लो सब जनें आज से हम ई गाँव में विक्रान्त जैसे मनचले नई रन दें। जो हम सब के सामनें कसम खात है।

राम प्रकाश प्रधान - अगर विक्रान्त चन्दी से ब्याओ नई करत तो हमऊ तुमाओ सबको संग दे है। हम अनीत गाँव में नई होन दें। ऊँच-नीच गाँव में नई पलन दें। (श्रीधर मुड़ी नीचे झुका लेत। विक्रान्त भगन लगत। उस्मान दौड़ के विक्रान्त को पकड़ लेता है।)

(13)

उस्मान - कां भगेगा। कां जायेगा। कां दुकेगा। इते आ। अबे पंचायत को निर्णय तो सुन लें।

रामप्रकाश प्रधान - निर्णय तो हो गओ, अगर विक्रान्त ब्याओ करत-तो ठीक नई तो ....?

श्रीधर - नई-नई हम समझाउत है मोंड़ी कों

रामप्रकाश प्रधान- समझा लो। नई तो आनर किलिंग को मतलब तोतुम जानतई हो।

श्रीधर - (शांत स्वर) हाँ-हाँ जानत है।

रामप्रकाश प्रधान - जानत हो लेकिन इते जा को मतलब कछू ओरई है। अगर विक्रान्त को जिन्दा देखवो चाओ तो वाय समझा दो अबहूँ सुधर जाओ।

(विक्रान्त और श्रीधर आपस में खुसुर-फुसुर करत है)

रामप्रकाश प्रधान - का सोची।

श्रीधर - वो तैयार है ब्याओं के लानें

खरीदे लाल - प्रधान जू हमें लगत जो झूटी बोल रओ जा से जो पूछो रजिस्टर्ड ब्याओ करवे को राजी है कै नई।

विक्रान्त - (मुड़ी झुका के) हम सई कै रये हम पूरे गाँव सभा के सामनूं चन्दी को पत्नी मान हैं।

रामप्रकाश प्रधान - खरीदे लाल का सोच रये आगे बढ़ो श्रीधर से गले मिलो।

(खरीदेलाल और श्रीधर गले मिलते है) सभी लोग ताली बजाकर खुशी का इजहार करत चन्दी अपनी माँ धनवन्ती से लिपट जात।

(पर्दा गिरता है)

पांचवा दृश्य

(मण्डप सजा है चन्दी दुल्हन के वेश में सजी-धजी दिखाई देती है। धनवन्ती, बेंचेलाल, खरीदे लाल आदि दुल्हन के दरवाजे पर खड़े दिखाई दे रहे हैं। दूसरी तरफ विक्रान्त घोड़ी पर दुल्हे के वेश में सजा-धजा बैंठे दिखाई देता। शहनाई बज रही है। ढ़ोल नगाड़ों की आवाजे सुनाई दे रही हैं। श्रीधर रामप्रकाश, उस्मान आदि बाराती के वेश में सजे-धजे दिखाई दे रहे है। बराती खुशी से नाच रहे हैं। द्वारचार हो रहा हैं। मंगलगान गाये जा रहे हैं।)

(मंगलगान)

मंगल गान (टीका पर)

द्वार सजे बंधन बंधे दूल्हा टींका खां आये
कानन कुण्डल झूम रहे मोतियन हार लुभाये
माथे मोर मुकुट सजा के मुख में पान रचाये

(14)

रतन जड़ो अचला धारे पीताम्बर तन लहराये
हल धर भईया को ले चढ़ रथ टींका खां आये
हाथी घोड़ा पालकी ले श्याम टींका खां आये
देदे ताली नाचें बाराती सखियाँ मंगल गाये
राम बने दुल्हा, दुल्हन जानकी
शोभा बरनी ना जाये सीता राम की

रथ दशरथ चढ़े, घोड़ी राम जी
राम बने दुल्हा दुल्हन जानकी
भरत लक्ष्मन शुत्रधन साथ में
आये भूपति सजकें बरात में
शोभा बरनी न जाये काम देव की
राम बने दुल्हा दुल्हन जानकी
शिव बह्ममा विष्णु मण्डप पधारे
बैठे पंडित जी वेद उचारे
शोभा बरनी न जाये कलश की
राम बने दुल्हा दुल्हन जानकी
(बाराती भोजन कर रहे हैं गाँव की नारियाँ गारी गा रही हैं)

गारी

तुम काये अकेले आये, तुम काये अकेले आये
तुम अपनी जीज्जी कों, की के लानें छोड़ आये
ए मुछ मुण्डा तुमई से पूछ रई, तुम मुंछ किते धर आये
तुम काये ना संगे लाये, तुम अपनी भौजी कों
की के लानें छोड़ आये, तुम काये अकेले आये

(15)

ए फटे पेन्ट तुमई से पूछ रई
तुम कां पेन्ट फटा के आये,
तुम पाजामा काये न लाये,
तुम अपनी मौसी कों
की के लानें छोड़ आये,
तुम काय अकेले आये
तुम काये अकेले आये
ए तिरपट तुमई से पूछ रई
तुम अचकन काये न लाये,
तुम कां लुट पिट के आये
तुम अपनी बुआ कों,
की के लानें छोड़ आये
तुम काये अकेले आये,
तुम काये अकेले आये

रामप्रकाश प्रधान - कओ खरीदे लाल भईया आज तो तुम चमक छोड़ रये ई को का राज है।

खरीदे लाल - अरे भईया का कै रये, चमक तो तुम छोड़ रये कै हम सें रये।

श्रीधर - चमक जे नई छोड़ तो को छोड़ है।

रामप्रकाश प्रधान - लो तुमऊ केन लगे।

श्रीधर - का हम गलत कै रये। तुमाई जगां कोऊ और होय वोऊ चमक छोड़न लग।

रामप्रकाश प्रधान - हम तुमाओ मतलव नई समझ पाये श्रीधर भईया।

श्रीधर - दोना-दोना भर रवड़ी चाट रये। हमाओ मतलव काये को समझ हो।

खरीदे लाल - कै तो तुम साँची रये

रामप्रकाश प्रधान - हां-हां काये नई तुमऊ मजा ले लो। तुम कौन चाटत। (मजाक होई रओ तो तवई बेंचेलाल आ जात)

बेंचेलाल - दद्दा लेओ तुम इते बैठे भीतर अम्मा बुला रई। (इतनी कै के बेंचेलाल चलो जात)

श्रीधर - जाओ समधिन बुला रई (जैसे ही खरीदे लाल खड़े होत)

रामप्रकाश प्रधान - देखो जा उमरऊ में चैन नई परत। तनक मौका देखो हाल बुलाओ।

(16)

खरीदेलाल - तुम तो प्रधान जू कछू नई कओ। तुम तो अन्धेरो-उजेरो तक नई देखत (सभी हंस पड़ते हैं बेंचेलाल पुनः आता है)

बेंचेलाल - दद्दा, अम्मा ने तुमे, प्रधान जू को और दादा श्रीधर जू को भी बुलाओ।

खरीदेलाल - (मजाक करत भये) अब तो ठंडक पर गई हुए चलो। (सभी लोग मण्डप के नीचे पहुँच जाते हैं। मण्डप के पास-उन्ना-लत्ता, मेवा फल आदि रखे हैं)

पंडित जी - (पंडित जी खरीदे लाल, बेंचेलाल, श्रीधर आदि को हांत को इशारा करत भये) आओ बैठो (सब लोग बैठ जाते हैं)

पंड़ित जी - गोड़ी को बुलाओ चड़ाओ चढ़ने (चन्दी एक दोना में बताशा रख के धीरे-धीरे आती है और मण्डप के नीचे बैठ जाती है)

पंड़ित जी - (तेज आवाज में) कछू गा लो। वैसे तो खूब

चिल्लाओ हो। चड़ाओ पै एकऊ शब्द नई फूट रओ। औरते गान लगती। पंड़ित जी मंत्र उच्चारन कर के पूजन करान लगत।

पंडित - पूजन करात भये - चन्दी गौरी पूजन करो।

चड़ाओ गीत

मण्डप नेंचे चढ़त चड़ाओ
मिल सखियन ने पहनाओ
हांत कें चूरा पाँव पैजना
कर धनियाँ ने भरमाओ
ऊँगली की मुदरी पाँव के बिछिया
पुंगरिया ने मन ललचाओ
हांत फूल और कनफूलऊ आये
गले में मोतिन हार सुहाया

(भांवर पड़ने के बाद विदाई होती। घर-परिवार के लोगो से लड़की गले मिलती है। सब रो रहे। विक्रान्त समझाने का प्रयास करता है)

धनवन्ती - (चन्दी से गले लग कर रोते हुए) बेटिया घर की लाज रखईयो कोनऊ बात न परन दईयों। आज से विक्रान्त के मम्मी-पाप को अम्मा-बापू समझईयो छोटी-पूरी बातन को हंस के टारईयों। (विक्रान्त को देख के)

धनवन्ती - लला, हमाओ कओ सुनो माफ करईयो। हमाई मोंड़ी की देख-रेख नीकें ढ़ंग से तुमई करईयो। अगर कोनऊ गलती हो जाये तो ऊ कों समझा दियो।

विक्रान्त - अम्मा, जो हो गओ सो हो गओ। तुमे कोनऊ सिकात नई मिल। तुमाई चन्दी को रानी बना के राख है।

(17)

विदाई गीत

बाबुल को अंगना छोड़ के
उड़ गई चिरइया
हिलकारी महातारी भरे
सब बाबुल कां समझाये
धारा बहगई गंग जमुन की
रोके रूकी नईया .... बाबुल
भौजाई सिसकारी भरे
सब भईया कां समझाये
यादे सतावे खिलौनन की
रोके रूकी नईया .... बाबुल
ठांड़ी-ठांड़ी सखियाँ रो रई
गाँव पुरा के समझायें
रोवे यादें कर-कर बतियन की
रोके रूकी नईयाँ
बाबुल को अंगना छोड़ के
उड़ गई चिरइया

(समाप्त)

- मालवीय नगर (बजरिया) कोंच
जिला - जालौन (उ.प्र.) 285205
मो. 09936505493

भझौटो
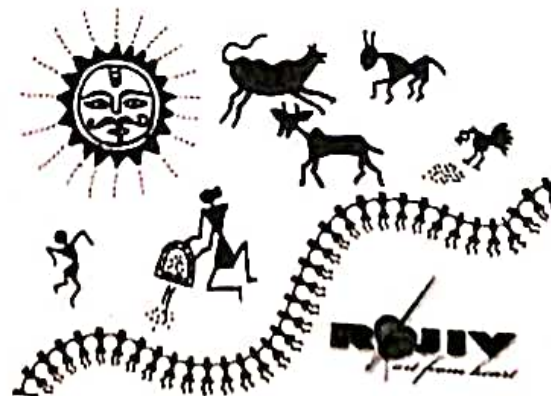
घर के बीच वारे हिस्से खों भझौटो कई जात है। भझौटो घर को प्रमुख हिस्सा रात है जीमें उठबो बैठबो, बोलवो-चताबो इते तक के ईमें सोबो और गान-तान भी होत है। घर के सबई चरित्र इको उपयोग करत है। भझौटे में हम दे रये हैं- कहानियाँ ! अलग अलग रंगवारे किस्से आपको भझौटे में बैठकें सुना रये। इन किस्सों में घर-गृहस्ती, पुरा-पड़ौस, गाँव-वस्ती की चर्चा भी मिल जैहे।

बुन्देली कहानी -

सकलो बैन

- शकूर मुहम्मद

जेठ मास की दुपरिया दिन लौटबे खौं हतो। चिन्तामन की ओरी ततूरी में उपनय पाँव, चिन्तामन खौं ढूड़त भई रमन्ना वारे मनका के कुआ पै पौंची. ओ. चिन्तामन..........। मनईमन कत जाय, लुगराँयदौ ठटरी को बंदो ऊतर नई देत।

इते मनका के कुआ पै चिन्तामन. रतू. भूरा. जुगला और कछू लरका बरिया के पेड़ के नैंचे बैठे दहा पकर खेलत रयँ। चिन्तामन की मताई कौ टेरबौ सुनकें सब सकपका गय फिर सब जनें कानन में खुसर फुसर करन लगे। चिन्तामन ने ओरी की बोली पैचान लई सौ उन सबसें कई कै हमाई न बताइयो और छेवले की आड़ में जा लुको।

ओरी लिगां आ गई और कन लगी कै काय, भइया बेटा हो! तुमने हमाय चिन्तामन खौं देखो, उतई बैठकें डिड़या कै रोन लगी। रोउत रोउत कन लगी कै. जब सें ई के बाप नें आँखें मूँदी तबई सै मुसीवतन ने घेर लऔ। खेत पटिया पैलां सैं बैंक में गानें धरे। सेट साऊकार दोरे पै ठाँड़ो नई होन देत। काँ तक काड़ मूस कें ई की नर कौ वन्दोवस्त करें और फिर सिसकी देकें रोन लगी, दुखयारी जो ठैरी।

मनका पै नई सई गई सो उठकें चिन्तामन की ओरी के लिंगा आकें बोलो- मौंग तो जाओ, काकी! बो तौ सब खौं मालूम है कै कौन तराँ सै तुमाय ऊपर गिरानी आई। अरे, लेवौ देवौ तौ सबखौं करने परत, पै................? कक्का खौं येसौ कदम नई उठाने तो कायसैं कन लगत कें बाप की मरन और काल की परन। सो काकी मन में धीरज धरौ, भगवान चाये तो सब नीनो हुइये उते देर है पै अंधेर नइयाँ। एक ना एक दिना घूरे के सोऊ दिन फिरत, सो काकी छाती पै पथरा धरौ। मनका थैला में सैं गड़ई में पानी ले आओ, लो काकी! पानी पीलो।

काकी ने अपनी धुतिया के छोर सें अंसुआ पौछे, कुल्ला करो और एक घूँट पानी पीकें बोली कै, भइया! आज घर में बरइया भर चून नई तौ। बचे खुचे चून खौ झारफूंक कै बियाई में रोटी पईती, दोऊ मताई बेटा ने खा पीकें, अचै कें पेट में गाँठ बाँद के सो गय ते।

भलो होवे उन पटेलन करीमन चाची कौ जो सबई की मदद के लाने ठाँड़ी रतीं। भुन्सरा सै गइया खौं गैंवड़े नौं हाँक कें लौटी ती. गली में चाची मिल गई. बतकाव होन लगो वे सबकी खबरदबर लयँ रती। मोरे गौं सै जेई गिरानी की बातैं कड़ आँई वे भली आदमी ठैरीं। मोय भीतर बखरी में बुलाओ और पैला भर नाज बोरी में दऔ और बोली कै चिन्तामन की मताई तुम नाई न करियो, जो ले जाओ, नुका फटका कैं पिसवा लो और खाओ पिऔ। करीमन चाची के कँदा सैं लिपट कें खूब रोई, उनने छाती सैं लगा लऔ जैसें मताई बिटिया खौं चिपका लेत।

रोटी पैकें चिन्तामन खौं ढूड़त फिर रई, रात कौ भूँकौ है दिन मराज लौटबे खौं हो गय। मैं तो सब जगाँ ढूड़ आई, तुमाय कुआ की बताउन मिली ती सो चली आई। मनका ने ड़ाड दबा के कई, हऔ-काकी! भुन्सरा तौ आव तो कछू काम काज की कै रऔ तो फिर तनक ठैंर कें चलो गऔ। अब काकी! तुम येसौ करौ, घरैं जाओ एक तौ चिन्तामन घरै पौंच गऔ हुइये नातर पौंचो जात।

मताई के जावे के बाद चिन्तामन छेबले के पेड़े नौ सैं निकरौ और दाँत निपोरन लगो मनका ने पैलाँ तो उये खूब फटकार लगाई, तो सरम नई आरई? ई दुपरिया मैं तुमैं ढूड़त फिर रई और तुम इतै उतै सरतारे बने टेम पास कर रय। तुम तौ अपनौ भाग सराऔ के अबै तुमाई खैर खबर लैबे खौं मताई बैठी। इतै हमाय जीसैं तौ पूछों जीने मताई कौ मौ नई देखो कै मताई कैसी होत और इते मैंने होस नई समार पाऔ तौ कै मताई के बिछरबे सैं हमाय नन्ना हमैं मजधार में छोर कें संग छोर कें चले गय, कन लगत कै जीके पाँव न फटी बिमाई बो का जाने पीर पराई। सो भइया तुम घरै जाओ, मताई खौं ई तराँ सै हैरान न करौ। कछू काम धन्धौं करौ।

चिन्तामन बोलो, मनके दाऊ! अब मैं अपुन खौं का बतायँ, का करैं का न करैं सरपंच कौनऊँ काम काज नई देत, सिकट्री सैं कईती बे तो सरपंच को झूटौ पानी पियें। सरपंच जैसी कत बैसई बे कन लगत। को जाने कौन सी जनम की खुन्नस काड़ रय। हमें तौ जा लगत कै बेई चुनाव की खुन्नस काड़ रय होवें। काय, तुमें पतो नइयाँ? हमाऔ बाप अबै मरबे वारौ थोरी हतो। बौ तो इन सबने सेट साऊकारन खौं उकसाउत

रय, जी सैं बैं झेल नई पाय ओर आज हमें जे दिन देखने पर रय।

दिल्ली गय ते मजूरी के लानें, उतै तौ भौतई जादाँ मुसीबत है, न तो ढंग सै खाबौ पीबौ और न परबौ बैठबो, न कौनऊँ आव आदर। मैं तो जा सोसत कै, अपने असपेर कौ आदमी दौरो-दौरो दिल्ली खौं जा रऔ जैसे उतै सरकार ने कौनऊँ सदावर्त खौल राखो होबे। अपुन खौ तो पतो है कै तेरस की साल रम्पा अपने परवार सैत दिल्ली गऔ तो उतै ईट गिलारे के काम पै बऊ, लरका, सियानी समानी बिटिया, सब खौं न्यारौ न्यारौ काम पै लगाऔ तो उनको सब गुरमाटी भऔतो, कै अपनी जाँग उगारो और अपनई लाजन मरो सो झक मार कैं लौटे पाँव भग आयते, नातर तौ उते लगत तौ कै कौनऊँ सें बिछरत हैं।

सो हमाई तौ कछू समज में नई आउत, ऊपर सैं मताई को संग। जा तौ रई हमाई किसा अब अपुन कछू बताओ अपुन मौसें बड़े हो गाँव परोस में नाव है। अबै तुम घरै जाओ, तुमाई मताई की आत्मा तुमाय लाने बिलखत फिर रई। काल न हुइये अपुन औरें बैठकें कछू सोस विचार करें, कै का कैसो करने? चिन्तामन अपने घरे चलो गऔ।

मनका मौका को फायदा उठावे में कभऊँ चूकत नईं हतो। दूसरे दिना दुपरे इन सबकों कुआ पै जुरासन भऔ, तास पत्ता खेले, संजा नौ हँसी ठल्ला होत रऔ। भटा गकइयाँ की भई सो न्यारी। कन लगत कै खाली दिमाग सैतान कौ घर। झुलपटौ लग गऔ, जे सब जनैं पास में बैठ गय। मनका नें कई कै, भइया हो! गाँव में हमाई भौत बातैं होन लगी जी सैं हमें बदनामी कौ जादाँ डर है, काय सैं ऊसई गाँव में हमाऔ कटना कैसौ नाव है। न हम काऊ सैं कछू लेत न देत फिर न जाने काय आदमी पीट पीछें हमाय घैरा करत। सौ भइया हो, अपनौ अपनौ काम करौ। हमें अपनी बदनामी नई कराने, काल के दिना आदमी जेई कन लगें कै जे नय लरकन खौं बिगारत।

जा सुन कें चिन्तामन की धुक धुकी बड़ गईती, बो मनई मन हैरान होन लगो। मनका सै हिम्मत करकैं कई कै, बड़ेदा! तुमई तौ कै रय ते कछू काम काज की बात, अब आज अपुन जा कन लगे। मनका के मौपे मुस्की आ गई, जा मुस्की झुलपटे में काऊ ने देख नई पाई।

देखौ भइया हो। हम तो सबको भलो चाउत, मान लो हमने तुम सबसें कई कै कुआ में गिर परौ तो का तुम औरें कुआ में गिर परौ, सब जनै एक दूसरे कौ मौ देखन लगे, रत्तू, भूरा, जुगला बोले कै, हऔ भइया, अरे तुम तौ आग में कूदबे की कैओं तौ ऊमें कूद जैय, कुआ का चीज आय।

हाँ! तौ ठीक है, काम कछू जोखम कौ है पै हुसियारी राखने परै, सो कौनऊँ खतरा नइयाँ। मनका बोलो कै हमें भरोसौ कैसें का हुइयै। रत्तू, भूरा, जुगला सब जनै कौल कसमें करन लगे कै हम कोऊ काउ सैं न कैहैं। तो सुनो! सब जनै पास में आ गय; ऊनै फिर चैताओ कै, काऊ खौं सनाकत न हो जावै, नातर अपनौ सब करो कराओ गुरमाटी हो जेय। छिनभर खौं सन्नाटो हो गऔ। चिन्तामन, रत्तू, भूरा जे सब मनई मन सौ सैं कै कौनऊ लाटरी खुलबे बारी है, कै कौनऊ गड़ौ धन काड़नें। सबके दिल धक् धक् कर रयते।

मनका खौं जब पूरौ भरोसौ हो गऔ फिर बोलो! चिरई चुनगुनी के सोऊ कान होत सो तुम जानियों एक जुगाड कौ घंटा भर कौ काम है अपने परोस के गाँव में तुम सबने देखो हुइये, गाँव के टरेटें में कुआ पै बखरी बनी है सो उतै अपुन खौं भंडयाई करबे चलने। काय सैं माते की नातन कौ बियाव है, हमने पतो कर लऔ, ऊकै दोई लरका नैवते देबे रिस्तेदारी मैं गय। अबै ऊघर में भौत माल टाल मिलने। छन भर कौ काम फिर अपने पौ बारा, कै चैनई चैन। अपन सब जनै मजा करबी काऊ खौं कानई कान पतो नई लगनें।

यैं........? सबकै मौं फटे रै गय, न काऊ सै कत बने और न सुनतन सब जनै गुर भरो हंसियां लैकै रै गय। चिन्तामन और रत्तू सुनके घबरा गय, भइया। जो काम हमाय बाप दादन ने नई करो। हमाई तो बसकी नइयाँ। चिन्तामन और रत्तू के मौ हो कैं एक संगै निकरी। पै भूरा, मन्टू, जुगला ने मनका की हाँ में हाँ मिला दई। चिन्तामन गिगयान लगो, रत्तू रोन लगो। भारी देर नो खैचा तानी होत रई, जा देख सून कैं मनका बिलुरन लगो और सोसे कै जा तौ बुरई हो रई कै गइया की गइया जात संगे पगइया जात। मनका नें सोसी कै सीदी उंगरियन घी नई निकरत इनके संगे टेड़ो होने परै फिर कई जाव तुम कैसें जात दोइयन की टाँगे फरसा सैं गूँड़ें देत और ऊ पहार पै जाकें फैंके देत जिते चील कउआ नौंच नौच खालैं और काऊ खौं कानई कान खबर न लगे। सो अब तौ तुमैं हमाई बात मानने आय चाय तुम दस गूड़ के काय न हो जाओ।

चिन्तामन और रत्तू फन पटक कें रै गय वे सोसन लगे कैं अब तौ कुआ में गिर परे सूके कैसें निकरत, मनई मन सोसैं

कै जा तो बेई भई कै जबर मारे और रोन न देय। आखर में इन दोई जन ने मनका के आंगे हतयार डार दय।

मनका बोलो, आज अपने अपने घरें जाऔ, काल राते अपुन सब खौं इतई मिलने, काय सें अबै अंदयारी रात है, मौका अच्छो है। अपनी बातें पक्की हो गई, अब तुम औरें हमाई बात खौं पत्थर की लकीर मानियो। धियान दिइयौ अपनै तन पै सेत उन्ना कोऊ न पैरबे, जब अरोस-परोस में बियाई हो जावे सोते पर जावें, ओई बेरां खेतन की मैंड़न-मैंड़न डेरे दाइने होकें आने। जी सें तुमें कोऊ देख परख न पावे। कुत्तन सें बचबे कै लाने अपने संगे कोरिया लेत आइयो, जीसें मौका परें तो उनताई फैंक दिइयो। मनका के मन गैं तो लगी ती कै आग लगे चाय घुंआ धुँधाय मोरी पलकिया सरगे जाय।

चिन्तामन और रतू कौ मन येई उखराबूड़ी में लगो रऔ कै भगवान का करै उर का न करै, मताई ने दुपरे पूंछी कै का रे चिन्तामन! कछू दुखात पिरात है आज ऊसई रीनौ रीनौ सो लग रऔ। मताई की नजर भौत पारखी होत, ममता ने दुखयारी रग पै हाँत धर दऔ मन में भारी धक्का लगो और ऊखौं लगी कै मताई के गरे सें चिपक कें डिड़या कै रो लेवें, औरी गौखौं ई महापाप से बचालो। मन में सोसी और मन मसोस कें रै गऔ। अब तो महाजार में बिद गयते, निनुरवौ मुस्कल काम हतौ। जबरई की हँसी हँसत भऔ बोलो, नई तौ कछू नई तुमें ऊसई लगो हुइये, कुल्लक रात नो नींद नई आई। आज सपने में नन्ना दिखाने मौखौ भारी डाट रयते कैरय ते कै, बेटा-कछू काम धाम करो। ओरी खौं हैरान न करियो। सो काल भुन्सरा मजूरी के लाने सहर खौं जा रय। मताई खौं झूटी दिलासा दे दई और बात आई गई कर दई। मताई खौं तौ औलाद की बात कौ भरोसौ तौ करने परत।

संजा कें मनका के रमन्ना बारे कुआ पै इन सबकौ जुरासन होन लगो, सब पौंच गय अकेले चिन्तामन खौं झेल हो रईती। मनका और सबई संगी घबराने हते कै अगर चिन्तामन ने अपनी अभर (मन की बात) काऊ कै आंगे खोल दओ तौ कालई हवालात की हवा खाने। वो हाँत में फरसा लंय नाँय सें माँय टेलत रय। येई बीच गउआ के पेड़ की ओट सें चिन्तामन निकरत दिखानौ। मनका फरसा उबार कें परो, मादर................! अबै लौं का करत रऔ। कायरे काऊ सै नाँय की माँय तौ नई करी।

चिन्तामन भीतर बायरे सें भौत डरा गऔ, मताई कौ कौल करो और देर सें आबै की साफ सफाई देन लगो। चिन्तामन ने आज लौ मनका कौ जौ रूप नई देखो तो, गाँव असपेर की जनी मान्स, बाली बच्चा इनके रंग ढंग और बेवार सें इनकौ नाव बाबा धरैंतें। कुआ सें घर और घर सें कुआ, न काऊकी अच्छी कने और न बुरई सुनने। सीदी सादी जिन्दगी जीवो इनको धैय हता। जेई सादगी चिन्तामन खौं नरक में ढकेल ले गई। चिन्तामन मनईमन भौत घबरा गऔ मनका भइया के जे दो बन्नी रूप! लवा फसे तीतर फँसे तुम काँ फँसी बटेर। चिन्तामन की हालत येसई हो गई ती ऊकौ मन मछइया सौ छटपटा रऔ तो।

मनका बोलो - देखो, जैसौ हम बतारय वैसौ करने। अबै सें अब कौनऊँ काऊ कौ नाव नई लेने सब खौ नम्बर सै बुलाने एक, दो, तीन.................... । ईतरा के नाम धर दय। मनका ने अपने कोठा में सें फरसा, कुलाई, लुहाँगी, लट्ठ काड़े और हिसाब किताव सै एक एक कै हाँत में पकरा दय।

मऊवा पै घुआरा बोलन लगो, रात भियाँयादी लगन लगी, दूर खेतन में टीटई टिटयांन लगी, अंदयारों इतनौ कै हाँत खौ हाँत न सुजावे, पेड़ पै बैठी चमगादरें चाँय-चाँय करन लगी जै कुल मिला कें असगुन की निसानी हतीं। मनका खौं छोड़ सबके दिल धड़क रयते। मनका बोलो चलो दबे पाँव सब जने अपने काम के लाने कड़ चलैं। जिते धावा बोलने तो ऊ गाँव खौ बगल में छोड़त भय सीदे रामदीन माते के इते जा पौंचे। कुत्ता भौंकन लगो। पैलाँ तौ जे सब जने सक पका गय फिर हिम्मत बांदी सामू बड़न लगे। मनका चतुर खिलाड़ी ठैरो, अपनें संगे रोटी कौ कोरा लंय तो कुत्ता ताई फैंक दऔ।

कुत्ता के भौंकबे सें रामदीन कक्का की नींद खुल गई उनै कछू अनहौनी की संका भई बे खाट पें परे परे चिल्ला कें बोले को आय रे? भूरा लो-लो ऊड़ छी। भूरा कुत्ता आपे सें बाहर हो गऔ। इन सबकी सिट्टी-बिट्टी गुम गई, घबरा गय। मनका नें हराँ सें सीटी बजाई पूरी गैंग ईके पास में आ गई। अब तो निपटने हतो नातर खबर गाँव लौं पौंची जात।

दो जनन सें कई परदिया नाँक कें घुसौ, चिन्तामन ने दो जनन खौं गैल में लगा दऔ। मनका दुगई में गऔ अंदयारे में आव देखो न ताव, बाँ भर कै दोई हत्तू लुहाँगी रामदीन कक्का की खाट पै दे मारी, बातौ कक्का कै लाने गनीमत रई कै उनै लुहाँगी लगी नई, नातर उनकौ भुसा उतई हो गऔ होतो। वे चिल्ला परे, मर गय। ओ भइया! मैं तो अंदरा आऔ, मोखों

कुन कछू दिखात सुनात। पाँव टूट गऔ, चिल्लान लगे। पौर में भीतर सैं बैड़ा लगो तो जी सै किवार नई खुल पाय।

भूरा और रत्तू परदिया नांक कैं भीतर घुसे, वे घुआ टार कैं भीतर घुसे फिर उननें पौर कौ बैड़ा खोल दऔ जी सै मनका भीतर घुस आऔ और जे सब बाली बच्चन औरत जनी की मारपीट करन लगे। घर में कुहराम मच गऔ सबई जने चिचयान लगे। मनका, रत्तू ने बखरी में टिमटिमात डिब्बी खौं एक फूँक में बुजा दऔ, घर में घुप अंदयारो, अंदयारे में जे तीन जने। मनका ने भीतर बारन सैं कई चौप्प। अगर कौनऊँ ने चींपटा चलाओ, ऊखौ मार डारें। अंदयारे में जे तीनई जने पेटी, जेवर, रूपइया टका टटोलन लगे। भीतर के बाली बच्चा औरतें घबरा गई। इन सब खौं कछू समज में नई आ रईती।

सकलो बिटिया जी कौ बियाव हतो, बेई कछू समजदार और निडर हती। ऊने येई साल 12वीं की परीक्षा दईती। ऊने अपने गुरूवन, मैडमन सैं ऐसी हालत में कैसैं का निपटने आउत इन सबकी नैतिक शिक्षा पाईती। ऊखौं मन में लगौ कै सामू रानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती ठाँड़ी हैं और ऊखौं ललकार रई होवें। अब तौ मरबे जीवे कौ समइया आ गऔ, मताई बेर-बेर जनम थोरी देत, एक दिना कभऊँ मरनें। हिम्मत करौ सो हाँती बाँदौ। सो, सकलो ने मन में पक्कौ कर लऔ, कै हमई खौं कछू करने आय और जादा सोसबे कौ टेम नइयाँ।

सकलो घर की एक कोनियाँ में ठाँड़ी- ठाँड़ी अँसुआ टपकात घर गिरस्ती उजरत देख रईती। काल कैसो का हुइये। येई बीचाँ सकलो की समज में आई कै ऊके कोठा में कौनऊ घुस आओ और कुठिया, डारियन तांई जा रऔ। सकलो ने मौका ताड़ो ऊमें न जाने काँ सैं इत्ती हिम्मत आ गई और फुर्ती सैं आव देखौ और न ताव पिछाई सैं भडया खौं खौंची डार कैं पकर लऔ। रत्तू खौ ई की रत्ती भर आसंका नई हती कै ऊकै ऊपर सोऊ बार हो जेय। बो घबरा गऔ, रत्तू खौं ऊनें पकरै पकरैं दो बेर दीवार सैं दे मारो। रत्तू के मौं सैं चीख निकर गई।

मनका ने सुनी अंदयारे में लुहाँगी घुमाई ऊनै सोसी कै होय न होय घर मैं कौनऊ मान्स है जीने मौका देख कै गसका कैं बार कर दऔ। हड़बड़नो भूरा मनका के लिंगा आऔ मनका ने सोसी होय न होय घर को गुन्सेलू आय ऊने भूरा के कँदा पै लुहाँगी दे मारी, अरे राम! की बोली सुना परी। मनका कौ माथौ ठनको कै जो तौ भूरा आय। बिनास कालै विपरीत बुद्धि, मनका के न चाउत भय उलटे पाँसे पर गय। अब प्रान बचावे में अपनी भलाई समजी, मनका पौर में होकैं भग गऔ और बायरै सीदौ खोर में पौंचो।

चिन्तामन, मन्टू गाँव की खोर में लगेते, मनका खौ भगतन देखो, कछू बुरई भियाँपी सो बे उताई सैं जा मेड़ और बा मेड़ भग गय।

येई बीचाँ रामदीन पटेल कक्का हराँ हराँ गाँव ताई सरक गय उनने गाँव में पौंच कैं अपने घर में बदमासन के घुसबे की बात बताई संगे जा सोऊ बताई के सब डण्डा, लठ्ठ बारे हैं। गाँव के आठ दस आदमी तैयार भय और हिम्मत बाँद कैं रामदीन पटेल के घर तांई दौर परे, संगे चिल्लात जावै कै घबराइयों नई! हम आ रय।

पौ फटबे बारी हती गाँव से भौत आदमी जुरन लगे, खेतन खेतन टोर्चे जलन लगीं। अकेलैं सब जने डराने और ठक्कयाने हते, येसौ न होवें कौनऊँ कट्टा, बन्दूक लय होवे। हराँ हराँ पाँव दाव कै दो चार मान्स बाखर के लिंगा पौंचे, यैरो लऔ कछू येरो नई मिलो। भीतर बाखर सैं आदमी के कूलबे की आवाज सुना परी, जब सबने नौने सै जा समज लई कै अब कौऊ नइयाँ। भीतर सैं सकलो की आवाज सुना परी कै, भीतर आ जाओ, बदमास सब भग गय, अब कौऊ नइयाँ।

भीतर जाकें का देखत कै एक आदमी मौ पै ढट्‌टी बाँदे कूल रऔ। दूसरौ काँ है सकलो ने कई कै जौ है, सकलो ने रत्तू की बा हालत करी जैसैं बिलइया चौंखरे खौं पकर कै लथोरत बेई गत रत्तू की भई। रत्तू गैर होस हो गऔ तो, सकलो खौ कछू नई मिलौ सौ धुतिया के एक छोर सै नौने सै पाँव बाँदे तौ दूसरे छोर सैं पछाई करकैं ऊके हाँत बाँद दय।

तीन चार जनन ने घर खौं टोर्च के उजयारे में ठाट बड़ेरौ, दुगईए मड़ा, कुठिया, डारिया नौनैं सैं छान मारी, जब सब जनन खौ तसल्ली हो गई कै अब घर में कौनऊ बदमास लुकौ नइयाँ फिर जे सब बायरैं चारई तरप कड़े, कुआ, मेड़ बंदिया, पेड़न पै टोर्च डारी। बदमासन कौ कौनऊँ नामौ निसान नई मिल रऔ तो वे प्रान बचाकैं भग गयते।

भूरा घायल हतो, रत्तू खौ होस आ गऔ, सबनै इनकी ढट्टी खुलबाई इनै पैचान लऔ पैला तो सबने इनैं दुतकारौ, कायरे नीच हो तुमैं सरम नई आई घरई में चोट कर बैठे तुमें मालूम हतो कै बिटिया पीरे हाँत करें हाँत जोरै बैठी तुमें लाज नई आई। डूब मरो कऊँ चूल्लू भर पानी में तुमाव इन गुनन तिरन तारन कऊँ नई होने। अब अपनी करनी कौ फल भुगतौ।

गाँव वारन ने इन दोई बदमासन खौ पकरो और बायरै ले आय और नीम के पेड़ सैं बाँद दऔ। जा खबर आग की नाई तनक झेल में गाँव तो गाँव असपेर में फैल गई जी सैं जनी मान्सन कौ तनक झेल में हजम्मा जुर गऔ। गाँव कौ चौकीदार आ गऔ। पुलिस खौ खबर पठे दई न्यारी। जे दोई जनैं उंगरियाँ मौंमें डार डार कें दया की भीक माँग रयते, सब कोऊ इनकी जा करनी देख घिरना कर रयते।

चारई तरफ जनी मान्स सकलो बेन की तारीप के पुल बाँद रयते आज ई बिटिया ने अपने कुटुम्ब की लाज बचा लई। गाँव असपेर में बाप मताई कौ नाव ऊँचौ कर दऔ। गाँव की औरतैं, बहुएँ, बिटियाँ सकलो खौं मूँड सै लैकें पावन तक टटोल कैं पूछें काय, बेटा! तुमें कऊँ लगी तो नइयाँ। सकलो ने दमंगी सैं कई कै हमैं कछू नई भऔ, हम तो भले चंगे हैं। काय न कती ऊनै ऐसौ काम करो तो।

कछू नये लरका रत्तू, भूरा खौं जूता, चप्पल सैं मारन लगे। सकलो पै देखो नई गऔ सो चिल्लानी, खबरदार। मारने पीटने नइयाँ। अपनौ काम हतो सो अपुन नें कर दऔ आंगे को काम पुलिस और कानून कौ आय सो उनें आके करन दो। अपुन खौं कानून खौं अपने हाँत में नई लेंने।

तनक झेल में दरोगा जी चार पइया बारी बाड़ी सैं अपने फौज फाटा के संगे आ गय। मौका मौयायना करौ, कलम बंद बियान भय। दरोगा जी ने सकलो के सर पै दोई हाँत धरे, "शावाश बेटी"! आज तुमने अपने साहस और निडरता का परिचय देते हुए एक बार फिर से देश की बेटियों का नाम ऊँचा किया है, हमें तुम पर गर्व है। दरोगा जी बोले, मुझे तुम्हारी वीरता पर सैल्यूट करने का मन हो रहा है, उन्होंने खड़े होकर सकलो बेटी को सैल्यूट किया। सकलो बेटी दरोगा जी कौ मौ देखत रै गई।

गाँव के सबई जनी मान्स एक दूसरे कौ मौ देख रय ते। दरोगा जी ने रत्तू और भूरा खौ गथयाऔ (गिरफ्तार) और रामदीन पटेल के इते दो जवान गय हतयार के तैनात करकैं अपनी गाड़ी में बैठ कैं थाने चले गय।

दूसरे दिना मनका, चिन्तामन, जुगला, गन्दू सबरे डकैत साथियन की पकड़ हो गई। इन सबखौं जेल भिजवा दऔ। चिन्तामन, रत्तू डिड़यात भय, ओरी बचाले! मनका खौं कोसत भय अपनी करनी को फल भुतगवे के लाने चले गय। येई सैं के जा कानात है कै लरका बिगरै राँड कौ और बिटिया बिगरै रडुआ की।

दूसरे दिना दुपरै सकलो की ससुरार सैं चार, छः जनें आ धमके। रामदीन कक्का उनके लरका दुगई में बैठ कैं बतकाव करन लगे। होबे बारे नतेत हते सो खूब आदर सत्कार भऔ। टीका कै चार दिना रै गयते। सकलो के ससुर ने ठाँड़े हो कें कई कै देखो समदी! हमें टेम नइया, हमें घरै लौटने देस काल समइया नौनो नइया सो हम चाउत कै अपनौ कछू बतकाऔ हो जावे, जी के लाने हम इते आय है।

रामदीन पटेल ने सुनी सो उनके प्रान मो हो कै आ गय, लरका घुट मुटया गय इन सबके मन में आई कै होय न होय, ई डकैती में सकलो की सुनी हुइये सो जे लरका बारे जो बियाव टोरबे आ गय।

समदी ने रामदीन पटेल खौं छाती सैं लगा लऔ और बोले, पटेल! घबराऔ नई हम तौ आज भौत खुस है आज हमाय घर में सबने मिलकैं एक राय लई कै जो अपन की पक्यात में नगदी दान दहेज की बातें भइती, बो अब हमें कछू नई चाने। तुम तौ अपनी बिटिया खौ पीरी फरिया में उड़ा के बिदा करियो हमें भौत खुशी हुइये। हमें तो सकलो बिटिया मिल रई सो सबरी दौलत मिल रई। अब हमें खाट पिड़ी तक नई चाने। रई बरात की सों तुमाये दोरे कौ सवाऔ रूप राखौ जे। तुमें कौनऊ करजा बोज नई उठाने। रामदीन पटेल और उनके लरका समदी के पाउन में जा गिरे। समदी ने उने उठा कै छाती सैं लगा लऔ। भीतर सैं सकलो बेन के सिसकवे की आवाज आ रईती।

सकलो के बियाव में नाते रिस्तेदार, गाँव असपेर के जनी मान्स, दरोगा जी और हाकम अफसर आय इन सबने हँसी खुशी मिल जुल कैं बियाव करो। सकलो बेन अपनी ससुरार चली गई जितै ऊँखौं भारी मान सम्मान और प्यार मिलो।

चिन्तामन की मताई ने दिन रात रो रो के अपने बुरय हाल कर लय, दुखयारी पागल हो गई, गणतंत्र दिवस पै राजधानी सैं सरकार सै सकलो और पूरे परवार कौ बुलावौ आऔ। सरकार ने सकलो बेन कौ सम्मान करो। इक्यावन हजार नगद और सनद दई संगे संगे सरकारी नौकरी देवे की बात कई गई। चाराई तरप खुसाली हती।

कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
मो. 7898640061

कठौता बाबा

– श्रीमती लक्ष्मी शर्मा

दिवारी को त्यौहार सबरे मना चुके हते। पूरो गांव लिपो पुतो साफ सुथरो हो रओ हतो। सब ओरें तनक फुरसते हो गये हते। सब तरफ धरम की चर्चा होत रत। कछु दिनन से गांव में एक कठौता बाबा आये हैं।

एक दिन मम्मा ने पूंछी – "काय छुट्टन जा सबरी पलटन कहां खों जा रई है? सबरे भगे चले जा रये है।"

छुट्टन ने कही-"मम्मा आप खों नई मालुम अपने गांव में कठौता बाबा आये है।"

मम्मा बोले – "कठौता बाबा जे कैसे बाबा है?"

छुट्टन ने समझाओ – "मम्मा, जे बाबा कहत हैं के हमासे जो कठौता भगवान श्रीराम जी के जमाने को केवट को कठौता है। केवट के बाद जो गंगामैया की रेता मे दब गओ रहो। गोरी भगवान में भक्ति देख खें एक दिना गंगा मैया ने मोय सपने में कही के-"केवट कों कठौता हमारी रेता में दबो है, सो तुम निकार लो। तुमाई भक्ति देख के हम प्रिसन्न हैं। हम भौत समय लो रेता ढूंढत रये फिर जा के जो परसाद गंगा मैया ने हमें दओ।"

मम्मा हँसे – "जे सबरी बातें बाबा की झूठी हैं। जनता को उल्लू बनाउत है।"

इत्ते में माई आ गई और कन लगी-"काय छुट्टन भैया तुम बाबा जी की कथा सुनवे गये हते का?"

"मामी, हम तो तनक देर के लाने गये हते, हमें कहां फुरसत है, वहू जाती है तुम्हारी।"

माई बोलीं-"हम सोई जेहें सुनवे के लाने। धरम की चर्चा सुन हैं।"

मम्मा बोले-"कहां बहुअन, बिटियन को ले कें जे हो तुम? ऐसे ढोंगी बाबा हम जानत है, इनके लच्छन ! जनता को जोड़ कें बहुअन और सयानी बिटियन पे नजर गड़ाये रहत है।"

माई कन लगीं-"तुम्हें तो सबरे बाबा वैरागी ढोंगी लगत है।"

मम्मा बोले-"कायखों झूठी बोलती भनेज सें। हमें सबरे बाबा बैरागी काय कों ढोंगी लग हैं। जोन हुईयें बेई तो लग हैं। परकी सार बिन्द्रावन से महाराज जी आये हते। कितनी अच्छी रासलीला होत रई। महाराज जी भागवत कथा कहत रये। कैसो रस बरसत रहो। पूरे गांव और आस पास के गांव में आनंद और धरम की ध्वजा फहरात रई। हमाओ तो उते से आवे को मनई ने होत हतो। जबै तो तुम जात ने हतीं और हम तुम ओरन कों ढेल ढेल कें भेजत हते।"

माई कन लगी-"अब तुम बताओं छुट्टन दिन में भागवत कथा सुनवे जाओ और राते रासलीला देखन जाओ। अब कबै लो लोग लरकन के लाने रोटी बने और फिर मोड़ी मोड़न कों खाने सोने? घर गिरस्ती के सौ काम। ऐई सें उते जावे नई निकर पात हते। ऐसेई के लाने तुमाये मम्मा हम पे व्यंग कस रये हैं काल तो हम जेहें कठौता बाबा को देखवे सुनवे के लाने।"

मम्मा ने कही – "हौ, जाइयो और तुमई अकेली जाने। उते जाओ सो सबरो गानो गुरिया उतार के जाईयो समझी।"

माई प्रवचन सुनवे के लाने गई। कोउ ने कही बड़े चमत्कारी बाबा है। सबके मन की पूरी करत है। भगवान रामजी और गंगामैया के बड़े भगत है। उनपे बड़ी श्रद्धा भक्ति है। माई को कथा में कछु गहराई ने लगी सो उनने बाबाजू से पूंछी – "बाबाजू कौन गांव से आये हो? तुमाओ किते आश्रम कुटिया है?"

बाबा बोले-"अरे माई, हम कौन एक जगह रहत है, हम तो बाबा सन्यासी हैं। रमता जोगी बहता पानी आज इते हैं, कल कहूँ, दूसरे ठौर पे। हम कौन घर गिरस्ती बारे हैं, के घर दोर गांव से बंधे रहें।"

माई सुन कें चुप हो गई और सोचन लगीं ई बाबाकी बातन सें कौन जीत पाउंने सो चुपई रहो। बाबाजी के चेला कहन लगे- "कोउ को कछु परेशानी होय जैसे के बीमारी ठीक ने हो रई होय, बिटिया को ब्याओ ने हो रओ होय, कचेरी में मुकदमा चल रओ होय, घर बंटवारो ने हो रये होंय, कर्जा ने पट पा रओ होये तो बाबा जी सबकी समस्या दूर करत है। सबके मन की इच्छा पूरी करत हैं।"

सुनताई से सबके कान खड़े हो गये। सबको अपनी

अपनी समस्या याद आउन लगी। दो चार जने हाथ जोड़ के ठाड़ें हो गये। चेला ने की - ''काय भैया का बात है, काय ठांड़े हो गये।''

लल्लन भैया बोले - ''हमारी परेशानी हम बाबाजू को बताउन चाहत हैं।''

चेला बोलो - ''काल सबेरे आइयो और बाबाजी को अपनी परेशानी सुनाइयों। वे सब ठीक कर देहें। जी को जोन कछु पूंछने होय सो सबेरे की टेम आओ।''

लल्लन बोले - ''सबेरे के टेम में बड़ो काम रहत है। काम निपटा कें दुपहरिया में आ जावे।''

चेला बोलो - ''कैसी बात कर रये हो भैया तुम। सबेरे की टेम बाबाजू पूजा पाठ करके कठौता में गंगा मैया को आवाहन करत हैं, कठौता में गंगा जल भर जात है। जबई बाबा सबकी समस्या दूर करत हैं।''

बाबाजी के कछु भगत हते, सो बे बातउन लगे - ''हम बड़े परेशान हतें, हमाई समस्या बाबाजी ने पन्द्रा दिना में खतम कर दई।'' एक और बोले - ''भैया हमओ मुकदमा चल रओ हतो, बाबाजू कों जब बताओ सो उनने महिना भर में हमाओ मुकदमा जिता दओ। बड़े ऊँचे ज्ञानी चमत्कारी बाबा हैं।'' लोग बड़ी बढ़ चढ़ के बातें कर रये हते। माई सोचती गुनती घरे आ आई। सबने पूंछी - ''कैसी कथा करत है बाबाजू?''

माई ने समझाओ - ''अरे कथा का सबई अच्छीं करत है, पर जे बाबाजू गांव बारन की परेशानी सोई दूर करत हैं। अपने खेत के मुकदमा के लाने उनसे बात करो चइये। कित्ते साल हो गये अबै लो कछु नई भओ। पेशी पे पेशी होती रहत है। बाबाजू महीना भर में फैसला करा देहें। उते केउ जने बता रये हते। तुम जान के बात करो।''

मम्मा गुर्राने - ''हौ, अब कोर्ट कचहरी का फैसला जे बाबा कर हैं। हमें नई जाने कहूँ, जे सब बनावटी बाबा होत हैं। देखें लेत गांव वारन कों कित्तो उद्घार करत हैं।''

माई रिसा कें बोलीं - ''हमें का मुकदमा में रुपया पैसा समओ जात है और परेशानी अलग।''

मम्मर बोले - ''तुम्हें जाने होय सो जाओ, अपने मन कों धन कर आओ।''

रोज सेबेरे की टेम गांव बारे अपनों काम छोड़कें बाबाजू के इते आन के बैठ जावें।

बाबाजी के चेला सब काम संभारत हते। चेला एक एक कों बुलात जावें और बाबाजी के पास भेजत जावें। बाबाजी समस्या सुन कें फिर बतावें के पूजा लग है, के ताबीज लग है, के बड़ी पूजा लग है, कित्ते रुपैया लग हैं।

लल्लन भैया तों भारी उतावले हते सो पेलेउं आ गये। अपनी समस्या कही के बाबाजू ब्याओं कों दस बरस हो गये अब लों संतान नई भई। आपकी कृपा हो जाती तो हमाय कछु मोड़ा मोड़ी हो जातो।''

बाबाजी बोले - ''तुमने डाक्टर कों दिखाओ का?''

लल्लन ने कही - ''बाबाजी दिखाओ तो हतो पे कछु आराम ने पड़ो।''

बाबाजू ने कही- ''अरे डाक्टर का कर हैं, वे तो तुमई में नुक्स बता देहें। हम तुमाय लाने जड़ी बूटी से दवाई तैयार कर हैं, तुम्हें संतान हो कें रे है जा हमारी गारंटी है।''

बाबाजू ने कठौता को गंगा जल कहकें छिड़के और कही बड़ी पूजा लग है और दवाई इत्ते रुपैया लग हैं। तुमाई इछा पूरी हुईये हमाई पूजा सें। तुम बाप बन हो, तुम्हें संतान को सुख मिल है। काल रुपैया लेकें आ जईयो, हम पूजा शुरु कर रये हैं।''

दूसरे तीसरे चौथें को बुलाकें कोउं से कही ताबीज लग है, कोउं से कही पूजा लग है और कोऊ के पास रुपैया ने होय तो सोने चांदी के जेबर जातों दे सकत हो। माई को बुलाओ। मामी बाबाजू के पास गई।

माई बोली - ''बाबाजू खेत को मुकदमा दस बरस से चल रओ है, अबै लों कछु निपटारा नई भओ। जीत जाते तो अच्छो होतो। जेई समस्या प्रान खांय है। आप मुकदमा जितवा दो।''

बाबाजू बोले - माई जातो बड़ी विकट समस्या है। तुमारे घर बारे संगे नई आयें। माई बोली - उन्हें टेम नईयां सो नई आये।

बाबाजू बोले - ''माई बड़ी पूजा लग है सो रुपैया ज्यादा लग हैं। मुकदमा तुम्हई कों जिता हैं, तुम्हें मंजूर हो तो हम पूजा शुरु कर देवें।''

माई ने पूंछी - ''कित्ते दिनन में मुकदमा जीत जेहें।''

बाबाजू ने बताई - ''अब जा तो कोर्ट कचैहरी की बात है सो दो तीन महिना तो लग जेहें। काम पूरो हो जेहे तुमाओ जा

हमाई गांरटी है। तुम पे रुपैया ने होय तो कछु सोने की चीज दे सकत हो। हमाई पूजा से केस जीत हो जो पक्को है। हमने कुटकी गांव के चार जनों के मुकदमा दो महिना में जिताये हैं। जा है के उनने रुपैया देबे मे कमी नई राखी।''

माई सकपका गई। मम्मा ने कही थी गोना गुरिया उतार के जाने सो माई बोली- ''बाबाजू हमपे ज्यादा रुपैया नईयां, जें सौ रुपैया है सो धर लो।''

बाबाजू दुखी होके बोले - ''माई, सौ रुपैया में का होत है। पूजा में बहोत सामान लगत है। इत्ते में तो कछु ना आहे, तुम चाहो तो जा मुंदरी के कांठी दे दो। घर में तो तुमाये पास है रुपैया। कोउ सें कछु ने कइयो, चुपचाप लान कें दे दो। तुमाय पति बड़े तेज सुभाव के हैं, उन पे बड़ी बिपदा आन बारी है और उनके लाने जान को खतरा है। तुमाई समस्या को हम जल्दी निपटारो कर देहें।''

माई पांव कें बायरे निकर आई। घरे आई तो मन में सोच विचार करत रहीं का करें? का रुपैया चुपचाप दे आवें के नें देवें। इत्ते में छुट्टन आ अये। मम्मा घरे ने हते।

छुट्टन बोले - ''काय माई हो आई, बाबाजू कें इते।''

माई बोली - ''छुट्टन भैया तुमाई बहू तो उते ने दिखानी?

छुट्टन ने कही - ''तुमाई बहू कहत है के कठौता बाबा तो ऊंसई है, कथा इच्छी नई करत हैं। सो बा अब नई जात है।''

माई धीरे से बोलीं - ''छुट्टन भैया तुम जा बताओ जे बाबा सबकी समस्या सुनत है तो का सही में सबकी परेशानी दूर करत हैं। गांव के भौत जने अपनी अपनी परेशानी के लाने गये हते।''

छुट्टन ने कही - ''माई तुम अपनी कहो, तुमने अपनी का समस्या बताइ और बाबा ने का कही।''

माई बोलीं - ''भैया हम तो बड़े पशोपेश में पड़ गये हैं। हमने मुकदमा की परेशानी बताई सो बाबाजू कन लगे के ज्यादा रुपैया लग है, काय सें के बड़ी पूजा लग है, पे हम मुकदमा जिताबे की गांरटी देत हैं और बे कहत हते तुमाये पति भारी तेज स्वभाव के हैं। उन पे बड़ी विपदा आन बारी है, जान को खतरा है। सो हमसब कछू शांत कर देहें। घरे धरे रुपैया और जेवरात कों ले आईयो। अब तुम बताओ हम का करें?''

छुट्टन बोले - ''माई, बाबा के लाने दे आओ रुपैया और कछु जेबर सोई दे आओ।''

माई घबड़ाती सी बोलीं - ''तुमाये मम्मा तो हमाय प्राण ले लेहें। अगर उन्हें पता चल गओ तो तुम का समझत हो।''

छुट्टन फटकारत बोले - ''माई, तुम ऐसे मूरख जैसे काम करहों तो का मम्मा तुम्हें स्याबासी देहें। तुम पे निछावर हों जेहे के तुमने बड़ो अच्छो काम रके है।''

''हाँ, छुट्टन भैया तुम सांची कह रये हो। कहूँ हमने रुपैया पैसा के जेवर कों इते उसे करे तो तुमाये मम्मा घर में ने घुसन देहें। अच्छी करी तुमने हमें जा मुसीबत से बचा लओ।''

छुट्टन ने समझाओ - ''अब माई तुम खुदई कुंआ में गिर हो तो कोउ का कर है। तुम बड़ी हों, कायकों दूसरन की बातों में आउती हों। समझदारी से काम करो।''

माई कन लगी- ''अब हम ने जेहें ऊ बाबा के इते।''

''माई सच्ची कह रई हो के काल कठौता बाबा को रुपैया देबे जा हों।''

छुट्टन बोले चलो अच्छी बात है, लुटिया डुबाते से बच गं, नई तो मम्मा तुमाई और ऊ कठौता बाबा की अच्छी खबर लेते।''

इत्ते में मम्मा आ गये। माई कों देख कें छुट्टन से बोले- ''काय छुट्टन, माई भनेंज का सला कर रये। कठौता बाबा ने तुमाई माई सें कित्ते रुपैया पैसा मांगे हैं। ऊ ने कई हुइये तुमाओ आदमी तो मूरख है तुम बड़ी चतुर हो। कल रुपैया ले कें आ जाने हमसब ठीक कर देहें।''

माई सन्नाटे में आ गई और बोली- ''हौ, तुम्हें तो सब बात हंसी मसखरी लगत हैं।

बाबा कायखों तुम्हे मूरख कें हैं।''

मामा ने कही - ''हम ऐसे बाबा बैरागी कों खूब जानत हैं। अब हम गांव बारन को समझावें तो वे हमई कों दोष देहें और कें हैं के जे हमाओ काम नई होन दे रये।''

माई फि बाबाजू के इते नई गई जान गई मम्मा सबरी खबर राख हैं। कायकों आफत मोल लेवें।

गांव के दो चार जनों के छोटे छोटे काम उनकी भागदौड़ से हो गये थे और बे जानें के बाबाजी ने करे हैं। सो सब जनों में ई की चर्चा हती के रघ्घू पटैल की भैंस ठीक हो गई।

रामकुमार की मताई को बुखार ठीक हो गओ। मोहन चौधरी की बिटिया कों सासरे बारे ल्वा ले गये। इन बातन कों

सुन के कठोता बाबा के चेला और जोश में आ गये और कन लगे- "बाबाजू कछु दिन और हैं गांव में, फिर हमें दूसरे गांव के सेठ के इते जाने हैं। सेठ ने खबर धराई है जल्दी से जल्दी हमाये गांव में पधारो।"

चेला हरें गांव बारन पे जाल बिछात रहे। गांव के और दस बीस जनन ने अपनी अपनी परेशान बताई और रुपैया दये। सब मनई मन बड़ें खुश सबरीं परेशानी दूर भई जाती हैं। सबको दुख दरिद्दर चले जेहें।

दो दिनां के बाद कठौता बाबा और चेला चाँटी सबकों रुपैया, सोना, चांदी को जेवर लेकें चम्पत हो गये। कछु दिन फिर महिना निकर गओ, कोउ को कछु काम ने भओ। धीरे धीरें सब दुखी होन लगे। और अपने अपने रुपैया और जेवर कों बखान करने लगे। कोउ ने कही हमने इत्ते रुपैया दये, कोउ न कही हम पे नगद रुपैया ने हते सो हमने असल सोने की मुंदरी दई।

बूढ़ी काकी कन लगी - "अरे भैया, मोरे तो करम फूट गये, मैंने तो चाँदी के चूरा दे दये नातन के ब्याओ के लानें, ऊ बाबा की नाष होय, ठठरी बंध जावे सत्यानासी की।"

जब मम्मा ने सबकी बातें सुनी सो खूब हँसे और कहन लगे - "जिनके काम तुम कहत हो बाबा ने पूरे करे तो बे तो होनई हते। भैंस को दवाई दई सो बा ठीक हो गई। बिटिया के सासरे बारन को समझाओ बुझाओ सो बे ओरें ल्वा ले गये। अब जे तो हमाय रोज के काम हैं, कबहूँ मताई बीमार कबहूँ मोड़ा मोड़ी बीमार। अब ई में बाबा ने का कर दओ सो तुम ओरें रुपैया देत फिरे।

अब काय खों रो रये सबरे मूरख। जब ने सांची समझी के जो ढोंगी बाबा है। हमने तो जब कही हती के जो कठौता बाबा ठगुआ बाबा है, ई की बातन में न आइयो, पे सबने सोची के जे हमाय काम में विघन ने डार देवें सो सबरे मसकई मसकई आन कें खूब रुपैया देत रहे। अब तो बो तुम्हें लूट कें चलो गओ।"

लल्लन भैया बोले - "दादा ऊ कठौता बाबा ने और ऊ के चेलों ने ऐसो जाल बिछाव कें हम ओरें उनकी बातन में फंसत चले गये।"

मम्मा ने कही - "काय लल्लन तुम्हें जा समझ ने आई के भगवान रामचंद्रजू के जमाने के केवट को कठौता ई बाबा के पास कहां से आ गओ सही सलामत, इत्ते हजार साल पुरानों। वे ओरें मूरख बनाउत रहे और तुम ओरें बनत रहे। अब कोउ का करें, ऊ बेराती तुम्हें हमाई बात करई लग रई हती। अब जो भओ सो भओ आगे के लाने अगर अपनों भलो चाहत हो तो जा सीख याद रखियो।

1020, शक्तिनगर
गुप्तेश्वर रोड, जबलपुर
0761-4010300
मो. 9174532218

बूढ़ा पेड़

– दिनेश चन्द्र दुबे

बकौल बंगले के मालिक की पत्नि के, उसमें जड़ो तक पूरी तरह दीमक लग गई थी। अत: सिवाय उसे काटने के कोई और विकल्प नही बचा था। दीमक लगने के पहिले ताक उसकी जड़े सौ वर्षों में पूरे लान में इस कदर फै ल गई थी कि कही कुछ भी प्लान्ट करने के लिये जमीन खोदने पर उसकी पतली पतली जड़े उसके मूल स्थान से कई कई गज दूर तक निकल पड़ती थी। माली कहता था "साहब यहाँ कुछ नहीं जामेगा। सारा पानी तो इसकी जड़े पी जाती है। इसलिये कई बार सब्जियाँ बोई, अन्य फलों की पोध लगाई पर पनपी कोई नही है।

फिर धीरे-धीरे एक और नुकसान होना साफ महसूस किया जाने लगा था। उसकी जड़ों की दीमक गाहे वेगाहे आसपास के लान के खूबसूरत पेड़ पौधों ओर वृक्षों को भी प्रभावित करने लगी थी, फल के अंतत: उसे जड़ो समेत कटवा डालना ही मालकिन ने तय किया था।

इस बंगले में इन दिनों जो जिला जज रह रहे थें वे केवल साहब और मेम साहब थे। बच्चियों का व्याह हो गया था। एक ही लड़का था। विदेश में नौकरी करता था और साल दो साल में कभी कवार आता और जाता था। खूबसूरत लाने में, उस पूरी तरह सूख चुके नीम के मोटे ताने का अकारण खड़ा देख, वह भी मां से केवल एक ही रट लगाता,

मम्मी क्या आप भी पापा की तरह हो गई है। इसे कटवा क्यों नहीं देती। आप क्या पापा को इतना भी नही समझा पाती है हम कब तक इस निरर्थक बूढ़ी चीज को अकारण ढ़ोते रहेंगें। अब की बार जब में आऊ तो इसकी जगह लान के बीचोबीच बढ़िया चबूतरा बना हुआ मिलना चाहिऐ। पापा न माने तो उनके कोर्ट जाने के बाद, माली से कहकर इसे कटा दिया जायेगा। और उन्होंने वही किया था।

लड़का इग्लैण्ड लौट गया था। लड़कियां ससुराल चली गई थी। ऐसे में घर एक दम खाली हो गया था। कई दिनों तक मिसेज वर्मा खुद को बहलाती रही थी। पर सभी काम भी निपट गये तो वे किसी अजीब भयसे भर गई रहती। क्या पता वर्मा साहब तहसीलों में पदस्थ मजिस्ट्रेटों का वार्षिक निरीक्षण निपटाकर दौरे से लौटे तो उन्हे उनका यह निर्णय आहत करे जो उन्होंने उनकी अनुपस्थिति में पुत्र के विशेष आग्रह पर लिया था। जिस दिन वर्मा साहब की कार बाहर निकली थी उसी दिन उन्होंने पी.डब्ल्यू.डी को जिसका यह बंगला था, फोन पर आदेशित कर दिया था कि वह नीम का सूखा पेड़ काट दिया जाये। तुरन्त ढेरों कर्मचारी हाजिर हो गये थे। मजबूत तने जिस तरफ गिरे इसके लिये तार से एक तरफ कसाई की गई फिर कुल्हाड़ी लेकर खोखलें हो गये स्थान की जगह पर वार करना शुरू करने के पहले मजदूर यह आगाह करने मिसेज वर्मा के पास आये कि जब तक यह गिर न जाये तब तक आप बाहर न आयें। वजनदार, मोटा पुराना पेड़ है पता नही किधर जा गिरे।

बंगले के बाहर प्लास्टिक की हरी चादरों का एक खूबसूरत शेड बनाया गया था। सरकारी गाड़ी रखने के लिये। साहब की व्यक्तिगत कार पहले से बने गैरिज में रखी रहती थी। इस वक्त गैरिज खाली था। मिसेज वर्मा ने निर्देश दिया कि किसी भी हालत में यह जरूर ध्यान रखा जाये। कि शेड को कोई नुकसान न हो।

और आखिर कई मजदूरों के दिन भर के प्रयास के बाद, अन्तत: नीम धरासाई हो गया था। कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ था। नीम शेड से कुछ दूर गिरा था। केवल कुछ गमले, कुछ खूबसूरत से कतारबद्ध पौधे पर दबे थे। माली का कहना था कि वे कूड़ा करकट हटाने के बाद दो चार दिन की देखभाल के बाद फिर यथावत हो जायेगे।

वर्मा को गये चार दिन हो गये थ। उनके जाने के दूसरे दिन ही बच्चों के रिजर्वेशन होने से वे भी चले गये थे। अत: वर्मा साहब की गाड़ी के हार्न की आवाज सुनकर मसेज वर्मा चपरासी को चाय बाहर के वरामदे में ही लाने के लिये कहकर बाहर की ओर भागी थी। तब तक होमगार्ड वाला द्वार खोल चुका था और लालबत्ती वाली एम्वैसडर कार भीतर की ओर बढ़ रही थी। वर्मा जी कार से उतरे थे पलभर उन्होंने शेड के पास पड़े वृक्ष के मोटे तने को धराशायी पड़ा देखा था। मिसेज वर्मा वरामदे के सोफे पर आकर बैठी ही थी कि किचिन में

काम करने वाला चपरासी चाय की टेऊलिये पीछे-पीछे आ गया था। कार से उतरा चपरासी कोर्ट का काला वक्स, फाईलो के पुलिंदे उतार कर ऑफिस में रखने में लगा था। पर वर्मा जी को पता नही क्या हुआ था। रोज की तरह वरामदे में न वैठ कर वे सीधे भीतर चले गये थे।

लगभग दस पन्द्रह मिनट हो गये होगे। रोज की तरह घर पहुँचते ही दो तीन कप चाय गले के नीचे उतरने के सीधे वर्मा जव नहीं लौटे तो मिसेज वर्मा को लगा कि शायद किसी गहन प्रशासकीय उलझन में वर्मा साहव भीतर रह गये है। वे अपना पति धर्म समझ उन्हे मानसिक रूप से तरोताजा करने हेतु भीतर की ओर वढ़ती वोली थी।

सुनों जी, आज मिस्टर एंड मिसेज आये थे। काफी अच्छे लोग थे। मुझे भी उनसे मिलकर अच्छा लगा। जैसी आपने तारीफ की थी। ठीक वैसे ही सहृदय लोग थें। पर हॉ एक वात वड़ी मजेदार हुयी है जाते वक्त साहव वोले आपकी विनम्रता व्यवहार तो हमें यहाँ से जाने के वाद भी याद रहेगा। लेकिन एक स्मृति मैं हमेशा के लिये संजोये लिये जा रहा हूँ इस पेड़ का काटे जाकर गिराया जाना।

सुनकर वर्मा जी खुद को, और नहीं रोक पाये थे। वोले थे चलो चाय पीते है मैं भी आज का दिन शायद कभी नही भूल पाऊंगा। तुम दुवे साहव की वात समझ पाई कि नहीं। खैर.............

वर्मा जी चाय पीने लगे। लेकिन हमेशा की तरह पत्नी से दिनभर के क्रियाकलाप पर वतियाने के वदले वे केवल मौन चाय पीते रहे थे। वार-वार लान में देखतें। कभी पेड़ को। कभी उसके कटने के स्थान पर अव भी कुल्हाड़ी चला रहे काम करने वाले मजदूर को।

कोई नुकसान नही हुआ है न शेड का न लान का। माली कह रहा था। कि..........)

काफी देर के सन्नाटे को यकायक मिसेज वर्मा ने वेधा था तो वर्मा यकायक चौंक पड़े थे।

नहीं वहुत नुकसान हुआ है। लेकिन तुम शायद न समझ पाओ।

वर्मा उठे और यकायक अपने ऑफिस वाले कमरे में चले गये थे। गाहे वेगाहे रात हो जाने में लेटकर भी वे फाइले या पुस्तकें पढ़ सके, इसलिये इस कमरे में भी एक वैड़ पड़ा था। भीतर आकर उन्होंने कमरा वंद कर लिया था। कमरा अंधेरे में डूव गया। लेकिन उनका मन नहीं किया था। कि वे लाईट जलायें। वे वस निढ़ाल से आंखे वंद कर लेट गये थे। फिर यकायक उन्हे लगा था कि अंधेरे में जैसे अतीत का सब कुछ जगमगा रहा है। जिस कस्वे में वर्मा जन्में थे उस कस्वे के आखिरी मुँहाने पर उनका मकान था। कच्चा, छप्पर वाला छः भाई वहिनों का परिवार। पिता खेतिहार किसान थे। छप्पर के वाहर एक वड़ा नीम का पेड़ था। थकहार कर कभी कभी वे उसी के नीचे वैठे वैठे सो जाते थे। वर्मा उनके सवसे वड़े पुत्र थे। कभी पिता की स्थिति पर उन्हे दया आती तो वे भी उसी पेड़ के नीचे लेटे पिता के पास जाकर वैठ जाते। कहते वापू तुम चिंता मत करो मैं वड़ा होकर एक वड़ा अफसर वनूंगा। तुम्हारी सव तकलीफे दूर कर दूंगा।

दस साल के थे वर्मा तव, पिता उनकी वात सुनकर उसनींदे से उठ वैठते। उन्हें गोद में विटा लेते कहतें शावास लल्लू। इसी की आस में तो जिंदा वना हूं। जा पेड़ की सौंजाव मैंने की लगाव। जोंड़ रै तेरी वात को गवाय। भगवान करे तै जा पेड़ई घांई वड़ों अफसर वनें।

फिर समय का चक्र घूमा था। पिता ने रात दिन मेहनत कर उसे जवलपुर पढ़ने भेजा। वर्मा को कानून की शिक्षा दिलाई। वर्मा इंजीनियर वनना चाहते थे पर वे अड़ गये थे। उनकी गवई भाषा का भावार्थ था, नहीं वेटा। इंजीनियर तुम इसलिये वनना चाहते हो ताकि तुम खूव पैसा कमा सकों ज्यादा से ज्यादा भाई वहिनों को पढ़ा सकों। व्याह शादियां कर सकौं लेकिन मै जानता हूँ कि खराव पैसा कभी खुशी नहीं दे सकता है पैसा चीजें जोड़ सकता है। खुशी और इज्जत नही दे सकता है। फिर यदि तुम जज वन गये तो आदमी के साथ न्याय भी कर सकतें हो। आज आदमी वहुत परेशान है वेटा।

आखिरकार ला करने के वाद अनुसूचित जाति के होने से वर्मा सिविल जज की नौकरी में चुन लिये गये। वर्मा सामान्यत: कायस्थ जाति के लोग लिखते है। पिता ने अनुसूचित जाति का अभिशाप वच्चों को भविष्य में कुंठित न करें। इसलिए उपनाम में पहले ही वर्मा जोड़ दिया था। पिता की दूरदर्शिता काम आई थी। वहिनो की शादियां उनकी शिक्षा के अनुसार जाति से प्रभावित नहीं हुयी थी वे भी आज वड़े अफसर है। पिता ने वच्चों के पल्लवित पुस्पित देखकर भी

किसी के पास नही गये थें। वही घर वही पेड़ उनके हम दम बने रहे थें।

पर अभी कुछ वर्ष पहले जब पिता की बीमारी की खबर सुनकर, वे गांव गये थे। पता चला था कि कुछ दिन पूर्व से उन्हे दमा की बीमारी हो गई थी। जबवे गांव पहुंचे थे तो वे खाँसते हुए अपने चिरमित्र नीम के पेड़ के नीचे ही बैठे थें। उन्हे ठीक याद है पेड़ से कही से घुन या दीमक जैसी कोई चीज लग गई थी। उन्होंनें पिता को साथ लाना चाहा था। वे मुश्किल से केवल बात माने थे।

पर इधर पिता उनके पास आयें, उधर छोटे भाई ने जो पी.डब्ल्यू.डी. में उन दिनों एक्लीक्यूटिव इंजीनियर होकर अपने गृह जिले में ही पदस्थ हो गया था एक काम कर डाला था उसने वह पेड़ कटवाकर पुराना मकान गिरवाकर नया मकान खड़ा कर दिया था। सब सुविधाओं से युक्त। पिता जब गांव तो उन्होंने वह कुछ देखा तो यकायक फफक पड़े थें ''जो तैने का करौ छुटके। पूछ तौ लेतौ।

'' लेकिन बापू हमने ने यह सोचकर यह सब कराया कि आपने हमारे लिये इतना किया हम आपको अब सारी सुख सुविधाओं में रखेगें। यदि आप यही रहना चाहते है तो यही। पेड़ में दीमक लग गई थी सोचा कि............।

''तै एक दिना तो मोय भी............. मैं भी रात दिना खाँसत रत। जा पेड़ कौ उपकार मै कैसे भूल जाऊ ?तुम लोग छोटे हते तो जई पे रस्सी डारकै झूला में झूल के हमनै और तुमाई मताई नें तुम लोगन खां बड़ौ करौ तौ। तुम्हाई बहन छोटी से बड़ी हौन तक जई पेड़ की डगालो पै झूला डालके साबन मनाउत रई। तुम लोग तो टूथ पेस्टो में बड़े पले हौ हमाई तो सुबह जई से शुरू भयी दुपरिया जई की छाँव में कटी और रात कौ भवका जई ने पीऔ है। तव पंखा काँ हते यादें मै कैसे भूल पैहो छुटके''

भाई की नियत में खोट नही था। वे खुद भी चाहते थें कि गांव में जहाँ हम पले बढ़े है, उसमें कम से कम ऐसी सुविधायें, इतनी जगह तो हो कि लोग यह समझे की रामखिलावन के बच्चे कुछ बने है। वरना लोग तो यही समझते ना कि जिस बाप ने नव्वे वर्ष की उम्र तक मेहनत कर बच्चों को पाला, बढ़ाय, वे इतने कृतघ्न निकले कि बाप को एक मकान तक नहीं बनाकर दे पाये।

वर्मा को ठीक याद पड़ता है। पेड़ के अपनी जमीन से गुम होने के साथ, पिता भी जैसे उसके साथ जुड़ी अपनी स्मृतियों में, गुम हो गये थें। फिर कुछ समय बाद वे भी नही रहे थें। जैसे उनके भीतर भी कहीं दीमक लग गया हो। पेड़ के कटाने के साथ वे भी शायद कट गये थे।

वर्मा की आंखे छलछला आई थी। बिना पत्नी से कुछ कहे वे बाहर आये थें। कुछ कर्मचारी अब भी काम कर रहे थे। वे पागलों से बोले थे।

''क्यो भई क्या ये पेड़, फिर वही का वही नहीं जमाया जा सकता? और उनके इस कथन पर सारे कर्मचारियों के साथ मिसेज वर्मा भी हक्की वक्की उन्हें देखती रही थी।

उद्योग भवन के पास
सिविल लाईन दतिया (म.प्र.)

बुन्देली लोककथा -

चतुर सियार

- सरमन लाल शर्मा

ऐंसें-ऐंसें भैया एक जंगल में एक सियार और सियारनी रहत ते। उनके दो बच्चा सोई हते। एक दिना वे भोजन की तलास में निकरें। चलत-चलत वे भौत दूर निकर गये। संजा बिरियाँ हो गई। अब सियार और सियारनी चिन्ता में पर गए। के लौट कें अपनी गुफा लो कैसें जॉय। बच्चा सोई थक गए ते। अंत में उननें उतई रात गुजारबे की सोची। उनें एक गुफा दिखाई परी। गुफा ऊ समय खाली हती। सो वे बच्चों समेत ओई गुफा में घुस गए। सियार ने सियारनी सें कई के जा गुफा तो शेर की लगत हैं। कऊँ ऊ आ गओ, तो सबखों मार डार हैं। सो हम गुफा के दोरे पे बैठ कें देख रए हैं। हम जैसो इशारो करें, तें ऊँसई काम करिये। सियारनी ने कई के हओ, मैं ऊँसई कर हों। सियार गुफा के बाहर बैठ गओ। इतने में ऊखों शेर आउत दिखानो तो ऊनें सियारनी खों इषारो करो और कर्रै कें बोलो - कायरी बच्चों खों काय रुवा रई है। भीतर सें सियारनी बोली- मैं का करों। बच्चा शेर के मॉस खों रो रए हैं।

सियार बोलो- बच्चों खों मोंगा ले। शेर आ रओ हैं, सो मैं ऊखों मार कें मॉस ला रओ हों, सो बच्चों खों खवा दैये। जैंसई जा बात शेर ने सुनी, सो ऊ तो घबरा गओ और सोचन लगो के कोनऊं हमसे बड़ो जानवर हमाई गुफा में घुस गओ हैं। सो शेर भगो, जंगल की तरफ। सियार खों शेर की गुफा में घुसत एक बँदरा ने देख लओ तो।

सो बँदरा नें जब शेर खों भगत देखो सो बोलो- जंगल के राजा, कितॉय भगत जा रए। शेर ने कई के का बताएँ भैया। हमाई गुफा में कौनऊ बड़ो जानवर घुस आओ हैं। ऊ के बच्चा हमाओ माँस मँगा रए हैं, सो हम प्रान बचा कें भग रए हैं।

बँदरा नें कई - कौनऊं बड़ो जानवर नई, सियार गुफा में घुसो है। हमने तो घुसत देखो है चलों हम दिखा रए तुमे। शेर बॅंदरा सें बोलो के हमें तुमाई बात को विसवास नइयाँ।

अगर तुमें चलने है, तो हमाई पूँछ अपनी पूँछ सें बॉंध लो। बंदरा नें अपनी पूँछ शेर की पूँछ से बाँध लई और चले। जब सियार ने देखो के शेर फिर आ गओ, सो ऊनें सियारनी खों फिर इशारो कर दओ और बोलो के कायरी, बच्चों खों फिर रुवाउन लगी। सियारनी बोली के अब मैं काकरों। जे बच्चा शेर को बासो माँस नईं खा रए, ताजो मांग रए हैं। सियार ने कई- तें चिन्ता नें कर। हमने अपने मित्र बँदरा खों भेजो हैं, सो वो शेर खों लेंकें आवे बारो हैं। जैसई जा बात शेर ने सुनी, वो घबरा के भागो। बँदरा की पूँछ शेर की पूँछ में बँधी ती, सो बँदरा भी घिसटत गओ और ऊको षरीर छुल गओ, हाँत पॉव टूट गए, अधमरो हो गओ और शेर जंगल में भग गओ। इते सियार-सियारनी और उनके बच्चा गुफा में आंनद सें रहन लगे।

भैया हरो- ई लोककथा सें हमे जा सिकछा मिलत हैं के संकट आवे पे हमें घबराओं न चाहिए, चतुराई - समझदारी से काम लओ चाहिए और हमें चुगली न करो चाहिए, नई तो बँदरा जैसी दसा होत हैं।

बाढ़ई ने बनाई टिकटी - हमाई किसा निपटी।
सबई सुनबे बारे भैया - बहनन खों राम- राम।
अब सब करो जाकें आराम।

- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड (गढ़िया)
हटा जिला दमोह (म.प्र.)
मो. 9893612841

आवाज

– सुरेन्द्र नायक

दोस्त। तुम चले गए, बिना कछू कहें,
बिना कछू सुनें, कभउं न लौटवें के लाने।

अब जा बात को कछू मतलब नइयां के हम तुमें कब से जानत ते, कैसें जानत ते, और तुमाए बारे में का का जानत ते। और अगर हम इत्तो जानत - समझत हते तो तुमें पहले काए नई समझाओ। तों तुम मरतेई काए कों?

मरे भए आदमी की बुराई नंइं करी जात। लेकिन तुममें बुराई हती सों कहें बिना जी नई मान रओं। गुस्सा न होइयों। हो सकत तुमाई आतमा इतऊं कितऊ मंडरा रई होए और तुम गुस्सा में हमाई घिची मसक दो। तुमाए अंदर बस एसई ऐब हतो के तुम बहुतई अच्छे आदमी हते। जई ऐब ने तुमाए प्रान ने लए। बहुतई अच्छो होबो, बहुतई संदवेदनशील होबो और बहुतई नैतिक होबो एक तरा से जी को जंजालई आय। हमें इत्तो टेड़ो होए चइए के हम अपनी खुशियन और अधिकारन को रखा सकें। हमें ज्यादा सच्चों औ खरो सोऊ नई बोलें चइए। सच्ची बात से सबखों चिनचिनी लगत और काउ काउ को तो मिर्चे लग जाती। सच्ची बोल के पूरी दुनिया से बुराई काए लेओ? तुम इतई गलती कर गए और अकेले पर गए अकेले आदमी को तो टूटनेई हतो।

दोस्त। हमजा नईं के रए के आदमी के कछू बोलेइ नई चइए। अगर आसपास कछू गलत हो रओ तो काउ को तो टोकने पर। लेकिन जो जरूरी नइयां के हर बेर ताल ठोंक के तुमई आगे आ जाओ। कभउं कभऊं चिमाई साधवों अच्छो रहत है। अपनों अच्छों बुरो तो जानवर तक समझत है उत्तोई परोपकार और त्याग अच्छों होत जित्ते में अपई उंगरियां न जरें। ज्यादा अच्छे भए को अंत बोई होत जो तुमाओं भओं। कौनउ मौड़ा और न कौनउ रिश्तेदार अरथी बारन तक नई आओ। बो तो तुमाओ एक दोस्त अच्छौ निकरो सो बाने तुमाओं क्रिया करम कर दओ। कहन लगो के पुत्र नइयां तो मित्र तो हैं। नई तो पुलिस के हांतन लाबारिश जरते।

दोस्त। जो तो काउ को पता नइयां के तुमाई ऐसी का मजबूरी हती के तुमने इत्तो बड़ो कदम लओं तुमाए पास गाड़ी, बंगला, पेंशन, बैंक बैलेन्स, नौकर सब कछू तो हतो। तुम भले साठ पार कर गएते लेकिन शरीर ऐसो गठीलों हतों के जब तुम ठसक के साथ अपनी गाड़ी में बैठकें निकरत ते तो तुमें देखके जवान औरतें तक एकाएक ठिठक जात ती। जासें जो अंदाजों तो लगई रओं के जब बीस पच्चीस साल पहले तुमाई पत्नी मरी ती तब तुम कैसे लगत हुओ। वा टैम तो तुम गबरू जवान लगत हुओ। बा टैम तुम दूसरों बियाव कर लएं चइत तो लेकिन तुमने जो नई करों। तुमें अपने बेटन को ख्याल आ गओ। फिर तुमने अपएं बेटन को अच्छौ पढ़ाओं-लिखाओं। जो तो तुमने नोनो करो। लेकिन तुमाए बेटन ने का करो? बे पढ़-लिखकर विदेशन में बस गए और तुमें अकेलो छोड़ दओं।

मित्र। अति भावुकता में लए गए निर्णय ज्यादातर गलतई निकरत। तुम घर-मकान, जमीन-जायदाद, नौकरी सब दांव पे लगा देते तोउ कछू बात नई हती लेकिन तुमने तो अपनी जिन्दगी की सारी खुशियां अपनी जवानी दांव पे लगा दई। नई उमर में तुमाईयऊ कछू जरूरतें रई हुए बासें मिलों का? अकेलोपन और आतमहत्या?

वैसे कभऊ सुनबे कों तो नई मिली लेकिन हो सकत है, कि तुमने कहूं कौनऊ और गुपचुप रख लई होए। वैसे जामें कछू बुराइयउ नईयां अगर घर में कलह और समाज में बदनामी न होए। बैसेउं कोउ के दिना भूखों रे सकत? अपने इते कहावत है, भूखन देखें जूठो भात। इन रिश्तन में सूखउ तो इत्तो होत जित्तो ब्याहता सात जनम में न दे पाए। तभई तो बड़े-बड़े कवि कह गए ' ब्याहता चाएं मर जाए यार न मरें गुइयां यार के।' हो सकत है के तुमने जोई करो होए। अगर हमाओ अंदाजा सही है तो तुम इतई चूक गए। का तुम नईं जानत ते के जे रिश्ता डग्गामारी वाले होत, जब जित जित्ते दिन पटरी खा जाए। मान लो ईसुर कर कृपा से दोऊ जनन में बहुतई प्रेम होय तोउ जे रिश्ता दिन के उजियारे में ज्यादा काम नई आत। भगवान न करें के कभऊं रखैल बहुतई बीमार पर जाए और बाय दो-चार महीना अस्पताल में रहने पर या घरई पे चौबीसऊ घंटा सेवा की जरूरत होए तो कौन रखैला की छाती में बाल है जो डंका की चोट पे सेवा कर दे। जई बात औरतऊ पे लागू हो। आदमी किन-किन को मों. पकर? काउ के मों पे टटा-बेड़ो तो लगो नइयां।

अब कोऊ का जान पे के सही बात का है लेकिन तुमने भारी गलती तो करियई है। बिना फेरे और फेरे वाले रिश्तन में फर्क तो होतई है। हो सकत है, तुमे मन के सहारे की जरूरत रही होय और तुमे उत्तो सहारो न मिल पाओ होए जित्तो तुमे चइएतो। ऐसे रिश्तन में समाज मरजाद की टांग अड़ात रहत और आदमी चाह कर भी एक दूसरे को उत्ती तसल्ली नई दे पात।

जा बेरा हमें रूस के भौतई बड़े कवि मायाकोन्सकी को लिखा याद आ रओ। उनने कइती कि जा जीवन में मरबो कछू कठिन नइयां लेकिन जा जीवन को सुधारबों सोऊ ज्यादा कठिन नइयां। लेकिन अकेले कहबे से का होत। इत्ते आशावादी कवि को भी अंत में आत्महत्या ही नसीब हुई। ' राई घटे, न तिल बढ़े , जो विधि लिखे ललाट।

मित्र। कवियन की बात छोड़ो। बे तो होतई कमजोर है, अगर एकांध की बात छोड़ दई जाए तो। अगर बे मजबूतई होते तो जिन्दगी में लड़के दिखाते, किताबन में शेर न बनते। अधिकतर कवि तो किताबन तक में रोत-झींकत है हाय। हाय। मर गए। जोरू पड़ोसी के संगे भग गई। खसम ने सौत रख लई। गुंडन ने हमाई जमीन कब्जया लई। शर्मा जी। तुम न तो कवि हते। और न इत्ते गए गुजरे। तुमाओ समाज में एक रूतवा हतो। सब जनें तुमाई आत्महत्या को तुमाई कायरता भले कहें लेकिन हम जो नई मान सकत। जानत हो, जब तुम जैसे सक्षम, जिन्दादिल आशावादी और आत्मनिर्भर बुजुर्ग आत्महत्या करन लगें तो जाको अर्थ का होत है। जाको मतलब है, के समाज पें गहरो संकट आज बालो है। आज तुम, कल हम परसों कोई और। जाको मतलब भओं के अपंइ पारिवारिक व्यवस्था चरमरा गई है नैतिक मूल्य कमजोर हो गए है, संस्कार खराब हो गए है, संवेदना का झरना सूख गया है। ऐसे में हमें सब कछु दुवारा सोचबे समझबे की जरूरत है। अपएं-अपएं सुख-स्वार्थ में इत्तो डूबो रहबो। अब ठीक नइयां। अगर हम अभऊं न चेते तो सब जनें एक-एक करके डूब जें।

शर्मा जी। तुमाई आत्महत्या ने जौन प्रश्न खड़े करे है, बे कौनऊ नए नइयां। जा समस्या तो आजादी के पन्द्रह बीस साल बादई शुरू हो गई ती। घरन में शिक्षा आन लगी, नौकरी आन लगी, पैसा आन लगो, खावे-पीछे को स्तर बढ़न लगो, मोड़ी-मोड़ा बाहर पढ़न जान लगे, दूर दूर नौकरी करन जान लगे और धीमें-धीमें बुढ़ापों अकेलों परन लगो, संयुक्त परिवार टूटन लगे। आगे चलकर एकल परिवारऊ टूटन लगे तलाक बढ़न लगे, छोटे-छोटे बच्चन के मताई-बाप छूटन लगे। जब युवा पति-पत्नी कुंठित रेहे, छोटे-छोटे बच्चा असुरक्षित हुए तो बढ़ुन के बारे में को सोच पेहें। नौकरी करन वाले लड़का-बहू अपएं बूढ़े मताई-बाप को खाबे पीबे को खरचा भेजबे को भले तैयार हो जाएं लेकिन संगे नई रखन चाहत। कहूं उनकी साहबी को स्टेंडर्ड खराब न हो जाए। लोग का केहें साहब के पिताजी गरीब किसान, रिक्शा चलाने वाले स्कूल के चपरासी। जामें एक समस्या औरऊ हैं। नए लड़का -बहू को नए तरीका से उठने बैठने। ऐसे में बूढ़े मताई-बाप टोक टोक में दम लें लेत। जो न करो, बो न करो। ऐसे में लड़का-बहू मताई-बाप को अपने संगे रखकें रोज रोज की किच किच काए पालें?

मित्र। न तो आत्महत्या करबो इत्तो आसान होत है और न कोउ शौकिया आत्महत्या करत हैं। ऐसो आदमी चारऊ तरफ हो चुको होत। बाके कँधा लड़त लड़त थक चुके होत। बाए और कौनऊ गैल नई दिखा रई होत। ऐसे में आत्महत्या करने नई परत, खुदई हो जात। लोग के रए है, कि तुमने आत्महत्या कर लई। जा बात पूरी सच्ची नइयां। सही कही जाए तो जा सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था द्वारा करी भई सुनियोजित हत्या है किते चलो गओ तो जो समाज और परिवार जब तुम समस्या से अकेले जूझ रए ते? आत्महत्या ने कौनऊ के पछाई कौनऊ समस्या तौ रइयई हुए। तुम अपंइ और अपए परिवार की इज्जत ढांके बैठे रए और काउ को कछू नई बताओं। अब अगर सबको समस्या पता लगऊ जाए तो बा सें का हो रओ। शर्माजी। हम आजउ तुमाए संगे हैं। हमें दुख तो बस जा बात को है के तुम हमाए संगे नइयां।

काश। हम तुमाए लाने कछू कर पाते।

मित्र। तुम हमाइ जिन्दगी कों एक काम दे गए हो, एक अर्थ दे गए हो। हम उन पारिस्थतियन कों बदलन चाहत है जिनकी बजह से आदमी आत्महत्या करबें को मजबूर हो जात। हम उन आदमियन की सहायता करन चाहत है जो टूट बे कगार पे हैं। हम उन लोगन कों दिलासा देन चाहत है जिनके कंधा लड़त-लड़त पस्त पर गए हैं। तुम जइको हमाई श्रद्धांजली समझियो।

शर्मा जी। तुम्हें नमन करबे के पैले एक बात और केने हैं। कछू लोग आत्महत्या करन वाले को कायर और पलायनवादी कहत है लेकिन हम जो नई सकत। आत्महत्या

करबे के लाने बहुत साहान चइए। जब कछु के पांव में तनक सों काटो गुच जात। तो बो दर्द से तड़पड़ा जात। आत्महत्या मे तो पूरे प्रानई देने परत। तुमने तो बा तकलीफ भोगी है, सो तुमे का बताने। एक बात तो रेई गई। कित्ते बेईमान आदमी आत्महत्या करत हैं। बे तो बेशरमी से कहत काउ ने हमाओं का बिगार लओ? छह महीना में जमानत हो गई ती ओर जेलऊ कुल सात साल की भई ती। अब पूरो गांव हमसें डरात। आत्महत्या अधिकतर बेई लोग करत जिने कछू शरम लिहाज होत, जिने कछू पछताबा होत जोन दूसरिन के आगे आंखे नईं झुकान चाहत। नईं तो गैलन की का कमी है कैसऊं लाद लई बाए लाज काय की?

मित्र। तुम तो चले गए लेकिन हमाए दिन को चैन और रात की नींद हराम कर गए। तुम सोच रए हुओ के ऐसो कैसे हो सकत। न तुम हमें जानत ते और न हम तुमें जानत ते। तुमाई बात सोला आना सही हैं। हमाई तुमाई कभऊं भेंटई कहां भई?

शर्मा जी। तुम का जानो के हमाओं तुमसे कित्तो गहरों परिचय हैं परिचय की गांठ एक बेर अचानकई बंधी लेकिन फिर इत्ती करीं बंधी के जिन्दगी भर नई छूट सकत। तुमे हमसे ज्यादा को जान सकत?

हमनें तुमें पहली बार पोस्टमार्टम हाउस के सामने देखो तो। तब तुम लाश बन चुके। ते सो तुमने हमें का पहचानों हुए। वा के बाद तुम बिना कौनऊ राग-विराग के चीर घर के अंदर चले गए। हम उतेईं बाहर बैठे-बैठे तुमाए बारें में सोचत रए। तुमने पूरी जिन्दगी दुनिया को इत्तो बड़ो मेला जोड़ा लेकिन जब देहके टुकड़ा- टुकड़ा होन लगे जो तुम अकेले के अकेले रे गए। शर्मा जी। चीरघर के अंदर तुम पूरी तरा अकेले कहां हते? हम सोचत सोचत शर्मा बन गए ते। औजार तुमाई देह कों चीर फाड़ रए ते और हमें हो रओ तो।

हमने तुमें दूसरी बेरा अंत्येष्टि के टैम देखो तो। तुमाई देह विकराल लपटों के बीच धू धू करके जल रही थी। कितना मार्मिक दृश्य था। आह। नियति अपई स्थापना के प्रति न जाने इतनी क्रूर काए हती? तुमाई अंतिम विदाई के समय न तुमाओ कौनऊ पुत्र, न घरवालों और न कोनउ रिश्तेदार। बई बेरा हमाई आत्मा तुमाए शरीर में प्रवेश कर गई। हम चाहके भी परकाया प्रवेश को नई रोक पाए। बा बेरा सिर्फ तुमाई देह नईं जल रई ती बल्कि हमाइयउ देह जल रई ती।, एक कवि जल रओ तो एक संवेदशील मित्र जल रओ तो। हमें कवि होवे को इत्तो दंड तो मिलनेई हतो।

हमाओं शरीर आगी से बुरी तरा झुलस गओ है। जो दर्द हमसें बरदाश्त नई हो रओ। योगेश्वर कृष्ण ने अश्वत्थामा की असहय पीड़ा को खुद धारण कर लओ तो। उनके पास बा क्षमता हती उनने तो जो करकें दिखा दओ। उनकी सेंग को कर सकत? बे तो ईसुर हते। अब हम अपएं दर्द को कहां ले जाएं? हमाओं अंग अंग दुख रओ है, रोम रोम टोंस रओ है। बो कित्तों भयानक पल हतो जब तुमे जो दुर्भाग्य पूर्ण निर्णय लेने परो तो। वा छिन की कल्पना को कर सकत है? और फिर ऊके बाद खुदई फांसी को फंदा बनाबों और बा पे झूलबो। बा वेदना को बखान शब्दन में तो हो नई सकत। हम वा कष्ट को छिन छिन भोग रए है। न हम कवि होते, और न तुमाई आत्मा हमाए शरीर में घुसती। आह। मौत की अंतिम घड़ी। अरें जो को है। अहा। जे तो अम्मा हैं। अम्मा का हमाओं कित्तों ख्याल रओ। लला को कौनऊ तकलीफ न होन पाए सो बे हमें लिवान खुद चली आई। तभई हमाई जीभ लरथराई हती। अम्मा। हमें अपई गोदी में लिटा लो मोय नींद आ रई हैं।

उपन्यासकार एवं समीक्षक
प्रतापनगर, कोंच, जिला-जालौन (उ.प्र.)
मो. 9415169992, 8787038870

इनसें नई - उन सें

– डॉ. एल.आर. [illegible]

कबहुँ कबहुँ ऐसी कठिनाई सामने आत-जात है, कि क्या करें - जीसे अपनों काम भी हो जाय - और सामने वारों को बुरौ न लगे और इज्जत भी रह जाय।

एक बार एक जगह - एक मोंड़ी के लाने दो जगह के 3-3 व्यक्ति देखवे वारे - एक ही साथ आय गये। मोंड़ी के बाप ने अपने कमरा में बिठादओं - और पंखा पानी की व्यवस्था करी। नाश्ता के समय औपचारिकता की बातें होती रही - कि आज कल जैसे ब्याव चल रये है, - वैसे आप हम सब जानत हो। कछु न कानें और न समझावनें। मोंड़ी के बाप ने - उनसे - आराम करवे की कई और घर में भीतर आकर - भोजन की व्यवस्था की बात कही। - और कही की अब का करें। - तुमई कछू उपाय निकारो -तब घर वारी - बोली कि फला - जगहाँ के तौ घर/पईसा से कमजोर है- ठीक ठीक नइयाँ - और जो बाद में फला जगहा के आये हैं वे भौतई ठीक है- अच्छी खेती बारी भी है, अच्छौ पईसा कौ सिलसिला है, लरकओ - ठीक सुनो है, फोटो देख लई है, तुम चिंता ने करो मै सब संभाल लेगृ। भोजन में - ऊँचो नीचो धर देहें, तासें वे खुदई कहन लग है, कि साब हम घर से जवाब देहें। और जई हम चाहत हैं। साँपऊ ने मरे और लाठी भी नें टूटे।

- बस जोई भओ। एक जगह के मेहमानन के खाने में नमक भौतई कम। मिर्ची - गरम, मसाला ज्यादा - ज्यादा जैसे खावे में - मनसे न खा पाये औ ना-ना बस-बस खुदई कहन लगे। दूसरी जगहा के मेहमानन के भोजन में खूब अच्छौ। स्वादिष्ट व्यंजन बनाओ गओ और वे खुदई मन से छक्क। भर पेट हुय गये और मुँह से माँगन लगे कि - फला चीज/सब्जी और ल्याओ। का कानें साब - आप हौ। घर से भी बहुत समझदार हैं।

बस - अपुन अब जल्दी से मोंड़ी को दिखाव दें - जो से हम "हाँ" कर दें और कछु सगुन धर दें - हमें जल्दी वापस जाने है। हमओं कल्लां ट्रेन से रिजर्वेशन में जानो है। अपुन की मोंड़ी (बेटी) बहुत भाग्यशाली है। मोंड़ी दिखाई गई और मोंड़ी के भाई ने अभई/सबकों सच सें भी कै - दई कि हम इनसें नई उनसें ही रिश्ता कर है, काय सें वे घर जाकर खबर दै है - हम इंतजार नई कर सकत है - हमें जई साल ब्याव करने है सबई मेहमान खाँ हमाई तरफ से राम-राम।

सीकर भवन/न्यू दतिया
पब्लिक स्कूल ठंडी सड़क
दतिया म.प्र./475661
मो.न. 9200388277

बधाई

डॉ. एल.आर. सोनी को भारती परिषद, प्रयाग द्वारा 'भारतीय शिखर सम्मान' द्वारा सम्मानित किया गया। इस सम्मानीय सुखद अवसर पर डॉ. सोनी को बुन्देली दरसन परिवार की ओर से सादर बधाई।

डॉ. मनमोहन पाण्डे
सम्पादक

लघु कथा

– दिनेशचंद्र दुबे

जियत न डारौ कौरा, मरत बनाओ चौरा

सुबह वे प्रवेश द्वार के पास खड़े थे। विचारों में डूबे कि आज शांति है। पेंडिग पड़े जरुरी कामों में कौन सा निपटाया जाये कि तभी सामने रहने वाली श्रीमति गुप्ता ने बताया कि आज रात माहेश्वरी साब नही रहे।

' कौन माहेश्वरी ? जो भदौरिया के मकान के बगल वाले मकान में रहते हैं?

'हां वहीं।

कुछ देर मे सोचते रहे। फिर आफिस टेबुल पर आकर विचाराधीन कामों के नोटिस लिखने में व्यस्त हो गये।

अभी कुछ समय ही गुजारा था कि आफिस की रोड साईड (खुलने वाली खिड़की से उन्होंने देखा मिस्टर गुप्ता और सिहल साहब स्कूटर पर बैठ हड़वड़ी की जल्दी में माहेश्वरी के मकान की ओर भाग रहे हैं। तभी पीछे से तीन चार और सजीधजी मोंग में सुहागिन होने का निशान लगाये जल्दी से माहेश्वरी के मकान की तरफ बढ़ती दिखी।

पलभर वे असमजंस में पड़ गये। क्या करें? कहा जायें?

लेकिन वेटी अस्पताल गई थी और वे थे घर में अकेले। कही जाना हो तो सजना पड़ता हैं ओर वे इस समय अंडरवियर, वनियान तक सर्फ मे डुबाकर अकेले तौलिया लपेटे बैठे थे।

अंसमजस में बैठे थे कि तभी इन्हें एक अजीब सोचने घेर लिया। ऐसे पलों में उन्हें अक्सर पत्नी की याद आती है। वह यहॉं नही है। किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति में वे उसे फोन करते हैं। वह जवाव में क्रोधित होती है।

''तुम गये कि नही''?

''तुम होती तो तुमे जाती। घर छोड़कर (खाली कैसे जाता ? पर एक बात बताओं।

यह वही माहेश्वरी है जो डाक्टरों के तीन बार, आंखों के कैंटरेम्ट का आपरेशन की सलाह देने के बावजूद आपरेशन नही कराया था। कभी कभी मुझे इबिनिंग या मार्निंग बाक में मिल जाता तो उसके अहम या आत्म विश्वास में कोई चोट न पहुँचे, स्वयं में पहले नमस्कार करता ऐसे आदमी की मृत्यु पूर्व मोहल्लें भर के लोगो में से किसी को भी मैने उसके घर जाकर उठते बैठते नही देखा। और अब मरने पर इन लोगो के जाने से क्या वह जीवित हो जायेगा? कल भयंकर बारिष हुयी थी जलाने में असुविधा न बढ़े इसलिये तुरंत फुरंत लक्ष्मीगंज ले गये हे घर के लोग। एक बात और मुझे समझ में नही आ रही। औरते सजकर मांग भरे क्यों जा रही हैं? क्या माहेश्वरी की पत्नि को याद दिलाने कि अब तुम विधवा हो। अकेली हो। और हम।

' तुम्हारी बातें मुझे नही सुननीं।

' इसलिये तो मैं गया नही कि कहीं मन न माना और पचहत्तर वर्ष तक जीवित रहने वाले, माहेश्वरी के लड़को को मृत्यु की बधाई ही न दे दूँ। मुबारक हो। तुम्हारा कंटक अब कट पाया। अपने घर का अनुभव क्या यही नही हैं ? जियत न डारौ कौरा, मरत बनाओ चौरा।

68 विनय नगर -9
ग्वालियर-12
मो. 9301104227

विलग-बुंदेलखंड

– पं. ज्ञानी महिराज

गाँव को एक घर, ऊ घर के दोरे के बायरें की पट्टी पै दरी बिछायें बूढ़े बब्बा जू पछारें तकिया सें टिके बैठे हैं। बे बब्बा जू 99 बरस के हैं। बे पढ़े लिखे तो बिल्कुल नैयाँ पै उने ज्ञान सब कछू को है। ना जाने उनने इतनो लो कां सें सीख लओ। रामायन बे बाँच लेवें, पूरी हिन्दी की किताबें बे बाँच लेवें, ढुलकिया, तबला, हारमोनियम, तमूरा, सारंगी, तारें और अपने खुद के बनाये बाजे बे बजा लेबें, काँ लो कहें पूरे राग, रागिनी बे गा लेबे। आवाज भी उनकी बहुत सुरीली है, सरगम, रागों के घाट के संगे संगे पूरे ताल, मुखड़ा, परन बे जाने, संगीत की तो उनने एक पूरी किताबई लिख डारी, किसा, कहानियाँ, टहूकों की तो कछुन पूँछो न जाने कहाँ सें सीखे, कऊँ कबऊँ कोऊ उनके अँगारें अपनी बातें कर रये होये तो, बब्बा जू खें अपनी कहानी जरूर सुनाउन लगने, भले ही उनकी चर्चा बंद काये ने हो जाय। बे अबे लो इतनी उमर में अच्छे चलत फिरत हैं उनके जीवन में अबै कौनउँ कमी नजर सी नई आत।

एक दिना उनके पंती झंकृत, राम, धनंजय, तीनऊ उनके ऐंगर बैठे हते, उनके बे पंती जादा बड़े नैयां बड़ो हुइये दस साल को, मझलो हुइये सात साल को और हल्को धनंजय हुइये ओई ढाइकसाल को।

झंकृत- काये बब्बा, तुम कै साल के हुइयो,

बाबूलाल- अरे बेटा, हम निन्यांनवे साल के आ हो गये। तुमें पतो नैयाँ कै तुमारे दादा हन ने अबई जेठ सुदी तीज तेरा मई को हमारो अन्यानवों जनम दिन आ मनाओ तो। ऐई दिना महाराजा छत्रसाल और महराणा प्रताप ने जनम लओ हतो।

राम-काय बब्बा जू, तुमने अँगरेजन खों देखो है।

बाबूलाल-देखों है, अरे बेटा हमने सोई ऊ लराई में भाग लओ हतो, हम ऊ टेम अठारक साल के रये हुइयें, ऊ टेम गांधी जी जबलपुर आये ते। ऊ टेम पै हमारे इते कौनऊँ जानो मानो नेता नै हतो, ई से हमारो नाम नईं आ पाओ। बेटा, हमें दुख तो एई बात को आ है, कै जौन कौनउ आदमी साँचउँ की लड़ाई में जेल गए उनको नाम नई आ पाओ और जो अपनी घरू लड़ाई में जेल गए उनको नाम आ गओ। आज बे स्वतंत्रता संग्रामी बनकर सरकारी तनख्वाह पा रये है। हमारो कोऊ होतो तो आज हम सोई सैनानी कहाउते और तनख्वाह पाउते। ऐसई तो आ स्याने कै गये कै साँचे जन भूखन मरें, लावर लड्डू खायँ।

झंकृत-तो काये बब्बा, तुम ई राज से गुस्सा हो का।

बाबूलाल- नईं बेटा, गुस्सा तो नई हैं, जो राज उन अँगरेजन से अच्छों है, अपनो राज आय, पै हम चाहत हैं कै अपनो बुंदेलखण्ड राज अलग सें बनो चाहिए काये से, कम सें कम अपनी पहिचान फिर से तो लौट आहे, तुम सुनो, ई की कोशिश जरूर करियो काये सें, अपने बुंदेलखंड के रीति रिवाज, खान पान, रहन, सहन, भाषा बोली, पहिरबो, ओढ़बो, नाचबो, गावो, सब से अलग है।

राम - काये बब्बा जू, जो अपनो बुंदेलखण्ड, कितनो है, कहाँ लो है, और ऊ में ऐसो का का है जो हम सबई खों बता पाहें कै जो जो है भैया हमारे बुंदेलखंड में।

बब्बा, खाँस खें अपने मों पै दोऊ हाँथ फेर खें बोले कै, बेटा, नोनी कई, बैठो, अच्छे से बैठो अब नै उठियो, हम तुमें बता रये हैं कै का का है अपने बुंदेलखण्ड में। सुनो, बेटा, अपनो बुंदेलखण्ड भौतऊ नोनो है। देखो, दक्खन दिशा में नरबदा, उत्तर दिशा में जमना, पूरब दिशा में टोंस और पच्छिम दिशा में चंबल नदियाँ बै रई हैं। उनके बीच की जो जगा है ओई आ कहाउत है ''बुंदेलखण्ड''

झंकृत :- अच्छा बब्बा जू और का का है अपने बुंदेलखंड में।

बबूलाल:- का कई का का है। का का नैयाँ बुंदेलखण्ड में, सुनो बुंदेलखण्ड में पैलउँ तो वो चित्रकूट धाम है जहाँ पर, राम-सीता और लक्ष्मन के संगे कामतानाथ पर्वत पर बारा बरस रये थे। बेटा, उते एक धाम गुप्त गोदावरी सोई है। जहाँ पहार के भीतर सें पानी की धार बै रई है। उते मंदाकिनी के किनारे सती अनुसुइया जू को आश्रम है। जे बेई अनुसुइया आयें जिनने भगवान, ब्रह्मा, विष्णु, और शंकर जी खों छै छै महीना के लरका बना लये हते, उतई ''भरतकूप'' है जाँ पै सबई तीर्थों को जल भरत जू ने डारो थो। उतई फटक शिला है जौन पै राम, सीता के संगे बैठे थे, तब इन्दर के पुत्र नयंत ने कौआ बन खें सीता जू खों चोंच मार दई हती। उतई ''हनुमान

धारा'' है जाँ पै हनुमान जू कछू बेर के लाने सुस्ताने हते। उतई बाल्मीक जू को आसरम है जाँ पे रामचन्द्र जू आउत बेरा थमे हते। और सबसें नोनी बात तो जा है कै, उतई सें तनक दूर आ है राजापुर गाँव, जाँ पै तुलसीदास जू ने जनम लओ हतो जौन ने रामान लिख खें राम खों संसार भर में उजागर कर दओं।

राम - अच्छा बब्बा जौ और बताओ कै और का का है हमें सुन खें भौतउ नोनो लग रओ।

बाबूलाल-तो पैलऊँ पानी पिआओ, जीभ ऐंड़न सी लगी है। (पानी पी खें) बब्बा जू फिर से बोले कै सुनो, चित्रकूट से दक्खन दिशा में पहार की एक चोटी पै माता शारदा को भौतउ सुन्दर स्थान है, माता के दरशन करवे भौतउ दूर दूर से आदमी आउत जाउत रैत हैं वां की बेजा ऊंची चढ़ाई है पै बूढ़े सें बूढ़े आदमी भी आराम सें चढ़ जात है, बा सब मैया की किरपा है।

झंकृत:-काये बब्बा जू तुम कर आये उनके दर्शन

बाबूलाल:-हओ बेटा, हम हो आये उते, जब हम गये रहे तब उते जादां सुबधा नई हती, अब तो सुनत हैं कै उनकी छिड़ियाँ सरकार ने अच्छीं बनवा दईं और ऊपर जावे के लाने उड़न खटोला लौ लगवा दये, बेटा, जब तुम बड़े हो जाओ तो जरूर जैयो (बोलो शारदा मैया की जय)

राम - बब्बा हम शारदा मैया के दरशनों खों जरूर जैहों अब और बताओ।

बाबूलाल:- बेटा, अपने गांव सें उत्तर पूरब दिशा में परना शहर है, उतई आ हते महाराजा छत्रसाल जौन के नाम पर बुंदेलखंड आज लौ कहाउत है बेटा, उते की धरती सें हीरा निकरत है, वे हीरा भौतउ कीमती होत है। और परना से तनक अँगारें चंदेलों के बनवाये ऐसे मंदिर है जिने देखने सबई देशन के आदमी आऊत हैं और उन मंदिरों की फोटों खैंच खें अपने देश खों ले जात है, ऊ मंदिरो खों देखवे सें आदमी की टोपी गिर जात है, वे मंदिर इतने ऊचे हैं। उनकी चित्रकारी की तो कछु नै कओ, कैतई नई बनत- उते को नाम खजुराहो हैं। खजुराहो संसार में जाहर है। मोय जादा पतों नईयाँ कौनउ बड़ी किताब में खजुराहों को नाम लिखो गओ है।

खजुराहो से तनक दूर पानी को एक गहरो कुंड है कै जी की गहराई को पतो आज लौ कोऊ नई लगा पाओ। सुनत है, जब पंडवा, ई वन में आये ते तो प्यास लगवे पै भीम ने अपनी गदा धरती पे मार खें पाताल फोर दओ थो। ई से जू कुंड खो सबई जनें ''भीम कुंड'' के नाम से जानत हैं। और सुनो, भीम कुंड सें उत्तर पश्चिम दिशा में है ''ओरछा धाम'' उते महाराजा मधुकर शाह की रानी गनेश कुँअर संवत 1661 में अजुध्या से साक्षात रामराजा को ओरछा लाईं हतीं। वे रामराजा सरकार आज लौ रानी के महल में विराजे है, भौतउ बड़ो तीरथ है ''ओरछाधाम'' उतई पै आहें ''हरदौल'' जिनने जहर खाकर अपने प्राण त्यागे थे, वे हरदौल बुंदेलखण्ड के घर घर में देवता जैसे पूजत हैं।

झंकृत-बब्बा जू और सुनाओ, हम ओरछा जरूर चल है।

बाबुलाल:-बेटा ओरछा के ऐंगर झाँसी को किलो है जो ओई किला आय जहाँ पै महारानी लक्ष्मी बाई ने अँगरेजन सें लड़ाई लड़ी हती ''बब्बा जू ने फिर कई कै अपने गाँव में दक्खन दिशा में जागेश्वर धाम है, जहाँ पर भगवान शिव उप-ज्योतिर्लिंग के रूप में बिराजे हैं। उनको पतो आज लौ कोऊ नई लगा पाओ कै वे कितने गहरे हैं। सुनत हैं कै राजा नल और दमयंती को ब्याव उतई से भओ हतो। जे बेई राजा नल आयें जिन पै अबेरा परी हती। कैत है, उ, समैया पै उनकी भुंजी मछरिया पानी में उचट गई हतीं। ऊ समय पै राजा रानी ने अपने अपने नाम पै नगर बसाये हैं। उन नगरों के नाम दमयन्ती नगर एवं नलनगर थे। जे बेई नगर आयें जो आज दमयन्ती नगर (दमोह) और नलनगर अपनो गाँव रनेह नाम से जाहर हैं। ऊ बिरिया पर उनकी परजा ने लाल तलैयाँ डरवाई हतीं जो नलनगर (रनेह) में चौरासी और दमयन्ती नगर (दमोह) ब्यालिस, ताल्प तलैयाँ आज भी है। उनके नाम एक जैसे है। और सुनो, अपने गांव के ऐंगर एक तीर्थ है कुंडलपुर। आदमी कहत है कै जो ओई कुंडलपुर आय जहां पै रूकमणी को जनम भओ हतो, जहाँ सें भगवान ने रूकमणी को हरण करो हतो वो मठ आज लौ ज्यों को त्यों है और उतई पहार के ऊपर जैनों के भौतउ मंदिर है, जिनमें भगवान आदिनाथ की बहुत पुरानी मूरत है। अब कहो, अपने बुंदेलखण्ड में का कमी है। जो राज अलग बनो चाइये कै नईं सबई ने कई कै बब्बा जू साँचीआ कै रये बुंदेलखंड राज जरूर अलग बनो चाइये, जरूर अलग बनो चाइए।

नलनगर, रनेह हटा (दमोह) म.प्र.
मो. 9893902928

एक रोचक बुंदेली लोक कथा -

उजयारी आ गई

- जगदीश किंजल्क

बहुत समय पहले की बात है, बुन्देलखण्ड के पहाड़ी इलाके में एक छोटा सा गांव था चिनाव। गाँव का नाम "चिनाव" कैसे पड़ा इसके विषय में इतिहास मौन हैं। गाँव के चारों ओर विन्ध्यांचल पर्वत श्रृंखलायें थी। पहाड़ियों पर सुन्दर सुन्दर वृक्ष और मैदान थे पश्चिम में केन नदी बहती थी उस छोटे से गाँव में लगभग पचास घर थे। इन घरों में लगभग सौ सवा सौ लोग बास करते थे पूरा गाँव मिल जुल कर रहते थे और पूरे परिश्रम के साथ अपनी खेती किया करते थे। उन सब के बीच प्रेम था। एक दूसरे का दुख-सुख पूरे गाँव का दुख-सुख हुआ करता था। दुर्भाग्य से पूरे गाँव में कोई भी व्यक्ति या महिला शिक्षित नहीं थी। वे आधुनिक जीवन और सभ्यता का नाम भी नही जानते थे। उनका जीवन अज्ञानता के कारण, अनुपयोगी कार्यो में बीत रहा था।

दुर्भाग्य की बात यह है, कि वे लोग कलश का प्रयोग नही जानते थे। उन्हे यह भी पता नही था कि कलश क्या होता हैं। दिया बाती क्या है? उन्होंने रात्रि में कलश के प्रकाश को देखा ही नही था। प्रकाश की कल्पना भी न की थी। जैसे ही संध्या होने लगती सभी ग्राम वासी खाना खा-पीकर सोने के लिये तैयार हो जाते। उनकी मान्यता थी कि अंधियारी आ गई, उसे टोकरियों में भर कर नदी किनारे फेंक आना चाहिये। अब अंधियारी ढल जायेगी तो प्रकाश दिखाई पड़ने लगेगा। ऐसा सोचकर, संध्या को सब एक स्थान पर एकत्रित हो जाते और खाली टोकरियों को एक स्थान से उठा कर नदी किनारे उड़ेलते रहते। सारी रात उनका यही कार्यक्रम चलता रहता। वे कठोर श्रम के कारण थक जाते और जब प्रभात में सूर्य का मुख देखते तो खुशी से चिल्लाने लगते, 'अँधियारी ढुल गई उजयारी आ गई।' उनके प्रतिदिन के जीवन का यही कार्यक्रम हुआ करता था। वर्षो बीत गये। गाँव के लोग प्रतिदिन आने वाली अंधियारी को ढोने में लगे रहते। वर्षों के लगातार श्रम के कारण अंत में वे थकने लगे। उनका यह सोचना गलत निकला कि एक न एक दिन पूरी अंधियारी ढल जायेगी ....। दुर्भाग्य से अंधियारी कभी न ढुली, तो अंत में हार कर गाँव वालों ने सभा बुलाई। उस सभा में सभी छोटे बड़े और बुजुर्गों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया गया कि उनके गांव में एक पहाड़ है, जिसके कारण अंधियारी आती है, अत: उसे हटाया जाना चाहिए इसको हटाने के लिये सभी ग्राम वासियों से कठोर श्रम और सहयोग करना होगा।

सभा में हुये निर्णय के अनुसार अंधियारी आते ही सभी ग्रामवासी नये उत्साह के साथ अपने अपने घरों से निकले आते और उस पहाड़ को खोद कर खिसकाने में जुट जाते। वे सारी रात परिश्रम करते और थक कर चूर हो जाते। जब प्रभात में वे सूर्य देव की किरणें देखते तो उनका मन हर्ष से भर जाता। वे समझते पहाड़ खिसक गया है, इसलिये उजयारी आ गई है, परन्तु संध्या होते ही पुन: निराश हो जाते। कहाँ तक श्रम करते और कहाँ तक रातों की नींद खराब करते ....। न तो पहाड़ ही खिसका न ही अंधियारी आना बंद हुई। फिर सभा बुलाई गई और पुन: वही निर्णय लिया गया। सभी नई आशा लेकर काम पर जुट गये। उनके अंदर आत्मविश्वास था कार्य के प्रति लगन थी और अपने श्रम पर भरोसा था - एक न एक दिन पहाड़ खिसक कर रहेगा।

सुयोग से उन्ही दिनों उनके गाँव में एक लड़के का विवाह हुआ। बहू दूर के किसी गाँव से आई। वह साक्षर और समझदार थी। उसने ससुराल आकर गाँव वालों की जीवनचर्या देखी तो आश्चर्य चकित रह गई। उसके समक्ष जटिल प्रश्न था। कि उन्हें कैसे समझाया जाये। उसने एक उपाय सोचा। एक दिन रात होने से पहले ही उसने मिट्टी का एक कलश बनाया और उसमें तेल डाल दिया। रूई मंगा कर, उसकी बाती बनाई और कलश में रख दी। उसने सभी ग्राम वासियों को बुलाया और उस बाती में आग लगा दी। आग लगते ही अंधियारी भाग गई और सर्वत्र प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। यह चमत्कारी प्रयोग देख कर ग्रामवासियों ने बहू की जी भर कर प्रशंसा की उनके गाँव में पहली बार कलश जला था, और पहली बार अंधियारी भागी थी। उन्होंने इसे भगवान की विशेष देन समझी।

उजयारी पाने की खुशी में उन लोगो ने सारी रात उत्सव मनाया। उसी दिन से, उनके गाँव में कलश जलने लगा और वे सब कलश को देवता मान कर उसकी पूजा करने लगे। उनके गाँव में सदा के लिये उजयारी आ गई।

साहित्य सदन, 145-ए, सांईनाथ नगर, सी-सेक्टर,
कोलार रोड, भोपाल म.प्र. (462042)
मो. 9977782777

बुंदेली लोककथायें –

राजन की सला

– अजीत श्रीवास्तव (एडवोकेट)

ऊं समै की बात है, राजन कौ रात हतो, एक राज के राजा राज करत करत इकाऊ हार गये ते सो उन्की रानी जू साब नै कई- ''मराज मन-बैलाव के लाने कऊँ तीरथ कर आव, ई से नई चेतना मिल है, मन सुधर जैहे।।'' उन्नै राज पुरोहितखों टिखाओं, उन्से आसीरबाद लैके आसन दओ फिर कन लगे –

गुरूदेव हम सोच रये कि बिलात दिना हो गये, गंगा जू में स्नान नई भये, सो प्रयागे जायें चइये।''

''जा तौ औतई अच्छौ विचार अपुन खों आओ मराज, गंगा स्नान, दान पुन्य कौ फल की का काने, अवश्य कें जायें चईये मराज।''

पंडित जू की सुन राजा कन लगे – ''पै मराज अच्छौ सौ मुहुरत काढ़ो, कौन सी सवारी से जाबों ठीक रै, काय से कौन प्रयागै बगल में आ है।'' पंडित जू ने पोथी-पत्रा काढ़ दिन सुदी काढ़ दई औ सवारी के लाने ऐसी कई कि जौन सवारी से मराज खों आराम मिलै, बेई उचित रंत, नौनी रत, सो वा अपुन चुन लो।

राजा ने सोंच साच के कई, पंडित जू हाथी से जावो कैसो रै? ''सुनके पंडित जू बोल परे'', ''भौतई नौनों रै, मराज उ ये जां चाहे रोक लो, गिरबे का भै नईया, फिर बातौ राजन की सवारी ओर से रई आई, हौदा कसवा लो मराज।''

सुनके तनक देर में राजा बोल परे ''वै पंडित जू मोये लग रऔ कि हाथी की चाल मद्दी होत, महीनन लग जे प्रयाग पौंचत, ऊ तौ मरी चाल चलत।'' पंडित नें हां में हां मिला के कई ''सांसी कै रये मराज, हाथी कौं खटराग सोऊ बिलात होत।'' ''तौ ऊंट कैसो रै पंडित जू ? राजा ने प्रश्न करौ। पंडित जू ने ऊंट कौ ऐसौ बखान करोकि ''वाह मराज जौ जानवर तौ सवारीयई कै लाने बनो, सूद में चलत, एक दार दाना पानी दै दो, हफता भर खौं सुरतें, ऊ पै भी हौदा कस जात मराज।''

मराज नें फिर सोंच के कई ''पै पंडित जू गर्मी पर रई, कऊँ ऊँट वलवला गओ तो, ऊँट में भी कम खटराग नईयां, उये कौन भगा आ पानै, बिलात दिनन कौ चक्कर है, नहावे जाये औ ऊंट वलवला जाये तो ? पंडित जू फिर कई पल्टे ''मराज ऊँट टेढ़ो गेढ़ो राजस्थान कौ जानवर, दिखावट में नई जमत, ऊँट छोड़ घुरवा की सवारी लई जाये मराज।''

राजा कछु प्रसन्न भरो औ कन लगे ''वा मराज, जा कई तुमन पते की बात, बीरों की सवारी, बाकी चाल, औ कम खान पान, अरबी घुड़वा कै का कानें।'' पंडित जूं भी खुश हो गय, बोले ''मराज तौ घुरवा पै ई गंगा जू खों प्रस्थान करो जाय।'' पर राजा कछु विचलित से तौ हते ई, सो वे फिर कें कन लगे –

'पंडित जू हम सोच रय, घुरवा में कितेक देर बैठ सकत करयाई हिल जात पीठ कौ बुरऔ हाल हो जात, फिर घुरवा कौ कछु ठिकानौ नईयां, कॉ खाई-पहाड़ पै पटक दै, मोये कछु जँच नई रऔ। पालकी की सवारी कैसी रै पंडित जू? पंडित जू ने फिर हां जू हां .... जू करी '' वाह, कैसी नौंनी कई, ऊ के जैसी दूसरी सवारी है ई नईयां जां चाय ठाडो करा लो, जा चाय मेल लो, घर-घाई आराम मिलत ऊ में। सोत चले जाओ जैसे चाय।''

अब राजा फिर से बोले परै ''पंडित जू लेकिन एक बात जा हैगी, कि गंगा जू का कें कि मोये स्नान खों पालकी में आ जम कें आये, बात जमसी नई रई। गैल के प्रजा जन का कें कि गंगा जू आ जा रय कि सैर पै आ निकरे। फिर चार-आठ कहार चानै सौ अलग, उनके कंधन कौ पाप और चढ़े। है, कि नई पंडित जू?''

पंडित जू राजा से बात करत ऊब गये ते, आखर कोऊ का तक 'हा .... जू, हा .... जू कर सकत सो बे झल्ला के कै उठे ''मराज मै का कत अपुन के राज में सब जगा आनंद मंगल फैलो परो, एक सें एक तला, झरना, नदी, कुंआ, बावरी, हैई, निर्मल जल, गंगा जल सो भरो परो, सो उनई में सपरो जाय मराज, गंगा स्नान की बात अबै रन दई जाय मराज।''

राजा खुश हो गये, बोले- ''तौ पंडित जू आपकी सला से उयें ई तै रई कि जात्रा के पचरे में ना पड़ो

जायं, मजे से अपने तला में मल-मल कें सपरो जांय।'' पंडित जू नें कई ''सांसी कई मराज, मन चंगा तौ कठौती में गंगा।''

औ पंडित जू ने उतै से लम्बी तानी। राजन खों को सला दै सकत तो।

''को बामन को भंगी''

ऐसे ऐसे बहुत पुरानी बात है एक राज के एक राजा के एक दार ऐसौ अवरज भऔ कि उनकी हाथ की गदेली पैने एक बाल उग आओ, राजा ने भौत हकीम-वैदन सें इलाज कराओ, झाड़ फूंक कराई पै बाल झरो, तबई ऊ राज में एक सिद्ध पौंचे भये साधू बाबा पधारे वे मन की बातें जान जात ते, राजा ने उनकी चरचा सुनके उनसे मिलवे को विचारौऔ एक दिना भैंट करके गदेंली के बार की बात बता इर्द। वे साधु मराज ज्ञानी हते, सो वै बोले-देखौ राजन, जा अनहोनी बात तुमायें साथ भई सो कछु कारन हुइये ईष्वर ऐसई इसारे देत, तुमाये राज में सई लोगन कौ सम्मान नई हो रऔ लगत अब तुम 'बाल' के लानै कौनऊँ भंगी के इतै भोजन करौ तबई तुमाई हथेली की गदिया से बाल झर सकत।''

दूसरे दिना राजा ने राज के भंगी खों टेर के कई की काल भुन्सारै कौ खाना हम तुमाये घरै करें''?'' भंगी थरथर कांपन लगो सौ राजा ने फिर कई कि '' काल तुमाये घरै तुमाओ खाना खावे हम आ रय'''' भंगी मौंगो रै गओ। हांथ जोर चलो गओ।

दूसरे दिना राजा ने ऊ के इतै भोजन करौ पै बाल नई झरो। सौ राजा ने उन साधू मराज से फिर कई जा बात बताई सो उन्नै कोनऊ बामन के हतो खावे कै दई कछु दिनन में राजा ने राज बामन के हतै भोजन करें। सौ ऐसौ भओं कि भोजनई करत-करत बाल झर गये।

राजा खुशी-खुशी उन साधू बाबा से मिले औ कारण जानबौ चाहो सो वे ऐसौ कन लगे। ''देखो राजा, भंगी साफ सफाई करत सो आपने देखों हुइये ऊ के घर कैसी साफ-सफाई हती, औ बामन के इतै आपने का देखौ, उसई भिनको सो परो हतो घर। ई कौ अरथ भऔ की भंगी अपनौ काम सई ईमानदारी से कर रओं औ बामन अपने खौ वड़ौ मान बामनत्व से गिर गवे, वे अपनौ काम सई से नई कर रये। अब अपुन खुदई सोच सकत कि को बामन को भंगी हो रये। ई से सबरी बिरादरियन से अपनौ-अपनौ काम सई से करबे कै दऔ जावे अपनौ-अपनौ काम जीविका भरण पोषण नाम औ दाम देते।

'राजीव सदन' नायक मोहल्ला,
टीकमगढ़, म.प्र. 472001
मो. 8827192845, 8319786310

चौका

चौका ऊ स्थान है जहाँ भोजन होत है, एकदम रसोई से लगो। चौका साफ-सफाई और शांत सी जगा जरूर है पे इतई सब रस के विंजनों को स्वाद लओ जात। इतई बैठकें पंखा झलती हैं- मातायें। इतई बहुऐं भोजन परोसती हैं। सो ई चौका में बैठकें आप कविताओं को स्वाद लेबें। सभी रसो से भीगी कविताऐं पढ़े। जे कविताएँ आपको अपने चौका की याद दिलाजें है।

बिजना सी छाती कपत है

– मोहन शशि

अरे मोसम की मार
बिजना सी छाती कपत है

बेहाए बदरा अट-फट गए
मेढ़ चबा गई नदियां
ऐसो भारी जुलम करो की
सुन थर्राहें सदियां
अरे प्रभुजी बचाव
गजमुख तुमें सुमरत हें

सूरज दद्दा रिसा जात तो
भीर पड़त हे भारी
कऊं सूखा तो कऊं अकाल हे
थारी रोवें क्वांरी
भजलो सीता राम
ओई बेड़ास पार करत हें

आंधी अंधरा के दोड़े तो
अकल काम नें आबे
जब तब धरती कापें थर-थर
गांव शहर थर्राबे
रहो मैया सहाय
बिपता में तुमखों भजत हे

नेंचे-नेंचे खुदें खदानें
ऊपर महल अटारी
धरती फट रई, धरती धंस रई
बिपता घेरें भारी
मोरे कान्हा बचाव
बिनती तुमई सें करत हें
झाड़ काट रए, वन उजाड़ रए
खुदई बो रहे खतरा

अंधरा के बेभाव भाग रए
अकल पड़ो का पथरा
इनें रास्ता दिखाव
देवा महादेवा रटत हें

सागर, धरती ओर पहाड़
सबपे स्वारथ के झंडा
आज बांध लो हंडा, सुन लो
काल बीन हो कंडा
कछू समझो समझाव
बे बीना बजैया कहत हें

प्लाट नं. 34, मकान नं. 1501/5
गली नं. 2, शांति नगर
दमोहनाका, जबलपुर
मो. 9424658919

खाऐं लेत

– डॉ. राज गोस्वामी

लाला खों भौजाई, खाऐं लेत।
मामा खों माँई, खाऐं लेत।।
खूब ठनी नन्द-बहू में।
खट-पट खटाई खाऐं लेत।।
बाकी महगाई खाऐ लेत।
सास खों जमाई खाऐं लेत।
गौढ़ा मिल मताई खाऐं लेत।।
पटती ना दिखें खाइयाँ।
भाई खों भाई, खाऐं लेत।।
बाकी महगाई खाऐ लेत।
अफसर खों चाई, खाऐं लेत।

गले बंदी टाई, खाऐं लेत।।
दफ्तर की टाईपिस्ट संगें लगी।
बॉस खों बाकी चमचाई खाऐं लेत।।
बाकी मंहगाई खाऐ लेत।
मेंड़ की लड़ाई खाऐं लेत।
खेत की बुवाई खाऐं लेत।।
कोऊ फसौ लूट पाट में।
कोई खों सचाई खाऐं लेत।।
बाकी महगाई खाऐ लेत।
नेता बन कसाई खाऐं लेत।
देश की मलाई खाऐं लेत।।

काऊ खों कोसबौ फलै।
काऊ खों बधाई खाऐं लेत।।
बाकी महगाई खाऐ लेत।
रोग खों दवाई, खाऐं लेत।
जुरी सब कमाई, खाऐं लेत।।
घर-घर की का कहें व्यथा।
लोग खों लुगाई खाऐं लेत।।
बाकी महगाई खाऐ लेत।

श्री सदन, सिविल लाइन्स,
दतिया (म.प्र.)
मो. 92229688096

घुसन लगौ जड़कारौ

– पं. रतिभानु तिवारी 'कंज'

छपरा के खपरा सब नैचें, करगवनौ वसकारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगौ जड़कारौ।।

रमकू भौजी दुकीं पिऑर में
कमला कथरी ओड़े।
कक्का थर-थर कपें पौर में
काकी आग न छोड़ें।।
राम-राम रट रय बब्बा जू, ताक रए भुन्सारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगौ जड़कारौ।।

लगरइ ठंड बतीसी बजरइ
नातौ लगै सिरानों।
धरती के धौरे ऑचर में दुक गव कीच गिलारौ
टूटी टटिया में मों दैकें, घुसन लगौ जड़कारौ

सरसों फूलरई खेतन में
चुनवें चना चिरइयां
चिलके ओस हरी मेड़न पै
नोनी लगै उरइयॉ।।
मावठ की ठिठुरन ने सबखों, रनबन कौ करडारौ।
टूटी टटिया में मों दैकें घुसन लगौ जड़कारौ।।

भरौ सलूका पैरें डुकरो
क्लुआ कोड़ौ वारें।
बिना कमरिया के बाबा जू
दिन भर धूनी टारें।।
माटीं भरकें फिरै पिछौरा, कंउ धौरो कंउ कारौ।
टूटी टटिया मेंमों दैके, घुसन लगौ जड़कारौ।

बुन्देली धाम नैगुवा
टीकमगढ़ म.प्र.

पिया अंगना

– डॉ. प्रेमलता नीलम

लै चल बजरिया रे संग सजना,
लैदे मोहे बिंदियां और लैदे कंगना
ठुमक-ठुमक चलूँ पिया अंगना
लाल-लाल लैदे सिंदूर डिबिया
घुँघरूदार लैदे रूपे की बिछिया,
रूनक-झुनक चलूँ पिया अंगना.................
किनार दार लैदे मोहे चुनरिया,
लैदे बाजू बंद और पायलिया,
छनन-छनन चलूँ पिया अंगना
पिया संग है तो जमाना संग है,
पिया नही संग सब लागे बेढ़ंग हैं
हाथन थामें चलूँ पिया अंगना...............
ये री सखी श्यामल रंगरंग गई मै,
चाँद है पिया तो चॉदनी भई मैं,
चम-चम चमकूँ पिया अंगना ....

काव्यकुंज
बी 29 एलोरा कालोनी दमोह
मों. 9425406017

बुन्देलखण्ड का (राग-रावला)

– डॉ. हरिकृष्ण ''हरि''

बेटी करत पैले पार राम धई।
जी घर बिटिया जनम लेत है, स्वर्ग बनें घर द्वार-रामधई।
लगै सुहानौ घर और आंगन, फूल बगिया सी बहार-रामधई।
मात पिता कौ बनत सहारौ, घर के करती कार-रामधई।
कन्या दानी पुण्य कमाबै, पाप करत सब धार-रामधई।
दोऊ कुल खौ तार देत है, ऐसी गंगा धार-रामधई।
कुल कौ दीपक बोई उजेरै, बौई रचे संसार -रामधई।
हरिकृष्ण ''हरि'' आन दो बिटिया, हो जै है उद्धार- रामधई।

कार्यालय हरि सदन,
एकता नगर, उनाव मार्ग,
दतिया (म.प्र.) 475661

ग्राम्य छटा

– डॉ.एम.एल.प्रभाकर

संजा की बिरियां गाँवन में, भौतई लगै सुहानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

माँज सैर में धूरा उड़वै, रखत बरेदी ल्यावैं।
छिरियन के छरछरे बरेदी छे आ छे आ कावैं।।

गमार बरेदी भैसन कौ आलसी, बैठ-बैठ सुस्तानो।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

धुआँ बादरन घाई दिखावै, आसमान खौ छीवै।
ढोर बछेरु बँधे सार में, मछरा खून खौं पीवैं।

सन-सन करकै सार कायरें, पिन पिन राग सुनानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

गइयभैसे बंद गयीं खूँटा, चारौ भुसा की सानी।
भैसें मोय पलावै कैसें, धनियां की कइ मानी।

चुखा लेव जे छोर बछेरु, पड़िया-पड़ा स्यानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

कुड़ी वॉट की धरौ अँगारी, हॉत ऊपरै फेरौ।
डिढ़कै भैस हीसवै गइया, लगती बेई निबेरौ।

भैस बाखरी पैल लगालो, दौनियॉं ठीक ठिकानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

गर्र-गर्र आवाज सुनावै, कौन राग नई जानें।
दोनी भरत देख कै गाते, डबला ल्याव सुनानें

धनियां दौरी-दौरी आई, ठेवौ लगौ पिरानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

गुरसी ऊपर धरौ दूद खौं, तनतन ऑंच दिखाकै।
उबलत लाल दूद रंग छनकत, संसी सें पकर उठाकें।।

घर भर दूद ब्यारी करकैं, कौड़ों बरत दिखानो।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

किसा कानियॉं कयें कक्का जू पुरा परोसी सुनवैं।
ढोला मारु राजा गिलंद सुन, सबरे मन में गुनकैं।।

नई दुलइया घर मे बैठी, उमछत जीव दिखानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

ब्यान की बेरा भौदू आये, खेलत रये लरकन में।
बैठ गये कौड़े पै वुद्ध, भूल गये बातन में।।

सोवे की बेरां रो कावै की खौं देय उरानो।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

मर जावै वे बामन नाई, जिननें करी सगाई।
बसीट मरै प्यासौ भूखों बन मौखों इतै फँसाई।

कालौ समझावै मूरख खौं, प्रभाकर कैनां मानों।
स्वर्ग सें नौनी ई धरती पै, कालौ सबई बखानों।।

पूर्व प्राचार्य उच्च शिक्षा
प्रभाकर साहित्य सदन पृथ्वीपुर
मो. 9981943813

गोरन की फौजें रन छोड़-छोड़ भागती

– रामस्वरूप स्वर्णकार पंकज

धोके में ऑन घेरो झाँसी को अजीत किलों
गोरन की फौजे चड़ी ऑधी तूफान सी
भारी फौजन कों लैकें झॉसी पे चड़ो रोज
गोरन की तोपें गरजी मौत के समान थी

रानी छटपटाती रन सिंगनी भवानी तब
फौजें ललकार उठीं झाँसी के राज कीं
सब कीं तलवारें उते म्यांनन सें निकर परी
सैंकी मिटा देहों आज गोरन के ताज की

कड़क बिजली धन गरजन तोपें घन्नान लगीं
भाऊ की तोपन सें बरसन लगीं आग सी
चीलन से गोला गोरन पे मॅड़रान लगे
गिरी गुलाम गौस की तोप गोरन पे गाजसी

बिजली सी कौध परी म्यान से तलवार धार
गोरन कों मेंट देहों जे हैं जन घातकी
घोड़ा की कसी तंग ऑखें भई लाल-लाल
गोरन पै टूट परी महरानी बाज सी

मरहट्टा बुन्देला गोरन को मार उठे
जोधा पठानन की मार जमराज सी
गोरन कों घेर-घेर मार- मार ढेरकरो
गोरन की फौंजें रन छोड़- छोड़ भागतीं

जोधानी ललकार उठी रानी की सेना कीं
सुन्दर मुन्दर झलकारी गारनपै काल सी
कासी नें मूँड़ काट कदूआ से ढुड़कादये
चौकड़ी भुला सब झॉसी पै चाल की

झॉसी को सेनापति सूरमॉ रघुनाथ सिंह
गोरन की फौजें रन खेतन में कॉपती
दीवान जवाहर सिंह ताको का बरनन करें
सेनापति काट डारे ऑगे मौत नाचती

गुलमुहम्मद खुदावक्स ललता की तोपन नें
छावनी उड़ा डारी लपटें उठी आग सी

बक्सिन जू मोती वाई सुन्दर की तोपन नें
होरी सी जरा डारी गोरन के साजकी

बुरहामुद्दीन दूल्हाजू पूरन के गोलन नें
दल के दल ढुड़कादये भारी बौछार की
सागर सिंह जैसो वीर तोपन की मार करे
गोरन कों दिखान लगी नोबत अब हार की

गोरन की छाती पै रानी किलकार उठी
रोंऊन लगो रोज दशा देखी जब फौजकी
घोड़ा की टापन नें गोरन कों खूँद डारो
किंतै दुको रोज तोखों रानी ललकारती

घबरानों रोज रन छोड़ के बचा कें प्राँन
चिन्ता सतानीं बाय अपय सेना के जान की
रानी के झण्डा किले पै फहरान लगे
जीत भई झॉसी की रानी के मान की

रामचन्द्र देशमुख मोंपटकर मोरोपन्त
तात्या की फौजन की लड़ाई घमासान थी
सबई तरॉ हार अब दिखान लगी गोरन की
भेद नीति गोरन की कायर के समान थी

पीरअली दूल्हा जू गोरन के हाथ बिके
कुघरी जो आ गई अब झॉसी के बिनाष की
लालच में आकें भेद झॉसी को दे डारो
रानी से घात करो गैल चली नाष की

छूँची तोपन को दाग अंगेजन को घुसवादओ
जीतो हरा दओ हाय ऐसो राजघातकी
किले को भेद दें कें जोधन को कटवादओ
बुरी गत करा डारी झॉसी के राज की

झॉसी की दशा देख असुआँ गिरे रानी के
निरदोषी मरवा दये हाय ऐसो हतो लालची
दगा दें कें दगाबाज नें झॉसी को लुटवा दओ
जनता की दशा देख रानी बेहाल थी

रानी किलकार उठी काली सी गोरन पै
नागिन सी लहरानी धार तलवार की
खून की नदियाँ बहीं गोरन को काट डारो
ताऊ पै निरासा मिली रानी बड़ी कालपी
रानी गई उते इते झलकारी टूट पड़ी
लक्ष्मी को बना के रुप अग्रेंजन को मारती
पीर अली बोलो जो रानी की सहेली है
लक्ष्मी कऊँ होती तो सब कों मारडारती
पीठ पै पूतरा कों बांध रानी आगे बड़ी
मूठभेड़ होती गई चिन्ता न काल की
भान्डेर लोहागढ़ कौंच कालपी में लड़ी
आषा न मिली कितऊँ त्योरी चढी आँख की
हो के गोपालपुरा ग्वालियर में जा पहुँची
उतऊँ ना सहारो मिलो मिलो नहीं सारथी
लाल कुर्ता के जोधा मुट्ठी भर साथ हते
जूही और मुन्दर बाई तानें तलवार थी
चौतरफा सें घेरो अंग्रेंजन ने रानी को
रानी गोरन के व्यूह बड़कें विदारती
घोर युद्ध रानी नें ग्वालियर में कर डारो
गोरन की छाती पै काल सी किलकारती
चोटिल थे अंग-अंग सुवासन ने छोड़ो संग
दामोदर राव को झाँसी रानीं पुचकारती
चटक के चिता पै चढ़ी त्याग की भवानी तब
स्वतंत्रता सुराज की आरती उतारती
बूंद-बूंद रानी के खून की जिते गिरी
लेखनी लिखत गई स्वतंत्रता संग्राम की
सनाउन को घोर युद्ध पंकज इतिहास बनो
सारो जग बोलों जय रानी महान थी।

- भगत सिंह नगर,
कौंच जालौन (उप्र.)
पिन - 285205 मों. 9936505493

'गाँव'

- अश्विनी कुमार चतुर्वेदी

कट गये खेत
चिरईयाँ उड़ गई
सुआ फिरे मनमारे
रामा विगरे काज सवाँरें
सवरी कुठियाँ बण्डा भर गये
धुतिया सदरी हुन्ना लिव गये
आ गये बिन्ना देखन हारे
रामा! बिगरे काज सँवारे।
घरन घरन में लगी गौतरी
न्यौतारे आन पधारे
मसके डुबरी सतुआ लाला
सोवे पॉव पसारे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।
अलसाऐ दिन आये गाँव के
चौसर पत्ता ठलुवा खेले
बड्डो नन्ना बटे सनईयाँ
कक्का ठाठ सुधारे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।
पीपर नींचे फागे गब रई
होरी राख गुलाल की
पिये पियक्कड़ लोटे नरदा
कुलियन घूम रहे हुरयारे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।
बिगरो नल अब धुआँ छोड़वे
कुँआ मचो डबरा सो
रोती डरी गगरियाँ सबरी
कहाँ गये बदरा रे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।
दो के घरे उज्जवल जर रओ
महिना एक सवा लो
फिर के टंकी लेवे भईया
कहाँ धरे पैसा रे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।
नई नई सी बा लाल रूपल्ली
लरका चूरन बारी सी
बिगरे समो बचा के धर लई
नयी कऊँ हॉथ पसारे
रामा! बिगरे काज सवाँरे।

पता - पन्ना (जिला पन्ना) म.प्र.
मो. 9300198042

प्रेम भाव भूले

– रामानंद पाठक "नंद"

धरती कौ सिंगार बिलागव, उजर गये सब जंगल।
बिला गये सब पशु पखेरु, बिला गये सब दंगल।
बिला गई सब पार टौरिया, गांवन की चौपाले।
हरे भरे सब खेत बिलागय, गेहूँ जौ की बाले।
बिला गये सब बेर मकुइयां, गुलगुच तेदूँ ऊमर।
कुटकी कुदई कितै बिला गई, जामुन की बे झूमर।
मुरका डुबरी महुआ मेवा, कितै बिलागव सतुआ।
चीला बरा और औरियां, कितै बिलागव बथुआ।
भूल गये सब कड़ी पकौड़ी, भूले फुलका माड़े।
भूल गये सब घी की दुनियां, अब प्लेट लय ठाड़ें।
मड़वा की सब पंगत भूले, गिद्ध भोज वे करवे।
प्रेम भाव सब भूल गये, दारु पी के लरवे।।
किसा कानिया गोटे फागे, वे व्यावन की गारी।
राई स्वांग कितै बिलागय, बरा वरी वे प्यारी।
कंक्रीट कौ ठाणों कर दव, हमने देखो जंगल।
थिरक रहे डी.जे.की धुन पर, घर में हो रय मंगल।
मर्यादायें सब टूट गई है, संस्कार सब भूले।
नाच रही है घर की बाला, नंद देख कर फूले।

दहेज

कैसे करत ब्याओ बिटिया को मंहगाई भरपूर है
मंहगाई में सबसे मांगो चुटकी भर सिन्दूर है
जौ दहेज को दानव अपने देश भरे में छा गओ
ई की भूख मिटी ना कितनी बउयें बिटियां खा रओ
कैसे निभा सकेगा बाबुल दुनियां का दस्तूर है
मंहगाई मे सबसे मांगो चुटकी भर सिन्दूर है
नैन पुतरिया जै सो राखो लाड प्यार से पाली
सहज षील सुन्दर सी बिटिया मन की भोली भाली
माता और पिता दोनो का जौ आंखो का नूर है
मंहगाई मे सबसे मांगो चुटकी भर सिन्दूर है
नेव सनेव औ प्यार को बंधन जा मे जहर मिला रय
धिक धिक उन लोगन खो जो लालच मे बहू जला रय
अरमानो की चिता में सपना होता चकनाचूर है
मंहगाई मे सबसे मांगो चुटकी भर सिन्दूर है
इन दहेज के लोभिन को जगमुंह होवे कारो
तौ सच मानो बहू बेटिन को दुनिया होय नदारो
नंद कठिन कानून जो चानें, जानें क्यों मजबूर है
मंहगाई मे सबसे मांगो चुटकी भर सिन्दूर है

नन्द भवन नैगुवां
जिला निबाड़ी म.प्र.
मों. 9755554351

दो पद

– चन्द्रप्रकाश पटसारिया

1. **दद्दा बाई हमारे**

बिन पइसा रखवारे, घर में रहते ड्योढ़ी द्वारे।
तीसऊ दिन चौवीसऊ घंटा, हाजिर सेवा में ठाड़े।
जैसो कहदो वइये मानै, जिद्द न करत बिचारे।
भलो सोचतन जीवन कड़ गयो, पाले लरका बारे।
मोटो खावैं मोटो पहिरें रहतई खुशी बिचारे।
नये सलूका लरका पैरें, जे थेगरा धरे हजारे।
मईदार की बाट न हेरो, जे सब काज सँवारे।
भार बोझ ना इनै मानियो, दद्दा बाई हमारे।।

2. **पुरखा गैल बता गये**

पुरखा अपुन खौं गैल बता गये, सूदी चाल चला गये।
बैन भनैजिन पाँव परवारो, धरम के बीज बुआ गये।
गैल्हारे दुआरे से कड़है, पाहुने है समझा गये।
अपुन है भूखे अतिथि जुआवें, नेकी छोर छुवा गयें
पीपल देव देवता गऊ में, धूरौ बे पुजवा गये।।

बेरवाला मोहल्ला, इन्दरगढ़
जिला – दतिया म.प्र. 4705675
मो. 9893678267

माँ बाप की पीड़ा

– फेरन सिंह परिहार

कमा कमा कड गई उमरिया,
ई लरकन के लानें।
बेई बाप मतारी तरसे,
दो रोटन के लानें।।

करी चाकरी जीवन काटों,
तुम्हें पढाओं, लिखाओं।
जहाँ तुम्हारों गिरो पसीना,
उतपै खून बहाओं।।

कितनें करम करें हैं, जिनकों,
मोल चुकाना पानें।
बेई बाप मतारी तर से,
दो रोटन के लानें।।

जब से आ गई बहुये घर में,
बंटाढार करादओं।
उठा के डेरा बाहर डारों,
घर से अलग धरादओं।।

सोचो ना लरकन नें तनकऊ,
होनी हो के रानें।
बेई बाप मतारी तरसें,
दो रोटन के लानें।।

अरे विधाता कब लौं जीनें,
भव से पार लगा दो।
'सिंह' सहन ना होती पीरा,
मौत हाँ जल्द बुला दो।।

कौसें कहिये, कैसा करिये,
अब आगें का होनें।
बेई बाप मतारी तरसें,
दो रोटन के लानें।।

ग्राम पिपरा माफ महोबा
जनपद; महोबा (उ.प्र.)
मोबा. 07607378537

वीरन की बुन्देली धरती महान है

– शम्भू दयाल खरे 'विश्वास'

कलाकार कवि योधा, हीरन की खान हैं।
वीरन की बुन्देली, धरती महान है।।
छत्ता ने राखों बुन्देलखण्ड कौ पानी।
देशन-देशन गूंजी प्राणनाथ की वानी।
कलाकार कवि योधा, हीरन की खान है।
वीरन की बुन्देली, धरती महान है।

झाँसी की रानी नाम कर गई मर्दानी।
जाकी षौर्य गाथा कवियन ने बखानी।।
त्यागी तपसी कितेक धरती ने जाये।
ईसुरी ने रजऊ के गीत इतई गाये।
कलाकार कवि योधा, हीरन की खान है।
वीरन की बुन्देली, धरती महान है।

बुन्देलखण्ड सो नोनों कब कोंनऊँ देश है।
देखौ इतै नर नारिन वीरन को भेस है।।
भक्ति रस में डूबे साँझ और सकारें।
पन्ना के जुगुल किशोर दर्शन है प्यारें।।
कलाकार कवि योधा, हीरन की खान है।
वीरन की बुन्देली, धरती महान है।।

ओरछा में राम लला ललित कला धारे।
जपत नाम भव सिन्धु लग जाये पारे।।
बानों केसरिया रंग जानत जहान है।
वीरन की बुन्देली धरती महान है।
कलाकार कवि योधा, हीरन की खान है।
वीरन की बुन्देली, धरती महान है।।

आगरा मोहल्ला, पन्ना
जिला पन्ना
मो. 7477059273

रहो खूब नोनो सो गांव में बचपन

– डॉ. शरद सिंह

बो चूल्हो
बो चौको
बो रसोई को मौको
बो फुंकनी, बो धुंआ
बो पेट को कुआ
बो फूली चपाती
भौतई थी भाती
बो बैंगन को भरतो
बो मटमैलो कुरतो
बो दालन की बड़ियां
बो गुझियां, पपड़ियां
थी चाहत की गठरी
बो नमकीन मठरी
न चाय को चक्कर
न कप हतो, न सॉसर
रई गुड़ की भेली
सग्गी-सहेली
बो आले में भगवान
औ ताले में पकवान
बो दोना, बो पतरा
बो अम्मा को अंचरा
गोबर से लिपत्तो
माटी को चूल्हो
बनाउत्ते अकती पे
गुड्डन खों दूल्हो
भले ही चलत्ती
अभावों की चाकी
रई ने मगर चाह
कोनऊ ने बाकी
हती सिर पे हरदम असीसें सबई की
रओ बालपन, जे किस्सा तबई की
जिनगी ने हमसे करी ने थी अनबन
रहो खूब नोनो सो गांव में बचपन

एम-एक सौ ग्यारह, शांतिविहार,
रजाखेड़ी, सागर, म.प्र.-470004
दूरभाष - 09425192542,
7987723900

इत्ती सी बात

– डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

भइया नौने कै रये ते
कितै गये ते, कितै रये ते
काय खों मूड़ पकर रये ते
भइया सें जब इतनो पूछो
फूट फूटकें रो रय ते
ई मोंड़ा कौ व्याव भओ ना
मोंड़ी देखन जा रये ते
बीच गैल में डाको पर गओ
पास हतौ सब लै गय वे
अब कैसें कें व्याव होयगो
यई सोच कैं रो रये ते
सुनकैं ऐसो हाल परोसी
बाँह पकर कैं कै रये ते
नईं घबरावौ मोंड़ा कों लै
ब्याव होयगो ऊसई ही
मैं दैहों सब रुपिया पैसा
वक्त सरै पे लै लैंहौं
इत्ती सी बस बात, बताते
काय खों मूड़ पकर रय ते
सुन मोंड़ा कौ बाप तन गयो
गरैं मिलो कछु कहो नईं
छलक उठे आँखन में अँसुआ
दोनऊँ मिलकें रो रय ते।

अध्यक्ष-हिन्दी विभाग एवं हिन्दी शोध केन्द्र,
सेवासदन महाविद्यालय, बुरहानपुर (म.प्र.)
मो. 9826565737

बुंदेली ग़ज़ल

हम बुंदेली नार

– डॉ. वर्षा सिंह

हमसे बात हमई की करियो।
और न कोनऊ की कुछ कहियो।
का कैसो चल रओ सहर में
मोबाइल पे हाल बतइयो।
बोनी हो गई इते खेत में
उते भओ का जा तो सुनइयो।
सहर की लपझप रूप है न्यारो
हंसी-हंसी में नाय फिसलियो।
फीको अब तो लगत गांव है
कछू हमायी सुध ले लइयो।
मेला इते लगो है नोनो
आ के मेला हमें घुमइयो।
तुम 'सागर' में ऐसे रम गए
हम औरन खों भूल ने जइयो।
मुन्ना मुन्नी हींड़ रये हैं
'अब तो पप्पा घर आ जइयों'।
जनम जनम के बंधन अपने
फिर-फिर के, फिर छोर वंधइयो।
तुम सुहाग के टीका साजन
अपने हाथन हमें सजइयो।
हम बुंदेली नार हैं 'वर्षा'
सोच समझ के हमें सतइयो।

एम-111, शांतिविहार, रजाखेड़ी,
सागर (म.प्र.)- 470004
मोबाईल: 9926641706

सोजा बारे बीर

– ओ.पी.रिछारिया 'रिशु'

सोजा बारे बीर............
नींद की बलैयाँ ले के आ जै हों..........
मैं तो जमना के तीर..........................।
उठ भुँनसारे लल्ला मोरो, भर के ल्यावे नीर
मात-पिता के पाँव पखारे, धन्य मोरी तकदीर
सोजा बारे बीर.............................
होत दुपहरी पढ़वे जावे, बन -ठन के -मोरी बीर
चन्दा की प्याली में दे हो-दूध-मलाई-खीर..........
सोजा बारे बीर.........................
संजा बिरियाँ सब घरे आ गऐ.......................।
रफी, राम, रनधीर...............................
मोरो लल्ला कहाँ विलम- गओ ?
नैना होत अधीर.............................
सोजा बारे बीर................................
वतन के लानें तन-तज दइयो, बनो सिपाही बीर
आतंकवाद और भ्रष्टाचार की-तोड़ दियो जंजीर.............
सोजा बारे बीर.............................
न चाहे हम सोना चाँदी ....न मोती न हीर.............
जग में बेटा नाम कमइयो..........- जाई मोरी जागीर..........।
सोजा बारे बीर..............................
नींद की बलैयॉ ले के आ जै हौं
मैं तो जमना के तीर.................।

रिछारिया घाट,
परकोटा, सागर
मो. 9755811972

दोहा - मुक्तक गीत

– डॉ. महावीर प्रसाद चन्सोलिया

गजब है बुंदेली वर नार!
मुर्गा बोलें सें उठें, चकिया डड़ा सम्हार।
गोबर दुहनी से निबट, बाहर- भीतर झार।।
मठा भॉय लौंनी धरें, करबी काटन जायें।
दे कलेऊ सब खां चली, सानी-पानी सार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
पानी भरबे खों चली, बुंदेली पनिहार।
घड़ा शीश दो बगल दो, रस्सी कॉंधेडार।।
कंड़ा, छड़ा पग पैंजनी, बिछियन झनक सुहाय।
बरा बजुल्ला बॉंह में, कमर करधनी धार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
शीश फूल सिर नाक नथ, करनफूल नगदार।
अँचरन में मोती जड़े गल हमेल, लरदार।।
भौंहें खिची कमान सीं, हिरनी मोहत नैन।
अँखियाँ, फकिया आम सो, कजरारी रसदार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
नागिन सी चोटी लटक, कमर अंततक डार।
नाग जुनैया देख मुख, पियन चहत शशि सार।।
गोरे मुँह घूँघट लगे, जैसे बदरी चंद।
लाली बिजली धार सी, दॉंतन- पॉंत अनार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
सॉंझ सकारें हर गली, गूँजत है झनकार।
मनु मनोज कर आक्रमण, चाहत नगर पाचार।।
दो- दो घैला बगल में, सिर पे घैला तीन।
झूमत हथिनी लली सी, घर खाँ चली सुनार।
गजब है बुंदेली वर नार।
गाय जेंगरें बॉंध कें, पनवां सानी सार।
सब घर खॉं रोटी करी, कोंदो दरिया टार।।
विन भिण्डी, वन करेला, धरती मॉं की देन।
नोनों नारी नोंनिया, चारई, चेंच पमार।।
गजब है बुंदेली वर नार।
निबुआ कैंथा करौंदा, आम आमरो डार।
टेंटी गाजर लभेरा, सहजन सेंम अचार।।
ससुर सांस मॉं जेठ जू, भोजन सबैजिमांय।
'महावीर' थोपन चली, गोबर बाहर द्वार।।
गजब है बुंदेली वर नार।

– ग्राम पोस्ट, बॅंगरा (जालौन)
उ.प्र. पिन 285121

जा 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू!

– डॉ.एल.आर. सोनी, 'सीकर'

फैला रई है- उजियारी जू।।
　　जा। 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।।
ग्यारा साल सें - चलरऔ मे
बुन्देली जगत में - उँचो - नाम
पाण्डे द्दा - लिखें- पैगाम।
कुँअर हजारी - कृपा के धाम।
नपा- हटा बलिहारी जू।।
　　जा 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।।
'कठौती' में - शुभ कामना प्रमन।
सबई जनन की भाला शब्दन।
काव्य अ काव्य में भर दओ चंदन।
साँचो - साँचो - दीखो - वंदन।
खूबई - शान - सँवारी जू।।
　　जा 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।।
'सकोरा' की का करें वड़ाई।
ई में कवितन की गुरुताई।
जनकपुर - राम कलेवा भाई।
मड़वैया - नोने गाँव हिराई।
दोहे - बेटी - पुकारी जू।।
　　जा! 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।।
'कचुला' आंनद देवे बारो।
परसो - 'बेटी' नाटक प्यारो।
एंकाकी 'छत्रसाल' पधारो।
कछु 'वदलाव' भी होवे वारो।
मिल जैहै - सत्कारी जू।।
　　जा 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।
'कुड़िया' भरी - कहानी नोनी।
कछू पूरीं - कछु - ओनीं - पोनी।
का 'सूखौ - किसान की बोनी।
'रमकल्लो' भी - प्राण सलोनी।
चिंता - नींद, उड़ारी जू।।
　　जा 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।
'बेला' में इतिहास- सजाओ।
'दर्शन' - बुन्देली को पाओ।
षौर्य- रुप 1857-58 आओ।
शुभ शकुन, ठैन बिलमाओ।
- चहुँ ओर -जयकारी जू।।
　　जा! 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।
'कटोरा' भी सत्कार लिये है।
पन्ना - नरेश जू हार दिये है।
'मेला' - झलकियाँ -सार - लिये हैं।
'सीकर' भी - आभार हि ये है।
- हात-जोर स्वीकारी जू।।
　　जा! 'बुन्देली दरसन' न्यारी जू।।

बधाई

डॉ. एल.आर सोनी को भारती परिषद्, प्रयाग द्वारा भारती षिखर सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया इस सम्मानीय, सुखद अवसर पर डॉ. सोनी को 'बुन्देली दरसन'' परिवार की ओर से सादर बधाई।

डॉ. मनमोहन पाण्डे
सम्पदाक ''बुन्देली दरसन''
श्री मुख्य संरक्षक शताब्दीरत्न
डॉ. आलोक लोक कल्याण संस्थान
(रजि.) दतिया म.प्र.

बुन्देलखण्ड का खेल

– गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

बुन्देली माटी बारे बे, बाँके खेल निराले
हिलबिलान अब होतइ जा रऔ, सुन लो बैठे ठाले
आज उनई के सुनों रामधइ, नांव बतैयत सबरे
देखे भाले हते जौन बे, जानें काँ खों पबरे
गाँव गली चौमानन बीचां, खेल बे खेलत नैयां
अंगना पौर उसारें बीचां, मिलती नई अब गुइयां
चिटीधप्प उर कन्ना गोटी, दिख नई रऔ चपेटा
हिलींमिलीं दो बालें कां गईं, छइ छबोल के बेटा
ठड्डा बैठा गदाफद्द उर इत्तन इत्तन पानी
अन्डा डावरी चोर सिपाही, संग मकरन्दो रानी
अन्ध पड़ा उर टोपी डरउअल, तुआतार की पारी
खो-खो चर्रा घम्मा -छैयां, घोड़ा घाई सवारी
लुका लुकौअल थन्ना छीबौ, गड़ा गेंद धरधूला
पदा – पदौअल गुर्रा धालन, रेंचकुआ उर झूला
कोंड़ी के रे कोंड़ी के संग, बैठ कें धुल्ला पानी पी
कुकरू कूँ उर डुक्को डुक्को, मर मर कें री फिन तू जी
अटकन-चटकन गल्ल-गोली, खेल बे अक्कड़ बक्कड़
अब्बक-दुब्बक चूँ-चूँ भावे, डुक्को ल्याबें लक्कड़
मगरा मगरा आती पाती, बांकी आँख मिचौनी
चाई माँई टिप्पो धत्ता उर धुआमार सइ नोंनी
ऊना पूना ओट पोट उर कुल कुल बाती नैयाँ
कुड़ामार धरमूला के संग,भूले नोन कदैयाँ
संजिया हूल सतौरा हिटपिट, साँप नेवला नोंने
बचरी बिछुआ भूत पोंगरा, मगरई ताल सलौनें
दम दम चिकना दुद्दू पाँडो, डूबा डूबा डग डग
मुँह मटकौवल मुड़थपरी उर, भरे खेल हैं रग रग
चंदा मामा आसी पासी, पड़ा छैंक उर घुड़िया
अगड़ बादशा आलकी पालकी, है अँधियारी खुटिया
खिप्पी धरौवल चकरी भौंरा, चित्ताबड़ी निराली
सींक चुराना छक्का चपेटा, तुकबंदी नई खाली
कौड़ी गट्टा कौआ भुण्टिया, अंधा भूत बतैये
अदन भद्ना रोटी पन्ना, घत्ता नेंवता कैये
कूचीमार धरबूला गेड़ी, खाना पुरौवल देखौ
झिला झिलौवन ताई पारा, उड़तई झिल्ला लेखौ
चोरी चोरी मछों मछों संग, डूबा डूबा कै मन कौ
घूरमूला उर चूहा बिल्ली, बाँकौ खेल लड़कपन कौ
रसरी कूँदन गलगुच्ची उर कंचा चिपी धरौअल
चपत माई उर चुन चुन मुनियाँ, चील झपट्टा पल पल

नैयों कोड़ा जमालशाही कौ, किसा जनउअल प्यारी
चौपर ताश उर सोरा – गोटी, बग्गा अट्टू न्यारी
चंग बना कें दौर उड़ावें, खेलें भौंरा चकरी
चला टटेरे की गाड़ी खों, करबें पकरा धकरी
पुतरा और पुतरियाँ पूजें, उर खेलें मामुलिया
झेंझी टेसू सुअटा पिट्टू, दोरन दोरन ढिरिया
डीके के रे डीके के, थाई -थाई थपरी
भदूनी- भदूना रोपौ, मौआ, प्यारे गप -री
नौनिया के नौनियाँ है, मीरजीन घोड़ी
धूपछाँह ढाप ढपली, हरि जू ये थोड़ी
गिल्ली डन्डा गोटपड़ा उर, चंगला बंजी भोंरी
नागन टापू चंदा पौआ, कुआ पाट दयें गों री
आलो बालो गपई समुन्दर, चकरी तोड़ हैं न्यारे
तूरमार झुलमा पंगोला, डन्डा-सिलोर अतकारे
च्यांऊँ म्याऊँ उर अट्टा-चट्टा, जूज खेल संग झूमें
कुश्ती वारे दाँव लगैया, हाट बजारन घूमें
काँय डारबें सांझी खेलें, ए बी सी डी गाकें
हलकू-टलकू बब्बा-डब्बा, कहें पतंग उड़ाकें
चेंकाबे की किली खों जानें, गिनें ना बूढ़े बारे
अत्त करें बे मोंड़ा-मोंड़ीं, प्रान खान दई मारे
स्यानें लोरी सुना-सुना कें, पलना गीत खों गावें
ओद बोद सें बला खों टारत, भाव बुन्देली छावें
खेल के बीचां चीनें चीजें, घर बाहर कीं सबरीं
गिन्ती सीकें मोंड़ा-मोंड़ी, नैयाँ बातें लबरीं
खान पान उर रहन-सहन, संग नये जीवन में ढरबौ
आफत बीचाँ फस जावें, तौ सीकत रऔ उबरबौ
कबऊँ अमीरी कबऊँ गरीबी, आत जात सब ही कें
खेल- खेल में दुनियाँदारी, और गिरस्ती सीकें
छिन लड़बै छिन खेलन लगबें, बोली बानी दुइयाँ
मन में गांठ लगन नें पावै, जुरमिल खेलें गुइयाँ
जात पाँत उर ऊँच नीच कौ, भेद मिटाउत जानों
हिलमिल कें तौ जेई सिकाउत, रैबौ साँचौ मानों
बुन्देली-माटी में ऐंसे, खेले निराले रऔ हैं
गुप्तेसुर नें नांव उनई के, ढूँढ़-ढूँढ़ कें कओ हैं

769 गली नं 17, जे.डी.ए. मार्केट के पीछे, शांति नगर,
दमोह नाका, जबलपुर (म.प्र.) मो. 7049219043

दालान

दालान घर को खुलो-खुलो हिस्सा होत है- ई में हवा और उजयारों खूब रहत है। अन्न को नुकान्नों छानबो एई में महिलायें करती हैं। सो आपने जो पिछले अंक की रचनाओं को नुकान्नो करो है सो चिट्ठी-पत्तरी के रूप में ई हिस्सा में हम दे रये हैं- और आपसे कै रये हैं के आप हमें चिठ्िया लिखत रये करें।

सम्पादक महोदय,

बुन्देली दरसन अंक ग्यारह वर्ष 2018 ई. को आद्योपांत पढ़ने पर ऐसा अनुभव हुआ कि बुन्देली साहित्य के उन्नयन की दिशा में स्मारिका निश्चित रुप से महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। स्मारिका हेतु रचनाओं का चयन एवं उनका प्रस्तुतीकरण नि:संदेह सम्पादक डॉ. एम.एम. पाण्डेय जी की अपनी लीक से हटकर सोच का परिणाम है।

कविता, कहानी, आलेख, नाटक आदि को पृथक पृथक छॉटकर बुन्देलखण्ड संबंधी सामग्री को माटी और धातुओं के बर्तनों में सहेज कर उन्हें उसी रुप में पाठकों तक प्रेषित करने का कार्य श्लाघनीय एवं अनूठा है। बुन्देली लोक भाषा में लिखित साहित्य को पर्याप्त मात्रा में स्मारिका में स्थान देना, सम्पादक के बुन्देली के प्रति समर्पण का द्योतक है।

स्मारिका में अनेक रचनाएँ पाठकों को झकझोरती प्रतीत होती है। आलेखों में बुन्देलखण्ड भू-भाग से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामान्य ज्ञान वर्द्धक हैं। पत्रिका की साज सज्जा सराहनीय है। इन सब उपलब्धियों हेतु सम्पादक निश्चित रुप से बधाई के पात्र हैं।

एक बात जो बहुत खटकती है कि पृथक-पृथक शीर्षकों में विभक्त स्मारिका की अनुक्रमणिका का भी पृथक-पृथक खण्डों के साथ दी जाती है। मेरी दृष्टि में यदि इसको प्रारंभ से ही खण्डवार क्रमांक एवं पृष्ठ संख्या आदि देकर परम्परानुसार दिया जाय तो पाठकों को सर्वप्रथम अपने मनके लेखों की पड़ताल करने को कठिनाई से मुक्ति मिल जायेगी। मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करना अथवा न करना सम्पादक का अधिकार क्षेत्र है।

अत: में पुन: पुन: स्मारिका के यशस्वी सम्पादक डॉ. एम.एम. पाण्डेय जी को हार्दिक बधाई।

हरि विष्णु अवस्थी,
अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9407873003

परम सम्मानीय
सम्पादक जू,
हरिस्मरण।

जा कैबे में संकोच नेंकऊ नईया कै बुन्देली बानी और उनकी विरासत बचावे के लानें बुन्देली दरसन पत्रिका एनई मेहनत कर रई, अकेले अपुन कों सांसी बात को मानने पर है कै जा खड़ी बोली की आंधी अपईं भाषा कौ कितनौ नुकसान कर रई, देखने पर है सो देखियें और लाईयें और अपईं भाषा कों जिताबे की आस बनायें रइयें आशा सेई सब होत आऔ। बुन्देलखण्ड की भुखमरी, बेरोजगारी, कछु कम मेहनत में जादा कमावे की आदत नें जादातर गांवबारिन कों बाहर जावें कों मजबूर कर दऔ सो विचारे अपईं जनीमानसन कों लैकें और परदेशन में जारयें और उतेंई के तौर तरीका सीख रये। जब बे लौट के अ ते तब वे हमाये ढिंगा स्टेशन पै आके बैठ गये। जब हमने उनके आपसी बतकाव को सुनों तौ बड़ी चिंतामई बताऔ जे बुन्देली भाषा में रचे बसे इनऊ कों खड़ी बोली सीखे की ललक अपई बुन्देली कों का लै जाईये बाकी जनीं कैरई, कायजू पानी की बाटल, इताय धरीती कितायें गई बोतल, शिशी जैसे शबदन कों छोड़कें बाटल कौ असफल प्रयास न कऔ जाय भाषा के हिसाब देखो जाये तौ जौ अच्छौ सकेत नईं लगरऔं, अब कछू बतकाव बुन्देली दरसन पत्रिका कौ होन दो। अपने पिछड़े अंक के संदर्भ मे कठौती, में जो चिठियां छपी बे सब पत्रिका कों भौतई ऊचें स्तर पै पोंचाबे वालीं है। बुन्देली दरसन पत्रिका उन सबन कों आईना दिखारई जो बुन्देली भाषा कां गाँव गबारन की भाषा मानवे बारे है। सकोरा- कौ अर्थई माटी की सोंधी गंध कौ अनुभव करारऔ श्री देवेन्द्र यादव की होरी नें जाने कैसे प्रेम रस में डुबो दऔ ''प्यार कौ रंग लगा ले पगले जौ जीवन भर रै है, दिनेश चंद्र दुबे की कविता कैसे कैसे दिना, में आज नई पीढ़ी की गिरावट कौ सही दरस हो रऔ लये लुगाई लरका फिर आज के श्रमण सपूत'' श्याम बहादुर श्रीवास्तव के'' पंछियन के कलख'' में उनकी सामाजिकता उनमें आपुसी प्रेम संबंध व उनकी कर्तव्य परायणता ऐनईं रची बसी दिखा रई जथा- मुरगा बोले भुनसारे.......... 'श्यामा खंजन गल गलिया बोले

जगावें हरें हरें, पं. रतिभान तिवारी कौ अप्रकाशित महाकाव्य मिथलेश नंदनी के अंश ''रामकलेवा, में जरुरई कछू और जानबे की इच्छा हो रई कै इतनो अच्छो नये कलेवर लयें महाकाव्य काये प्रकाशित नई हो पारऔ जाय छपवें में तौ कौनाऊ अड़चन नई होय चइयें। रामकृपाल की कविता हमें रह-रह आवें याद, ने तो बुन्देली के श्रेष्ठ कवि श्री लक्ष्मीनारायण राय बत्स जी कविता मुझे रुलाती है बचपन की याद, की याद दिवारई। डॉ. वर्षा सिंह की 'बुन्देली गजले, कृष्ण सुदामा की मित्रता आज के परिवेष की सच्चाई कौ आइना जान पर रऔ।' पं. दीन दयाल तिवारी की 'बैताल', रामद पाठक नंद की किसान पै 'महगाई मार, बतकाव', श्रीमति बृजलता मिश्र को 'देवी अचरी गीत', डॉ. हरिकृष्ण हरि की 'चौकड़िया', डॉ. एल आर. सीकर की 'का करें यार', मोहन शशि की 'करियो क्षिमा शारदा माय', विनोद मिश्र की चौकड़िया, श्री मणिमुकुल कै होली के दिन चार, रामस्वरुप दीक्षित की 'बुन्देली गजलें', पं. गणेश प्रसाद मिश्र की फागें कैलाश मड़बैया हिरागये सांसऊ नानें गाँव, डॉ. महावीर चंसौलिया के दौहा मुक्तक, आदि ने सकोरा कों मानवीय संवेदना पौराणिक कथानक जीवन की व्यौहारिक सीखें, शिक्षा कौ पतन शिक्षा में सुधार की जरुरते समाज की समरसता व खट्टे मोठे रस से लवालव भरदऔ अब कचुल्ला देखिये, जौ वेला कौ छोटौ रुप होत रऔ सांसी तौ जौहे कै कचुल्ला केवल पाण्डेय जी बुन्देली दरसन के शबदन के छांव में धरें दिखारये घरन के कचुल्ला तौ कभऊं के बाजार में विक गये। अपई पत्रिका को कचुल्ला जरुर शबदन कला से भरौ सौ लगते जैसे डॉ. श्याम सुन्दर दुबे जू कौ नाटक'' बिटिया घर कौ उजयारौ, में नारी शिक्षा की आवश्यकता वेटियो पढ़ाये समाज का उत्थान होके रैहे। डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया कौ 'एकांकी की नाटक' बदलाव, पुरुष वादी मानसिकता और ऊके प्रति विरोधी स्वर उठवे कौ भइया समय आगऔ जौतौ सबई जानरये अकेले मानें नई चायरये अलेके कभंऊ न कभऊ मानने पर है। भास्कर सिंह मणिक, कौ ऐतिहासिक नाटक''भवानी भक्त छत्रसाल जू, इन नाटकन में धरोहर सौ धरौ ऊपरई से कचुल्ला कों नौनो बनारऔ। कुड़िया जामें' पं. झीनी महिराज, की कहानी 'कढ़ियारे मिसर, ने तो छत्रसाल महाराज के बारेपन सें ज्वानी के सगरसन और उनके राजा बनवे के बाद एहसान मानवें की भावना, एहसान चुकाबौ सबरी खोज खबर लै दारी।' लखन लाल पाल की 'की' रमकल्लो की होरी, की चिठिया नें नारी अरथ कों पूरौ कर दऔ कै न तौ वौ काऊ की दुश्मन, न कोऊ बाकों दुश्मन जो कछु बाये मिल जै बई से घुलमिल के हस खेल के अपनौ जीवन काट लैवे और बा लोक कहावत कों पूरी कररईनृप बेरी बनिता लता इनक उल्टी जात, जब जाही के ढिंग रहै ताही सौ लपटात, डॉ. सुरेन्द्र नायक के व्यंग 'गीध कलेऊ, नें तौ सत्ताधारियन कों पूरी औकात अकेलें चिकने पत्थरन पै का कछू असर परबे बारौ, बे बोई कर हैं। जायें उनईं अकेले को फायदा हूँ है। विचारे तुलसीदास जी खूब चिल्लातरये' शारदूल कौ स्वांग कर कूकर की करतूत, तुलसी तापर चहै कीतर विजय विभूत। सत्ता करबे बारिन बताऔ कभऊ की मानी। श्रीमति लक्ष्मी शर्मा की कहानी' सूखौ कर्जा और किसान, डॉ. दुर्गेश दीक्षित 'कंजूस पति', डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव श्याम की 'आपुसी जंग', पं. रामकुमार तिवारी को 'मौड़ी कौ भाग', ओ.पी. रिछारिया 'मन कौ महाभारत', डॉ. प्रेमलता नीलम की कहानी 'गाँव की दुलइया' आदि ऐसी कहानियां हैं। जिनमें, आपसी सद्भाव परमारथ, त्याग और नारी शिक्षा से समाज में सबई भलौ होवे बारौ है बागकी खटाई औ आध्यात्म के रसन से कुड़िया पूरी भरी दिखा रई हमें तौ ऐसौई लगरऔ औरन की राम जानें। बेला - के रचनाकार विशेष विद्व जन है जिन सबन ने विभिन्न विंजन से बहुत सारो ज्ञान भरदऔ डॉ. बहादुर सिंह परमार 'बुन्देली साहित्य सर्जना का दशा दिशा', डॉ.आर. बी. पटैल अनजान 'बुन्देली गीतों में धार्मिकता', डॉ. वीरेन्द्र स्वर्णकार' निर्झर' मसीत सोइबो, को बुंदेली अर्थ, पांव पसार के सोबौ पूर्ण व्यवहारिक सो दिखाऊत जासे हमऊ, को ठीकई लगौ डॉ. कामनी नें खलक सिंह दऊआ एक क्रान्तकारी, कौ अच्छौ परिचय डी.पी. शुक्ला सरस ने''क्रांन्तकारी घासीराम व्यासजू पै अपयें आलेख में बुंदेली कवियन में जो उनकौ हौर बताओ जानके अच्छौ लगौ काये सें वे भौतई कम समय में सबरेई

काम कर गये। एन.डी. सोनी औरछा के बुंन्देलाराजा, में औरक्षा राजवंश की स्थापना सें लैकें प्रजातंत्र के उत्तर दाई शासन कौ पूरौ इतिहास कौ परिचय करादऔ जाय भौतई कम जने जानतरये। जाके अलावा एक बिसरगये बुन्देली योधा तेजसिंह बुन्देला की खोज खबर राकेश व्यास और शिव भूषण सिंह गौतम ने खूबई करी। डी.एन.वर्मा. डॉ. नीलमखरे, डॉ. शरद सिंह, डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार अभय, शरद नारायण खरे सुधा रावत' क्षमा, ओम प्रकाश तिवारी, श्री श्रवण सिंह सेंगर, अभिनन्दन गोईल, राजीव नामदेव, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, श्री अमितकांत दुबे, श्रीमति प्रीति दुबे, अजीत श्रीवास्तव, राकेश नारायण द्विवेदी आदि विद्व जनन में बुन्देलखण्ड कौ इतिहास, रीतरिवाज, लोकगीत, नृत्य, एवं जीवन में सरलता, सरसता, गाँवन परंपराये, बुन्देलखण्ड के अन्य राज्य वंश, शिक्षा गति भाषा में विशेषई शबदन कौ प्रयोग बुंदेली भाषा कों बचावे और बाकौ बुंदेली बोली बाली सीमा से काढ़के आगे बढ़ावे के लाने अनेक प्रकार के विचार व्यक्त करे। बेला के शोध परक लेखन पैर कछु और बतकाव करबे कौ मन हतौ अकेले भइया जा चिठिया है कौनऊ समीक्षा नईयां जासें सबई विद्वानन कों परनाम करत भये एक बात जरुर कानें, अपये बुंदेलखंड के अलग अलग क्षेत्रन में कछु शब्द अलग तरीका से बोले जात सो कंऊ उनके अरथ और अपये अपये लेखन के अंत में लिखे जान लगै तौ और अच्छौ रैहै। जा हमाव विचार है कंऊ ठीक लगै तौ सबरे माने नई कौनऊ बात नईया कायसें 'कोस कोस पै पानी बदले चार कोस में बानी, सो देसज शव्द अलग अलग होजात। सबरे लेखकन और विद्वजनन और सम्पादक पाण्डेय जू कौ परनाम करत भये अपई बात खतम करऐ।

जय बुन्देलखण्ड

राजेश चंद्र गोस्वामी
सुभाष नगर कोंच,
जालौन (उ.प्र.) पिन कोड 285205
मो. 9453645764

आदरणीय पाण्डेय जी।

सादर प्रणाम स्वीकार करें।

लंबी प्रतीक्षा के बाद बुन्देली दरसन 2018 अंक 11 के दर्शन की अभिलाषा पूर्ण हुई। सर्व प्रथम मेरे आलेख 'बुन्देलखंड के विस्मृत नायक चन्देक शासक' तथा तमिल एवं तेलगू गाथा गीतों के नायक तेज सिंह बुन्देला बुन्देलखंड का एक गुमनाम वीर (सहलेखन) के प्रकाशन के लिये आभार स्वीकार करें।

पत्रिका पाते ही पढ़ना प्रारंभ कर दिया और फिर पूरी तरह पढ़ करके ही रखा। कठौती से लेकर कटोरा तक की समस्त सामग्री का रसास्वादन आनंद दायक हैं।

कठौती की चिट्ठी पत्री जहाँ पिछले अंक की स्मृति को ताजा करती हैं तो वही सकोरा में समेटी हुई 19 कवियों की कविताएं कुछ को छोड़ कर प्राय: सामान्य हैं। कचुल्ला में बुन्देली नाटक बिटिया घर को उजियारों (डॉ. श्यामसुन्दर दुबे) तथा बदलाव (डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया) प्रभावी लगे वही भवानी भक्त छत्रसाल जू (भास्कर सिंह माणिक) में कई ऐतिहासिक विसंगतियों के कारण वह प्रभाव नहीं डाल सका जिसकी अपेक्षा थी कुड़िया की कहानियों के विविध रंगरूप आकर्षक लगें। अंतत: बेला में रायते के रूप में संजोये आलेख, परिणाम और परिणाम दोनों ही पर्याप्त परिमार्जित हैं। और कटोरा की रंग बिरंगी झाकियाँ नयनाभिराम हैं।

इतनी तमाम खूबियों के बावजूद प्रफ की गल्तियाँ पर्याप्त मात्रा में देखने को मिली जिनकी ओर पर्याप्त सावधानी की आवश्यकता हैं। अन्यथा काकुन के भात में कंकड़ जैसी किरकिरी स्वाद को वाधित करती हैं। अन्यथा आपकी सम्पादकीय कुशलता सराहनीय हैं।

बुन्देली दरसन तन और मन दोनों से ही स्वास्थ्य एवं लावण्यमयी हैं उम्र के साथ -साथ आकर्षक भी बढ़ता जा रहा हैं। किन्तु मन में एक संदेह भी हैं कि बुन्देली का विकास कही अतिवाद की चपेट में क्षेत्रीय दायरे में कैद होकर न रह जाये। बस।

आपकी स्वास्थ्य की कामना के साथ

भवदीय

डॉ. शिवभूषण सिंह गौतम
अंतर्वेद कमला कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.) 470775
मो. 9826756929

प्रति,

डॉ. मनमोहन पाण्डे
सम्पादक 'बुन्देली दरसन'
सादर नमन।

'बुन्देली दरसन' का ग्यारवहाँ पुष्प पढ़ने को मिला, आत्मा प्रसन्नता से भर गई। बुंदेली संस्कृति, सभ्यता, साहित्य और अपनी धरोहरों को सहेजने, संरक्षित करने तथा उनकी विशेषताओं को उद्घाटित करने की दिशा में बुंदली दरसन का प्रयास सराहनीय है। आज के समय में पत्रिका निकालना वह भी अनवरत एक कठिन कार्य है उस पर भी लोकभाषा की पत्रिका का प्रकाशन- सामग्री जुटाना आदि - और भी जटिल कार्य है। आदरणीय डॉ. पाण्डे जी के सम्पादकीय में व्यक्त उनकीं 'सॉसत' विचारणीय है। लोक-पत्रिकाओं का महत्व और उपयोगिता तभी सम्भव है जब हम उसके विकास में नये-नये प्रयोगों और रचनात्मकता को लेकर आगे बढ़ें। साहित्य-संपदा को प्रभूत सम्पन्न करें। यद्यपि बुंदेली की ध्वजा को सतत् ऊँचाइयों की ओर ले जाने में डॉ. एम.एम. पाण्डे जी पूरी कर्मठता के साथ अग्रसर हैं। उनके इस सराहनीय प्रयास के लिए धन्यवाद और कोटि - कोटि नमन्।

'बुन्देली दरसन' में अलग अलग विधाओं को निरुपित करते बुंदेली बरतनों के नाम से अनुक्रमाणिका का प्रस्तुतन जहाँ एक नया विचार है वहीं बरतनों की विशेषताओं और बारीकियों के विश्लेषण द्वारा लोक को विस्मृत हो रहे शब्दों से परिचित कराना भी है और बुदेली शब्दों को पुनर्जीवन देना भी। पत्रिका में कविताओं का सम्पादन 'सकोरा' नाम से किया गया है। मिट्टी से निर्गित यह बरतन सकोरा कविता के मिट्टी से जुड़े होने के भाव को जहाँ जगाता है वहीं कविता की रसवन्ता और चुस्की ले ले के आस्वाद लेने में एक अनुपम आनंद की अनुभूमि को भी अभिव्यक्त करता है। सकोरा की सभी कविताएँ प्रभावी और अनूठी हैं। 'बुन्देली दोहा मुक्तक बेटी बचाओं' में डॉ. महावरी प्रसाद चंसोलिया ने दोहा के छन्दों को एक साथ और ऊबाई की तरह उसके तीसरे चरण को अर्थात् दूसरे दोहे की प्रथम अर्द्धाली को अतकांत करके मुक्तक (चतुष्पदी) बनाने का प्रयास किया है। प्रयोग तो नवीन है किन्तु दोहे का यह प्रयोग मुक्तक पढ़ने की गति-यति से हटकर है। दोहा स्वयं में एक चतुष्पदी है। अत: यदि दोनों दोहों के चरणांत एक ही रखे जाते तो वह मुक्तक के अधिक निकट हो सकता था।

दृश्य और श्रव्य विधा के लिये कचुल्ला शब्द उसकी कलात्मकता और रसभिव्यक्ति को व्यक्त करता है। लड़कियों की शिक्षा- दीक्षा तथा बेटा और बेंटो के बीच भेद की दीवार पर प्रहार करता डॉ. श्याम सुंदर दुबे का बुंदेली नाटक- बिटिया घर को उजियारो, डॉ. गंगा प्रसाद बरसैयाँ का 'बदलाव' तथा भास्कर सिंह मणिक' को भवानी भक्त छत्रसाल जू; नाटक प्रभावी तो है ही, नाट्य विधा से लेखकों को जोड़ने और प्रेरित करने वाले भी हैं। अगले खंड कुड़िया- पत्थर की यनी कुड़ी (कुण्डी) - में सकलित बुंदेली कहानियों में ही व्यंग्य है, तो कही वर्तमान की अभिव्यक्ति, कहीं नारी की विडम्बना तो कहीं पत्रात्मक कहानी और कही अहाने के बहाने कहानी प्रस्फुटित हुई हैं। कड़ी जैसे वस्तु को कसैला होने से बचाती है ऐसे ही ये कहानियां जीवन की रसन्ता उनके सरोकारों को बुराइयों से बचाने की पहल हैं।

बेला के अंतर्गत इतिहास, दर्शन लोक सम्पदा, साहित्य और संस्कृति से संवंधित आलेखों को रखा गया हैं। बुन्देली साहित्य सर्जना पर डॉ. बहादुर सिंह परमार का लेख बुंदेली की दशा और दिशा को व्याख्यायित करता जहाँ उसकी ऊँचाइयों को निरुपित करता है वही उसके विकास की नई पहल के लिए भी सचेष्ट है। पत्रिका में बुन्देली के शब्दों और भाषिक सशक्तता, लोक नृत्यों, नृत्यपरक गीतों और बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक संदर्भों पर भी सुन्दर लेख समाकलित हैं। लोक शिल्प और कला संबंधी ज्ञानवर्द्धक लेखों के साथ ही व्यक्ति नामों पर डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी का आलेख शीघ्र वृत्ति से जुड़ा हुआ हैं। कटोरा शीर्षक के अंतर्गत पीछे मीठे टकोर देती बुन्देली उत्सव की छविया संस्कृति से जोड़ती तथा आंनद से अभिभूत करती है।

कुलमिला कर बुन्देली दर्शन हमको हमसे ही रुबरु कराने और हमारी सुसुप्त भावनाओं को जगाने का एक अनूठा विधान है। जन्म भूमि के ऋण को याद दिलाने का प्रयास। इस हेतु में माननीय संपादक महोदय और नगरपालिका परिषद् हटा के सभी सहयोगियों के प्रति आभारावनत हूँ।

भवदीय

डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
एम. बी. 120 न्यू इंदिरा कालोनी
बुरहानपुर (म.प्र.)
मो. 9425051297

परकोटा सागर
02.07.2018

सेवा में,
संपादक महोदय जी
'बुन्देली -दरसन-2018'
डॉ. एम.एम. पाण्डेय जी
चंडी जी वार्ड, हटा जिला दमोह
पिनकोड - 470775

परम आदरणीय दादा जी,

अत्यंत हर्ष और उत्साह के साथ मैं ये पत्र लिख रहा हूँ। मुझे 'बुन्देली दरसन 2018' का अंक प्राप्त हुआ। पूरे मनोयोग से मैंने इसे आत्मसात् कर लिया। इस अंक में मैंने **कवैंती** - के पत्रों का संकलन एवं भाव उद्‌गार लोगों की अनुभूतियाँ पढ़ी। **सकोरा** - के कविता संग्रह में डॉ. वर्षा सिंह एवं श्री रामस्वरूप दीक्षित की बुन्देली गजलें, और श्री कैलाश मड़वैया जी की लम्बी कविता -'हिरा गऐ सॉसऊँ नौने गाँव' - यथार्थ सामने लाती हैं। **कचुल्ला** - के नाटक और एकॉकी, तथा '**कुड़िया**' - की मनोरंजन कहानियाँ -मानस पटल पर छाप छोड़ती हैं। **बेला** - का लोक साहित्य, इतिहास, दर्शन, डॉ. बहादुर सिंह परमार जी का-विचारोत्तेजक लेख-और श्री एन.डी. सोनी जी का आलेख- 'ओरक्षा राज्य के बुन्देला राजा' हमारा ज्ञान-वर्धन करता हैं। **कटोरा**- में बुन्देली मेला की झाँकिया - पाठक की उपस्थिति दर्ज करा देता हैं। मेला संयोजक - कुँवर पुष्पेन्द्र हजारी जी एवं संपादक महोदय डॉ. एम.एम.पाण्डेय जी बधाई के पात्र हैं।

ओ.पी. रिछारिया
सागर
मो. 9755811972

भाई पांडे जी,

आपके द्वारा प्रेपित बुन्देली दर्शन - 2018 यथासयम मिल गई थी। आज इसी पत्रिका का 2016 अंक पढ़ रहा था कि जो आपके द्वारा रचित आदर्श रचना ''सोना बिटिया'' पढ़ गया। रचना वस्तुत: बुन्देली बोली का प्रतिनिधित्व करती लगी। मेरी बधाई स्वीकारें।

बुन्देली दर्शन - 2018 के अंक का सम्पादकीय कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठा गया। मैं संभवत: आपके सम्पादकीय चिंतन के संदर्भ में एक आलेख भेजूगां।

सादर

- दिनेश चंद्र दुबे
पूर्व जज/लेखक, एडवोकेट,
68 विनय नगर-1,
ग्वालियर- 474012 म.प्र.

आज के अर्थप्रधान समय मे साहित्यिक पत्रिकाएं निकालना जोखिम भरा काम है। जबकि बहुत सी पत्रिकाएं अर्थाभाव के कारण बन्द हो रही है। क्योंकि ऐसे में बुन्देलखण्ड की बोली बानी में निकलने वाली बुन्देली पत्रिकाओं का निकालना किसी दुर्घटना से कम नहीं है। लेकिन जज्बा किसी का मोहताज नहीं होता है। वह अपने आने वाली हर बाधा को पार करके अपना मुकाम आप तय कर लेता है।

इसी बुन्देली धरती पर बुन्देली बोली यहाँ के रीति-रिवाजों को प्रतिबिम्बित करती बुन्देली पत्रिका बुन्देली दरसन न केवल निकल रही है बल्कि नियमित व निश्चित समय पर निकल रही है। यह गर्व की बात है। हटा के लोग उत्साह के साथ बुन्देली के कार्यक्रम करवाते हैं और पत्रिका भी निकालते है। इस पत्रिका में कार्यक्रम के साथ बुन्देली साहित्यकारों की रचनाएं भी प्रकाशित होती है। श्री हजारी जी व नगर पालिका हटा का योगदान अभूतपूर्व है। इन सभी को बुन्देली बोली के संरक्षण में महान योद्धा के रूप में देखा जाना चाहिए।

इस संक्रमण काल में जहाँ भाषाएं लुप्त होती जा रही हैं, वहाँ बुन्देली बोली का विकास ही नहीं हो रहा है वरन् सीना ताने आगे बढ़ रही है। इस पत्रिका के यशस्वी संपादक डॉ. एम. एम. पाण्डेय जी बधाई के पात्र है जिनकी संपादकीय दृष्टि से बुन्देली रचनाएं उत्कृष्टता की ओर बढ़ रही है। मेरी ओर से इन सभी को साधुवाद। मैं आशा करता हूँ कि उनका यह जज्बा हमेशा कायम रहेगा।

- लखनलाल पाल
प्रवक्ता हिन्दी
जनता इंटर कॉलेज, सिकतरा, हाथरस
मो. 9236480075

आदरणीय

सम्पादक जी,

'बुंदेली दरसन 2018' पत्रिका प्राप्त हुई। तदर्थ आभारी हूँ। पत्रिका की साज-सज्जा और विविधतापूर्ण सामग्री का सुंदर संयोजन मोहक एवं उपयोगी है।

बुन्देली के विविध रुपों की रचनात्मकता अनूठी है। यह ग्यारहवाँ पुष्प बहुत खूबसूरत है। 'कटोरा' 'बेला' 'कचुल्ला' 'सकोरा' 'कठौती' के नूतन प्रयोग ने पत्रिका को नव्यता प्रदान की है। विलुप्त होते बुन्देली के ये पात्र नई पीढ़ी को अपना परिचय देकर आकर्षित करने में समर्थ हैं।

कुं. पुष्पेन्द्र सिंह हजारी जी के अतुलनीय सहयोग ने हटा के 'बुंदेली मेला' और पत्रिका के प्रकाशन को दिव्यता के साथ-साथ ऊचाइयों तक पहुँचाया है। उनका 'बुदेली प्रेम' अभिनंदनीय है।

'कटोरा' में सांस्कृतिक झलकियाँ समावेशित हैं। छायाचित्र बहुत सुंदर हैं। चाहे राई नृत्य के चित्र हों, महिला- पुरुष दंगल हो। बुंदेली यंत्रो का प्रदर्शन हो। कलष यात्रा परिक्रमा हो। टपरिया का रमणीय दृश्य मनमोहक है। कटोरा की मिठास तृप्ति देती है।

'बेला' की खूबियाँ भी निराली हैं। बुंदेलखंड में तो बिटिया के ब्याह में 'बेला सौपना' एक रस्म ही है। बेला की बनावट बहुत अच्छी लगती है। काँसे के बेला में दूध- मिड़ी रोटी खाने का स्वाद ही अलग है। इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुये इस खंड में महत्वपूर्ण आलेखों का संयोजन - महत्वपूर्ण जानकारियों के साथ प्रस्तुत हुआ है। 'सरौंता' मंगल कामना का प्रतीक है।

'सरौंता कहाँ भूल आये गोरे ननदोइया' लोकगीत का अपना आनंद है। 'शकुन-अपशकुन हैं। बुंदेली किस्सा गोई है। बुंदेलखंड के वीरों का स्मरण है। शौर्य गाथायें हैं। ईसुरी का यष है। बुंदेली भाषा साहित्य कला और संस्कृति का संगम है। 'वेला' के माध्यम से परोसा गया इतिहास, दर्शन और साहित्य का खजाना है, जो शोधार्थियों के लिए उपयोगी है।

'कचुल्ला' भी 'बेला' के आकार का बर्तन है। इसकी कलात्मकता और उपादेयता किसी से कमतर नहीं है। 'नाटक' और एकाँकी के द्वारा रस की निष्पत्ति पाठकों को उत्प्रेरित करती है। आंदोलित करती है।

बुंदेली कवितायें और गजलें नये तेवर के साथ प्रस्तुत हुई हैं। 'चौकड़िया' 'लोकगीत' 'देवीगीत' 'सकोरा' में समावेषित हैं। जो सोधें दूध का अहसास कराती हैं।

'कठौती' की चिठियाँ 2017 की सामग्री से रु-ब-रु कराती हैं। कठौती में विद्वानों के अनुभव और सुझाव हैं।

पत्रिका अपनी गरिमा के साथ पूरे ठाठ-बाट से छपी है। 'बुदेली दरसन' आईना है, बुंदेली के हर अक्स का बुंदेली ध्वजा फहराने वाली यह धरोहर पत्रिका बुंदेली के हर प्रभाव और चमक को प्रदर्शित करती है। पत्रिका उत्तरोत्तर आगे बढ़े, इसका सुयश फैले, इन्हीं मंगल -कामनाओं के साथ, संपादक मंडल को बधाई।

- डॉ. कामिनी
मो. 9893878713

सम्माननीय

संपादक डॉ. एम. एम. पाण्डे जी

सादर नमन

मोय बुन्देली दरसन 2018 का अंक 11 जैसेई हांत में मिलो मन पढ़वे के लाने बौरागाओ। पत्रिका के अवरण पृष्ठ ने बुन्देली की छटा को अनोखो दर्शन मिलो। जो खूबई नौंनों है। भगवान शंकर मां पार्वती का दृश्य, दीवार पे बने बुन्देली चित्र और पकवान से भरो डला खूबही मन को लुभारओ।

संपादकी की कां कैनें कम शब्दन में सबई कछु लिख डारो। बुन्देली के लानें हटा के जितने विद्वान, समाजसेवी लोग योगदान कररये वे सब अभिनन्दन के पात्र हैं। आपनें अपने लेख में समाजसेवी साहित्यकारों और नगरपालिका के अधिकारी, कर्मचारियों का यथोचित सम्मान अपई कलम से बड़ी सरलता से करों। हम आपको कोटि-कोटि बन्दन करत। जो लोग अपई बुन्देली के लानें समर्पित हैं। हम उन सब को अभिवादन करत हैं। कठौती में डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार 'अभय', कैलाश गड़बैया, डॉ. गंगा प्रसाद 'बरसैया', डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी, एन.डी. सोनी और दयाराम वर्मा 'वैचेन' की प्रतिक्रिया दर्पण को काम कर रई।

सकोरा में - श्याम बहादुर श्रीवास्तव की 'पंछियन को संजा कलख', राम कृपाल

'कृपाल', बेताल और नन्द की कविताएं कितऊं न कितऊ औज भरवै की प्रेरणा प्रदान करत है। डॉ. वर्षा सिंह की दूसरी गजल देश प्रेम से परिपूर्ण अहलादित है। चौकड़ियन की का कैवें चौकड़िया खुदई में पूरी कविता होत है। राजेश चंद्र गोस्वामी और कैलाश मड़बैया की कविता नै तो मन झकझोर के रख दाओ। सच्ची बात कैवे और सुनवे के लाने बड़ी हिम्मत चाहिए। आज जो समाज में हो रओ ऊ को नौंनों चित्रण करों। हम सकोरा के सबई रचनाकार को प्रणाम करत है। कचुल्ला में डॉ. श्याम सुंदर दुबे और गंगा प्रसाद बरसैया को पढ़ो। आज नाटक और एकांकी लिखवे बारे बहुतई कम लोग रै गये। नाटक और एकांकी की विधा बनी रैवे ई के लानें हमें प्रयासरत् रये चईये।

'कुड़िया' में श्रीमती लक्ष्मी शर्मा ने 'सूखो कर्जा और किसान' कहानी में आम किसान का दर्द बाखूवी अपई कलम से उजागर करो। डॉ. दुर्गेश दीक्षित की 'कंजूस पति' कहानी ने हास्य के संगे संगे महात्वाकांक्षाओं की प्रवृति को वर्णन बखूवी करो। सुरेन्द्र नायक को व्यंग्य गीध कलेऊ ने तो गजब कर डालो। राजनीति के गिरते हुए स्तर पर बड़ी चतुराई में गहरा प्रहार किया है। 'गांव की दुलइया' डॉ. प्रेमलता नीलम की कहानी में आज समाज में हो रहे विखराव का चिन्तन स्पष्ट छलकत है। डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव 'श्याम' की कहानी 'आपुसी जंग' चिन्तन के लिए विवश कर देती है। 'अहाने के वहाने' और महामाई, कहानी वेला की मिठास की का कैनें आये। 'बुन्देली साहित्य सर्जना की दशा एवं दिशा' ने तो कमाललई कर दओ। डॉ. बहादुर सिंह परमार जू ने बुन्देली के रचनाकारन की भूत और वर्तमान की जानकारी अपयें लेख में दई जो सवई के लानें हितकर है। डॉ. कामनी को लेख 'इतिहास के आइने में : क्रान्तिकारी खलक सिंह दउआ', सुधा रावत 'क्षमा' को लेख ईसुरी कौ जस, 'राकेश व्यास और शिवभूषण सिंह गौतम का लेख' तमिल और तेलगू गाथा गीतों के गायक तेजसिंह बुन्देला, अजीत श्रीवास्तव का लेख बुन्देलखण्ड में शुभ शकुन औ ठैन मोय बहुतई नीके लगे। वेला को एक-एक शब्द मोय कछु न कछु नई बहुत कछु ज्ञान देत। ईगें इतिहास दर्शन के संगे संगे वर्तमान में का हो रओ और का होवे चइये को ज्ञान मिलत।

कठौती मोय रोज जगात, सुधरवे की वो गैल बतात, बुरा लगे चाहे नौंनों तुमको दर्पण साँची साँची कात। हास्य श्रृंगार वीर लगे मोय नौंनों, प्रीति भरो संयोग लगे मोय नौंनों, श्री वी भास करूण सकोरा सबई सकरे मन को करवे वात्सल्य ही शांत। मत्सय ही शांत अद्‌भुत जगुप्सा रस की का कैनें, हंस हंस के सब की सबई कछु कैनें बारह नाना नानी कहें कहानी कुड़िया की लगवे मीठी वाण्नी ; खट्टी कड़वी लगे दवा सी, कोऊ पढ़तन नई अपात। थारियां भरी सुहात सबई को मन की बात बतात सबई को कटोरा सब को खूब लुभात भरो बोला में ज्ञान को भात। परियां भरी सुहात सवई कों, मन सुनतन पढ़तन कोउ नई उपरान्त। सब को खूब लुभात, भरो वेला में ज्ञान कों भात। कटोरा के चित्र बुन्देली मेला की सफ्लता को दर्शाइये। ऐसेंई बुन्देली को प्रचार प्रसार होते रहे ताकि हमाई बुन्देली देश के कौने-कौने में अपई मिठास घोरत रये। बुन्देली दरसन के सबई रचनाकार कों, हटा नगर पालिका परिषद के अधिकारियन को कर्मचारियन और बुन्देली के सबई सुनन पढ़ने लिखने वारन कों हम वंदन अभिनन्दन करत।

भास्कर सिंह माणिक
(कवि एवं समीक्षक)
मालवीय नगर (बजरिया) कोंच
जिला - जालौन (उ.प्र.) 285205
मो. 09936505493

बंधुवर श्री पाण्डे जी,

इस समय स्वास्थ्य बहुत गड़बड़ चल रहा है। ऊपर से ठंड और शीतलहर ने पस्त कर रखा है। खाँसी बेहाल किये रहती है। श्वांस का पुराना मरीज होने के कारण यह सब व्याधियाँ सहनी पड़ती हैं। रजाई और हीटर ही सहारा हैं। गनीमत है कि दिन में धूप निकल आती है। यद्यपि शीतलहर उसका प्रभाव कम कर देती है।

आपने बुन्देली दरसन 2018 पर प्रतिक्रिया भेजने का हुकुम फरमाया हैं, उस पर डंडा यह कि फौरन भेजो। सो हुकुम का पालन कर रहा हूँ। आपने अंक की सारी सामग्री कठौती, सकोरा, कचुला, कुड़िया, बेला, कटोरा जैसे पात्रों में ठूस-ठूस कर भर दीं। अब ये पात्र कहीं देखने को नहीं मिलते। पता नहीं आपको हटा में कहाँ से मिल गये। अब ये पात्र पुरातात्विक

महत्व के हैं और कहीं-कहीं पुराने संग्रहालयों में चित्रों में देखे जा सकते हैं। पढ़ने वाले स्वयं विस्मित होते हैं कि ये पात्र क्या हैं। मुझे एक घटना याद आ गई। मेरी नयी-नयी शादी हुई थी। पत्नी जबलपुर शहर की है। ससुराल छोटे से गांव में मिली जो चित्रकूट के पास हैं। मेरी नई-नवेली पत्नी रसोई में खाना परोस रही थी और मेरे बड़े भाई भोजन कर रहे थे। गाँव में जेठ के सामने घूँघट करना जरूरी था। बात भी नही कर सकते थे। भाई साहब ने कहा- 'बहू' जरा खोखा देना। पत्नी अचकचा गई। समझ नहीं पाई कि खोखा क्या है। यहाँ-वहाँ देखती रही। आखिर अपनी जेठानी के पास जाकर कहा- दादाजी खोखा माँग रहे हैं- मुझे कहीं मिल नहीं रहा। जेठानी (अर्थात् मेरी भाभी) ने कहा- अरी पगली खोखा यानी कटोरा। जबलपुर में बड़े कटोरा थे। बेला और छोटी कटोरी को बिलिया कहते है। यहाँ गाँव में कटोरा को खोखा और कटोरी को खोरिया कहत हैं। आखिर पत्नी का संकट टला और ज्ञानवृद्धि हुई।

पुराने शब्द कभी-कभी इसी प्रकार की उलझन में डाल देते हैं। आपने इन पुराने पात्रों में बुन्देली की नई सामग्री भरी है। अब मिट्टी के, लकड़ी के, पीतल-तांबे के बासनों, पात्रों को जमाया गया। स्वयं आपके घर में तलाषने पर भी न मिलेगें। कभी रहे होंगे तो बाहर कर दिये गये। अब विसंगति यह है कि पुराने पात्रों में आपने नये-नये व्यंजन भर दिये। सामग्री नई पुराना। यह विसंगति दूर होनी चाहिए। समय के साथ परिवर्तन वांछनीय है। यद्यपि ये हमारी मूल्यवान पुरा सम्पदा हैं। इनका मूल्य और महत्वाकांक्षी कम नहीं होगा।

परिधान भले पुराने हों, पर उसमें भरी हुई सामग्री अत्यन्त सुघर और सुस्वाद है। बुन्देली काव्य की विविध भावों भरी सामग्री के लिए सकोरा बहुत छोटा है। उसको कुप्पिला में रखना था अन्यथा यहाँ-वहाँ गिरेगी, बगरेगी। कचुला की सामग्री परिमाप में भले कम हो, पर मूल्यवान है उसे किसी संदूक में सुरक्षित रखना था। इसमें घर-गृहस्थी की झलक मिलती है। इतिहास के पन्ना सोंठ है। पथरा की कुड़िया में आपने कहानियन को रसदार पंचामृत भर दओ। पंचामृत में मुलक चीजों का स्वाद मिलता है। मेवा, गोरस मीठा आदि कई चीजें के मिलन से पंचामृत बनता है। बड़ा स्वादिष्ट और पवित्र ग्रामीण पारिवारिक जीवन के तमाम रंग इनमें है। बेला तो और उ छोटों होत। इमें आपने भाषा, साहित्य, इतिहास, लोकजीवन, लोकसाहित्य, पुरातत्व आदि बुन्देलखण्ड को सर्वांग समेट दिया। जबकि हर लेख ज्ञानवर्धक और महत्वपूर्ण है। काऊ को छोटो-बड़ो नई कें सकत। एक-एक को गिनाना संभव नहीं। बुंदेलखंड को जानने के लिये इस बेला को संभालकर रखना होगा। कटोरा में आपने आयोजन के इतने सारे जीवंत चित्र डाल दिये है कि यदि उन्हें एक-एक को निकालकर देखें तो सारा आयोजन सामने आ जाता है। कुल मिलाहो भौतई नोनो अंक बन परौ है। ईमें आपकी सम्पादन कला, कलाकारों का कला-प्रेम और हजारी जी की उदारता की पूरी झलक मिलती है। सभी को मेरी बधाई। आपकी टीम अच्छी है।

- डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया
ए-7, फारचून पार्क, जी-3, गुलमोहन
भोपाल (म.प्र.) 462-039
मो. 9425376413

सरग नसैनी

जीवन में सुख-दुख की आवाजाई होतई रेत है - विधाता को ऐई नियम है। हमाये बीच से हमाये भौतई पियारे कछू जनें हमें छोड़ कें चले गये हैं। इनकी यादें हम इते संजो रये हैं। हमाई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन आत्माओं को शान्ति दें। इनके प्रति हमाई ऐई श्रद्धांजलि है।

आँगन

आँगन घर को ऊ खुलो हिस्सा है, जियाँय धूप आऊत, छाया आऊत और घर के सबई जनें इते आऊत-जात हैं। इनकी छवियाँ आँगन के आसपास झलकती रेतीं हैं। ई आँगन में हम दे रये हैं वे छवियाँ जो पिछले बुन्देली मेला की आँय। आप इने देखो और बुन्देली मेला को आनन्द उठाओ।

बधाई ! बधाई ! बधाई !

पद्म श्री कैलाश मड़बैया जी

बुंदेली बोली एवं बुंदेली संस्कृति के उन्नायक **श्री कैलाश मड़बैया** को राष्ट्र के गरिमामय सम्मान **'पद्म श्री'** से विभूषित किया गया है। बुन्देली दरसन पत्रिका परिवार अपने यशस्वी लेखक और हित-चिंतक श्री मड़वैया की इस उपलब्धि पर कोटिशः बधाईयाँ देता है और उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामनायें करता है।

- **डॉ. मनमोहन पांडे**
संपादक बुंदेली दरसन
हटा, दमोह (म.प्र.)

STANDARD PRESS #9425800132